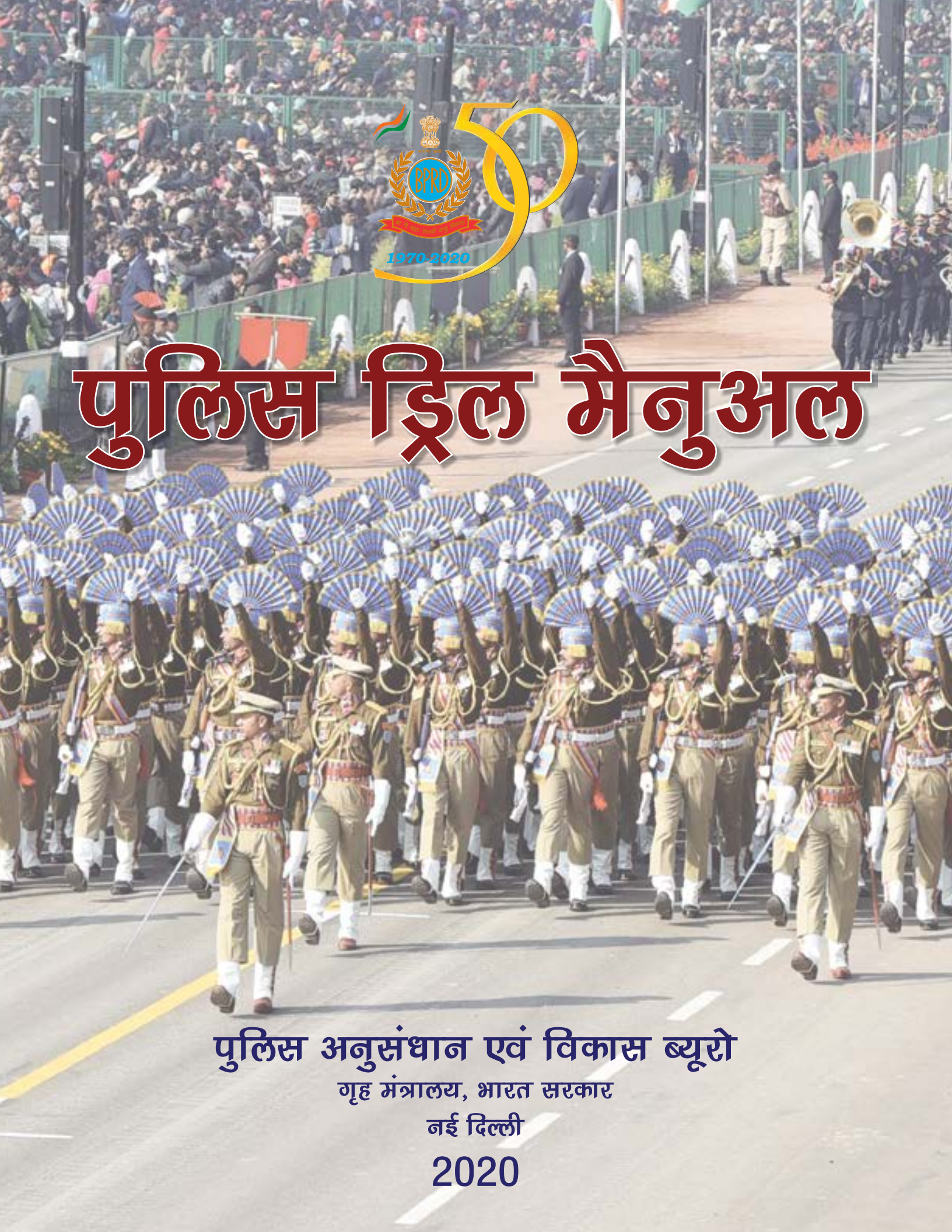

पुलिस ड्रिल मैनुअल

पुलिस अनुसंधान एवं विकास ब्यूरो
गृह मंत्रालय, भारत सरकार
नई दिल्ली
2020

पुलिस ड्रिल मैनुअल

पुलिस अनुसंधान एवं विकास ब्यूरो
गृह मंत्रालय, भारत सरकार
नई दिल्ली

पंचम संस्करण

2019

पुनर्मुद्रण–2020

प्रथम संस्करण–1977

द्वितीय संस्करण–1995

तृतीय संस्करण–2012

चतुर्थ संस्करण–2014

सर्वाधिकार–सुरक्षित

इस मैनुअल का कोई भी भाग किसी भी रूप में प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना उद्धृत या प्रकाशित नहीं किया जाएगा।

प्रकाशक – पुलिस अनुसंधान एवं विकास ब्यूरो, गृह मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली

पुलिस अनुसंधान एवं विकास ब्यूरो

राष्ट्रीय राजमार्ग–8

महिपालपुर

नई दिल्ली–110 037

मुद्रक : जे.के. ऑफसेट ग्राफिक्स प्रा. लि., बी–278, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेस–1, नई दिल्ली–110 020

अमित शाह
AMIT SHAH

सत्यमेव जयते

गृह मंत्री
भारत
HOME MINISTER
INDIA

दिनांक:05 मई , 2020

संदेश

बड़े हर्ष की बात है कि पुलिस अनुसंधान एवं विकास ब्यूरो द्वारा वर्ष 2019 के दौरान हिंदी में प्रकाशित "पुलिस ड्रिल मैनुअल" के पंचम संस्करण का पुनर्मुद्रण कराया जा रहा है ।

हिंदी में प्रकाशित "पुलिस ड्रिल मैनुअल" का, इतने अल्प समय में पुनर्मुद्रण, यह दर्शाता है कि देश भर में पुलिस बलों/संगठनों में कार्यरत सुरक्षाकर्मियों के बीच यह पुस्तक बहुत ही लोकप्रिय है । हमारे देश के केन्द्रीय पुलिस बलों एवं अधिकतर राज्यों के पुलिस बलों में हिंदी जानने वाले कार्मिकों की अधिकता है । ऐसे में पुलिस ड्रिल मैनुअल तथा पुलिस संबंधी अन्य पुस्तकें हिंदी में उपलब्ध होने के कारण इनमें दी गई जानकारी को वे सरलता से समझ सकते हैं और अपना ज्ञान एवं कौशल बढ़ा सकते हैं । पुलिस अनुसंधान एवं विकास ब्यूरो द्वारा हर वर्ष पुलीसिंग से संबंधिति विभिन्न पुस्तकों का हिंदी में प्रकाशन किया जा रहा है, जिसके फलस्वरूप पुलिस बलों/ संगठनों के कार्मिकों को अपना ज्ञान एवं कौशल बढ़ाने में मदद मिल रही है ।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि पुलिस अनुसंधान एवं विकास ब्यूरो, पुलिस बलों को समय के साथ उभर रही नई चुनौतियों का सामना करने के लिए, अपने शोध कार्य के माध्यम से, इसी तरह, निरंतर उपयोगी रचनाएं उपलब्ध कराता रहेगा ।

मैं, ब्यूरो के महानिदेशक एवं विशेष पुलिस प्रभाग के अधिकारियों एवं कार्मिकों के प्रयासों कि सराहना करता हूँ, जिन्होंने इस पुस्तक को परिमार्जित व परिष्कृत कर, पुन: संस्करण को प्रकाशित किया एवं पुनर्मुद्रण कराया ।

शुभकामनाओं सहित,

(अमित शाह)

Office : Ministry of Home Affairs, North Block, New Delhi-110001
Tel. : 23092462, 23094686, Fax : 23094221
E-mail : hm@nic.in

वरुण सिंधु कुल कौमुदी, भा.पु.से
महानिदेशक

VSK Kaumudi, IPS
Director General

Tel. : 91-11-26781312 (O)
Fax : 91-11-26781315
Email : dg@bprd.nic.in

1970-2020

पुलिस अनुसंधान एवम् विकास ब्यूरो
गृह मंत्रालय, भारत सरकार
राष्ट्रीय राजमार्ग–8, महिपालपुर,
नई दिल्ली–110037

Bureau of Police Research & Development
Ministry of Home Affairs, Govt. of India
National Highway-8, Mahipalpur,
New Delhi-110037

संदेश

पुलिस अनुसंधान एवं विकास ब्यूरो द्वारा, सन् 2019 में प्रकाशित **पुलिस ड्रिल मैनुअल** के पाचवें संस्करण का, अत्यंत अल्प अवधि में, पुनर्मुद्रण का कार्य पूरा किया जा चुका है। इस पुस्तक का पंचम संस्करण देश भर के पुलिस बलों एवं संगठनों में कार्यरत पुलिस कर्मियों के बीच बहुत लोकप्रिय हुआ तथा विभिन्न पुलिस संगठनों द्वारा इसकी और अधिक संख्या में मांग की गई। देश के केंद्रीय पुलिस बलों एवं अधिकतर राज्य पुलिस बलों में हिंदी जानने वाले कर्मिकों की अधिकता है और ज़्यादातर केन्द्रीय एवं राज्य पुलिस बलों के प्रशिक्षण संस्थानों में हिंदी माध्यम में ही बाह्य (outdoor) पाठ्यक्रमों का प्रशिक्षण दिया जाता है, जिसमें ड्रिल एक अति महत्वपूर्ण विषय वस्तु है। ड्रिल मैनुअल की उपलब्धता प्रशिक्षक एवं प्रशिक्षार्थी दोनों के लिए अति आवश्यक है एवं ब्यूरो इस कमी को पूरा करने में अपनी भूमिका के प्रति पूर्णतया समर्पित है।

पुलिस अनुसंधान एवं विकास ब्यूरो का सतत् प्रयास है कि वह अपने प्रशिक्षण कार्यक्रमों एवं पठन-पाठन से संबंधित पुस्तकों के माध्यम से पुलिस बलों को सशक्त बनाने में अधिकाधिक योगदान दे सके। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर, पुलिस अनुसंधान एवं विकास ब्यूरो द्वारा पुस्तक **पुलिस ड्रिल मैनुअल** का पुनर्मुद्रण कराया गया है।

बी.पी.आर.एंड डी. के लिए, यह अत्यन्त हर्ष की बात है कि, इस पुस्तक के पुनर्मुद्रण हेतु, हमें श्री अमित शाह जी, माननीय गृहमंत्री, भारत सरकार, की शुभकामना एवं सराहना संदेश प्राप्त हुआ है, जोकि स्वयं हमारे प्रयासों के लिए प्रेरणा स्त्रोत हैं।

आशा है, यह संस्करण पुलिस प्रशिक्षण संस्थानों की मांग को पूर्ण करने में सफल साबित होगा। इस पुस्तक को और बेहतर एवं समसामयिक बनाने के लिए पाठक उचित सुझाव एवं प्रतिपुष्टि (फीडबैक) भेजकर हमें लाभान्वित करें।

शुभकामनाओं सहित

व॰सि॰कु॰ कौमुदी
8/5/20

(वरूण सिंधु कुल कौमुदी)
महानिदेशक
पुलिस अनुसंधान एवं विकास ब्यूरो

"Promoting Good Practices and Standards"

संतोष मेहरा, भा.पु.से
अपर महानिदेशक

Santosh Mehra, IPS
Additional Director General

Tel. : 91-11-26781341 (O)
Fax : 91-11-26782201
Email : adg@bprd.nic.in

1970-2020

पुलिस अनुसंधान एवम् विकास ब्यूरो
गृह मंत्रालय, भारत सरकार
राष्ट्रीय राजमार्ग-8, महिपालपुर,
नई दिल्ली-110037

Bureau of Police Research & Development
Ministry of Home Affairs, Govt. of India
National Highway-8, Mahipalpur,
New Delhi-110037

संदेश

हम सबके लिए बड़े हर्ष की बात है कि पुलिस अनुसंधान एवं विकास ब्यूरो द्वारा वर्ष 2019 के दौरान प्रकाशित पुस्तक पुलिस ड्रिल मैनुअल सभी राज्य/केंद्रीय पुलिस बलों/संगठनों को इतनी उपयोगी लगी कि सभी ने इसकी अतिरिक्त प्रतियों की मांग की। ब्यूरो द्वारा वर्ष 2019 के दौरान प्रकाशित संस्करण में पर्याप्त मात्रा में नई सामग्री जोड़ी गई थी तथा पूर्व की कमियों को दूर किया गया था जिसके कारण इसकी उपयोगिता एवं लोकप्रियता में वृद्धि हुई।

पुनर्मुद्रित किए गये पांचवें संस्करण में भी "मेडल एवं अलंकरण के क्रम" संबंधी एक नया संलग्नक जोड़ा गया है ताकि नियमित रूप से प्रयोग किए जाने वाले मेडल व अलंकरण के क्रम संबंधी जानकारी सभी कर्मियों को रहे। मुझे उम्मीद है कि इस संलग्नक को जोड़ने के पश्चात पुनर्मुद्रित की गई पुलिस ड्रिल मैनुअल और भी उपयोगी सिद्ध होगी।

पुलिस अनुसंधान एवं विकास ब्यूरो अपने स्तर पर पुलिसिंग से संबंधित विभिन्न विषयों के अध्ययन करने के साथ-साथ विभिन्न सम्मेलनों एवं सेमिनारों में प्रकट होने वाले विचारों व सुझावों के आधार पर, विभिन्न शोध व अध्ययनों के माध्यम से नवीन समस्याओं से निपटने के समाधान खोजने के लिए निरंतर कार्य कर रहा है और राष्ट्र में शांति एवं व्यवस्था स्थापित करने के लिए अपना योगदान दे रहा है।

मैं, इतने अल्प समय में, इस पुस्तक के पुनर्मुद्रण कार्य को पूरा करने के लिए श्री शशि कान्त उपाध्याय, उपमहानिरीक्षक (वि.पु.प्रभाग) एवं उनके अधीन कार्यरत कर्मिकों द्वारा किये गये कठिन परिश्रम की प्रशंसा करता हूँ।

शुभकामनाओं सहित

संतोष मेहरा

(संतोष मेहरा)
अपर महानिदेशक
पुलिस अनुसंधान एवं विकास ब्यूरो

"Promoting Good Practices and Standards"

शशि कान्त उपाध्याय
उप-महानिरीक्षक/उपनिदेशक (वि० पु० अ०)

Shashi Kant Upadhyay
DIG / Deputy Director (SPD)

Tel. : 91-11-26781311 (O)
E-mail : dig-spd1@bprd.nic.in

पुलिस अनुसंधान एवम् विकास ब्यूरो
गृह मंत्रालय, भारत सरकार
राष्ट्रीय राजमार्ग-8, महिपालपुर,
नई दिल्ली–110037

Bureau of Police Research And Development
Ministry of Home Affairs, Govt. of India
National Highway-8, Mahipal Pur,
New Delhi-110037

संदेश

मेरे लिए बड़े हर्ष की बात है कि इतने अल्प समय में ब्यूरो द्वारा प्रकाशित पुलिस ड्रिल मैनुअल के पांचवें संस्करण का पुनर्मुद्रण कार्य करने का अवसर प्राप्त हुआ । पुलिस ड्रिल मैनुअल के पांचवें संस्करण को ब्यूरो द्वारा सभी राज्य/केंद्रीय पुलिस बलों/संगठनों को उपलब्ध कराया गया । संस्करण में पर्याप्त मात्रा में नई सामग्री जोड़ी गई थी तथा विगत की कमियों को ठीक किया गया था जिसके कारण इसकी उपयोगिता एवं लोकप्रियता में वृद्धि हुई । फलस्वरूप राज्य/केंद्रीय पुलिस बलों से इसकी मांग बढ़ गई, जिसके चलते इतने अल्प समय में इसका पुनर्मुद्रण किया जा रहा है ।

इस पुस्तक के पुनर्मुद्रण के अवसर पर गृहमंत्री, भारत सरकार की शुभकामनाएं एवं सराहना, इस बात की परिचायक है कि ब्यूरो इस पुस्तक के प्रकाशन के उद्देश्य को पूरा करने में सफल रहा है। मैं आशा करता हूँ कि पुलिस ड्रिल मैनुअल का पुनर्मुद्रण राज्य/केंद्रीय पुलिस बलों की मांग को पूरा करेगा और सभी पुलिस कर्मी इससे लाभान्वित होंगे ।

समय के साथ पुलिस बलों की कार्यपद्धति में आ रहे बदलाव को ध्यान में रखकर भविष्य में पुलिस ड्रिल मैनुअल को और अधिक बेहतर, उपयोगी एवं समसामयिक बनाने के लिए पाठकों के सुझाव की प्रतीक्षा रहेगी ।

शुभकामनाओं सहित

(शशि कान्त उपाध्याय)
उपमहानिरीक्षक (वि.पु.प्रभाग)

'Promoting Good Practices and Standards'

पुलिस ड्रिल मैनुअल

विषय–सूची

विवरण	पृष्ठ सं.
अध्याय I	
परिभाषाएं	1
अध्याय II	
कवायद (ड्रिल) का उद्देश्य	3
कवायद (ड्रिल) शिक्षण के सिद्धान्त	3
तैयारी	3
शिक्षण का तरीका	4
प्रशिक्षण के समय की व्यवस्था और समाप्ति	4
पिछड़ा हुआ जवान	5
कवायद (ड्रिल) सीखने वाले रंगरूट के लिए सामान्य हिदायतें	5
कमान शब्द (वर्डस् ऑफ कमाण्ड)	6
निरीक्षण	7
अध्याय III	
ड्रिल और परेड	13
अध्याय IV	
वयस्क प्रशिक्षणार्थियों में उत्साह एवं प्रेरणा जागृत करने में प्रशिक्षण अनुदेशक की भूमिका	23
अध्याय V	
अभ्यास (कवायद) अनुदेशक का चयन	31
अध्याय VI	
चोट प्रबन्धन	37
अध्याय VII	
वर्दी में आचरण	45

विवरण	पृष्ठ सं.

अध्याय VIII

पदक और रिबन 55

अध्याय IX

बैण्ड संगीत 67

अध्याय X

भारत की ध्वज संहिता 75

अध्याय XI

5.56 एमएम इन्सास राईफल के साथ 87

अध्याय XII

स्क्वाड कवायद थम की हालत में

फासला रख कर स्क्वाड बनाना 91

सावधान 91

विश्राम की स्थिति में खड़े होना 92

आराम से खड़े होना 92

स्क्वाड का निर्धारित फासले से सजना 92

गिनती से मुड़ना और आधा मुड़ना 92

अध्याय XIII

मार्च करना

कदमों के बीच फासला और मार्च करने की गति 97

मार्चिंग के समय जवानों की स्थिति 97

तेज चाल और धीरे चाल में चलना 98

कदम आगे और पीछे ले जाना 100

धीरे और तेज चाल में कदम बदलना 101

दौड़ चाल में मार्च करना 101

धीरे चाल, तेज चाल और दौड़ चाल में चलना 102

विवरण	पृष्ठ सं.
बगली कदम (साइड पेस)	103
मार्च करते समय मुड़ना	103

अध्याय XIV

बिना शस्त्र के सैल्यूट करना

थम पर सैल्यूट करना	107
मार्च करते हुए सैल्यूट करना	108
बिना शस्त्र के विसर्जन करना	109

अध्याय XV

छड़ी कवायद (केन ड्रिल)

प्रस्तावना	111
बेटन एवं केन में अन्तर	111
छड़ी की स्थिति	111
छड़ी से सैल्यूट करना	112
छड़ी से विसर्जन	113
बेटन/केन के साथ मार्च करते हुए ड्रिल करना	113

अध्याय XVI

सैल्यूट के बारे में सामान्य अनुदेश

बिना टोपी या पगड़ी पहने और सादी पोशाक आदि में सैल्यूट करना	115
विविध	115

अध्याय XVII

थम पर तीन लाइनों में कवायद करना

स्क्वाड या प्लाटून बनाना	117
खाली फाइल (ब्लैंक फाइल)	117
सजना (ड्रेसिंग)	118
चलने की कवायद	119

विवरण	पृष्ठ सं.
प्लाटून लाइन में और तीनों–तीन में	120
मार्च करते समय सजना	120
लाइन में मार्च करना	120
एक फ्लैंक को लाइन बदलने के लिए दिशा निर्देश देना	121
तीनों–तीन में मार्च करना	123
चलती हुई प्लाटून की तीनों–तीन से लाइन बनाने के लिए मोड़ना	123
चलते हुए लाइन में तीनों–तीन से मुड़ना	124
तीनों–तीन में घूमना	124
तीनों–तीन में एक ही दिशा में लाइन बनाना	125

अध्याय XVIII

दो लाइनें बनाना

तीन लाइन से दो लाइन बनाना	127
दो लाइनों से तीन लाइन बनाना	127

अध्याय XIX

एक फाइल में मार्च करना

तीनों–तीन में दाहिने तरफ मुंह करके खड़े होने वाले ऐसे स्क्वाड का, जिसमें सामने की लाइन बाईं और हो, एक फाइल में मार्च करना	129
तीन लाइनों के स्क्वाड द्वारा आगे बढ़ने की दिशा में एक फाइल में मार्च करना	129

अध्याय XX

शस्त्र कवायद (आर्म्स ड्रिल)

सामान्य नियम–राइफल अभ्यास	131
आदेश पर राइफल सहित लाइन बनाना	131
सावधान	131
विश्राम और आराम से खड़ा होना	132
कंधे शस्त्र और बाजू शस्त्र	132

विवरण	पृष्ठ सं.
कंधे शस्त्र से सलामी और सलामी शस्त्र से कंधे शस्त्र	134
संगीन लगाना और संगीन उतारना	135
कंधे शस्त्र से सैल्यूट करना	136
बाजू शस्त्र से बाएं शस्त्र और बाएं शस्त्र से बाजू शस्त्र	137
कंधे शस्त्र से बाएं शस्त्र और बाएं शस्त्र से कंधे शस्त्र	137
निरीक्षण के लिए बाएं शस्त्र, बोल्ट चलाना	138
बाएं शस्त्र से जांच शस्त्र, बोल्ट चलाना, जांच शस्त्र से बाएं शस्त्र, जांच शस्त्र से बाजू शस्त्र	138
बाजू शस्त्र से तोल शस्त्र और तोल शस्त्र से बाजू शस्त्र	139
कंधे शस्त्र से तोल शस्त्र और तोल शस्त्र से कंधे शस्त्र	140
कंधे शस्त्र से संभाल शस्त्र और संभाल शस्त्र से कंधे शस्त्र	140
संभाल शस्त्र से बाजू शस्त्र	141
तोल शस्त्र पर बदल शस्त्र	141
भूमि शस्त्र, उठा शस्त्र	141
समतोल शस्त्र	142
लटका शस्त्र	142
बाजू शस्त्र से सलामी शस्त्र	142
कंधे शस्त्र से तान शस्त्र	143
तान शस्त्र से कंधे शस्त्र	143
बाजू शस्त्र से तान शस्त्र और तान शस्त्र से बाजू शस्त्र	143
कंधे शस्त्र से ऊंचा बाएं शस्त्र और ऊंचा बाएं शस्त्र से कंधे शस्त्र	143
बाजू शस्त्र से ऊंचा बाएं शस्त्र और ऊंचा बाएं शस्त्र से बाजू शस्त्र	144
बाजू शस्त्र से बगल शस्त्र	144

अध्याय XXI

किर्च कवायद (ड्रिल)

किर्च कवायद की हरकतें	147

विवरण	पृष्ठ सं.

किर्च के साथ सैल्यूट करना 148

सामान्य टिप्पणियां 149

अध्याय XXII

क्षेत्र में फैले हुए दल को कवायद का आदेश

प्रस्तावना 151

आदेश शब्द 151

हाथ के संकेत 152

राइफल के साथ संकेत 153

सीटी बजाकर नियंत्रण रखना 153

अध्याय XXIII

सड़क पर लाइन बनाना (स्ट्रीट लाइनिंग)

सड़क की दोनों तरफ से सुरक्षा करना 161

सिमटना 161

बारी–बारी सड़क के दोनों और सुरक्षा करना 162

सिमटना 162

प्लाटून या कम्पनी का मध्य से परिनियोजन 162

गाड़ियों और पैदल यात्रियों के गुजरने के लिए सड़क को दो भागों में बांटना 163

सिमटना 163

अध्याय XXIV

कम्पनी कवायद (ड्रिल)

कम्पनी में अफसरों और जवानों की संख्या 165

अफसरों और अंडर अफसरों की विरचना (फार्मेशन) और स्थान 165

सजना (सिधाई) 166

प्लाटूनों के निकट कॉलम में लाइन बनाने वाली कम्पनी 167

थमते हुए कम्पनी द्वारा लाइन (रैंक) बदलना ''पीछे मुड़'' 167

निकट कॉलम की कार्रवाई 168

विवरण	पृष्ठ सं.
कॉलम कार्रवाई	170
लाइन कार्रवाई	172
तीनों–तीन के कॉलम में हरकतें	173
प्लाटून की तीनों–तीन लाइन में (कॉलम फासले में) कार्रवाई	175
विसर्जन	176

अध्याय XXV

समारोह कवायद (सेरिमोनियल ड्रिल)

सामान्य व्यवस्थाएं	181
निरीक्षण या समीक्षा परेड ग्राउन्ड	183
यूनिट–संगठन	184
परेड फार्मेशन	184
पैदल यूनिट का कदवार खड़ा होना (साइजिंग)	185
पैदल यूनिट की संख्याएं नियत करना	185
निरीक्षण और समीक्षा के लिए आम हिदायतें (आउटलाइन प्रोसीजर)	185
अफसरों के लिए विशेष हिदायतें	186
निरीक्षण या समीक्षा अफसरों की अगुवाई करना	187
राष्ट्रपति और राज्यपालों की अगुवाई करना	187
निरीक्षण	188
मार्च पास्ट	188
अफसरों की जगह	189
कम्पनीवार मार्च पास्ट करती हुई बटालियन	189
कूच कॉलम में मार्च करना	190
तेज चाल में प्लाटूनवार मार्च पास्ट करना	190
धीरे चाल में प्लाटूनवार मार्च पास्ट करना	191
समीक्षा क्रम में आगे बढ़ना	192
परिशिष्ट क, ख, ग, घ, ड़, च और छ	192–198

विवरण	पृष्ठ सं.

अध्याय XXVI

गार्ड और संतरी

परिभाषाएं 204

गार्ड (गारद) आरोहण 205

गार्ड (गारद) को कार्य मुक्त करना, तैनाती करना और विसर्जित करना 209

संतरियों और बदलियों की तैनाती, उन्हें कार्यमुक्त करना, मार्च करवाना और विसर्जित करना 210

गार्ड (गारद) को दिन में निरीक्षण के लिए ''लाइन बन'' कराना 211

गार्ड (गारद) को रात के समय लाइन बन कराना 211

संतरियों के लिए सामान्य नियम 212

गार्ड (गारद) और संतरियों को दिए जाने वाले सामान्य अनुदेश उनके द्वारा किए जाने वाला सामान्य अभिनन्दन 213

अध्याय XXVII

सलामी गारद

संख्या एवं रचना 215

वर्दी 216

विरचना (फार्मेशन) 216

ए.डी.सी. (परिसहायक) 217

संचालन अफसर 217

झण्डा 217

सैल्यूट 217

राष्ट्रीय गान 217

निरीक्षण 218

सामान्य 219

अध्याय XXVIII

हर्ष फायर

अवसर 221

विवरण	पृष्ठ सं.
कार्यविधि और कमान शब्द	221
परेड पर जय बोलना	222

अध्याय XXIX

पासिंग आउट परेड (दीक्षांत परेड)

प्रस्तावना	225
सामान्य निर्देश	226
परेड की संरचना	226
संगठन/संस्थान के प्रमुख का अभिनन्दन	227
विशिष्ट/अतिविशिष्ट व्यक्तियों का आगमन	227
विशिष्ट व्यक्तियों द्वारा परेड का निरीक्षण	227
शपथ ग्रहण	228
मार्च पास्ट समारोह	229
निरीक्षण क्रम में बढ़ना और संस्थान प्रमुख द्वारा रिपोर्ट, पुरस्कार–वितरण एवं विशिष्ट व्यक्तियों का भाषण	232
परेड भंग (परेड निष्क्रमण)	233

अध्याय XXX

कलर प्रदान परेड (अलंकरण परेड)

खंड - I

कलर की परिभाषा, उसके भाग व उनके माप	239
कैरी बैल्ट और उसकी सज्जा	239
कलर की सज्जा	239
कलर को खोलना एवं बंद करना	239
उठाओ निशान एवं बाजू निशान	240
उठाओ निशान से कांधे निशान और कांधे निशान से उठाओ निशान	241
कलर का फहराना, पकड़ना एवं झुकाना	241
कलर पार्टी और मार्गरक्षी	242

विवरण	पृष्ठ सं.

खंड - II

सामान्य निर्देश 242

अति विशिष्ट व्यक्तियों द्वारा कलर प्रदान 243

परेड की संख्या 243

परेड की विरचना 244

बन्द कलर का आगमन 245

पुलिस महानिदेशक का अभिनन्दन 245

विशिष्ट/अतिविशिष्ट व्यक्ति का आगमन 246

अति विशिष्ट व्यक्ति द्वारा परेड का निरीक्षण 246

परेड टोली 246

खाली वर्ग की विरचना 247

ड्रमों का जमा होना एवं समर्पण का मापदंड 247

कलर प्रदान करना 248

निरीक्षण लाइन पर परेड की पुनः विरचना 248

समारोह–मार्च पास्ट 249

निरीक्षण क्रम में बढ़ना और अति विशिष्ट व्यक्ति का भाषण 250

कलर की वापसी 251

परेड का सौंपना 251

अध्याय XXXI

फेयरवैल परेड (विदाई परेड)

प्रस्तावना 255

सामान्य निर्देश 255

परेड की संख्या 255

परेड की विरचना 256

पदमुक्त (जाने वाले) अधिकारी का आगमन 257

पदमुक्त (जाने वाले) अधिकारी द्वारा परेड का निरीक्षण 257

समारोह–मार्च पास्ट 257

विवरण	पृष्ठ सं.
निरीक्षण क्रम में खड़े होना एवं भाषण का दिया जाना	257
पदमुक्त (जाने वाले) अधिकारी की जय–जयकार	258
सामान्य नोट	258

अध्याय XXXII

अंत्येष्टि कवायद (ड्रिल)

अंत्येष्टि के समय की जाने वाली कार्रवाई	261
कब्रिस्तान या शमशान में पहुंचने पर की जाने वाली कार्रवाई	262
सर्विस के दौरान प्रक्रिया	262
दागने की प्रक्रिया	263
शवपेटी ले जाने की प्रक्रिया	263
उल्टा शस्त्र और शोक शस्त्र करने की प्रक्रिया	263
अंत्येष्टि ड्रिल के दौरान तलवार का प्रयोग	265

अध्याय XXXIII

सैल्यूट हेतु दिशा निर्देश

सामान्य	269
विविध	269
वेशभूषा के प्रकार	272

अध्याय XXXIV

पुलिस स्मृति दिवस परेड

पुलिस स्मृति दिवस परेड	275
अनुबन्ध–कमान शब्द	277

पदक क्रम

विभिन्न पदक एवं अलंकरण पहनने का क्रम	287

अध्याय I

परिभाषाएंः

1. संरेखण (अलाइनमेंट) – कोई भी सीधी पंक्ति जिस पर आदमियों को खड़ा किया गया हो या खड़ा किया जाना हो।

2. कॉलम – आदमियों का समानान्तर और उत्तरवर्ती संरेखण में एक दूसरे के पीछे खड़ा होना तथा एक दूसरे से इतनी दूरी पर खड़ा होना कि दोनों बाजू 90 अंश का कोण बनाते हों। इससे ऐसी पंक्तियां बनेंगी जिनमें से प्रत्येक में तीन कदमों का फासला होगा।

3. निकट कॉलम (क्लोज कॉलम) – ऐसा कॉलम जिसके बीच का फासला जरूरत के अनुसार कम कर दिया गया हो। सामान्य प्रयोजन के लिये प्लाटून के निकट कॉलम 12 कदमों की दूरी पर बनाये जाएंगे। कवायद के लिये 7 कदमों का फासला अधिक सुविधाजनक होगा।

4. कूच कॉलम – तीनों–तीन का ऐसा कॉलम जिसमें कॉलम के किसी भी भाग में तीन आदमियों से अधिक आदमी पंक्तिबद्ध न खड़े हों। इसमें अफसर तथा अधिसंख्य शामिल हैं। इसमें आदमी सड़क पर सिमटकर मार्च करते हैं।

5. तीनों–तीन कॉलम – ऐसा कॉलम जिसमें अफसर और अधिसंख्य अपने अपने स्थान पर खड़े रहते हैं, केवल यूनिट का कमान अफसर यूनिट या सब–यूनिट के आगे खड़ा होता है।

6. एक दूसरे के ठीक पीछे खड़ा होना (कवरिंग)– ऐसी कार्रवाई जिसमें आदमी दूसरे आदमी के ठीक पीछे खड़ा होता है।

7. गहराई (डेप्थ) – आदमियों द्वारा आगे से पीछे तक घेरा गया स्थान डेप्थ कहलाता है।

8. निर्देश स्टाफ (डायरेक्टिन्ग बाडी) – आदमियों के समूह यूनिट या अधीनस्थ यूनिट जिस पर किसी फार्मेशन के बहुत से हिस्सों की दिशा, फासला और संरेखण या सापेक्षिक स्थिति पर निर्भर करती है।

9. फासला – आदमियों या आदमियों के समूह के बीच आगे पीछे तक की दूरी को फासला कहते हैं।

10. सजना (ड्रेसिंग) – ठीक ढंग से सीधी लाइन बनाकर पंक्ति बद्ध खड़े होना है।

11. फाइल – आगे की पंक्ति में खड़ा होने वाला आदमी तथा उसके पीछे खड़े होने वाले अन्य आदमियों को फाइल कहते हैं।

12. खाली (ब्लैंक) फाइल – ऐसी फाइल जिसमें मध्य तथा पिछली लाइन का आदमी नहीं होता या केवल मध्य लाइन का आदमी नहीं होता। खाली फाइल बाएं से दूसरी फाइल होती है। यदि आदमी दो लाइनों में खड़े हों तो बाएं से तीसरी फाइल खाली फाइल होती है।

13. फ्लैंक – आदमियों के समूह के दोनों तरफ के भाग को फ्लैंक कहते हैं यह उसके अगले या पिछले तरफ के भाग से एकदम विपरीत होता हैं।

14. निर्देश देने वाली फ्लैंक – वह फ्लैंक जिसको देखकर सभी यूनिट मार्च करता हैं या पंक्ति बद्ध खड़े होते हैं।

15. भीतरी (इनर) फ्लैंक – यह निर्देश देने वाली फ्लैंक के नजदीक फ्लैंक होता है तथा जब समूह अपनी दिशा बदलता है तब यह धुरी का कार्य करता है।

16. बाहरी (आउटर) फ्लैंक – यह भीतरी या निर्देश देने वाली फ्लैंक के विपरीत होता है। (बहुधा इसे विपरीत फ्लैंक कहा जाता है।)

17. फार्मिंग – दिशा बदलने के तरीके को फार्मिंग कहते हैं जो व्हीलिन्ग के विपरीत होता है।

18. सामने (फ्रन्ट) – किसी निर्धारित समय पर आदमी जिस दिशा की ओर मुंह करके खड़े हों या आगे बढ़ रहे हो फ्रंट कहलाता है।

19. पुलिस विन्यास का अग्रभाग (फ्रन्टेज) – मैदान का फैलाव जिसे आदमियों के समूह ने अपनी बगल के फासले से घेर रखा हो।

20. इनक्लाइन (आधामुड़) – बिना सीधी पंक्ति को बदले हुए ऐसी स्थिति में आना जिसमें आधा दाहिने तथा आधा बाएं मुड़कर सामने और पीछे दोनों ओर एक साथ आगे बढ़ा जाता है।

21. बीच का फासला (इंटरवल) – एक फ्लैंक से दूसरी फ्लैंक तक बने हुए संरेखण पर आदमियों या आदमियों के समूहों के बीच का पार्श्विक स्थान। पैदल आदमियों के बीच फासला दो कुहनियों की दूरी से मापा जाए। प्रत्येक पैदल आदमी दिये दो लाइनों की बीच 24 इंच पार्श्विक स्थान रखा जाए। तीन रैंकों के बीच एक हाथ लम्बा पार्श्विक स्थान हो। एक हाथ लम्बा नापते समय मुट्ठी बन्द रखी जाए।

22. पंक्ति – जिस पंक्ति में यूनिट खड़ी हो उसे पंक्ति कहते है।

23. मार्कर – कुछ परिस्थितियों में गति संबंधी दिशा निर्देश देने के लिये या फार्मेशन या संरेखण का विनियमन करने के उद्देश्य से बिन्दु निर्धारित करने के लिये लगाये गये कार्मिक।

24. मास – प्लाटनों के निकट कॉलम की पंक्ति में खड़े होने पर कंपनियों सहित बटालियों के बीच में रखा जाने वाला 5 कदम का फासला।

25. खुली लाइन (ओपन आर्डर) – समारोह या निरीक्षण के प्रयोजन के लिये लाइनों के बीच बढ़ा हुआ फासला।

26. निकट लाइन (क्लोज आर्डर) – पंक्ति के रैंकों में रखा जाने वाला सामान्य फासला।

27. पेस – पैंरों के फासले को मापने का नाम जो 30 इंच का होता है। गति की रफ्तार को भी पेस कहते हैं।

28. रैंक – आदमियों की साथ–साथ बनी हुई पंक्ति।

29. सिंगल फाइल – आदमियों की एक ऐसी पंक्ति जिसमें केवल एक आदमी आगे होता है और बाकी सब उसके पीछे (एक दूसरे के पीछे मार्चिंग के आम फासले पर खड़े होते हैं)।

30. अधिसंख्य – ऐसे एन.सी.ओ. आदि जो यदि फाइल फार्मेशन में हों तो तीसरी लाइन बनाते हैं। यदि तीनों–तीन में हो तो चौथी पंक्ति में खड़े होते हैं।

31. हीलिंग – ऐसे हरकत जिसके द्वारा परेड करते हुए आदमियों का एक समूह अपनी दिशा बदलता है। इसमें फाइल का प्रत्येक रैंक इनर फ्लैंक के गिर्द घूमता है परन्तु अपनी ड्रैसिंग को पूर्ववत बनाये रखता है।

अध्याय II

खंड – 1

कवायद (ड्रिल) का उद्देश्य

परेड के मैदान में होने वाली कवायद का मुख्य उद्देश्य रंगरूट में ऊँचे दर्जे के अनुशासन के पालन की भावना का निर्माण करना, उसे बनाये रखना, अच्छी वेषभूषा पहनना तथा रंगरूट और पुलिस बल में स्वाभिमान को बनाये रखना है। पुलिस बल में उक्त गुणों को विकसित करके साथ–साथ परेड के मैदान में सही ढंग से कवायद करने पर अप्रत्यक्ष रूप से, आदमी में आत्मसम्मान की भावना का विकास होता है जिससे पुलिस बल शक्तिशाली होता है, उनमें एकता और एक समान उद्देश्य की भावना विकसित होती है। कवायद करने से शरीर और मन में सामंजस्य स्थापित होता है। शरीर और मन के इसी सामंजस्य के आधार पर इन्हें सेवा संबंधी अन्य प्रशिक्षण देने में सहायता मिलती है।

किसी विशिष्ट परेड में भाग लेने वाले जवानों द्वारा की गई उच्च स्तर की कवायद केवल उन्हीं के लिये महत्वपूर्ण नहीं होती बल्कि कवायद के दर्शकों को भी बल के जवानों पर विश्वास और गर्व महसूस होता है। सामान्यतः जनता नगरों और ग्रामीण इलाकों में ड्यूटी पर तैनात पुलिस के एक जवान या इनके किसी छोटे मोटे दस्ते को तो प्रायः देखती है लेकिन पुलिस की बड़ी फार्मेशनों को एक दक्ष और अनुशासित रूप में देखने–परखने के बहुत कम अवसर मिलते हैं। पुलिस बल के लिये समारोह कवायद ही एक ऐसा अवसर होता है जब वह जनता के सामने अपने ऊंचे दर्जे के प्रशिक्षण और अनुशासन का पूरा–पूरा प्रदर्शन कर सकता है।

कवायद जवानों को फील्ड कार्य का प्रशिक्षण देने में भी महत्वपूर्ण सहायता करती है क्योंकि कवायद से जवान आदेशों का कड़ाई तथा निश्चित रूप से पालन करना सीखता है, तथा बल के जवानों में उस बल के लिये गर्व और विश्वास का एहसास पैदा होता है। सही ढंग से कवायद करने से जवानों को अपना व्यक्तिगत एहसास भुला कर सामूहिक वजूद का एहसास करने में सहायता मिलती है जिससे सामूहिक मनोबल और मिल जुलकर कार्य करने की भावना विकसित होती है।

खंड – 2

कवायद (ड्रिल) शिक्षण के सिद्धांत

कवायद प्रशिक्षक को इस बात का हमेशा ध्यान रखना चाहिए कि प्रशिक्षण देना एक कला है और इसका इसी दृष्टि से अध्ययन करना आवश्यक है। उसे हमेशा अपने विषय के मुख्य उद्देश्य को ध्यान में रखना चाहिए। यह उद्देश्य है उच्च स्तर का अनुशासन विकसित करना और रखना, वेशभूषा तथा आचरण अच्छा रखना तथा बल की भावना को बनाये रखना। वह हमेशा अपने स्क्वाड को उन गुणों के बारे में बताता रहे जिन्हें कवायद के माध्यम से जवानों में विकसित किया जाना है। कवायद प्रशिक्षक को यह सुनिश्चित कर लेना चाहिए कि उसकी स्क्वाड विभिन्न शारीरिक हरकतों के मूल उद्देश्यों को समझती है। उसे केवल अपने आदेशों की तामील करवाने वाला ही नहीं बन जाना चाहिए और न ही उसे यह समझ लेना चाहिए कि चिल्लाने और धमकाने आदि से उद्देश्य की प्राप्ति हो सकती है। इसके साथ–साथ अपने स्क्वाड के प्रति उसका रवैया दृढ़ और सुनिश्चित होना चाहिए। कवायद प्रशिक्षक से जवानों की सभी हरकतों में केवल बहुत ही उच्च स्तर देखने की अपेक्षा रखनी चाहिए। अच्छे परिणाम प्राप्त करने के लिये स्वयं प्रशिक्षक में वे सब गुण होने चाहिए जिन्हें कवायद द्वारा विकसित करने का उद्देश्य हो। वस्तुतः उसे स्वयं अपना उदाहरण देकर ही जवानों को प्रशिक्षित करना चाहिए।

खंड – 3

तैयारी

एक कवायद प्रशिक्षक को अपना पाठ उसी प्रकार विस्तृत रूप से सावधानी पूर्वक और ध्यान पूर्वक तैयार करना चाहिए जिस प्रकार अन्य विषयों के पाठ तैयार किये जाते हैं। उसे पहले ही अपने

पाठ के बारे में सिखाना हो उसके बारे में पूरी जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए। कवायद प्रशिक्षक को अपने पाठ्य विषय की रूपरेखा तैयार करते समय अपने स्क्वाड की स्थिति और क्रम व्यवस्था का ध्यान रखना चाहिए। स्क्वाड को इस प्रकार व्यवस्थित करना चाहिए कि इसके किसी सदस्य का चेहरा या पीठ सूरज की ओर न रहे। यदि संभव हो तो पूरे स्क्वाड को छाया में ही रखा जाए।

खंड – 4

शिक्षण का तरीका

कवायद में हरकत शिक्षण का मुख्य साधन है। केवल शब्दों का कोई महत्व नहीं है। स्क्वाड अधिक बोलने वाले प्रशिक्षक का सम्मान नहीं करेगा। अतः निम्नलिखित बातों का हमेशा ध्यान रखना चाहिएः–

(क) पूरा प्रदर्शन

(ख) स्पष्टीकरण के साथ–साथ संख्या–वार प्रदर्शनों (यदि अधिसंख्य उपस्थिति हों तो प्रदर्शन के लिये उनकी सेवाएं उपयोग में लाई जाएं)। शिक्षक ड्रिल की हरकतों के बारे में बताएंगे।

(ग) स्क्वाड द्वारा संख्या के अनुसार सामूहिक अभ्यास।

(घ) संख्या के अनुसार अलग–अलग अभ्यास।

(ङ) स्क्वाड द्वारा सामूहिक रूप से गिनती करते हुए अभ्यास।

(च) स्क्वाड द्वारा सामूहिक रूप से समय का अनुमान लगाते हुए अभ्यास।

प्रशिक्षक कवायद की हरकतों के पूर्ण प्रदर्शन के समय अपनी हरकतों के बारे में स्पष्टीकरण न दे। वह किसी गलत तरीके से हरकत का प्रदर्शन नहीं करेगा। प्रशिक्षक व्यक्तिगत अभ्यास के समय प्रत्येक व्यक्ति की हरकतों की जांच करेगा और उसकी गलतियां उसको बताएगा।

कवायद प्रशिक्षक को यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि वह अन्य प्रशिक्षकों के समान एक प्रशिक्षक है। उसे अपने स्क्वाड को शिक्षण देते समय शिक्षण के सामान्य सिद्धान्त और पद्धतियां अपनानी चाहिए। किन्तु इसके साथ–साथ इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि वह जो प्रदर्शन करेगा उससे स्क्वाड की कार्यक्षमता घटेगी या बढ़ेगी। अपने स्क्वाड को कवायद संबंधी कोई आदेश वास्तव में देते समय वह स्वयं भी सावधान की स्थिति में खड़ा रहेगा। हालांकि इसके बाद वह स्क्वाड का चूकों और गलतियों की जांच के लिये कोई भी हरकत करने के मामले में स्वतंत्र होगा।

प्रशिक्षित व्यक्ति को कवायद करवाते समय प्रशिक्षक को सावधान की स्थिति के अलावा अन्य स्थिति में आना आवश्यक नहीं होगा किन्तु प्रशिक्षक का अपने स्क्वाड के सामने प्रदर्शन करना और स्क्वाड की गलतियां ठीक करना आवश्यक और वांछनीय है। दूसरे इस बात पर जितना अधिक बल दिया जाए उतना ही कम है कि कवायद में प्रशिक्षण को उदाहरण प्रस्तुत करके बढ़िया और प्रभावी बनाया जा सकता है। प्रशिक्षक के विभिन्न गुण अर्थात् व्यक्तिगत तौर–तरीके और प्रबंध का स्क्वाड पर लाजमी तौर पर और पूरा–पूरा प्रभाव पड़ता है। अतः प्रशिक्षक का कर्तव्य है कि वह स्क्वाड के सामने अपना उच्च आदर्श प्रस्तुत करे और स्क्वाड के व्यक्तियों को अपने उदाहरण द्वारा उस स्तर तक लाने के लिये शिक्षण के मूलभूत तरीकों का इस्तेमाल करे।

खंड–5

प्रशिक्षण के समय की व्यवस्था और समाप्ति

प्रशिक्षण की समय सारणी इस प्रकार बनाई जाए कि इस में विविधता रहे। निरुद्देश्य कवायद की असंगठित अवधियां निरर्थक होती है और इससे स्क्वाड कुछ भी नहीं सीख पाता। किसी भी एक प्रकार की कवायद के लिए एक बार में पन्द्रह मिनट से अधिक समय नहीं देना चाहिए।

एक बार में चालीस मिनट से अधिक प्रशिक्षण नहीं देना चाहिए। कवायद के आखिरी पांच मिनटों में ''अच्छी कवायद'' करवाई जाए अर्थात् वह हरकत जिसके बारे में प्रशिक्षक यह समझता है कि उसका

स्क्वाड उसे भली भांति कर सकता है। इस प्रकार जब स्क्वाड परेड के मैदान से जाएगा तब उसके मन में कुछ कर सकने और अपने प्रदर्शन के बारे में गर्व की भावना होगी।

खंड–6

पिछड़ा हुआ जवान

कवायद प्रशिक्षक को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि वह अपने स्क्वाड में किसी पिछड़े हुए जवान को भला बुरा न कहे और न ही अपने कटाक्ष का शिकार बनाये। किसी जवान में यह भावना पैदा नहीं होने देना चाहिए कि वह स्क्वाड में पिछड़ा हुआ या कमजोर है। शिक्षक को बार–बार पिछड़े जवान का नाम नहीं पुकारना चाहिए। प्रशिक्षक को बड़ी सतर्कता से धीरे–धीरे स्क्वाड में पिछड़े हुए जवान के पास जाकर उसके सामने खड़े होकर बताना चाहिए कि वह कहां गलती कर रहा है। इस प्रकार धैर्यपूर्वक और समझदारी से सिखाने से धीरे–धीरे सीखने वाले जवान में सुधार होगा। इस प्रकार उचित व्यवहार से यही पिछड़ा हुआ व्यक्ति अंत में स्क्वाड का सबसे अच्छा जवान बन जाएगा।

खंड–7

कवायद सीखने वाले रंगरूट के लिए सामान्य हिदायतें

कवायद का उद्देश्य अनुशासन सिखाना और बनाये रखना है। कवायद बहुत ही अच्छी तरह से हो यह अत्यन्त जरूरी है। खराब ढंग से कवायद करने से अनुशासन बिगड़ता है। यह बात अत्यन्त महत्व रखती है कि कवायद किस प्रकार की जा रही है। विविध प्रकार की और बहुत अधिक ड्रिल करने की अपेक्षा थोड़े समय के लिये अच्छी कवायद करना बेहतर है तथापि यह जरूरी है कि कवायद का स्तर पहले की अपेक्षा निरन्तर उच्च बनाया जाए और ड्रिल के लिये जितना समय दिया जा सकता हो उसमें कमी की जानी चाहिए।

परेड के मैदान में प्रत्येक हरकत चुस्ती से की जानी चाहिए। मुड़ते समय सावधान या विश्राम की स्थिति में आते समय जोर से पैर पटकने की अनुमति नहीं देनी चाहिए।

निम्नलिखित खंडों में दिया गया कवायद की हरकतों का ब्यौरा केवल प्रशिक्षकों की जानकारी के लिए है। ये अनुदेश परेड के मैदान में खड़े जवानों को शब्दशः न सुनाये जाएं।

जब रंगरूटों को कोई विशिष्ट गति या हरकत सिखानी हो तब प्रशिक्षक पहले, अपने चारों तरफ स्क्वाड को इकट्ठा करेगा और उन्हें सरल भाषा में बताएगा कि उन्हें क्या करना है। जब उसे पता चल जाए कि स्क्वाड में रंगरूट उसकी बात समझ गये हैं तो वह स्वयं उस विशिष्ट हरकत को करके दिखाए। हरकत दिखाते समय वह स्वयं या अपने प्रदर्शनकर्ता द्वारा की गई हरकत का ब्यौरा स्क्वाड को देगा। इसके बाद स्क्वाड को वही हरकत करने के लिए कहा जाएगा। पहले संख्या के अनुसार; बाद में अलग–अलग अभ्यास करवा कर, तीसरे चरण में सामूहिक रूप से समय गिन कर और चौथे चरण में समय का अनुमान लगाते हुए कार्रवाई कराएगा। इस संदर्भ में इस बात पर जोर दिया जाता है कि रंगरूट हरकतों का अभ्यास करके उन्हें सीखेंगे। अतः अलग–अलग अभ्यास करवाते समय उनकी गलतियां सुधारी जाएं।

रंगरूटों को यह बात सिखाई जाए कि परेड करते समय प्रत्येक व्यक्ति का यह कर्तव्य होगा कि वह हर समय सिधाई में हों, चाहे डाएरेक्टिंग फ्लैंक किसी भी फ्लैंक में क्यों न हो। यह सिद्धान्त खड़े होते समय तथा चल कर थम होने के बाद भी अमल में लाया जाए लेकिन सेरिमोनियल ड्रिल में तब तक ऐसा नहीं किया जाएगा जब तक उन्हें किसी हरकत के पूरा होने के बाद सिधाई लेने का या सजने का आदेश न मिले।

जवानों को शिक्षण के दौरान अभ्यास के मध्य, थोड़े समय के लिये विश्राम का समय दिया जाए।

जब स्क्वाड के कुछ जवानों की विशिष्ट हरकत की अलग–अलग परीक्षा ली जा रही हो तो उस समय बाकी जवानों को आराम से खड़े होने की आजादी दी जाए या उन्हें अपने समय में अभ्यास करने दिया जाए।

कवायद की जिन हरकतों में दो या उससे अधिक कार्रवाई हो उनमें रंगरूट को प्रत्येक हरकत के बाद रुकने के समय में एक सा विराम देने का प्रशिक्षण दिया जाए। आरंभिक शिक्षा के समय स्क्वाड का प्रत्येक जवान हरएक हरकत करते समय गिनती बोलेगा। ऐसा करने से एक मिनट में 40 हरकत निश्चित हो जाती हैं।

खंड–8

कमान शब्द (वर्डस् ऑफ कमाण्ड)

अच्छी कवायद अच्छे कमान शब्दों पर निर्भर करती है।

कवायद प्रशिक्षकों और कवायद करवाने वाले जिम्मेदार व्यक्तियों को कमान शब्द बोलने का बार–बार अभ्यास करना चाहिए। इससे उनमें स्पष्ट और जोर से कमान देने के मामले में आत्म विश्वास आएगा तथा उन्हें अपनी आवाज को सबसे अच्छी तरह प्रयोग करने की आदत पड़ेगी। इस संबंध में यह बात ध्यान में रखी जाए कि छह व्यक्तियों की स्क्वाड को उतने जोर से कमान देने की आवश्यकता नहीं है जितनी एक बटालियन को।

जिन कमानों में एक ही शब्द हो और उनसे पहले सतर्क करने वाले शब्द का इस्तेमाल किया जाए तो कमान शब्द का प्रारंभिक या सतर्क करने वाला भाग सुविचारित और स्पष्ट होना चाहिए तथा नियमानुसार अंतिम या हरकत के लिये इस्तेमाल किये जाने वाले शब्द का उच्चारण तेजी से करना चाहिए (उदाहरणार्थ 'प्लाटून' शब्द धीरे–धीरे बोला जाए और ''थम'' तेजी से बोला जाए) ''सतर्क'' करने और ''हरकत'' करने के कमान शब्दों के बीच एक–सा विराम दिया जाए। किन्तु यदि ऐसा कोई दिया जाने वाला आदेश हो जिसका जल्दी से पालन न हो सकता हो (उदाहरणार्थ घूमना जिसके पालन में कुछ समय लगता है) उसे धीरे–धीरे बोला जाए। उदाहरणार्थ ''बाएं घू – म''।

इस पुस्तिका में सतर्क करने और हरकत करने के लिए दिये गये कमान शब्द सामान्यतः केवल एक बाजू को (फ्लैंक) आधार मानकर लिखे गए हैं जिनमें यथा आवश्यक परिवर्तन करके दूसरी फ्लैंक के लिए भी इस्तेमाल किया जा सकता है।

कमान शब्द सदैव साफ और संक्षिप्त होने चाहिए। अस्पष्ट और धीरे–धीरे बोले गये शब्दों से हरकतों की गति भी मंद हो जाती है। अतएव, इनसे बचना चाहिए।

एक बात हमेशा ध्यान में रखनी चाहिए कि कमान शब्द आदेश होता है। इनका पालन चुस्ती से और सही ढंग से होना चाहिए। शिक्षक को कमान शब्द बोलने के बाद स्क्वाड की कवायद की हरकतों का अवलोकन करना चाहिए तथा हरकत की धीरे–धीरे करने की प्रवृति को रोकना चाहिए। उदाहरणार्थ यदि जवानों को सावधान होने के लिए कहा जाए या कोई हरकत पूरी होने के बाद आराम की मुद्रा में खड़े होने के लिये कहा जाए तो पूर्णतः स्थिर और शांत रहने पर जोर दिया जाए। स्क्वाड को कवायद करते समय आपस में बातचीत नहीं करनी चाहिए। कवायद संबंध में यह सिद्धान्त होना चाहिए कि दूसरी मुद्रा तब आरंभ न की जाए जब तक पहली मुद्रा एकदम सही–सही प्रकार से नहीं कर ली जाती। यदि शुरू–शुरू में गलतियों और धीरे–धीरे हरकत करने की आदत को सुधारने की ओर ध्यान नहीं दिया गया तो आगे चल कर स्क्वाड में अनुशासन नहीं रहेगा। अनुशासन के अभाव में कोई शक्ति उन्हें प्रशिक्षित नहीं कर सकती और न ही कोई जवान अपनी ड्यूटी दक्षता पूर्वक कर सकता है।

यदि कोई कमान शब्द देने के बाद स्क्वाड को अपनी पहले वाली अवस्था में लाना हो तो ''जैसे थे'' शब्द कहा जाए।

ड्रिल करने के लिये बनाये गए कमान शब्द युद्ध–क्षेत्र (फील्ड) में प्रयोग के लिए नहीं है। ये कमान शब्द रंगरूटों के दिमाग और शरीर को प्रशिक्षण देने के लिये बनाये गए हैं ताकि कमाण्डर के आदेशों का कठोरता–पूर्वक पालन करने की इनकी आदत बन जाए।

क्लोज आर्डर ड्रिल करने वाले जवानों की दिये जाने वाले कमान शब्दों का समय नीचे सारणी में बताया गया है:–

कमान शब्द	धीमी चाल में	तेज चाल में
(1)	(2)	(3)
1. थम	जैसे ही बायां पैर दाहिने पैर की सीध में जमीन पर आता है।	जैसे ही दाहिना पैर जमीन पर लगता है।
2. पीछे मुड़	जैसे ही दाहिना पैर जमीन पर बाएं पैर की सीध में आता है।	जैसे ही बायां पैर जमीन पर लगता है।
3. दाहिने मुड़, आधा दाहिने मुड़ दाहिने बन, दाहिने को स्क्वाड बना।	जैसे ही आगे बढ़ने के लिये बायां पैर दाहिने पैर की सीध में आ जाता है।	जैसे ही दाहिना पैर जमीन पर लगता है।
4. बाएं मुड़, आधा बाएं मुड़, बाएं बन बाएं को स्क्वाड बना।	जैसे ही दाहिना पैर आगे आते हुऐ बाएं पैर की सीध में आ जाता है।	जैसे ही बायां पैर जमीन पर लगता है।
5. कदम ताल	जैसे ही दाहिना पैर आगे आते हुए बाएं पैर की सीध में आ जाता है।	जैसे ही बायां पैर जमीन पर लगता है।
6. कदम ताल पर थम	जैसे ही दाहिना घुटना पूरा ऊपर उठे।	जैसे ही दाहिना पैर जमीन पर लगता है।
7. कदम ताल पर आगे बढ़	जब बायां पैर जमीन को छूता है।	जब बायां पैर जमीन पर लगता है।
8. तेज चाल में आ तेज चल	वही	–
9. धीरे चाल में आ धीरे चल	–	जैसे ही बायां पैर जमीन पर लगता है।
10. दौड़ चाल में आ दौड़ के चल	–	जैसे ही बायां पैर जमीन पर लगता है।

खंड–9

निरीक्षण

(i) जब तीन रैंक में परेड कर रहे स्क्वाड का निरीक्षण करना हो तो निरीक्षण के लिये रैंकों को खोलना होगा और निरीक्षण होने के बाद निकट लाइन में लाना होगा। इसके लिये निम्नलिखित आदेश होंगे:–

(क) खुली लाइन चल : इसमें सामने की लाइन दो कदम आगे और पिछली लाइन डेढ़ कदम (30"+15") पीछे होगी।

(ख) निकट लाइन चल : इसमें सामने की लाइन दो कदम पीछे और पिछली लाइन दो कदम आगे होगी। रैंक फिर से निकट लाइन बनाएंगे। अगला रैंक डेढ़ कदम (30"+15") पीछे जाएगा और पिछला रैंक डेढ़ कदम (30"+15") आगे बढ़ेगा। इस पूरे समय के दौरान बीच वाली रैंक सावधान की स्थिति में स्थिर रहेगी।

(ii) कवायद प्रशिक्षक अपने जवानों की व्यक्तिगत सफाई, हथियार तथा अन्य साज सामान और वर्दी की हालत देखेगा। जवानों को हमेशा साफ सुथरी और चुस्त वर्दी पहनने पर जोर दिया जाए। इस संबंध में शिक्षक नये रंगरूट के सामने स्वयं एक ऐसा उच्च आदर्श प्रस्तुत करेगा जिसका वह रंगरूट अनुकरण करेगा। मनुष्य, अच्छी आदतें किसी का प्रत्यक्ष उदाहरण देकर जल्दी सीखता है किसी अन्य पद्धति से नहीं।

(iii) कवायद प्रशिक्षकों को निरीक्षण के तरीके के बारे में प्रशिक्षण दिया जाएगा ताकि वह परेड को और एक बार देखकर पता लगा सके कि उसके जवान अच्छी तरह से वर्दी में हैं या नहीं।

(iv) यदि किसी ऐसे जवान को अपनी वर्दी ठीक करने का आदेश दिया गया हो जो सामने या बीच में लाइन में खड़ा हो तो वह एक कदम आगे बढ़ेगा तथा यदि ऐसा जवान पिछली लाइन में खड़ा हो तो वह एक कदम पीछे जाएगा तथा वर्दी ठीक करने के बाद वे अपनी अपनी लाइन में आ जाएंगे।

(v) अनुभव प्राप्त हो जाने के बाद निम्नलिखित मुद्दे अभ्यास जनित हो जाते हैं और इनका पता निरीक्षण के दौरान और जवानों द्वारा उनके अनुपालन के समय लग जाता है।

जब तक वर्दी इस्तेमाल करने लायक हो उसे पहनना चाहिए। वर्दी अगर कुछ घिसी हुई भी हो तब भी वह साफ सुथरी सही ढंग से प्रेस

और मरम्मत की हुई होनी चाहिए।

(vi) निरीक्षण कार्य आमतौर पर सामने की लाइन के दाहिने जवान से शुरू किया जाता है और ऊपर से नीचे की तरफ जारी रखा जाता है। सामने की लाइन का निरीक्षण पूरा होने के बाद मध्य और पिछली लाइन का निरीक्षण किया जाता है। हथियारों का निरीक्षण करने से पहले आदमियों का निरीक्षण किया जाता है। अगली लाइन का निरीक्षण पूरा करने के बाद अन्य दोनों लाइनों का इस प्रकार निरीक्षण किया जाता है।

2. सामान्य प्रभाव :– क्या जवान साफ सुथरा है, क्या उसकी वर्दी साफ और चुस्त है, प्रेस हुई है, ठीक ढंग से पहनी हुई है? क्या उसके हथियार साफ हैं? क्या वह सावधान की स्थिति में सही ढंग से खड़ा है?

टिप्पणी :– निरीक्षण शुरू करने से पहले देखा जाए कि सब जवान सही स्थिति में खड़े हैं और यदि कोई जवान सही स्थिति में न खड़ा हो तो उसे ठीक कर देना चाहिए। निरीक्षण के दौरान निरीक्षण करने वाले अफसर के साथ प्लाटून या टुकड़ी कमाण्डर निरीक्षण करने वाले अफसर की बातों को नोट करेगा।

3. सिर का पहनावा

(क) 'सामने' से

(i) क्या हैट, पगड़ी या कैप साफ है तथा इसमें पसीना और तेल आदि तो नहीं लगा हुआ है?

(ii) क्या सिर का पहनावा सही ढंग से सिर पर रखा गया है या पीछे की ओर जा रहा है या एक ओर झुका हुआ है?

(ख) 'पीछे से'

(i) क्या सिर का पहनावा पीछे से साफ है?

(ii) क्या बाल छोटे हैं? यदि इस संबंध में कोई शक हो तो जवान से टोपी आदि उतारने के लिये कहा जाए जिससे यह पता लग सके कि बाल बढ़े तो नहीं है?

4. चेहरा और गर्दन साफ हो तथा दाढ़ी बनाई हुई हो।

टिप्पणी :– इस बात का ध्यान रखें कि जवानों की आंखें निरीक्षण करने वाले अफसर का पीछा न करें।

5. कमीज़

(क) सामने से –

(i) कमीज़ अच्छी तरह फिट होने चाहिए तथा ठीक प्रकार से अन्दर दबी हुई और मुड़ी हुई होनी चाहिए।

(ii) कमीज़ में अच्छी तरह से कलफ लगी हो यदि लंबी आस्तीन की कमीज़ पहनी हो तो बाहें भली भांति मुड़ी हुई हों।

(iii) बटन टुटे हुए न हों तथा मजबूती से लगे हुए हों।

(iv) रैंक का ओहदा और पदनाम के बैज आदि साफ होने चाहिए तथा ठीक लगे हों।

(v) सिलाई की जगह से धागे आदि निकले हुए नहीं होने चाहिए।

(vi) यदि ट्यूनिक पहनी हो तो इस बात का ध्यान रखें कि इसमें कलफ अच्छी तरह लगी हुई हो तथा कमीज का कालर और टाई सही ढंग से लगे हैं और साफ है।

(vii) देखें कि बजन साफ है और सही ढंग से लगाये गये हैं।

(ख) पीछे से :–

(i) क्या कॉलर साफ है?

(ii) क्या कमीज़ का पिछला भाग ठीक प्रकार से अंदर दबा हुआ और नीचे खिचा हुआ है?

6. पेटी (बेल्ट)

(क) सामने से :–

(i) यह इतनी मजबूती से और कस कर बांधी गई हो ताकि मार्च करते समय संगीन के वज़न से एक तरफ नीचे न खिसक जाए।

(ii) बक्कल आगे ठीक बीच में तथा कमीज़ की बटनों की सीध में होने चाहिए। यदि बैच बेल्ट हो तो पीतल के लूप बक्कल से एक इंच दूर होने चाहिए।

(iii) बेल्ट की पीतल और चांदी की फिटिंग अच्छी प्रकार पालिश होनी चाहिए।

(iv) यदि ट्यूनिक पर क्रास बेल्ट पहनी हो तो यह देखें कि यह कॉलर से पहले के दो बटनों को बीच से क्रास करें।

(ख) पीछे से:–

(i) यदि बेल्ट के साथ फ्राग पहना हो तो यह बाएं कूल्हे की तरफ हो–हथियारों के नीचे या पीठ के पतले भाग में नहीं होनी चाहिए।

(ii) बेल्ट के पीछे फिटिंग साफ होनी चाहिए।

7. हाथ :– हाथ साफ होने चाहिए। इन पर तंबाकू या किसी अन्य चीज़ के दाग नहीं होने चाहिए। नाखून साफ तथा कटे हुए होने चाहिए।

8. निकर और पैंट

(i) निकर और पैंट भी भली–भांति विशेष रूप से कमर से, फिट हों।

(ii) ये विनियमों में दिये तरीके से सिली हो, इनमें कलफ ठीक लगी हुई हो तथा क्रीज ठीक हो।

9. हौजटाप्स

(i) ये अनुमोदित रंग की हो।

(ii) ये घुटने के एकदम नीचे बंधे हुए हों तथा इसके ऊपरी मोड़ सही ढंग से मुड़े हुए हों और यह मोड़ लगभग 4 इंच का हो।

(iii) यदि गेटर पहने हों तो इन्हें भी देख लें।

10. पट्टी और एन्कलेट

पट्टियां

(i) स्वीकृत डिज़ाइन और रंग की हों।

(ii) ये भली भांति बंधी हुई हों तथा टेप का बो एन्कल की सीध में और सफाई से बंधा हो।

(iii) यदि घुटने के आस–पास लपेटा जाए तो इसमें दो से अधिक घेरे नहीं दिखाई देने चाहिए।

एन्कलेट

(i) इनका आकार जरूरत के अनुसार होना चाहिए। ये इनके बड़े होने चाहिए कि इनमें सलवट न पड़े तथा साइड से बाहर न निकल जाएं या, उभर न आये। इनको इतनी मजबूती से बांधा जाए कि ये सीधे रहें और घुटने के पास मुड़ न जाएं।

(ii) किनारा और फीते घिरे हुए नहीं होने चाहिए।

(iii) यदि बक्कल पीतल के हों तो इन्हें आगे और पीछे दोनों तरफ से साफ किया जाए।

11. बूट

(क) सामने से

(i) बूट अच्छी तरह से मरम्मत किये हुए हों, इनमें दरारे न हों, फीते मजबूत हों, ये मुड़े हुए या गांठ वाले न हों तथा इतने कसकर बंधें होने चाहिए कि फीतों के छेद सट जाएं।

(ii) बूट सफाई से पॉलिश हुए हों।

(iii) सावधान की स्थिति में पैरों का कोण सही (30 डिग्री) हो। यदि हथियार उठाने हों तो कुंदे का अगला बूट के पंजे की सीध में हो।

(ख) पीछे से:–

(i) दोनों एड़ियाँ एक साथ और एक लाइन में हों।

(ii) बूट के तले अच्छी तरह से मरम्मत शुदा है या नहीं और उन पर स्टड लगे हुए हैं या नहीं यह देखने के लिये कुछ जवानों को एक पैर एक साथ उठाने के लिये कहें।

12. हथियारों का निरीक्षण

(i) हथियार साफ तथा सूखे होने चाहिए।

(ii) स्लिंग मजबूत और ठीक से बंधी हुई हो।

(iii) आर्डर के लिये तैयार रहने की पोजीशन में यह देखें कि साइट गिरी हुई हो तथा सुरक्षा तालक (सैफ्टी कैच) पीछे हो।

ड्रिल एवं परेड

अध्याय III

ड्रिल और परेड

''ड्रिल'' शब्द का प्रार्दुभाव युद्ध के प्राचीन परम्परा की युद्ध संरचनाओं से हुआ है। जिसमें सैनिकों को नियमनिष्ठ युद्ध संरचनाओं में रखा जाता था ताकि उनकी सैन्य प्रभावशीलता बढ़ाई जा सके। सैन्य संरचना सामूहिक युद्धकला का विकल्प था, जिसमें सैनिकों में कठोर अनुशासन एवं कमाण्डरों में सक्षमता आवश्यक थी। जब तक अनुशासित सैनिक, सैन्य संरचना बनाये रख सकते, वे अपने से कम संगठित दुश्मनों पर प्रभुता बनाये रख सकते थे।

हालांकि युद्धकला ने छापामार युद्ध एवं उन्मुक्त संरचनाओं के पक्ष में सैन्य संरचनाओं को पीछे छोड़ दिया है। आधुनिक सेनायें आज भी समारोहिक उद्देश्यों के लिए शांति काल में अपनी कार्य क्षमता के लिए, संगठन में सहजता के लिए तथा अनुशासन के प्रोत्साहन के लिए इन संरचनाओं का प्रयोग करती हैं। ड्रिल तथा मार्च इसी के समानार्थक है। 16वीं शताब्दी में प्रिन्स मोरिस आफ ओरेन्ज के सैनिकों ने ड्रिल करना प्रारम्भ किया। अंग्रेजी शब्द ''ड्रिल'' मध्य कालिन डच भाषा से आया है। पुलिस और अर्द्धसैनिक बलों के सभी नवारक्षियों को ड्रिल सिखलाया जाता है, ताकि वे एक दल के रूप में कार्य करना एवं आगे बढ़ना सीख लें। इसके अतिरिक्त विभिन्न संरचनाओं का प्रयोग दंगा नियंत्रण के लिए आज भी किये जाते हैं।

''ड्रिल'', ड्रिल करने वाले सैनिकों के लिए एक फौजी शब्द है, जिसका अर्थ है कुछ कार्यों को पुनरावृत्ति की मदद से याद करना ताकि वे सहज हो जाएं। इसमें जटिल कार्यों को सहज अनुकार्यों में पृथक कर दिया जाता है, जिनका अभ्यास अलग से किया जा सकता है। जब इन कार्यों को एकीकृत कर दिया जाता है तो वांछित फल की प्राप्ति होती है। युद्धरत बल में सभी हालातों में अधिकतम् प्रभावशीलता के लिए यह अति आवश्यक है। जब मानव ने व्यक्तिगत की अपेक्षा मिलजुल कर एक दल के तौर पर लड़ना प्रारम्भ किया, ड्रिल की महत्ता और बढ़ गई, सेनाओं के आकार में वृद्धि के साथ, युद्ध के एक महत्वपूर्ण अंग के रूप में ड्रिल की विशिष्टता और बढ़ी। उदाहरण के लिए मैसिडोन के फिलीप द्वितीय ने अपने सैनिकों को इस तरह अनुशासित किया कि वे तुरन्त झुण्ड बना सकते थे। यह सेनानायक के रूप में उनकी सफलता के लिए बहुत महत्वपूर्ण था। अपने लम्बे इतिहास में प्रभावशीलता और घातकता बढ़ाने के लिए रोमन सेनाओं ने ड्रिल का प्रयोग किया। साम्राज्यों के पराभव पर और यूरोप में अन्धयुग के प्रारम्भ पर अधिकतर यूरोपीय जागीरदार किसानों से प्राप्त होने वाले कर पर जी रहे थे और उनके वैभवी योद्धा उनके लिए युद्ध लड़ते थे। अधिकांश समय ये योद्धा एक व्यक्ति के तौर पर लड़ते थे। बड़ी तादात में सैन्य ड्रिल का प्रयोग केवल सबसे बड़े दुश्मन, दुश्मन देशों जैसे नार्मनों के विरुद्ध किया जाता था। संयुक्त राज्य अमेरिका में ड्रिल बेरन वाला स्टूबेन के योगदान पर आधारित था जो एक पारसी सैन्य अधिकारी था और जिसने प्रायद्विपीय सेवा में स्वेच्छा से अपनी सेवायें दी थी। पेन्नसिल्वेनिया के फोर्ज घाटी में शीत ऋतु के दौरान स्टूबेन ने 100 सैनिकों की एक समवाय को मस्कट अभ्यास की शिक्षा दी। इन सैनिकों ने इस शिक्षा का हस्तान्तरण पूरी प्रादेशिक सेवा में किया।

परेड चार दिशाओं से बनती हैः–

आगे बढ़ना

पीछे

बांये

दाहिने

आगे बढ़ना, हरकत की मौलिक दिशा है, जिस दिशा का सैनिकों को वास्तव में असावधानीवश सामना करना पड़ रहा है। (जहाज के अग्रभाग के समान) पीछे लौटना, आगे बढ़ का विपरीत है।

हरकत की मौलिक दिशा के विपरीत। (जहाज के पृष्ठ के समान)।

बाऐं है, आगे बढ़ने का बांया। (जहाज के बन्दरगाह के समान है) दाहिने है, आगे बढ़ने का दाहिना (जहाज का दाहिना भाग के समान)।

यदि आगे बढ़ बदलती है, तब नये आगे बढ़ के आधार पर अन्य सभी दिशायें भी बदल जाएंगी।

हरकतें : एक समय में सिर्फ एक व्यक्ति ही परेड भार साधक होता है। इस व्यक्ति को परिवर्तन करना बहुत ही व्यवहारिक है। यह उस व्यक्ति को स्पष्ट करने के लिए, जो वर्तमान में उसके अधीन है, और इसके लिये उनका ध्यान आकृष्ट करना हो।

परेड के दौरान सदैव स्पष्ट रूप से बोला जाए अन्यथा, व्यक्ति हरकत को सीमित कर लेते हैं, तात्पर्य है कि वे तब ही यथावत हरकत करते हैं, जबकि उन्हें बोला जाए और वे वहीं सटीक से करेंगे जो उनसे स्थापित करने के लिए कहा जाये। अधिकांश अवस्थाओं में किसी भी प्रकार की हरकत अस्वीकार्य है, और इसका विस्तार उतने में ही रोक लिया जाये कि सैनिक परेड में मूर्च्छित हो न जाये। यद्यपि किसी भी हालात में अनेक घन्टों तक सूर्य की गर्मियों में सीधे खड़े रहने पर मूर्च्छित होना, चिकित्सीय अक्षमता का चिह्न पाया जाता है।

सावधान : सीधा खड़े हो, नजर सामने, छाती उठी हुई, कंधे पीछे और नीचे, घुटने सीधे पर मुड़े नहीं हो। एड़ी मिली हुई, पंजों के बीच 30 डिग्री का अंश (540 मिल्स), सभी मांसपेशियां सख्त, हाथों की मुट्ठियाँ बन्द और अंगूठा पतलून की सिलाई के साथ मिली हुई हो।

विश्राम : सावधान की परिवर्तित अथवा जिसमें बाएं पैर को कंधे की चौड़ाई की पंक्ति में ले जाएं और हाथों को पीछे ले जाएं तथा बाजू पूरी खीचीं हुई। दाहिना हाथ बाएं हाथ की हथेली पर, साथ में सभी अंगुलियां मिली हुई और नीचे की तरफ खींची हुई हों।

आराम से : दोनों पैर विश्राम अवस्था में रहें, बाजुओं को साइडों में कुछ अधिक वास्तविक खड़े अवस्था में ले जायें। सदस्य अपनी मांसपेशियां को आराम दे सकते हैं और अल्पतम् हरकतें करें।

कमाण्ड : विशिष्ट परेड कमाण्ड बिल्कुल स्पष्ट और जोरदार स्वर में बोले जाने चाहिए तथा इसके चार प्रमुख भाग होते हैं।

पहचान सूचक : या जिस कमाण्ड का पालन करना हो। यह आदर्शभूत (संख्या) सैक्शन, (संख्या), प्लाटून, (वर्ण) कम्पी या (नाम) रेजिमेन्ट होता हैं हालांकि बहुधा उपसर्ग हटा लेते हैं, यदि वहां पर अनिश्चित अवस्था न हो (सैक्शन, प्लाटून, कम्पनी या रेजिमेन्ट) कमाण्ड सिर्फ परेड कमाण्डर के द्वारा दिया जाएगा तथा परेड के आकार का ध्यान नहीं रखते हुए, पूरी परेड का सन्दर्भ दिया जाता है।

पूर्व विचार सम्बन्धी : या एक भाव वाचक बोध में क्या करना है, आगे बढ़ने के लिए चलना, पीछे के तरफ लौटना इत्यादि (इसे हमेशा अमेरिकन व्यवहार में प्रयोग नहीं किया जाता है)

चेतावनी : या क्या करना है का पहला भाग। इसे ''प्रारम्भिक कमाण्ड'' भी कहते हैं।

कार्यकारी या निष्पादन : ऐसे अक्षर जिनमें सैनिक वास्तव में हरकत करते हैं। यह अन्य सेवाओं की तरह सत्य है, तथापि कमाण्डर का लहजा, अक्सर बहककर, आसानी से कमाण्ड में सुना जा सकता है। जैसे कि ''सलामी शस्त्र और बाजू शस्त्र''। यहां पर चेतावनी और कार्यकारी कमाण्ड के बीच सदैव सार्थक विराम रहता है। कार्यकारी कमाण्ड पर सदैव, प्रारम्भिक कमाण्ड से ज्यादा जोर दिया जाना चाहिये। प्रायः यहां पर द्विआर्थकता का कोई मौका नहीं है और अधिकतर कमाण्ड अकथनीय हो सकते हैं ऐसे मौकों पर हमेशा चेतावनी और कार्यकारी अकथनीय हो सकते हैं। ऐसे मौकों पर हमेशा चेतावनी और कार्यकारी कमाण्ड दिये जाने चाहिए।

सामान्य परेड कमाण्ड :

फाल–इन : क्या पूर्व निर्दिष्ट संरचना में टुकड़ी खड़ी है।

फाल–आउट : क्या टुकड़ियां फाल आउट हैं। यह

दाहिने मुड़ के साथ या तो तीन कदम चलकर या सीधी लाईन में परेड मैदान के किनारे तक तेज चलकर किया जाता है। यह निश्चित प्रसंग है।

डिस–मिस : एक फाल आउट जहां पर सैनिकों के पास अगले निर्देशित कार्य पीरियड के लिए रिक्त समय है (सामान्यतः दिन की समाप्ति पर स्वाभाविक रूप में होता है, यद्यपि यह अक्सर फाल–आउट का भ्रान्तिवश स्थानापन्न होता है।)

सावधान : क्या सैनिकों ने नियत रूप से सावधान पोजीशन अपनाया है। अधिकतम सिकोड़ने वाली अवस्था (पांव एक दूसरे के साथ), लेकिन एकमात्र अवस्था, जिससे सैनिक वास्तव में आगे बढ़ते हैं। सेल्यूट देने और सैनिकों को सेल्यूट लौटाने की कार्रवाई सावधान अवस्था में होती है।

सीधाई कमाण्ड :

दाहिने सजना, सज या मात्र दाहिने सज : यूनिट के सभी सदस्य, दाहिने दर्शक के अतिरिक्त दो कदम आगे लेते हैं, रुकें, अपने हथियार को जमीन के समानान्तर उठायें साथ ही इसी समय चुटकी से अपने सिर को दाहिनी ओर चेहरा करते हुए ले जाएं, जब तक अन्यथा निर्देशानुसार (कोहनी सजना, कन्धे सजना)। इसके बाद, रुकें, और तब नयी पोजीशन पर स्थान बदलते हैं, यहां पर उनका हाथ दाहिने तरफ के सैनिकों के कन्धे के साथ मिलता हुआ हो। 'सामने देख' के कमाण्ड पर सामने की पंक्ति अपने हथियार को नीचे जमीन पर लाये और चेहरा सामने करे, जबकि अन्य सभी पद सरलता से चेहरा सामने करे।

आराम अवस्थाएं :

विश्राम : क्या व्यक्ति ने अधिक आरामदायक अवस्था अपनाई है। विश्राम अवस्था में, दोनों पैर और कन्धे खुले हुए, ऐसे में कोई भी हरकत स्वीकार्य नहीं है। इसका प्रयोग आमतौर पर तब होता है जब सैनिकों को अल्प अवधि के लिए इन्तजार करना हो। यह एक शुरूआती अवस्था भी है जब सैनिकों को किसी संरचना में खड़ा होना हो। विश्राम से सावधान पोजीशन बदली करना और जैसे थे, होना, या बातचीत करना एक निर्धारित मानक है। जब परेड का कमाण्ड हस्तांतरित किया जाता है। (विशेषतया कमांडिंग अधिकारी और सार्जेन्ट मेजर के मध्य में) संरचना की कमाण्ड वास्तव में तब तक हस्तान्तरित नहीं मानी जाएगी जब तक कि नया कमाण्डर कमाण्ड नहीं दे देता है।

आराम से : क्या सैनिकों ने अगली सबसे आरामदायक मुद्रा अपनाई है। इसमें हाथ साइडों में फैले हुए होते हैं और कन्धों को कुछ ढीला छोड़ा जा सकता है। यह कुछ समय के लिए होता है, हमेशा के लिए नहीं, एक अप्रत्यक्ष आराम के लिए होता है।

हथियार के साथ मार्च करना/सेल्यूट :

बगल शस्त्र : यदि व्यक्ति के पास राइफल बाजू शस्त्र में है, तब इसे उठाकर और बाएं बगल में ले जाया जाएगा। यद्यपि, बाएं और दाहिने बगल शस्त्र दोनों ही मान्य कमाण्ड हैं। जब तक स्पष्ट रूप से नहीं कहा गया हो, दाहिने कार्रवाई ही किया जाएगा। पुलिस और अर्द्धसैनिक बलों के कार्मिकों को बगल शस्त्र के लिए सावधान रहना चाहिये। यह आमतौर पर ले जाने के बजाय, फेंककर किया जाता है।

बाएं शस्त्र : हथियार को व्यक्ति के सामने लाया जाएगा, दाहिने हाथ से स्माल आफ दि बट पर या तुल्यमान पर पकड़े तथा बाएं हाथ फोर स्टॉक पर या तुल्यमान पर पकड़ हासिल करें।

सलामी शस्त्र : पुलिस और अर्द्धसैनिक बलों के कार्मिकों उनके विशिष्ट हथियार से सेल्यूट करते हैं। बिना हथियार के कार्मिक, सिर के पहनावे अनुसार अभिवादन का प्रयोग करते हैं। अक्सर अधिकारी गण अपनी टुकड़ियों की तरफ से सेल्यूट कर सकते हैं और ऐसी द्विआर्थकता मसलों पर कार्मिकों से पूर्व विचार विमर्श कर लिया जाए। जब सम्भव हो, इस अक्सर पूर्व विचार संबंधी जनरल सेल्यूट के साथ प्रयोग किया जाता है।

बाजू शस्त्र : यदि कार्मिक हथियार लिये हुऐ हो, जिस पर आदेश मिलने पर वे इस नीचे लाएंगे, तो यह जमीन पर आराम के लिए टिकाया जाता है, दाहिने बूट के बाहरी टो को छूते हुए तथा दाहिने बाजू तनिक मुड़ा हुआ और सहारा देते हुए होता है।

सेल्यूट या मार्च के दौरान सेल्यूट :

सामने का सेल्यूट या सेल्यूट : दाहिने हाथ को इस तरह उठाया जाता है कि सामने बाजू 45 डिग्री के अंश पर हो जबकि अंगुलियां दाहिने कनपटी की और रुख करती हो। इसमें सामान्यतः गणना ''अप (ऊपर) दो, तीन, डाऊन (नीचे) किया जाता है। मार्चिंग के दौरान इसी भांति होता है। सिर्फ गणना में अन्तर इस प्रकार ''अप, दो, तीन, चार, पांच, डाऊन, आगे'' होता है।

दाहिने सेल्यूट : दाहिने हाथ को इस तरह उठाया जाता है कि सामने की बाजू 45 डिग्री के अंश पर हो, जबकि अंगुलियां दाहिने कनपटी की ओर रुख करती हों। इसमें सामान्यतः गणना ''अप, दो, तीन, डाऊन किया जाता है। मार्चिंग के दौरान इसी भांति होता है, सिर्फ गणना में अन्तर इस प्रकार ''अप, दो तीन, चार, पांच, डाऊन आगे किया जाता है। यह दाहिने देख की कार्रवाई में किया जाता है, दाहिने दर्शक को छोड़कर, जो सामने देखना जारी रखेगा, जिससे स्क्वाड, प्लाटून इत्यादि की सीधाई, सीधी रहे।

बाएं सेल्यूट : दाहिने हाथ को इस तरह उठाया जाता है कि सामने की बाजू 45 डिग्री के अंश पर हो, जबकि अगुलियां दाहिने कनपटी की ओर रुख करती हैं। इसमें सामान्यतः गणना ''अप, दो तीन, डाउन'' किया जाता है। मार्चिंग के दौरान इस भांति होता है, सिर्फ गणना में अन्तर इस प्रकार ''अप, दो, तीन, चार, पांच, डाऊन आगे किया जाता है। यह बाएं देख की कार्रवाई में किया जाता है। दाहिने दर्शक को छोड़कर जो सामने देखना जारी रखेगा, जिससे कि स्क्वाड, प्लाटून इत्यादि की सीधाई, सीधी रहे।

मार्च करते समय मुड़ना :

दाहिने मुड़ना : दाहिने पैर की ऐड़ी और बाएं पैर के पंजे पर 90 डिग्री के अंश पर दाहिने मोड़ा जाता है। चेतावनी और कार्रवाई दोनों कमाण्ड बांये पैर पर दिये जाते हैं। जब बांया पैर उठा हुआ जमीन के सामान्तर हो, (यद्यपि पुलिस और अर्द्धसैनिक बलों के द्वारा विभिन्न तरीके अपनाये जाते हैं) सावधान अवस्था के लिये जमीन पर टिकाया जा रहा हो। यह कार्रवाई एक नियत बिन्दु पर की जाती है।

बाएं मुड़ना : बाएं पैर की एड़ी और दाहिने पैर के पंजे पर 90 डिग्री के अंश पर बाएं मोड़ा जाता है। जब दाहिना पैर, उठा हुआ जमीन के समानान्तर हो तथा सावधान अवस्था के लिए जमीन पर टिकाया जा रहा हो। यह कार्रवाई एक नियत बिन्दु पर की जाती है।

पीछे मुड़ना : दाहिने की ओर 180 डिग्री के अंश पर मुड़ना जो दाहिने मुड़ने का अतिरंजित रूप है।

चलते हुए दाहिने फ्लैंक या दाहिने घूमना : यह बिल्कुल वैसा ही होगा जैसा मार्च करते समय होता है। चलने वाले सभी सदस्य 90 डिग्री के अंश पर चलते हुए दाहिने एड़ी और बाएं पंजे की मदद से दाहिने ओर घूम जाते हैं।

चलते हुए बाएं फ्लैंक या बाएं घूमना : यह बिल्कुल वैसा ही होगा जैसा मार्च करते समय होता है। चलने वाले सभी सदस्य 90^0 के अंश पर चलते हुए बाएं एड़ी और दाहिने पंजे की मदद से बाएं और घूम जाते हैं।

स्थिर अवस्था में मुड़ना :

दाहिने मुड़ना : शरीर को 90^0 के अंश पर दाहिने घुमाओ। घुटने को तेजी के साथ मोड़ते हुए बाएं पैर को उठाकर, दाहिने पैर के पास, सावधान अवस्था में तेजी से मिलाओ।

बाएं मुड़ना : दाहिने मुड़ने का ही दर्पण प्रतिबिम्ब।

पीछे मुड़ना : शरीर घड़ी के रुख, 180^0 के अंश पर दाहिने घुमाएं, घुटने लॉक किऐ हुए, बांये घुटने को तेजी के साथ मोड़ते हुए बांये पैर को उठाकर, दाहिने पैर के पास, सावधान अवस्था में तेजी से मिलाओ।

आधा दाहिने मुड़ना : बिल्कुल दाहिने मुड़ की भांति, लेकिन मुड़ना केवल 45^0 अंश का होगा।

आधा बाएं मुड़ना : बिल्कुल बाएं मुड़ की भांति,

लेकिन मुड़ना केवल 45^0 अंश का होगा।

रंगरूट के लिए कवायद गति : जब एक रंगरूट पुलिस प्रशिक्षण स्कूल में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहा हो, प्रायः उनके प्रत्येक परेड की हरकत के समय को गिनती में पुकारते हैं, उदाहरण के लिए बाएं या दाहिने मुड़, वे पुकारेंगे ''एक'' जब तक वे मुड़ रहे हों, ''दो'' है दुरुस्त ठहराव, ''तीन'' समय है बाएं या दाहिने पैर को समानान्तर पोजीशन के लिए तथा ''चार'' समय है, पैर को जोर से जमीन पर मारने के लिए है।

सेल्यूट के लिए रुकने पर, रुकें, चैक, एक दो फिर पुकारें दो, तीन अप (तब अपने बाजू को सेल्यूट के लिए ऊपर लाएं, पुकारेंगे दो, तीन, ठहराव, एक या दो सैकण्ड के लिए तब अपने बाजू को नीचे सावधान अवस्था में लाएं। दिए गये कमाण्ड के अनुसार कार्रवाई करें।)

मार्च करते हुए सेल्यूट करना : कमाण्ड हमेशा बाएं पैर पर दिया जाता है। जब मार्च कर रहे हों, आपको कमाण्ड बाएं पैर पर मिलेगा, सेल्यूट करें, दुरुस्त ठहराव, दाहिने सेल्यूट करने के लिए, अपने बाएं पैर पर से सेल्यूट करें, जिसमें आप पुकारेंगे अप खाली छोड़े दो, तीन, चार, पांच, नीचे (तब आप अपने बाजू को नीचे लाएं और चेहरा सामने करें) दाहिने हाथ को बाएं पैर के साथ झुलाते हुए मार्च जारी रखें।

मार्च करने की गति :

तेज चाल : इसमें 120 कदम प्रति मिनट, 30 इन्च प्रति पग की मानक गति है। कदमों की गति, दस्ता कमाण्डर द्वारा दी गई गति और बैण्ड की थाप की तेजी पर निर्भर करती है।

धीरे चाल : यह एक समारोहिक चलना है जो अंत्येष्टि कवायद और यूनिट निशान को टुकड़ियों के सामने ले जाते समय किया जाता है। इसकी मानक गति 60 कदम प्रति मिनट है।

दौड़ चाल : यह मुख्यतः 180 कदम प्रति मिनट की दर से मन्द गति दौड़ है। यह तेज चाल की गति से अनुमानित दोहरी गति का होता है और तब भारी भार ले जाया जा रहा हो उस दौरान इसे किया जाता है। इसे प्रायः गलती से तेज या साधारण दौड़ के रूप में वर्णित किया जाता है।

इजी मार्च (आराम) : यह लगभग तेज चाल के समय का बिना किसी सीमाबद्ध का मार्च है। इसका प्रयोजन फील्ड मार्च तथा अन्य विषम परिस्थितियों के लिए किया गया है। यह जरूरी नहीं है कि लड़ाई की स्थिति में ही इसका प्रयोग किया जाए।

कदम ताल : यह आवश्यक रूप से अपने ही स्थान पर किया जाने वाला मार्च है, जिसमें घुटना जमीन के समानान्तर उठाया जाता है या पैर को जमीन से 6 इन्च ऊपर बार–बार उठाया जाता है। इसको करने का प्रयोजन बड़ी परेड़ में जब आगे बढ़ने की आवश्यकता नहीं हो, तब समय मिलाने के लिए किया जाता है।

आगे बढ़ या आगे या फारवर्ड मार्च : इसको करने का मूल कारण कदम ताल करती हुई टुकड़ी को सामान्य मार्च के लिए चलाना है।

अश्वारोही कवायद : अश्वारोही कवायद करने का अभिप्राय युद्ध के लिए व्यक्ति और अश्वों, दोनों को एक साथ प्रशिक्षित करना था। आधुनिक खेल स्पर्धाओं में न्यूनतम् आकार में ''ड्रैसेस'' के रूप में आज भी प्रचलित है। किनारे की ओर चलना, घिरनी की तरह चक्कर काटना, इत्यादि ऐसी हरकतें थीं जो अश्वारोही दलों के लिए युद्ध के लिए ब्यूह बनाने के लिए आवश्यक थी। स्पेनिश घुड़सवारी स्कूल के लिपिज्जेनर स्टालिन्स को परम्परागत ड्रैसेस, जो आधुनिक ड्रैसेस का उद्‌गम है, का स्थापक माना जाता है। उच्चगति पर संकेत के द्वारा घुड़सवारी कवायद की शुरूआत कनाडा के माउन्टिज म्यूजिकल राईड ने हमको प्रदत्त की।

विश्राम

सावधान

सैल्यूट

दाहिने देखते हुए सैल्यूट

बायें देखते हुये सैल्यूट

सामने से तेज चलते हुए

चलते चलते दाहिने सैल्यूट

चलते चलते बायें सैल्यूट

किर्च के साथ सैल्यूट

चलते चलते किर्च के साथ दाहिने सैल्यूट

किर्च के साथ सावधान

ड्रिल में काम आने वाले उपकरण निम्नलिखित हैः–

1. पेस स्टिक
2. बैक स्टिक
3. एंगल बोर्ड
4. मेट्रोनिम
5. ड्रम और ड्रमर

पेस स्टिक :– यह कदमों की लम्बाई या ड्रिल ग्राउण्ड नापने के काम आती है। इसकी मदद से ग्राउण्ड की मार्किंग भी की जाती है। एडजेस्टिंग स्केल में 12,15,21,24,27,30,33, और 40 इंच के अंक खुदे होते है। इसके हिस्सों के नाम– हेड, फ्रन्ट लेग, रियर लेग, शू, एडजेस्टिंग स्केल ।

बैक स्टिकः– जो जवान कंधा आगे और कमर झुकाकर मार्च करते है, उनकी ड्रिल सुधारने के लिए इसका इस्तेमाल किया जाता है।

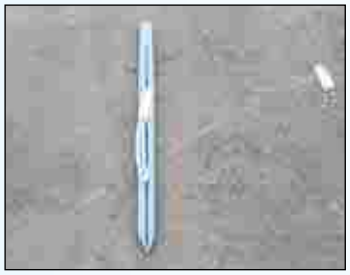

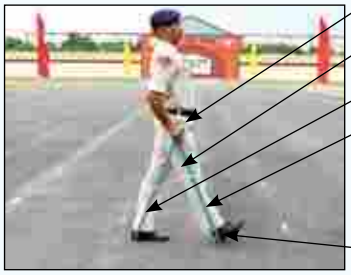

एंगल बोर्डः– यह सावधान पोजीशन में पंजों के बीच का कोण नापने के काम आता है या सावधान पोजीशन ठीक करने के काम आता है।

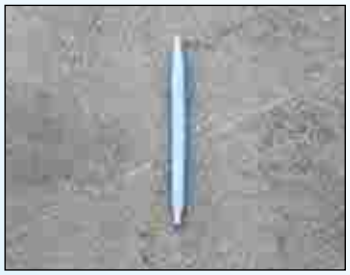

मेट्रोनिमः– इसकी मदद से कदमों की रफ्तार मापते है।

ड्रम और ड्रमरः– इससे परेड में तालमेल और जोश पैदा होता है।

अध्याय IV

वयस्क प्रशिक्षणार्थियों में उत्साह एवं प्रेरणा जागृत करने में प्रशिक्षण अनुदेशक की भूमिका

बल के अधिकारियों द्वारा पुलिस कर्मियों और अर्द्धसैनिक बलों के प्रशिक्षण पर ध्यान केन्द्रित किया गया। पुलिस कर्मियों के प्रशिक्षण में सुधार के लिए पदमनाभैया कमेटी ने अपनी रिपोर्ट में पुलिस विभाग में सुधार के लिए उनको प्रशिक्षण देने की महत्ता पर अपनी सिफारिश में कहा कि आउट डोर प्रशिक्षण, पुलिस प्रशिक्षण का एक महत्वपूर्ण घटक है। जिसमें कवायद एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। कवायद प्रशिक्षण से व्यक्तियों में गर्व की अनुभूति का विकास होता है और पुलिसकर्मी के व्यक्तित्व में मानक गुणों का विकास होता है। अतः पुलिस कर्मी के लिए कवायद प्रशिक्षण एक महत्वपूर्ण भाग होना चाहिए। प्रशिक्षार्थी की सामान्य मनो स्थिति को समझने के लिए यह अति आवश्यक है कि प्रशिक्षण प्रदान करने में यह याद रखना चाहिए कि जो व्यक्ति पुलिस विभाग और अर्द्धसैनिक बल में शामिल होता है अच्छी तरह से शिक्षित और पूर्ण वयस्क होता है उसमें विभिन्न गुण और सीखने की लालसा बच्चों के अपेक्षा अधिक होती है।

प्रशिक्षण की अनिवार्यता, उनमें समर्पण की भावना के साथ–साथ उनके ज्ञान एवं कौशलों को विकास करता है साथ ही उनका व्यक्तित्व सही दिशा की ओर उन्मुख होता है। समुचित प्रशिक्षण का माहौल, उनके व्यक्तित्व की प्रभावशीलता को बढ़ाने में विभिन्न चयनित प्रणालियों के प्रयोग के द्वारा एक दक्षतापूर्ण अनुदेशक की आवश्यकता होती है। जो अनुदेशक उसे न सिर्फ इस हेतु तैयार करता है बल्कि उसे दक्ष एवं प्रभावी दक्षताओं को अन्य दिए हुए कार्य के लिये परिपूर्ण बनाता है। साथ ही उसके विकास के साथ उसमें अधिक उत्तरदायित्व की भावना भी विकसित करके अन्य समुचित दायित्वों को निभाने के योग्य बनाता है। जिसके लिए जरूरत होती है प्रशिक्षण में बुनियादी कोर्सो के द्वारा पुनः निर्धारण के बिन्दु के माध्यम से कि किस तरह से एक अच्छे से अच्छा रंगरूट बनाए और जो सेवा में हैं उन्हें यह सिखाने की, कि जो वे जानना चाहते हैं और इसका केन्द्र बिन्दु है अभिप्रेरणा, यदि सीखने वाला अभिप्रेरित नहीं होता है तो वह किसी भी कार्य को प्रभावपूर्ण ढंग से नहीं कर सकता है और न ही उसे सीखने का पारितोषिक या सन्तुष्टि मिल पाएगी।

कार्यक्रम की संरचना :– एक अच्छे प्रशिक्षण में सबसे प्रथम, इस आवश्यकता को स्वीकार किया गया है कि कार्यक्रम की संरचना कैसे की गई है। प्रशिक्षण की संरचना एवं उसे लागू करना एक चुनौती एवं उपलब्धि पूर्ण कार्य है जिसके लिए प्रायः कल्पना शक्ति और उपर्युक्त संसाधन की अति आवश्यकता होती है। दूसरे को सीखने के बारे में ज्ञान देना एक कठिन और दुष्कर कार्य है जिससे संतुष्टि और मदद मिल सके। सहभागियों के सीखने के ढंग, उनकी संख्या, उनकी पृष्ठभूमि सीखने के वातावरण के आधार पर कार्यक्रम की संरचना की रूपरेखा अन्य परिवर्ती तथ्यों को ध्यान में रखकर लचीली होनी चाहिए। इसके अतिरिक्त एक प्रशिक्षक को चाहिए कि वह निम्न तथ्यों के अनुरूप है–

- ❑ उपलब्ध सामग्री को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करें।
- ❑ समस्याग्रस्त सहभागियों के साथ समुचित सहभाग रखें।
- ❑ अपने संवेगों पर नियंत्रण रखें।
- ❑ प्रशिक्षणार्थियों ने कितना सीखा इसका निर्धारण करें।

वयस्क अधिगमकर्त्ता :– यह याद रखना चाहिए कि जो व्यक्ति पुलिस और अर्द्धसैनिक बलों में शामिल हो रहा है वह वयस्क है और यह समझने की जरूरत है कि वयस्क सीखने वालों के साथ कैसा व्यवहार करना है। विशेष रूप से परेड मैदान पर। प्रशिक्षणाक्षार्थी जो बुनियादी प्रशिक्षण कर रहे हैं वे भी वयस्क अधिगमकर्त्ता हैं, उनमें से कुछ

पुराने कार्य अनुभव भी रखते हैं। कुछ महिला प्रशिक्षणार्थी जो अभी–अभी महाविद्यालय की पढ़ाई छोड़कर आये होंगे। पूर्व व्यावसायिक पाठ्यक्रम के अनुभव ने उन्हें पुलिस संस्थानों में सीखने के तरीकों में पूर्णता न होने की वजह से अपने आपको अनुकूल नहीं कर पाते हैं। यहां उन्हें आधिकारिक जानकारियां एवं प्रेरणात्मक माहौल नजर नहीं आता है। विशेष रूप से समानुदेशक के बारे में वयस्कों की शिक्षा के हस्तान्तरण और छोटे बच्चों के सीखने में अत्याधिक अन्तर होता है। इसलिए एक समानुदेशक के लिए कुछ निश्चित विशेषताएं होती है, जो उन्हें अन्यों से अलग करती हैं। इसलिए उसे इस बात का ध्यान में रखना चाहिए कि ऐसे समय में जब कि उनमें से कुछ को अपनी सीखने की योग्यता पर भरोसा नहीं होता। इसलिए सीखने में उनकी भागीदारी और सीखना उनकी उस जरूरत को प्रभावित करता है कि उनकी व्यावसायिक कमी सामान्य लोगों को पता न लग जाये फिर कैसे वयस्क सीखने वालों की समानान्तर हालात में सिखाया जाये? निम्न छः बिन्दु वे क्षेत्र है जो व्यस्क अधिगम में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैः–

- सीखने की प्रक्रिया सम्पूर्ण जीवन में निरन्तर चलती रहती है।
- सीखना एक नैसर्गिक एवं व्यक्तिगत प्रक्रिया है।
- सीखने की प्रक्रिया परिवर्तन से जुड़ी है।
- सीखना मानव का विकास क्रम है।
- सीखने में पूर्व अनुभव एवं वर्तमान अनुभव संलग्न होता है।
- सीखना अन्तर्दृष्टि या सहज बौधिक पक्ष है।

अतः सीखना वह सक्रिय प्रक्रिया है, जो सीखी जाती है। चाहे वो इरादतन हो या गैर इरादतन। जो सम्बन्धता रखती है सूचनाओं को ग्रहण करने या कौशलों को नई प्रवृत्तियों सूझबूझ और मूल्यों से। सीखने का मुख्य उद्देश्य ही व्यवहार परिवर्तन की उस प्रक्रिया से है जो जीवन पर्यन्त चलती रहती है।

वयस्क अधिगमकर्त्ता के समालोचक (महत्वपूर्ण) विशेषताएं :–

किसी भी प्रशिक्षण संस्था में प्रशिक्षणार्थियों को सीखने की प्रक्रिया के द्वारा वयस्क अधिगमकर्त्ता के अनुरूप प्रशिक्षण दिया जाता है। वे बच्चों को दी जाने वाली शिक्षा से और वे नवागत युवाओं के अभ्यास अभिप्रेत से अलग है जिसकी वयस्क अधिगमकर्त्ता के मस्तिष्क में क्या विशिष्ट लक्षण हैं और क्या बातें उनके दिमाग में होनी चाहिए?

(ए) अभिमुखीकरण और शिक्षा तथा अधिगम में अन्तर :– बच्चों की तुलना में वयस्कों की बहुउद्देश्य भूमिका होती है वयस्कों के लिये समय कीमती होती है। वे आन्तरिक दीर्घकालीन उद्देश्यों एवं कार्य अवधि से निर्धारण होता है। दूसरी ओर कई वयस्क दूरस्थ लक्ष्यों के बारे में कभी कभार ही ध्यान केन्द्रित करते हैं। यदि न भी सोचें तो भी उनका आचरण ऐसा होता है कि हम कहां फंस गए। सीखने वाले बच्चों की अपेक्षा वयस्कों कें दृढ़ और स्वधारणा की धारणा अधिक होती है। अगर वयस्क यह सोचते हैं कि सीखना और परिवर्तन जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जैसा कि उसके कार्य से प्रकट होता है, तो वे सीखने के लिए अधिक उन्मुख होंगे और उनकी उपलब्धियां उच्च स्तर तक की, और सूझबूझ के साथ होती है। इस प्रकार वयस्कों को अभिमत जीवन के प्रति उन अनुभव के आधार पर होती हैं, जिन्हें वे सामान्यतः या तो पहचान चुके होते हैं या सीखने की आवश्यकता की पहचान से मदद लेते हैं।

(ब) अनुभव का संचयन :– नवयुवकों के बजाय वयस्क अपने जीवन के उन लाभों एवं कमियों से आनन्दित होते हैं या छोटे बच्चों से उनका, जीवन के प्रति अनुभव अधिक प्रगाढ़ होता है। पूर्व अनुभव सीखने की प्रक्रिया को आधार प्रदान करता है जो कठिनाइयां उत्पन्न करती हैं। उन्हें सहजता से धारण कर, सीखने में बाधक तत्वों से परिचित होकर उन्हें दूर करने का प्रयास करता है।

(स) विशिष्ट विकास प्रवृत्तियां :– विकास शब्द का उल्लेख क्रमानुसार पूर्वानुमान और सिलसिले वार

उस परिवर्तन से है जिसके लक्षण अभिवृत्तियों में दिखाई देता है। वयस्क व्यक्ति विकास की दशा गति या स्वरूप है जो बच्चों के अनुभव से भिन होते हैं किसी व्यक्ति की निरन्तर अभिवृत्ति और उनमें दृष्टिगोचर होने वाले परिवर्तन, समयानुकुल उन्मुखता, धारणाओं या कल्पनाओं और सम्बन्धों के ढंग के आधार पर निर्धारित होती है। इसी अवधि में प्रवृत्ति या विशिष्ट महत्वपूर्ण घटना के अनुसरण के द्वारा मुख्य बड़ा परिवर्तन होता है। जो वयस्क व्यक्ति ग्रहणशीलता के द्वारा अपने व्यक्तिगत उद्देश्यों को पुनर्निश्चित या निर्धारित करता है, वे अपने पुनर्निश्चित जांच के आधार, किसी संस्था और सोसाइटी में अपने स्वसम्मान को एक स्थायी आयाम देता है।

(द) चिन्ता एवं द्वैधवृत्ति (कठिनाईयां) :– अक्सर कई वयस्क सीखने में मिश्रित एहसास के साथ कठिनाईयां महसूस करते हैं। यहां तक कि उनमें भय व्याप्त होता है। हमें समझना है उन अनुक्रियाओं को जिनके द्वारा हम उनको प्रभावी ढंग सीखने में मदद कर सकते हैं, और ऐसा करके अन्यों को सहयोग कर सकते हैं। कभी–कभी सीखने वाले जिम्मेदारी के साथ कठिनाईयों का सामना जैसा कि वे आशा करते हैं, कर पाते हैं। सामान्यतः इस चिन्ता की प्रतिक्रिया के कारण कभी–कभी वे अपने आपको पीछे हटा लेते हैं। वयस्कता की अवधि के बाद लोग विशेष रूप से चिन्ता के कारणों का सामना कर लेते हैं। साथ ही प्रशिक्षण प्रणाली भी उन्हें इस समस्याओं से कुन्ठित कर देता है। लोग भी इस निश्चित कार्य एवं वातावरण से असुविधाजनक हो जाते हैं। अतः चिन्तित प्रशिक्षणार्थी को चिन्ता से काबू पाने में मदद करना चाहिए।

क्या प्राधिकार अधिगम को अवरूद्ध करते हैं?

जैसे ही एक स्वः अनुशासित वयस्क परिपक्वता को पहुंचता है तो वह निर्भरता से स्वायत्तता की ओर अग्रसर होता है। इस अवधि में कभी–कभी वह क्षुब्ध और उग्र प्रवृति से ग्रसित हो जाता है। ऐसी स्थिति में अनुदेशक को उसे समुचित दिशा–निर्देश दिया जाना चाहिए। ऐसे समय में सीखने वाला स्वावलम्बन/अपने पर भरोसा करने के लिए विशेष रूप से उत्सुक रहता है। अनुदेशक पर संदेह होने की स्थिति में भी सीखने के लिए लालायित रहता है। कुछ सीखने वालों में अपने स्वावलम्बन की भावना रहती है और आत्म सम्मान के साथ एवं पहचान बनाने की जिम्मदारी का एहसास रहता है। लेकिन कई स्वावलम्बन पाने के लिए संघर्ष करते हैं। लेकिन ये तुलनात्मक रूप से कठिन हो तो उस समय तक जब तक अधेड़ावस्था को न पहुंच जाए या फिर बाद में उनमें परिपक्वता आती है। कवायद कक्षाओं के दौरान प्रशिक्षणार्थी अपनी हैसियत या अधिकार को नकार देते हैं।

पूर्ण परिपक्व वयस्क को इस अवधि में अपनी सोसाइटी में एक स्थान प्राप्त करने के लिए दो महत्वपूर्ण लक्षण अधिगम के सम्बन्ध में दिखाई देते हैं। अपने अधिकार के प्रति अस्वीकृति और अपने सहभागी की सम्बन्धता। किसी भी व्यक्ति में इस शिद्दत के लक्षण भिन्न होते हैं। लेकिन यह प्रबलता किसी प्रशिक्षण संस्था के आधार के लिए कभी–कभी अधिकारी की प्रभाव हीनता के कारण हो सकती है। लेकिन आज्ञाकारिता के प्रतिरूप के गुणों से परिपूर्णता का गुण सीखने वाले में भी ऐसी भावना उत्पन्न प्रतिमान करते हैं।

प्राधिकरण का परित्याग एक कठोर पद के रूप में प्रयोग करना यद्यपि एक मुनासिब व्याख्या है, व्यक्ति पर्यवेक्षण, निर्देशन तथा अनुदेशन से इंकार कर दे। इसी प्रकार सामान्यतः यह व्यक्ति जो अपने स्वावलम्बन के लिए निश्चयपूर्वक किसी ओर प्रवृत्त हो रहे हैं, उसको कोशिश कर बन्द कर देंगे या रोक देंगे। इसलिए उन लोगों को जो अधिकारी है या जिन्हें अधिकार है, वे ऐसी प्रवृत्ति को रोके या उन्हें ज्ञान पर नियंत्रण रखने का अभ्यास कराएं। ये प्राधिकार अनुदेशक या उस्ताद हो सकता है। क्योंकि कोई भी व्यक्ति प्राधिकार की वैधानिकता को अस्वीकार नहीं कर सकता है। लेकिन अपनी स्वालम्बन को बनाए रखने के लिए अपने अधिकारियों के साथ अन्तः क्रिया द्वारा नियंत्रित किया जा सकता है। अर्थात् अधिकारी और व्यक्ति अन्तः क्रिया के द्वारा नियंत्रित हो सकता है चाहे वह पुरुष या महिला प्रशिक्षणार्थी हो।

कई बार महिला प्रशिक्षणार्थी को कुछ समस्याओं का सामना करना पड़ता है, जब वे किसी प्रशिक्षण संस्था से बुनियादी प्रशिक्षण प्राप्त करती है। अतः प्रशिक्षक का उद्देश्य/लक्ष्य उन समस्याओं को समझकर इसे व्यावहारिक रूप से इस पर विजय प्राप्त करने का होना चाहिए।

ऐसे समय में प्राधिकार जो निर्देशन का साधन होता है उसे और सहभागी का आपसी विश्वास या आश्रय एक महत्वपूर्ण साधन के रूप में उभरता है। जब कि प्रशिक्षणार्थियों को समस्याएं आती हैं विशेष रूप से पुलिस प्रशिक्षण संस्थानों में कठोर नियमों के बीच सामंजस्य की समस्या से प्रशिक्षणार्थी दो चार होता है। ऐसे समय में एक दूसरे का सहयोग ही उनके जीवन में अनुशासन लाता है। आत्मसात मित्रता स्थापित होती है। समूह और दल के साथ सामंजस्य और समस्याओं के अनुभव नये माहौल में समायोजन की धारणा की उन्हें समस्याओं से निपटने में सहायक होती है, जिसका परिणाम यह होता है कि प्रशिक्षणार्थियों में जो सूझबूझ के साथ एक दूसरे के साथ जुड़कर एक नए उप संस्कृति का निर्माण होता है। अन्य बाहरी व्यक्तियों के अपेक्षाकृत उनका स्तर ऊंचा उठ जाता है। प्रशिक्षणार्थी एक दूसरे के निकट आते हैं, अपने मित्रों से प्रभावित होते हैं, और उनके विचारों आचारणों को अंगीकार करते हैं ये खुलापन सहयोगियों के प्रभाव से अभिभूत होता है और वे पूर्व कठिनाईयों के साथ सामंजस्यपूर्ण वातावरण में परिवर्तित हो जाता है, जिससे उन्हें सीखने में सहजता आ जाती है।

इसके अलावा यह भी ध्यान रखने वाली बात है कि प्रशिक्षणार्थियों को भी अनिवार्य रूप से स्वावलम्बन की इसी धारा में सम्मिलित होना है। समान आयु वर्ग का झुकाव सभी पर विश्वास करने के लिए, स्व निर्दशन के प्रतिमान के लिए एक अनुदेशक को उसी रूप में अपने आपको प्रदर्शित करना होगा। एक प्रशिक्षणार्थी जब निरन्तर कमजोर होता है, उसे प्राधिकारी और उसके हम उम्र साथी भी उसे अपरिपक्व या बच्चा समझ कर अस्वीकार कर देते हैं। साथ ही उनके समूह में उनका कोई विशेष स्थान नहीं होता है। अर्थात् उसकी कमजोरियां उसे अस्वीकार्य बना देती है। जब प्राधिकारी की ओर से ''एन्टी मॉडल'' माना जाता है, तो प्रशिक्षणार्थियों में भी उसके प्रति अमित्रता की भावना प्रबल होती है। इस प्रकार की बातें अक्सर परेड मैदान पर देखने को मिलती है, जो समूह के साथियों से सम्बन्धता के साथ–साथ प्राधिकारियों की आज्ञाकारिता, प्रशिक्षणार्थियों के लिये प्रशिक्षणकर्ता भी उनके आदर्श के रूप में होता है। उदाहरण स्वरूप – प्रशिक्षणार्थी का अनुचित व्यवहार अपने सहभागियों से जो उनसे जुड़े होते हैं, को उस्ताद का समर्थन किसी भी रूप में उनके सामने उभर कर नहीं आना चाहिए। अवज्ञा या मनमानी से जुड़े या फिर ऐसे कार्य जो अनुचित हो, जो उनके अधिकार से संलग्न हो। उस्ताद या प्रशिक्षक को न्याय प्रियता का प्रदर्शन करना चाहिए। विशेष रूप से पुलिस या अर्द्धसैनिक बल सेवा से संलग्न व्यक्ति, जो अनुदेशक हो, के लिए जरूरी है कि उसे उन पहलुओं और उन स्थितियों पर समुचित ज्ञान होना चाहिए ऐसी प्रवृत्तियां, जिन प्रशिक्षणार्थियों में पायी जाती है उनका न्यायपूर्ण एवं सूझबूझ के साथ निराकरण किया जाना चाहिए।

वयस्क प्रशिक्षणार्थियों के लिए अनुकूल अपेक्षाएँ :–

वयस्कों में जीवन, जीविका, शिक्षा और अधिगम के लिए अभिविन्यास का सम्बन्ध अच्छे अनुभव आधारित प्रत्यागमन को पूरा करना चाहिए। ताकि विभिन्न विकासात्मक परिवर्तन और मेहनत से चिन्ता की दुविधाओं का समाधान किया जाना चाहिए। वयस्क व्यक्ति में अनुकूल प्रतिबन्ध शर्तें पूरी हो सके। जो प्रशिक्षणार्थियों के लिए उपयोगी और उनकी मंशा के अनुकूल हो वयस्कों में उचित सीखने की प्रक्रिया विकसित हो जो निम्न हैः–

- वे महसूस करें सीखने की आवश्यकता को एवं उनकी अन्तर्धारिता, उन प्रश्नों के माध्यम से जिसमें क्या, क्यों और कैसे पढ़ा/सीखा जाए।
- अधिगम की प्रक्रिया एवं प्रशिक्षण बिन्दुओं का ज्ञान अर्थ पूर्ण अनुभवों और अनुभवों के प्रभावी

उपयोग सीखने के साधनों से समाहित हो।

- जो कुछ भी सीखा गया है, उसका सम्बन्ध परिवर्तित विकास और सेवा अधीन सौंपे गये कार्य को समुचित तरीके से करें।
- स्वायत्तता का बनना इस बात से दृष्टिगोचर होता है कि अधिगम कितना उपयोगी है कि वह प्रणाली को किस सीमा तक उपयोग में लाता है।
- प्रयोग की स्वतंत्रता के वातावरण में वे जो कुछ सीखते हैं, उससे चिन्ता में न्यूनता आती है और अधिगमकर्त्ता का उत्साहवर्द्धन होता है।
- उनकी अधिगम की शैली कितनी सार्थक है।

अधिगम को कैसे सीखा जाए पर अधिगम एवं निर्देशन का प्रभाव :–

प्रशिक्षण बिन्दु की निश्चितता इस तथ्य पर प्रभाव डालती है कि प्रत्येक प्रशिक्षणार्थी की कार्य विधि कौशलपूर्ण अथवा उसकी अभिवृत्ति या झुकाव सीखने में कितना है। इस प्रकार, शिक्षण, अधिगम और किस प्रकार से सिखाया जाता है, के सम्बन्ध में कम से कम 5 युक्तियाँ हैं:

जांच के तत्व :–

प्रशिक्षणार्थी में जांच के तत्वों के आधार पर परिस्थितियों के अनुकूल बनाना तथा उसमें जिज्ञासा का संचार करके सकारात्मक चेतना को प्रोत्साहित करना चाहिए ताकि उन्हें इस बात की सूचना प्राप्त हो सके। वे सभी कार्य विधि जिसकी उन्हें आवश्यकता है या सीखने वाले को, जिसके द्वारा प्रोत्साहित किया जा सकता है, वह है प्रश्न पूछने का तरीका, जो समस्या से जुड़ा हुआ हो। ऐसे प्रशिक्षणार्थी को कुशाग्र बनाने या समस्या का हल करने में या उसे आत्मसात करने में सहायक होगा। कार्य पद्धति का योगदान और अधिक सार्थक होगा।

हस्तान्तरण सामर्थ्य :–

कथन है कि हस्तान्तरण ग्रहण शक्ति किसी व्यक्ति में सबसे प्रभावशाली तत्व होता है। इसी के द्वारा परिस्थितियों को हस्तान्तरण करके उन तत्वों को जहां, जब प्रयोग कर वांछित लक्ष्यों एवं उद्देश्यों को प्राप्त किया जा सकता है। प्रशिक्षण में इसका प्रयोग कर हम वांछित निष्कर्ष निकाल सकते हैं। साथ ही सीखने के कौशल निर्देशन के तत्वों को उपार्जित कर, परिस्थितियों के अनुकूल कर प्रशिक्षणार्थी को अवसर प्रदान कर योजना को क्रियान्वित करके उन्हें लागू कर सकते हैं।

विषय वस्तु पर अधिकार :–

किसी विषय के विस्तृत अध्ययन नाजुक महत्वपूर्ण परिस्थितियों पर सन्तोषप्रद सोच विचार करने का मौका और विषयानुकूल जांच करने की विधि के प्रयोग का प्रबन्ध किया जाना चाहिए। विचारोत्पादकता और तार्किक व्यवहार का समावेश होना चाहिए।

आत्म बोध :–

प्रशिक्षण अनुभव जिसमें निर्माणात्मक स्वःमूल्यांकन समाहित हो। अनुदेशक स्वयं आगे के शिक्षण के लिए एक उपयुक्त या बेहतर बन सकता है, क्योंकि अधिगम का केन्द्रीय मार्ग यही है कि समान सीखने वाले को किस प्रकार सिखाया जाए कि वह यह समझ ले कि सीखने का विकास उसकी चेतना के आधार पर ही हो सकेगा, तथा इस धारणा के साथ कि वह स्वयं एक सीखने वाला है। इसलिए जब जहां प्रशिक्षणार्थी को प्रशिक्षण से जुड़ी कोई समस्या, मुद्दे एवं विचार उनके अपने जीवन के लिए है और प्रशिक्षण द्वारा उसे नई राह तलाश करना है और उसी के माध्यम से अपने वातावरण को समझना है।

जागरूकता की प्रक्रिया :–

अधिगम किस प्रकार सीखा जाए, इसका आधार इस बात से जुड़ा है कि अधिक्रम क्रिया के आयाम कितने प्रभावी हैं। क्योंकि व्यक्ति जब अधिगम करता, के रूप में कम से कम कोई कार्य करता है तो कभी कभी ऐसे समय में उसे ज्ञात होता है कि उसका अनुदेशक परिवर्तित हो गया है या फिर

उसके स्वयं के दृष्टिकोण में कोई परिवर्तन हो गया है तो उस सामंजस्य की स्थिति को स्वतः स्वीकार कर लेता है।

अन्ततः वयस्क जो सीख चुका है उसे निम्न बिन्दुओं को समझकर, वह किस प्रकार सिखाएगा, जो निम्न है–

- कैसे उसे अपने स्व अधिगम पर नियंत्रण रखना चाहिए।
- कैसे अधिगमकर्त्ता के रूप में उसे अपनी शक्ति एवं कमजोरियों को जान लेना चाहिए।
- कैसे अधिगम के व्यक्तिगत अवरोधों को दूर करना होगा।
- कैसे प्रतिदिन के अनुभवों के माध्यम से सीखने की कोशिश करते रहना चाहिए।
- कैसे कम्प्यूटर से सीखना चाहिए।
- कैसे परिचर्चा एवं समस्या समाधान के समूह को नेतृत्व प्रदान कर उसमें सहभागी बनना चाहिए।
- कैसे प्रशिक्षण कक्षा से अधिकतम प्राप्त करना चाहिए।
- कैसे प्रभावी शिक्षण में अन्यों की सहायता के लिए हमेशा तत्पर रहना चाहिए।

प्रशिक्षणार्थी की अभिवृत्ति में परिवर्तन लाने का महत्व :–

कम्पनियों के प्रशासकों, विश्वविद्यालयों एवं पाठशालाओं के साथ शिक्षकों द्वारा सीखने और प्रस्तुति जैसे महत्वपूर्ण घटकों एवं उल्लेखनीय अभिवृत्तियों को नजरअन्दाज करना भी एक महत्वपूर्ण पहलू है। सामान्यतः इस हेतु नियुक्त कर्मचारियों की गुणवत्ता एवं अभिवृत्तियों का मूल्यांकन उचित रूप से नहीं किया जाता है। जिसके कारण वे पथभ्रष्ट हो जाते हैं। जिसका परिणाम यह होता है कि वे भ्रमित होकर विभाजनात्मक अस्वीकार्य, यहां तक कि दोषपूर्ण व्यवहार करने लगते हैं, उनकी अन्य अभिवृत्तियों को एवं व्यक्तित्व को उनके व्यक्तिगत मामलों में भी सम्मानपूर्वक व्यवहार करना चाहिए क्योंकि ये उनके व्यक्तित्व में विशिष्ट माध्यमों को संचालित कर शिक्षण मूल्यांकन एवं मूल्य निरूपण के द्वारा असामान्य व्यवहार में सुधार लाया जा सकता है।

मुख्य कवायद अनुदेशक की भूमिका :–

मुख्य अभ्यास अनुदेशक जिसकी भूमिका एक अधिगम प्रशासक की होती है, जो स्वयं एक प्रशिक्षित शिक्षक या ऐसे व्यक्ति जो प्रथम बार प्रशिक्षण संस्था में प्रशिक्षक के रूप में सम्मिलित हुए हैं। वयस्क प्रशिक्षक और शिक्षक के बीच महत्वपूर्ण अन्तर होता है। प्रथमतः पुरुष/महिला शिक्षक को अपने पूर्व विचारों को छोड़ देना चाहिए क्योंकि उनका व्यक्तित्व सीखने की क्रिया को निर्मित करता है, जबकि प्रभावी अधिगम प्रशासक वह व्यक्ति है जिसे प्रतिफल की लालसा नहीं होती बल्कि वह उसे निग्रहित करता है, में प्रस्थापित है। जो अपने विषय का ज्ञाता या अज्ञाता हो सकता है। उसकी हैसियत अधिगम प्रक्रिया प्रशासनिक अधिकारी का होता हैं। वह शिक्षण के बजाय नेतृत्व प्रदान करने की एक कुन्जी के समान होता है, जो अलग–अलग समस्याओं रूपी ताले खोलने में दिलचस्पी रखता है। पुरुष/महिला अनुदेशक प्रशिक्षणार्थियों को अनुष्ठान एवं अभिक्रम और अधिगम प्रक्रिया में सुविधा लाने वाले की भूमिका निभाते हैं।

कवायद कक्षा के दौरान जब और जैसी समस्या उत्पन्न हो, तो उसके बारे में अधिगम प्रशासक को पूर्वोत्तर सतह पर ही उसका समाधान करना चाहिए। निर्णय लेते समय बाधा पहुंचाने वाले, चाहे उसने बाधा पहुंचाई हो या नहीं पहुंचाई हो, को उसके जांच अधिगम प्रशासक द्वारा निम्न प्रश्नों को अपने आपसे पूछना चाहिए।

- क्या समस्या गंभीर प्रवृत्ति की है, जिसमें उसके हस्तक्षेप की आवश्यकता है या फिर समस्याग्रस्त व्यक्ति स्वयं उसे हल कर सकते हैं।
- क्या प्रशिक्षणार्थियों के पास समुचित समय उपलब्ध हैं कि वे समालोचनात्मक व गुणदोष विवेचन के द्वारा हल कर सकेंगे।

- क्या हस्तक्षेप के द्वारा मौन सदस्य को नजर अन्दाज किया गया है, जिससे कि उनके विचारों एवं एहसास के सम्मान के लिए सहायता दी जा सके।
- हस्तक्षेप द्वारा प्रशिक्षणार्थियों को कड़ी मेहनत और अच्छा कार्य करने के लिए प्रेरित किया जा सकेगा।

अभिप्रेरणा :–

अधिगम के लिए प्रोत्साहित करने के लिए अभिप्रेरणा एक महत्वपूर्ण घटक माना जाता है। विभिन्न प्रयोग इस बात के साक्ष्य है कि अभिप्रेरणा के अभाव में कोई छोटी सी बात सिखाई नहीं जा सकती है। निःसन्देह जो अभिप्रेरणाएं किसी व्यक्ति को सीखने के लिए अभिप्रेरित करती हैं। और किसी अन्य के लिए भिन्न हो सकती हैं। कुछ लोगों के लिए अभिप्रेरणा उन्हें प्रेरित करती हैं यह भी भिन्न–भिन्न हो सकती है। कुछ की रूचि और किसी कार्य के लिए चुनौतियां अभिप्रेरित करती हैं (आन्तरिक अभिप्रेरणा) किसी के लिए ईनाम या सजा (आन्तरिक अभिप्रेरणा जैसे ईनाम) प्रेरणा बन सकती है, जरूरत इस बात की है कि हम इसके स्तर को देखने की सामर्थ्य रखते हों या उसे मान्यता प्रदान करते हैं (जो परेड कमाण्डर के आधार उप उपर्युक्त हो), समालोचना के स्तर से अभिप्रेरणा जितनी प्रभावी होंगी, उतनी सीखने की अभिवृत्ति दृढ़ होगी। यदि कोई अधिगमकर्त्ता चिंतित होगा, उसमें प्रभावी सीखने का अभाव पाया जाएगा। क्योंकि चिन्ता के कारण उसकी ऊर्जा नष्ट होगी जिससे सीखने की प्रवृत्ति कम होगी। कवायद अनुदेशकों में भी इस बात का समुचित बोध होना चाहिए कि संतुष्टि का भाव ही प्रभावी अधिगम का द्योतक है। कवायद में भाग लेने वालों की एक समस्या यह भी है कि उनकी बुनियादी आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं हो पाती है। (रोशनी, बैठने की समुचित व्यवस्था व रोशनदान) और श्रम (प्रशिक्षण का समय) अतः इसके लिए प्रशिक्षणार्थियों में जागरूकता होनी चाहिए कि सहकर्मी एवं अनुदेशकों को उनकी भावनाओं को स्वीकार करने के साथ यह ध्यान रखना चाहिए कि किसी कृत्य से उनकी भावनाएं आहत न हो। यदि इन आवश्यकताओं की पूर्ति होगी तो कवायद में भाग लेने वालों में सृजनात्मकता के विकास के कारण संतुष्टि का आभास होगा, और वे अपने अधिगम अनुभवों की प्रगाढ़ता के कारण उनमें आत्म संतोष का संचार होगा जिससे प्रशिक्षणार्थी एवं प्रशिक्षक दोनों को ही स्वः संतुष्टि का आभास होगा जिसका प्रभाव शिक्षण, शिक्षा पर स्पष्ट दृष्टिगोचर होगा।

अध्याय V

अभ्यास (कवायद) अनुदेशक का चयन

सबसे पहले एक अच्छे कवायद अनुदेशक के लिए अपने विषय का पर्याप्त ज्ञान एवं अनुभव का होना आवश्यक है ताकि अपने ज्ञान एवं अनुभव के आधार पर वह अपने कार्य को उत्साहपूर्वक गम्भीरता के साथ कर सके। क्योंकि यह कार्य काफी संवेदनशील होता है, जो मानव के व्यक्तित्व पर प्रभाव डालता है खासतौर पर उन जवानों के लिए जो प्रशिक्षण लेते हैं या लेने आते हैं। इसलिए अनुदेशक को अपने व्यवसाय के प्रति समर्पित होना चाहिये। साहस के साथ–साथ प्रशिक्षण देने की लगन भी होना चाहिये ताकि प्रशिक्षणार्थियों के आदर्श के रूप में स्थापित हो सके। एक अच्छे शिक्षक का महत्वपूर्ण गुण सन्तुलित व्यक्तित्व का होना चाहिए। यहां तक कि उसकी प्रस्तुति प्रशिक्षणार्थियों में उत्साह एवं लगन पैदा कर सके। उसका आचरण आत्मविश्वास एवं शक्ति से परिपूर्ण होना चाहिये साथ ही उसका चरित्र उत्तमता का प्रतीक होना चाहिए उसकी प्रभावपूर्ण अभिकृतियां प्रशिक्षणार्थियों को उत्साह से परिपूर्ण कर सके। क्योंकि वह किशोरों के प्रशिक्षण हेतु तत्पर है और इसी उद्देश्य को लेकर प्रशिक्षण संस्थान में आया है।

एक प्रशिक्षण अनुदेशक के लिए निम्न श्रेणी के कौशल एवं योग्यताएं होनी चाहियेः–

(क) विषय का आवश्यक ज्ञान तथा प्रभावी अनुदेशक कौशलधारी हो।

(ख) अभिवृत्तियों का स्वामी हो (उचित व्यवहार का निर्माण)

(ग) उपयुक्त निर्णय लेने की विकसित क्षमता हो।

(घ) आधुनिक विचारधारक एवं कठिन स्थिति में उद्दीपन का सही उपयोग करता हो।

आज के दौर में प्रशिक्षण अनुदेशक केवल अनुदेशन का अभिकर्ता ही नहीं है बल्कि उसे संगठनात्मक विकास में नवीन आविष्कारों के खोजों के कार्यक्रमों का संगठनात्मकता में भी प्रभावी होना चाहिये ताकि अपनी प्रणाली एवं प्रभाव से अपने व्यवसाय का प्रतिबिम्ब हो सके। इस प्रकार यह आवश्यक है कि निम्न विशेषताएं एक प्रशिक्षक में होनी चाहिये।

(क) प्रशिक्षणार्थियों के लिए ओरिएन्टेसन (दिशा निर्देश) :– अपने चारों ओर प्रशिक्षणार्थियों के व्यवहार का पर्यवेक्षण एवं विश्लेषण समान समय में चाहे वे (प्रशिक्षार्थी) कक्षा में हो या कक्षा के बाहर, उनके व्यवहार एवं अभिकृतियों का गहनता से निरन्तर करते रहना चाहिये।

(ख) प्रशिक्षण कार्यक्रम में सम्मिलित (सम्बद्ध) :– प्रशिक्षण में अपनी मूल उत्तरदायित्वों के निर्वाह के प्रति उत्तरदायित्वता होनी चाहिये ताकि वह प्रशिक्षणार्थियों के विचारों एवं वृत्तियों को समझ सके। प्रशिक्षणकर्ता में सम्प्रेषण की योग्यता प्रभावी होनी चाहिए और उनमें रचनात्मक और सौहादपूर्ण व्यक्तिगत रिश्तों को विकसित किया जाना चाहिए।

(ग) प्रशिक्षण निदेशक को समस्याओं तक पहुंचने के लिए प्रैक्टिकल होना चाहिए और संगठनात्मक प्रशिक्षण के संगठनात्मकता आवश्यकतानुसार प्रशिक्षण के लक्ष्य एवं उद्देश्य (परिणाम) को प्राप्त करना चाहिए। सैद्धांतिक एवं प्रायोगिक के बीच की दूरियां को हर सम्भव रूप से खत्म करनी चाहिए।

(घ) जीवन में आने वाली मूल परिवर्तनों से अवगत होने की योग्यता एवं इच्छा होनी चाहिए तथा प्रशिक्षण केन्द्र के अन्दर एवं बाहर का वातावरण प्रभावी होना चाहिए। ताकि वह अपनी विधि प्रक्रिया, अभिरूचि एवं कौशलों का समुचित प्रभावी ढंग से प्रयोगकर अपनी दक्षता को और अधिक प्रबल बना सकता है।

(ङ) उसे बोध होना चाहिए कि प्रशिक्षण सामग्री

सीमित है उसका समुचित उपयोग बिना अपव्यय के कर सके। उपरोक्त अनुदेशक की विशेषताएं निर्भर करती है, निम्न पांच तत्व पर जो अनुदेशक को और भी प्रभावी बना सकती है:–

- ✓ अनुदेशक का ज्ञान एवं अनुभव
- ✓ अभिप्रेरणा
- ✓ संगठनात्मकता की रूप–रेखा तैयार करना एवं वातावरण – निर्माणकर्ता
- ✓ प्रशिक्षण नीतियां
- ✓ रूचि एवं उच्च अधिकारियों का सहयोग।

प्रशिक्षण संस्था में पाठ्यक्रमों को संचालित करते समय अनुदेशक की पहचान :–

यह याद रखा जाना चाहिए कि कोई व्यक्ति जिसकी पहचान एक अनुदेशक की है जन्म जात शिक्षक नहीं हो सकता है। प्रशिक्षण संस्था अकादमिक विकास पर दबाव बनाये रखती है लेकिन प्रशिक्षण संस्था इस बात पर बल देती है कि व्यक्तित्व का चहुमुखी विकास ही प्रशिक्षण संस्था का मुख्य लक्ष्य होता है। इस प्रकार एक नया भावी प्रशिक्षक जो किसी प्रशिक्षण संस्था से जुड़ता है तो उसे–

(क) 3 – 4 माह तक अपनी दक्षता के लिये आउटडोर विषयों की कक्षायें लेनी चाहिए।

(ख) उसके लिए आवश्यक है कि, उसे किसी वरिष्ठ अनुदेशक के अधीन रहकर अध्ययन करना चाहिए ताकि वह विषय की रूप रेखा एवं पाठ्यक्रम को समझ सके।

(ग) उसे कम से कम 3–4 महीने तक स्वयं के विकास करने की तैयारी के लिए कक्षाओं के लिए पाठ योजना बनाने का ज्ञान प्राप्त करना चाहिये।

इसलिए किसी प्रशिक्षण संस्था में चयन होने वाले कवायद अनुदेशक के लिए निम्न योग्यता अनिवार्य है–

(क) उत्तम, हंसमुख और चुस्त व्यक्तित्व होना चाहिए।

(ख) शारीरिक क्षमतावान।

(ग) ठोस व्यावसायिक ज्ञान होना चाहिये।

(घ) सम्प्रेषण/अभिव्यक्ति के प्रस्तुतीकरण की उत्तम शक्ति।

(ङ) सामाजिकता।

(च) सकारात्मक अभिवृत्ति।

(छ) प्रशिक्षुओं के सम्मुख आदर्श रूप में स्वीकार्य।

(ज) कम्प्यूटर जागरूकता (अतिरिक्त योग्यता)

(झ) फील्ड अनुभव।

(ण) सैद्धांतिक ज्ञान का प्रयोग।

(ट) विचारोत्पादक होना चाहिए ताकि तार्किक संश्लेषण करने में दक्ष हो सके।

अवधि :– एक अनुदेशक की प्रशिक्षण संस्थान में सामान्य सेवा अवधि चार वर्ष की होनी चाहिए।

एक अधिकारी एस.ओ./ओ.आर. जो किसी प्रशिक्षण संस्था में अनुदेशक के रूप में कार्य कर चुका है उसे दोबारा अनुदेशक नहीं बनाना चाहिए, अपवादस्वरूप प्रतिभाशाली अनुदेशकों की पुनः नियुक्ति, यदि उसने दो वर्ष का फील्ड सर्विस का वास्तविक अनुभव होने की दशा में पुनः स्थापना की जा सकती है।

अधिकारियों, एस.ओ./ओ.आर. के मामले में जो प्रशिक्षण संस्थानों में एक प्रशिक्षक के रूप में नवीन नामावधि के आधार पर अधितम मान्य अवधि के पश्चात् पुनः स्थापन किये जाते हैं इनके नामों की सूची पर पुनः विचार, प्रशिक्षण संस्थानों के प्रमुखों की संस्तुति पर शीघ्रता से किया जाये।

अनुदेशकों के चयन के लिए आवश्यक योग्यताएं :–

क. अन्य पदों के लिए :–

1. अपनी सेवा काल में उसे कोई ऐसी बड़ी सजा

नहीं दी गई हो जो नैतिकता के विरुद्ध किया गया कोई कार्य हो। सूची तैयार होने के समय पिछले तीन वर्ष की सेवा के दरम्यान उसकी सेवा पुस्तिका में कोई लाल इन्द्राज अंकित नहीं की गई हो।

2. शैक्षणिक योग्यता मैट्रिक या उच्च शिक्षण स्तर की हो।

3. सूची के समय पिछले पांच वर्ष की गोपनीय रिपोर्ट में तीन या अधिक अच्छा अभ्युक्ति प्राप्त हो। इस समय के दौरान एसीआर में कोई प्रतिकूल इंद्राज नहीं होना चाहिये। अन्तिम रिपोर्ट अच्छा या उच्च श्रेणी का होना चाहिये।

4. चिकित्सीय दृष्टि से फिट होना चाहिये।

5. अधिकतम आयु 45 वर्ष हो।

6. सूची बनने से सात वर्ष पूर्व तक के अवधि में, निर्धारित पाठ्यक्रमों में प्रशिक्षक सामर्थ्यता के साथ न्यूनतम बी/बी वाई श्रेणी के साथ विशिष्ट संस्तुति होनी चाहिए।

अधिकारियों और अधीनस्थ अधिकारियों के लिए :–

1. सेवा – पुस्तिका निष्कलंक (पिछले पांच वर्ष के दौरान प्रतिकूल इंद्राज नहीं) के साथ कम से कम दो या अधिक ''औसत से ऊपर/बहुत अच्छा, ए सी आर में इंद्राज होना चाहिये। सीडीओ/पीटी पाठयक्रमों के मामले में, गत तीन वर्षों के लिए एसीआर विचारणीय होंगे।

2. गत पांच वर्षों के दौरान किसी प्रकार की बड़ी या छोटी सजा नहीं प्रदत्त की गई हो। बड़ी सजा के अन्तर्गत नैतिक चरित्र हीनता से सम्बधित किसी भी समय की उसकी सेवा में प्रदत्त बड़ी सजा अधिकारी/एस.ओ. को स्थाई रूप से प्रशिक्षण चयन से बहिष्कार किया जायेगा। यद्यपि जिनको छोटे कार्यों के लिए दण्डित किया गया हो, उनके मामलों के परीक्षण के दौरान, अपवाद स्वरूप, मामलों में, इन छोटी सजाओं की प्रकृति का अध्ययन कर यदि अनुशासन से सीधी सम्बद्धता नहीं है तो इसकी अनदेखी की जा सकती है।

3. चिकित्सीय रूप से स्वास्थ (शेप–1/ए वाई ई) होना चाहिए। यद्यपि एक व्यक्ति कुछ अपंग हो तो भी उसपर विचार किया जा सकता है। यदि वह अपवादस्वरूप योग्य है और प्रस्तावित प्रशिक्षण आबंटन में अधिक शारीरिक तनाव शामिल नहीं हो। विभागीय स्क्रीनिंग कमेटी, प्रत्येक मामले की उनकी वरिष्ठता के तौर पर अध्ययन कर विचार करेगी और व्यक्ति का पूर्ण विवरण और शारीरिक योग्यता का पता लगाएगी तथा पाठ्यक्रमों की आवश्यकता, जहां पर उसके बारे में विचार किया जा रहा है।

कवायद अनुदेशकों के लिए प्रशिक्षकों के प्रशिक्षण पाठ्यक्रम :–

1. अनुदेशक की भूमिका :–

अनुदेशक की योग्यता सामान्यतः इस बात पर निर्भर करती है कि वह कितना सख्त, मेहनती, श्रेष्ठ, प्रबन्धक और ऐसे ही गुणों से परिपूर्ण हो जो समाज के मूल्यों पर खरा उतरता हो। उसे अनुशासित होना चाहिये जैसे कि एक दक्ष/पूर्ण व्यवसायिक व्यक्ति होता है। जो अपने व्यवसायिक कौशलों के साथ पूर्ण न्याय कर सकता हो। अच्छे अभ्यास से एक अच्छा अनुदेशक अपने व्यवसाय के साथ सम्मिश्रित हो कर पूर्ण ज्ञान एवं व्यक्तिगत गुणों से परिपूर्ण हो जोकि कठोर फार्मूलों को बाहरी तौर से लागू करता हो। इसके अलावा बेशक अन्य अवगुणों को नजर अंदाज किया जा सकता है। यह तो स्पष्ट है कि एक अनुदेशक अन्य व्यावसायिक व्यक्तित्व से भिन्न नहीं होता लेकिन वह अपने महत्वपूर्ण गुणों के मान को विकसित किए हुए हो।

अभ्यास अनुदेशक के चयन हेतु आवश्यक योग्यताएंः–

क्र. सं.	पद	आयु	चिकित्सा श्रेणी	किए हुए कोर्स	अभ्युक्ति
1.	एस.ओ.ज.	45 वर्ष से कम	शेप–1	1. यूआईडी / यूआईडी (सेना) (सात वर्ष के भीतर) (बी श्रेणी)	किसी भी प्रशिक्षण संस्थान का अनुभव कवायद अनुदेशक के रूप में।
2.	एस.सी.ओ.	40 वर्ष से कम	शेप–1	1. यू.आई.डी. / यूआईडी (सेना) (सात वर्ष के भीतर) (बीवाई श्रेणी) 2. पी.डब्ल्यू कोर्स	–यथा–

2. लोचता :–

प्रशिक्षण के दौरान लोचता एक महत्वपूर्ण घटक है जिसे अक्सर नजर–अन्दाज़ कर दिया जाता है। प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान अनुदेशक द्वारा किसी कार्य को लागू करने से पहले उसका परीक्षण किया जाना चाहिये। इस बात का भी ध्यान रखना चाहिये कि लोचता का लक्ष्य ही उसे लोचकता के लिए एक अच्छे अनुदेशक के रूप में अन्यों को प्रशिक्षित कर सकता है ना कि वह व्यक्ति जो अपने कार्य को गलत तरीके से करता है।

सही संतुलन का अर्थ ही सरल राह चलने की समस्या है इसलिए एक प्रशिक्षक को महत्वपूर्ण पहलू याद रखना होगा कि एक दक्ष व्यवसायिक व्यक्तित्व ही जो कर सकता है जोकि दूसरा कोई नहीं कर सकता है। दक्ष व्यवसायिक व्यक्ति ही आत्म समालोचना के माध्यम से ही वह प्रशिक्षार्थी की सही दिशा में सेवा कर सकता है जब विशुद्ध आन्तरिक व्यवसायिकता का स्तर निर्धारित हो जाता है तो यह निर्णय लिया जाना चाहिए कि उपलब्धि प्राप्त की है या नहीं ताकि उच्च उद्देश्यों को प्राप्त करने की संभावनाओं को और अधिक प्राप्त किया जा सकता है। प्रशिक्षक को अपने उच्च होने का अहंकार, जो सम्भावनाएं हैं उनसे दूर रहना चाहिये अथवा आत्मसंतोष के लिए अहंकार नहीं होना चाहिए।

प्रशिक्षकों के लिए प्रशिक्षण पाठ्यक्रम चलाना :–

जब एक बार कवायद अनुदेशक के चयन की प्रक्रिया पूर्ण हो जाये और अनुदेशक चयन कर लिये जाएं तो यह आवश्यक है कि कवायद अनुदेशक अपने आपको उस भूमिका के लिए तैयार करें जिस उद्देश्य हेतु उसे चुना गया है। प्रशिक्षण के प्रथम चरण से ही प्रशिक्षक अनुदेशक की अति महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इसलिए प्रशिक्षक में यह योग्यता होनी चाहिए कि वह प्रशिक्षणार्थियों में उत्साह और लगन जैसे गुणों का संचार करे। अभ्यास कक्षाएं चूंकि प्रशिक्षणार्थी के लिए एक नया अनुभव होता है, इसलिए जरूरी है कि प्रशिक्षणार्थी में सकारात्मक रूचि को उत्पन्न करे। इसके लिए प्रशिक्षक का आचरण इस प्रकार होना चाहिए कि वह अभ्यास कक्षा को सुचारू रूप से संचालित करे। यह कार्य नये पाठ्यक्रमों के शुरू करने के साथ–साथ नये अनुदेशकों के लिए भी उपयोगी होगा जोकि प्रशिक्षण संस्था से जुड़े हैं।

पाठ्यक्रम में शामिल होना चाहिये :–

1. प्रशिक्षणार्थियों के आचरण संबंधी उद्देश्यों के बारे में सकारात्मक बहस करें।
2. कवायद प्रशिक्षण का पाठ्यक्रम हो।
3. प्रशिक्षण के विभिन्न पदों के मानकों के आधार पर प्रशिक्षणार्थियों की उपलब्धियों का स्तर।
4. प्रशिक्षणार्थियों द्वारा प्राप्त किये गए स्तर का मूल्यांकन और प्रशिक्षणार्थी पिछड़ गए हैं उनके सुधार के लिये उपलब्धियों के मूल्यांकन का मानक।

5. सामूहिक बहस के दौरान जो सामान्य समस्यायें उत्पन्न हुई हो, कवायद कक्षाओं के दौरान ऐसी समस्याओं को हल करने का प्रभावी प्रबन्ध।

6. वयस्क प्रशिक्षणार्थियों पर नियंत्रण।

7. कक्षा लेने के दौरान उपयोगी प्रशिक्षण सामग्री का प्रभावी उपयोग (आईना, वीडियो कैमरा इत्यादि का प्रयोग)

8. चोट प्रबंधन का उपयोग कर, सम्भावित सामान्य दुर्घटना को रोकने का प्रबंध।

9. प्रशिक्षण कार्य कलापों का क्रमबद्धता।

इन हाउस, कवायद प्रशिक्षक के साथ, प्रशिक्षकों के लिये प्रशिक्षण पाठ्यक्रम हों उन्हें लागू किया जाये। इस तरह वयस्क प्रशिक्षणार्थियों की कक्षाओं का सुचारू रूप से संचालन करे। सामान्य चोटों और प्रशिक्षण मूल्यांकन का समुचित प्रबन्ध करे, अगर सम्भव हो तो इस हेतु बाहरी विशेषज्ञों की सहायता लेनी चाहिए।

इसके अतिरिक्त प्रशिक्षकों के लिये प्रशिक्षण पाठ्यक्रम के दौरान समय–समय पर कवायद प्रशिक्षकों के बीच निम्न बातों पर विचार–विमर्श होते रहना चाहिएः–

(ए) सामान्य समस्याओं के समाधान के लिए।

(बी) प्रशिक्षणार्थियों के स्तर का सतत् मूल्यांकन किया जाना चाहिये और उन प्रशिक्षणार्थियों का, जिनको वांछित स्तर की प्राप्ति नहीं हो रही है उनका भी सतत् मूल्यांकन किया जाना चाहिए।

(सी) प्रशिक्षण कार्यकलापों का क्रमः–

क्रमानुसार स्तर का निर्धारण इस बात पर निर्भर करता है कि :–

(1) पूर्व अनुभव और ज्ञान कहाँ और किस प्रकार आरम्भ किया जाये– कहाँ से शुरू करे।

(2) ज्ञान और कौशल–अपादान कितना प्रगतिशील बनाया गया है।

(3) सीखने के विकास क्रम में कितने कौशलों का प्रबल सम्पूरक उपयोग किया गया।

(4) पूर्व अभिवृतियों में अन फ्रीजिंग कब और कहाँ लागू किया गया।

(5) कब और कहाँ अभ्यास, पुर्नबलन का हस्तानन्तरण लागू हुआ।

(6) विविधता और रूचि किस प्रकार बनाया रखा जा सकता है।

(7) अधिगम की समगति कितना उत्तम पाया।

नये प्रशिक्षकों का प्रवेश :–

किसी भी प्रशिक्षण संस्था में प्रत्येक नवीन अनुदेशक को किसी वरिष्ठ अनुदेशक के अधीन कम से कम एक पखवाड़े की अवधि के लिये कार्य सीखने का अवसर दिया जाना चाहिए। उसके उपरान्त ही उसे कवायद कक्षाओं में स्वतंत्र रूप से कार्यभार सौंपना चाहिए।

अध्याय VI

चोट प्रबन्धन

किसी भी प्रशिक्षणार्थी के लिए चोट एक भयानक और कष्टकारी अनुभव हो सकता है। पुलिस एवं अर्धसैनिक बलों के समस्त प्रशिक्षण संस्थानों में, जहां पर प्रशिक्षणार्थियों को अधिकतर मांस पेशियों की मोच और जोड़ पर तनाव से लेकर भयंकर अस्थि सम्बन्धी घोर पीड़ा की समस्या रहती है। यद्यपि किसी भी प्रकार की चोट जीविका का अन्त नहीं है, सभी को कुछ उपयुक्त (चिकित्सीय) की तरफ ध्यान देने की आवश्यकता होती है, जो उसे प्रभावी रूप से स्वास्थ्य सुधार की तरफ मार्ग दिखलाता है। चोटिल या चोट से उबरने की अवस्था में कवायद कक्षाओं को प्रभावी रूप से जारी रखना बहुत कठिन हो जाता है। एक कष्टकारक चोट सर्वदा दुखदायी दर्द को पैदा करने वाली प्रतीत होती है और सीधा हतोत्साहित कर सकती है। इससे अक्सर प्रशिक्षार्थी को कई महीनों का गम्भीर प्रशिक्षण पुनः लेना पड़ता है। जो उसने प्रारम्भ में छोड़ दिया था।

प्रभावी चोट प्रबन्धन का उद्देश्य प्रशिक्षार्थी के किसी भी प्रकार के दर्द या बैचेनी को रोकना और चोट के प्रभावों को कम करना है। इससे सुविधा यह होती है कि कुछ धीमें लक्षण (पीड़ा, सूजन, इत्यादि) को कम कर तेजी से राहत पहुंचाती है। प्रभावी चोट प्रबन्धन मुख्य रूप से कवायद कक्षाओं में शामिल होती है। जिस चोट का उचित अन्वेषण नहीं किया गया है, प्रशिक्षणार्थियों के लिए समस्या में परिणित हो सकता है यद्यपि कवायद कक्षा के दौरान रही चोटों को उचित उपचार और देखभाल के साथ शीघ्रतापूर्वक ठीक किया जा सकता है। पेशेवर चिकित्सक द्वारा पूर्व, यथार्थ किसी भी चोट की पहचान जैसे जोड़ों और अस्थियों में तनाव का विनिर्दिष्ट महत्व है। इन चोटों का पता लगाने में असफलता किसी प्रशिक्षार्थी के लिए गम्भीर परिणाम में परिणति हो सकती है। कवायद कक्षाओं के दौरान लगी अनेक चोटों का कारण, कवायद प्रशिक्षक का चोट का कारण और प्रयोजन समझने में असक्षमता के कारण हो।

मानव शरीर के अनेक अस्थियां अति सावधान रीतियों से चलने के लिए निर्मित किया गया है। मानव शरीर के प्रकृति जैसे मशीन का ज्ञान, कवायद और प्रशिक्षण के अन्य पहलुओं के प्रभाव और तनाव को समझना नितान्त आवश्यक है। अन्य गतिविधियों की तरह, कवायद और बलों का प्रभाव शरीर पर पड़ता है। यहां पर इस तरह के कवायद प्रशिक्षकों के लिए आवश्यक है कि वह मानव शरीर रचना विज्ञान की संरचना की अद्भुत खूबियों के प्रति जागरूक हो। ताकि गम्भीर शारीरिक चोट को प्रभावित करने वाले जीव गति शास्त्र की बेहतर जानकारी हासिल कर, कैसे कवायद को सिखाये जाने की उचित जानकारी हो सके।

कुछ और अधिक आधार भूत चोट प्रबन्धन विज्ञप्ति की जांच करने से पूर्व यह महत्वपूर्ण है कि कवायद प्रशिक्षण चोट प्रबन्धन में चिकित्सीय विशेषज्ञ का स्थानापन्न नहीं है। कवायद प्रशिक्षक की भूमिका चोट की प्रकृति ज्ञात करने और उस चोट पर ध्यान देने के निर्णय लेने के लिए होता है।

शारीरिक तनावः– क्या पैरों को जमीन पर जोर से पटकना, एडियों पर मार्च करना, बाजूओं को कन्धों तक तथा ऊपर तक झुलाना, शरीर की अन्य क्रियाओं से अधिक क्षति पहुंचाते है? कवायद अभ्यास की वृद्धि का शरीर और इसकी ऊर्जा तंत्र पर क्या प्रभाव पड़ता है? क्या खेल सम्बन्धी प्रशिक्षण चोट के जोखिम को न्यूनतम करती है? शरीर में चोट लगना और ठीक होना चलता रहता है। किसी अवसर पर बेसुध थकान या ब्रेक डाउन के कारण नहीं होता है।

किसी भी कार्रवाई की बार–बार पुनरावृत्ति करने से उस स्थान के जोड़ पर शारीरिक दबाव, अत्यधिक पड़ता है। जैसे अस्थियां, मांस पेशियां, नसें, स्नायु, उपास्थि और अन्य सहायता करने वाले ऊतकों इत्यादि पर नियमित रूप से कवायद करने से, एक प्रशिक्षार्थी के कई जोड़ों पर अत्यधिक दबाव पड़ता

है। इसलिए शारीरिक क्षमता के स्तर को बढ़ाने के लिए लगातार क्रियाओं को जारी रखा जाए। इसके बगैर, ब्रेक डाउन होने की सम्भावना निश्चित है।

आम चोटें जो प्रशिक्षणार्थी की कवायद कक्षाओं को प्रभावित करती हैः–

कुछ सामान्य चोटें जिसका प्रभाव प्रशिक्षणार्थी पर कवायद प्रशिक्षण कक्षाओं के दौरान बढ़ते हैं वे निम्नलिखित होते हैंः

(ए) नसों में सूजन (टेन्डोनिटिस) :– टेन्डोनिटिस एक पूर्व असावधानी की वजह से लगी परेशान करने वाली चोट है। साधारणतः कवायद कक्षाओं के दौरान लगी चोट एक बार विकसित होने के पश्चात् ठीक नहीं होती है। कवायद कक्षाओं के दौरान लगी यह चोट अक्सर अन्य कठिन प्रशिक्षण गतिविधियों द्वारा बहुत बिगड़ जाती है टेन्डोनिटिस मन्द पीड़ा उत्पन्न करती है अथवा कभी–कभी अत्यधिक तीव्र पीड़ा जो आपेक्षिक जोड़ की हरकत में शिथिलता लाती है। पीड़ा के प्रकार का जख्म की गहराई से सीधा सम्बन्ध रहता है। अनेक प्रशिक्षार्थी बुनियादी प्रशिक्षण के दौरान टेन्डोनिटिस एक या अधिक बार अनुभव करते हैं। ये घुटने, कंधे, कलाई और सामान्यतः अधिक कोहनी के जोड़ों में सबसे ज्यादा विकसित हो सकते हैं। समस्त जोड़ों में इसका सर्वाधिक प्रभाव दिखाई देता है। जिसके कारण कवायद निष्पादन के दौरान अत्यधिक शारीरिक दवाब से पीड़ित होता है। विशेषतः नित्य पैर इत्यादि पटकने के मामलों में अधिक होता है। कुछ मामले इतने गम्भीर होते हैं कि उपचार थेरेपी के द्वारा करके रोगयुक्त किया जाता है। इसके अतिरिक्त चोटिल व्यक्ति पर समुचित ध्यान देने के साथ–साथ विभिन्न प्रकार की व्याधिमुक्त करने की कोशिश करने का यत्न करना चाहिए। (जो केवल स्वरूप करने की प्रक्रिया में सहायता करे)। इस बात का कोई तात्पर्य नहीं है कि चोट की विशिष्ट श्रेणियों का विस्तार क्या है, टेन्डोनिटिस दर्द दायक और कमजोर करने वाला दोनों हैं।

टेन्डोनिटिस के विकास को प्रभावित करने वाले तत्वः–

कुछ तत्व टेन्डोनिटिस को सहयोग देते हैं। इन तत्वों की उपस्थिति अनिवार्य रूप से स्वयं समस्या का कारण नहीं होती है। लेकिन चोट के विकसित होने या बढ़ने का जोखिम हो सकता है। कवायद कक्षाओं के दौरान इस प्रकार चोट लगने के कारणों के कारक निम्नलिखित हो सकते हैं।

1. **कमजोर अंग संचालन :–** भुजाओं के अप्राकृतिक संचालन या अप्राकृतिक दबाव, पैरों पर अतिरिक्त दबाव, कलाईयों, कोहनी और कंधों के जोड़ों पर अत्यधिक दबाव के कारण तकलीफ हो सकती है। कई बार शरीर में इन अनुचित दबाव का एहसास तुरन्त नहीं होता है, किन्तु कुछ समय लगता है, इस तरह प्रशिक्षणार्थी को जल्दी या देर से पुनः संचालन के लक्षण दिखाई देने लगते हैं।
2. **बार–बार दोहराना :–** कुछ कवायद संचालनों के कई बार निरन्तर दोहराने के कारण पैरों को पटकने की स्थिति में होती है।
3. **शारीरिक कमजोरी की स्थितिः–** कमजोर कठोर मांसपेशियां एवं जोड़ों की गति के कारण जोखिम बनी रहती है। जोडों की गतिशीलता, लचकता और लोच के स्तर के लिये व्यायाम करने वाले समुदाय को उसकी व्याख्या, लचीलेपन या नरमी के कारण भी जोडों एवं मांसपेशियों में चोट लग सकती है। ताकत की कमी और जोड़ों में अधिक लचीलापन के कारण निश्चित रूप से चोट लगने का जोखिम बढ़ जाता है। कठोर एवं कमजोर जोड़ हमारे खेल के लिए अति संवेदनशील दबाव को बनाते हैं।
4. **जूतों का खराब फिट होना :–** अत्यधिक कसावट या ठीक से फिट नहीं बैठने के कारण भी पैरों की स्नायुओं में कसाव हो जाता है।

(बी) पैरों में दवाब से होने वाला फ्रेक्चर :– दवाब से होने वाला फ्रेक्चर एक अत्यधिक होने वाली चोट है। इसके कारण जब मांस पेशियों थक जाती हैं और अचानक झटका लगने को रोकने में नाकाम होने अथवा आघात की पुनरावृत्ति के कारण ऐसी स्थिति

बन जाती हैं। अधिक समय बीत जाने के कारण थकी हुई मांसपेशियों से यह दबाव हड्डियों तक स्थानान्तरित हो जाती हैं। जिसके कारण छोटे दरार हो जाते हैं (एक दवाब से होने वाला फ्रेक्चर)

दवाब फ्रेक्चर के कारण :– किसी कठोर सतह पर जोर से बार–बार प्रयोग अथवा पुनरावृत्ति की अधिकता के कारण दवाब से होने वाला फ्रेक्चर हो जाता है। किसी कार्रवाई को अति तीव्रता से तेजी से बढ़ाये जाने के परिणाम से दवाब फ्रेक्चर होने का एक सामान्य कारण है। जैसे अनुचित उपकरणों का प्रयोग किया जाना। सामान्यतः आन्तरिक और वाह्य मांसपेशियों के समूह के असंतुलन के कारण भी इस तरह की व्याधि दिखाई देती है। वाह्य मांसपेशी अत्यधिक कसावट और अत्यधिक सख्त दोनों हो सकती हैं मांसपेशियों की अत्यधिक कसावट के कारण चलने की गति के कारण शाखा विभाजन वाली मांसपेशियों पर प्रभाव पड़ता है पहली बार कसावट भी बाहरी मांसपेशियों की जोर से दवाब पड़ने की वजह से आन्तरिक मांसपेशियों पर जूते सम्पर्क के पहले या बाद में ऐसी स्थिति उत्पन्न हो जाती है (अभ्यास संचालन के दौरान एडी की स्थिति के कारण)। इसी समय आन्तरिक मांसपेशियों (आन्तरिक जंघास्थि सम्बन्धी, अंगुलियों से सम्बन्धित, हैलसिस से सम्बन्धी) पैरों की मांसपेशियों को आगे की ओर तथा नीचे की ओर मन्द गति से काम में लेना चाहिए। (तलवे के घुमाव के आधार पर) जैसे– गति कम करने वाले कार्य करते हैं। यदि वाह्य मांसपेशियों को दवाब से काम करना पड़ेगा इस कमी के कारण अपेक्षाकृत लम्बा और कठोर सख्त कार्य करना होता है। दूसरा तथ्य यह है कि गति के कारण आन्तरिक मांसपेशियों को अत्यधिक कठिन कार्य करना पड़ता है जब पैर जमीन को छोड़ते हैं, परेड छोड़ते है। परेड छोड़ते समय सामने की मांसपेशियों को ऊपर उठाना पड़ता है या झुकाया जाता है। इस तरह पैरों की स्थिति समुचित होना चाहिए ताकि जब पैर आगे लाए जाए, अंगूठें जमीन की तरफ खींचे हुए होना चाहिए। यदि बाहरी मांसपेशियां अत्यधिक कसी हुई होंगी, तो मांसपेशियां फिर सख्त काम कर सके, जैसा कि उन्हें होना चाहिए। पुनरावृत्ति करते समय, कठोर सतह पर इस बात के लिए क्रमानुसार समाहित तथ्य है, जबकि अधिक से अधिक अधोवर्तित करना एक छोटा कारक है। लेकिन इसका सबसे बड़ा कारक मध्यस्थि अस्थियों के असामान्य दबाव के लक्षण है। (मिडियल शिन स्पिलिन्टस)

कारणों और समाधानों की कुंजी : सही करने वाली कुंजी है–

- बाहरी मांसपेशियों को दृढ़ बनाना।
- बाहरी और आन्तरिक मांसपेश्यिों के बीच असन्तुलन।
- कंक्रीट या किसी सख्त सतह पर पटकना।
- अनुपयुक्त जूते– अपर्याप्त आघात आवरण।
- अति प्रशिक्षण

(सी) दोषपूर्ण कवायद जूतों से जुड़ी विशिष्ट समस्या :–

अचिलस टेण्डोनिटिस :– ऐसे जूते जिनमें दृढ़ सोल लगे होते हैं पिण्डलियों को मांसपेशियों के कठोर कार्य करने की वजह से अचिलस टेण्डोनिटिस को विकसित करने में सहायक होती है। कवायद जूते की बनावट के तकनीकी से पता चलता है कि उसकी बनावट आलम्ब और उत्तोलक प्रणाली होती है। जिसका कार्य उत्तोलक भुजा की तरह दीर्घ फासले पर कार्य करना तथा जूते का सिरा आलम्ब पर स्थित होती है। कवायद जूते उस जगह पर लचीला होने चाहिए जहां से टो पैर से जुड़ता है, जो जूते का सबसे चौड़ा भाग भी होता है। जूते की एड़ी मामूली सी उठी होनी चाहिए, विशेष रूप से कवायद बूट में। ऐसे जूते जिनके एड़ियों में अत्यधिक गद्दी होती है, जिनमें वायु दवाब का प्रतिमान हो, ये भी अचिलस टेण्डोनिटिस बढ़ाने में सहयोग देते हैं। एड़ियों के जमीन से टकराने के पश्चात् यह निरन्तर घूमता है, जूते के गद्दे झटकों को रोक सकने की क्षमता रखते हैं।

यह निरन्तर प्रक्रिया संवेदनशील अचिलस टेण्डन को तेजी से बढ़ा सकती है।

प्लान्टर फेस्सीटिस :– जिन जूतों में मध्य भाग में अधिक लचकदार है या जिस बिन्दु पर टो पैर से जुड़ता है पर अधिक दबाव जिसका प्रत्यक्ष प्रभाव पाद तल पर होता है उसका कारण अधिक कसावट होता है जिससे पैर के निचले भाग पर अधिक दबाव होता है (सबलेटलर जोड़)। स्थिरता की कमी जो जूतों में दिखाई देती है वह होती है उसकी समतलता की कमी, यद्यपि उसमें वास्तविक लचक पाई जाती है लेकिन पाद तल के भाग में प्रभाविता के कम होने पर उसे अधोवर्तित करते हुए नियंत्रण बना रहेगा।

(डी) गर्मी सम्बन्धी परेशानियां :– ऐसे स्थानों पर जहां अत्यधिक गर्म जलवायु है कवायद कक्षाओं के दौरान गर्मी से थकान सामान्य बात है। यहां पर, इसलिए पुलिस और अर्धसैनिक बलों के प्रशिक्षण केन्द्रों में व्यापक गरमी से सम्बन्धित चोट रोकथाम व्यवस्था की आवश्यकता है। जिसमें ताप दबाव नियंत्रण तथा ताप दुर्घटना प्रबन्धन का समावेश किया जाना चाहिए। जिसमें ताप चोट उपचार के समस्त पहलुओं को शामिल किया जाए। ताप शान्ति प्रक्रिया में गरमी से आहत व्यक्ति की उच्चतम जोखिम पहचान को सम्मिलित कर, ताप की परिस्थिति को तरल और विद्युतीय विच्छेदन के परिवर्तन कार्य। आराम के मार्गदर्शन, ताप दुर्घटना का प्रबन्धन और निगरानी शामिल है। तापीय थकान की प्रारम्भिक पहचान अधिक गम्भीर तापीय थकान और मृत्यु से बचाव की महत्वपूर्ण प्रगति है। नये रंगरूट विशेषकर जो सर्द जलवायु से हैं, उनके लिए तापीय थकान होने का जोखिम अधिक है जब वे गर्म वातावरण में आते हैं तथा गर्म परिस्थितियों को आत्मसात् नहीं कर पाते हैं।

तापीय थकान को प्रभावित करने वाले तीन कारक हैं।

1. जलवायु (तापमान एवं आर्द्रता)
2. कार्य कलापों की तीव्रता
3. व्यक्तिगत जोखिम कारक। व्यक्तिगत जोखिम कारकों में शामिल है। ताप अनुकूलन का अभाव, गर्मी की तीव्रता, कमजोर शारीरिक दमखम, अतिभार, लगातार अस्वस्थता, निर्विवेकशीलता, मद्य का प्रयोग, तापीय थकान की पूर्व इतिहास, त्वचा में विकार तथा 40 वर्ष से अधिक आयु होना।

रोकथाम :– चोट प्रबन्धन का सबसे उत्तम प्रक्रिया पूर्व रोकथाम को कार्यान्वित करना है। प्रशिक्षण के प्रारम्भिक दिनों में जब प्रशिक्षणार्थियों को उपरोक्त दर्शायी गयी कुछ चोटें होने की आशंका रहती है। सर्वथा प्रायः प्रशिक्षाणार्थी डांट फटकार के भय के कारण उनकी चोटों को प्रकट करने से कतराते हैं। यहां पर इसलिए कवायद प्रशिक्षक को योग्य होने की आवश्यकता है कि वे प्रशिक्षार्थी को होने वाली चोटों पर पारदर्शिता के साथ ध्यान रखे।

चोट प्रबन्धन :– चोटें नरम ऊतकों (मांसपेशी, नसें, स्नायुओं, संपुटिका, पट्टी तथा त्वचा) को हानि पहुंचा सकते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि असामान्य द्रव्य इकट्ठा होना, जिसे सूजन के रूप में देखा जा सकता है। सूजन के कारण बढ़ा दबाव स्वस्थता को रोक सकता है तथा इससे पेशी संकुचन तथा दर्द होता है। चोट के स्थान पर रक्त के अत्यधिक बहाव को कम करने का प्रभावी तरीका है जैसे मांसपेशी में खिंचाव, स्नायु, मोचें तथा गुमटा, इस स्थिति में आर.आई.सी.ई.डी. प्रक्रिया को अपनाना चाहिए तथा एचएआरएम युक्त प्रक्रिया से बचना चाहिए।

विश्राम :– विश्राम से भी नुकसान कम से कम होता है। जहां तक सम्भव हो इस तरह के जख्मी भाग के हरकत से बचें।

बर्फ :– दर्द और ऐंठन तथा रक्तस्राव के कारण सूजन को कम से कम करने का प्रभावकारी उपचार है।

दबाव :– रक्तस्राव और सूजन को कम करने में मदद करता है चोटिल स्थान के नजदीक रक्त वाहिनी शिराओं को दबाने से खून का बहना कम हो जाता है। इस बात की पूरी सावधानी रखना चाहिए कि

जख्म वाले स्थान पर पट्टी कसकर नहीं बांधना चाहिए जिससे कि रक्त प्रसार रुक जाए।

ऊपर (एलिवेसन) :– हृदय के स्तर से ऊपर उठाने पर चोटिल क्षेत्र में जो रक्त का बहाव है वह कम होगा तथा सूजन भी कम होगी।

निदान :– यदि दर्द या सूजन 48 घंटे के भीतर सार्थकता से कम नहीं होती है तो वहां पर प्रशिक्षाणार्थी को एक योग्य चिकित्सक के पास चिकित्सीय उपचार के लिये भेजने की आवश्यकता है। चोट लगने के पहले 2 घंटे के भीतर एचएआरएम युक्त कारकों का त्याग किया जाए।

ताप – ताप में जख्मी ऊतकों से रक्तस्राव में वृद्धि होती है। गर्म पानी से स्नान और बौछार, सोनाज गर्म पानी की बोतल, गर्म थैलियों तथा लेपों को लगाया जाए।

अल्कोहल :– का सेवन नहीं किया जाए क्योंकि यह चोटिल नरम ऊतकों के चारों तरफ रक्तस्राव और सूजन को बढ़ाता है ऊतकों की मलहम पट्टी और पुनर्जीवन तथा चोटों की पुनर्जीवन सूजन के समाप्त होने के पश्चात् ही आरम्भ किया जा सकता है रक्तस्राव और सूजन में बढ़ोत्तरी से स्वास्थ्य लाभ अवधि तदनुसार लम्बी होगी। अल्कोहल एक चोट के दर्द को छिपाता है।

दौड़ :– कवायद कक्षायें या व्यायाम जख्मी भाग को और अधिक नुकसान पहुंचा सकते हैं तथा तीक्ष्ण चोट की तीव्रता बढ़ाते हैं। 72 घंटे के भीतर कार्यकलापों को जारी नहीं करना चाहिए तब तक कि व्यावसायिक चिकित्सक द्वारा अनुमोदन न दिया गया है।

संदेश :– एक चोट की प्रारम्भिक अवस्था में रक्तस्राव और सूजन बढ़ने के कारणों को पता लगाया जाए।

व्यावसायिक सलाह एवं पुनर्निवेशन :– पेशेवर चिकित्सक के द्वारा चोट के प्रभावकारी उपचार और पुनर्निवेशन की सलाह लेना लाभदायक है तथा इसका प्रयोग किया जाना चाहिए। डॉक्टरों, फिजियोथेरेपिस्टों और पुनः निवेशन विशेषज्ञ निपुण होते हैं एवं स्पोर्टस इन्जयूरी में अनुभवी तथा देखभाल और रोगयुक्त प्रक्रिया में जितना सम्भव हो सहायता कर सकते हैं।

पुनर्निवेशन :– चोटिल व्यक्ति के चोट से पहले की शारीरिक अवस्था के स्तर को दोबारा प्राप्त किया जाता है।

एक सम्पूर्ण पुनर्निवेशन प्रक्रिया महत्वपूर्ण है क्योंकि यह चोट की भविष्य/वर्तमान जोखिम को कम करती है। पुनर्निवेशन का उद्देश्य पहले कार्य योग्यता (शक्ति, लचकता, सामर्थ्य, गति, ऊतक संवेदनाएं) पुनः संचित करना तथा तब कवायद की विशिष्ट क्षमताएं (जैसे तेज चलना, बाजुओं को झुलाना, पैरों को पटकना) इत्यादि को पुनः संचित करता है। सामान्य कवायद कक्षाओं में वापस लौटने के लिये आत्म विश्वास प्राप्त करना पुनर्निवेशन प्रक्रिया का एक ही एक भाग होगा। इन मनोवैज्ञानिक तथ्यों को विशेष रूप से सम्मुख प्रस्तुत करने की आवश्यकता है।

जूते पहनना और इसके चुनाव के संकेत :–

जूते का सोल इसके प्रयोग और पहनने के अनुरूप होने चाहिए। ये इस्तेमाल के साथ घिसते हैं। तथा कवायद जूतों का जीवन कवायद प्रशिक्षण की प्रकृति के उपयोग के परिणाम पर निर्भर करता है कि इसके अतिरिक्त इन जूतों को पहनने का प्रयोग अन्य कार्यों जैसे (रूट मार्चेस/शस्त्र प्रशिक्षण इत्यादि) में किया जाता है एक प्रशिक्षार्थी को यह निर्णय लेना पड़ेगा कि कब कवायद बूटों की बदली की जानी चाहिए – जैसे की एक कवायद बूट से अपेक्षित है, जो कि इसके बाहरी दिखावट के अनुरूप हो, प्रशिक्षण के अन्य पहलुओं की क्या आवश्यकता है पर ज्यादा अधिक निर्भर करता हो। पुराने जूते अन्य उपयोगी प्रयोजनों के लिए भी प्रयोग किये जा सकते हैं– जैसे शस्त्र प्रशिक्षण, रूट मार्च इत्यादि। अन्दरूनी सोल में शॉक लाईनर होना चाहिए, जिसकी बनावट सुविधाजनक होनी चाहिए तथा प्रारम्भिक अवस्था में पहनने में गद्देदार होती है। जिसके पश्चात् यह धक्का सहने की सामर्थता जल्दी ही खो देती है।

- एक जूते में ऐसे सोल लगाना आवश्यक नहीं है कि धक्के को सहने के आभाव को खो दे। चाहे वे नये जूते ही क्यों न हो, जिसमें पर्याप्त धक्के

सहने की सामर्थता का अभाव हो सकता है।

- **लम्बाई :–**

  इस बात का यकीन कर लेना चाहिए कि प्रशिक्षार्थियों को प्रदत्त किये जाने वाले जूते के सामने के अंगुलियों की चौड़ाई के मुताबिक होनी चाहिए। यह टो के बचाव में सहायता करेगा।

  जूते के अगले भाग का आकार और गहराई भी समस्या का एक कारण भी हो सकता है।

  दिन की समाप्ति के साथ प्रशिक्षार्थी को जूते के नाप की जांच कर लेनी चाहिए। जब उसका/उसकी पैरों का आकार दिन में चलने से अपेक्षाकृत बड़ा हो गया है।

- **चौड़ाई :–**

  ➢ जूते का सबसे चौड़ाई वाला भाग प्रशिक्षार्थी के पैर के सबसे चौड़े वाले भाग के अनुरूप होगा।

  ➢ यदि प्रशिक्षार्थी को जूते पहनने में पहले दो सप्ताह तक कोई समस्या नहीं रहती है तो यह माना जाता है कि उसका/उसकी जूते सुविधाजनक हैं।

  ➢ समारोहिक अवसरों से पहले नये जूते प्रदान किये जाते हैं। जूते को अवसर से ठीक पहले प्रदान नहीं किये जाएं– इसे कुछ पहले ही प्रदान किये जाएं जिससे कि प्रशिक्षार्थी जूतों को यथासमय पहनकर सुविधाजनक महसूस कर सके।

- **फीता बांधना :–** सुनिश्चित कर लिया जाना चाहिए कि प्रशिक्षार्थियों ने उसका/उसकी जूतों के फीते सावधानीपूर्वक कवायद कक्षा प्रारम्भ होने से पहले बांध लिए हैं। अत्यधिक कसकर बांधे जूते पैर के ऊपरी भाग के हिस्सों को जख्मी या प्रशिक्षार्थियों की पादशालकीय अत्यधिक कसी हुई भीचं रही हैं। कम कसे हुए जूते प्रशिक्षार्थी के पैरों को अत्यधिक संचालित करते हैं और स्थिरता में कमी लाते हैं, जिसका परिणाम सामान्य अधोवर्तिता से अधिक होता है।

जूते पहनना :– यह आपको क्या कह सकता है?

जूते पहनना वास्तव में कुछ अधिक अर्थ रखता है। जबकि यह आपको उससे अधिक कह सकता है। इस धारणा के बारे में कई संदिग्धता आज भी कायम है। यह पैरों की जांच करने में उपयोगी होगा तथा प्रशिक्षार्थी के चाल का अवलोकन करता है। इससे पता चल जाएगा कि जूते कैसे पहने जाएंगे। तब जूतों का परीक्षण करने पर आपको या तो पैर के बारे में अन्यथा उसके चाल के बारे में अन्दाजा लग जाएगा, पहनने की विषमता में एक बात देखने की है। यह कार्रवाई की विषमता को दर्शाएगा। यहां पर पैर की लम्बाई में भिन्नता हो सकती है। एक पैर दूसरे से अधिक अधोवर्तित हो सकती है। एक तरफ मांसपेशियाँ मजबूत और कमजोर हो सकती हैं या परिवर्तिनीय विकृति भी उत्पन्न हो सकती है।

सोल वीपर :–

बाहरी एड़ी :– पिछले पैर से प्रहार करने पर। यह अंग सामान्यतः जमीन के साथ सबसे पहले सम्पर्क में आता है। यह सभी जूतों में होता है। यह पहनने में सामान्य हो सकता है। अधिकांश लोग यही से पहनते हैं यह भाग मामूली सा बाहर हो सकता है और पैरों की विभिन्न अवस्थाओं में बढ़ता है। जो कवायद संचालनों में होना चाहिए क्योंकि चाल का आधार संकीर्ण होता है। (पैर के जमीन पर प्रहार करने के मध्य भाग से दूरी)

आन्तरिक एड़ी :– पिछले पैर से प्रहार करने पर। चलने के ढंग पैर की अग्र अंगुली में सम्भवता जो इस हिस्से को जमीन से सम्पर्क का शुरूआती अंग है, गंभीर रूप से मुड़ जाता है। यदि एड़ी का किनारे भाग अन्दर की और तथा जूतों के पैर का तलुवे के मध्य भाग की ओर मुड़ा होता है। यह कहना सबसे उचित होगा कि वास्तव में पैरों की तरफ देखने की बजाय जूते की तरफ देखना चाहिए।

अग्र पैर में पहनना :– पैर के अग्र भाग का चौड़ा हिस्सा और छोटी एड़ी के जूते पहनने के कारण

अक्सर पैर के अगले हिस्से पर आघात लगता है। असमतल पहनावा या पैर के हड्डियों 'पादशलाका' के दूसरे या तीसरे के नीचे पहनने को चिन्हित् करती है। (पहले छोटे मध्य भाग सम्बन्धी भाग को) तथा अधिक मुड़ जाता है। इस तरह चिन्हित पादशलाका दबाव फ्रेक्चर के लिए अधिक जोखिम भरा हो सकता है।

सोल के मध्य में :– पार्श्व सोल वाले जूते सामान्यतः पहनने पर पैर के नीचे मुड़े हुए भाग को जोर से प्रतिबिम्ब कर पैर को अधिक ऊंचा उठाने में कठिनाई होती है। मध्य में सोल वाले पहनने पर विपरीत में और ऊपर मध्यवर्ती में मुड़े हुए सोल वाले जूते प्रायः अत्यधिक कष्टदायक प्रोनेसन को दर्शाते हैं।

हील काउन्टर (एड़ी का प्रतिकूल) :– एड़ी का अन्दर की तरफ प्रति मुड़ाव अत्यधिक प्रोनेसन के कारण हो सकता है तथा पैर के नीचे मुड़े भाग को ऊंचाई से बाहर की ओर धकेलता है।

ऊपरः– जूते का ऊपरी भाग और भी अन्दर की तरफ मुड़ा हुआ पैर के अति प्रोनेटिंग के साथ, पैर के बाहरी ओर ऊपर की तरफ मुड़ जाता है। (प्रोनेटिंग के अन्दर)। इसकी वजह से पैर की अंगुलियों से छेद हो सकता है अथवा इस कारण अंगूठा अकेला रह जाता है। इसका तात्पर्य यह है कि पैर के सामने का भाग काफी सिकुड़ सकता है या काफी संकीर्ण हो सकता है। इस प्रकार जूते के अंगुलियों के सामने वाला भाग एक अंगुली की चौड़ाई का होना चाहिए। यदि पैर की अंगुली जूते की नोक से 1/2 इन्च से आगे ढंकेलने से कम जगह बचती है तो जूता वास्तव में काफी छोटा है।

कैसे सुनिश्चित किया जाये कि कवायद बूट बिल्कुल अनुकूल हैः–

- सुनिश्चित करें कि प्रशिक्षार्थी को कवायद कक्षाओं के लिए प्रदत्त किय गये जूते उच्च स्तर के हैं।
- जुराबों की मोटाई जूते की फिटिंग पर असर डालती है। सुनिश्चित करें की प्रशिक्षार्थी ने समान नाप के जुराब पहने हैं। नये कवायद बूटों के जोड़े को चुनते समय, समान प्रकार के जुराब चुनने का अभिप्राय होना चाहिए।
- जूते दिन में देर तक के लिए अनुकूल होने चाहिए। जूते दिन में समय व्यतीत के पश्चात वजन के भार के कारण फैलते हैं।
- सुनिश्चित करें जब प्रशिक्षार्थी जूते पहनते हैं तो देखने व चलने में वे कैसा महसूस करते हैं।
- प्रशिक्षार्थियों को ऐसे जूतों का चुनाव करना चाहिए जो आरामदायक हो। एक सप्ताह तक अच्छा महसूस नहीं करता है यदि वह खरीदते समय अच्छा महसूस नहीं करता है।
- **कवायद बूटों के चुनाव/निर्माण के लिए कुछ दिशा निर्देश :–**

  कई बार अक्सर एक प्रशिक्षार्थी के अपने पैर में असामान्य लक्षण हो सकते हैं। जिसपर चोट से पूर्व निवारण के लिए ध्यान देने की आवश्यकता होती है। इसके कुछ उदाहरण निम्नानुसार हैः–

➢ निम्न मेहराब :– अधिक सहारे की आवश्यकता है। स्थायी जूतों में पिछले पैर के भाग में उचित नियंत्रण की आवश्यकता है।

➢ उच्च मेहराब :– अधिक धक्के को अवशोषण करने वाला होना चाहिए। संकीर्ण एड़ी और चौड़ी एड़ी वाले पिछले पैर की बनावट बेहतर होती है। जो ऊंचे मेहराब वाले पैर में होते हैं। एड़ी के सम्पर्क से जूते अधिक चलने और तेजी से चलने में, उतारने और पहनने में सीमित किया जा सकता है।

➢ सामान्य पैर :– प्रायः नियंत्रण और धक्के को सहने के संयोजन में उत्तम है।

➢ दबाव फ्रेक्चर के पश्चात् :– पर्याप्त धक्के को सहने वाले जूते लेना नहीं भूलना चाहिए।

➢ एचीलस टेन्डीनिटिस :– उपरोक्त विवेचन देखें। ऊंची एड़ी का प्रयोग करें। कठोर सोल वाले जूतों का त्याग करे। जहां पर पैर की अंगुलियां, पैर से मिलती है वहां से मुड़ा होना चाहिए।

अध्याय VII

वर्दी में आचरण

प्रस्तावनाः–

अधिकांश लोग, एक पुलिस अधिकारी को उसकी अधिकारिक पुलिस वर्दी के कारण पहचानते हैं। जब आम नागरिकों को, व्यस्त सड़क पर किसी प्रकार की सहायता की आवश्यकता होती है, तो वे पैदल चलने वालों की भीड़ में से विशेष वर्दी धारी पुलिस अधिकारी को देखकर पहचान लेते हैं। वाहन चालक जब एक चौराहे पर आते हैं, जहां कोई पुलिस कर्मी ड्यूटी पर तैनात हो, तो वह स्वेच्छा से उसके हाथों के इशारों पर चलते हैं। सामान्यतः आपराधिक तत्व अपने गैर कानूनी कार्यकलापों को रोक लेते हैं। जब वे क्षेत्र में वर्दी धारी पुलिस अधिकारी को अपने समक्ष मौजूद पाते हैं। अनेक माता पिता अपने बच्चों को पुलिस वर्दी धारी व्यक्तियों को आदर से देखने और उनपर विश्वास करने की शिक्षा देते हैं। पुलिस अकादमी के रंगरूट उस दिन उत्साह से भर जाते हैं, जब वे आधिकारिक तौर पर पुलिस वर्दी पहनने के हकदार बनते हैं। पुलिस वर्दी में ऐसा क्या विशेष है जो कि सस्ते पोलिएस्टर का बना और सामान्यतः पहनने में गर्म और तकलीफदायक होता है।

एक पुलिस अधिकारी की भंगूर वर्दी उसके अधिकार और प्रभुत्व को दर्शाती है। जब एक पुलिस अधिकारी, (पुरुष या महिला) वर्दी लगाते हैं, तो आम जनता उन्हें विशेष सम्मान से देखती है। वह वर्दी धारी (पुरुष या महिला), प्रत्येक व्यक्तियों के समक्ष समस्त पुलिस अधिकारियों के प्रति दृढ़ विश्वास की भावना को साकार करने का प्रदर्शन करते हैं। अनुसंधान बतलाते हैं कि कपड़ों के परिचयमात्र से गहन प्रभाव पड़ने से लोग अनुभूत हो जाते हैं और ऐसा ही पुलिस अधिकारियों के मामले में होता है। पुलिस अधिकारियों की वर्दी का उन पर मनोवैज्ञानिक प्रभाव पड़ता है, जो इस बड़े ध्यान से देखते हैं अनुसंधान यह भी सुझाव देता है कि वर्दी पहनने के तरीके में तनिक भी परिवर्तन नागरिकों को कैसे विचलित कर देते हैं।

पुलिस वर्दी, एक उतनी ही प्राचीन परम्परा है जितनी कानून के क्षेत्र का स्वयं क्रियान्वयन है। वर्ष 1829 में प्रथम आधुनिक पुलिस बल, लन्दन मेट्रोपोलिटियन पुलिस ने पहली बार उच्च स्तरीय, पुलिस पोशाक विकसित की। इनसे पहले पुलिस अधिकारियों को प्रसिद्ध ''बार्बीज'' आफ लन्दन गहरी नीली, अर्द्धसैनिकों जैसी वर्दी जारी की गयी। नीले रंग का चुनाव, पुलिस को ब्रिटिश सेना से पृथक दिखाने के लिए चुना। जो कि उस समय लाल और सफेद वर्दी पहनते थे। संयुक्त राज्य में प्रथम आधिकारिक पुलिस बल की स्थापना वर्ष 1845 में न्यूयार्क शहर में की गई। लंदन पुलिस के आधार पर, न्यूयार्क शहर पुलिस विभाग ने वर्ष 1853 में गहरी नीली वर्दी अपनायी। अन्य शहर जैसे कि फिल्डेलफिया, बोस्टन, सीनी–सिन्नटी क्लीवलैण्ड, बफेलो और डिट्रोइट में शीघ्रता से लंदन के प्रतिरूप का अनुसरण करते हुए पुलिस विभाग की स्थापना गहरे नीले रंग की अर्धसैनिक बलों जैसे तरीके की वर्दी को अपनाने सहित की गई।

इस वजह से जब सभी पुलिस कर्मी वर्दी में होते हैं तो उनसे अति उच्चस्तरीय चुस्तता और अनुशासन को निर्वाह करने की आकांक्षा की जाती है। यदि एक अधिकारी चुस्त वेशभूषा और उच्च अनुशासन वाला है, एवं स्वयं का आचरण कैसा होना चाहिए। इसे जानता हो, जब वर्दी पहने हुए हो यदि उसके स्वयं की वेशभूषा उच्चस्तरीय नहीं है तो उसे अपने अधीनस्थों से आदर प्राप्त नहीं होता है। न ही वह चूक के लिए उन्हें प्रांकन कर सकता है। अतः यह अति आवश्यक है कि जब सभी अधिकारी वर्दी में हो तो उनसे उत्तम वेशभूषा उचित व्यवहार और अभिवादन देने और लेने की जानकारी और अभ्यास करना चाहिए।

वेशभूषा :–

2 जब वर्दी में हों तो अच्छी वेशभूषा अनुशासन

की बुनियादी आवश्यकता है। वेशभूषा हर किसी के व्यक्तित्व को दर्शाती है। सभी अधिकारियों को, जब वर्दी में हो, स्वयं के उत्तम वेशभूषा पर सदैव गौरवान्वित होना चाहिए। वर्दी को आदर्श नियमानुसार उचित रीति से पहनना चाहिए और किसी भी समय कोई भी अधिकारी अर्ध वर्दी, अर्धसैनिक पोशाक में अपने कक्ष/आवास से बाहर दृष्टिगोचर नहीं होना चाहिए। वस्त्र उपस्कर अत्यन्त स्वच्छ और उचित इस्त्री किये हुए हों और सही रीति से धारण किया होना चाहिए।

3. उत्तम वेशभूषा के लिए निम्नलिखित बिन्दुओं का स्मरण होना चाहिए।

(ए) सिर का पहनावा :–

यह आदर्श नियमानुसार नमूने का होना चाहिए। और उचित तरीके से फिटिंग होनी चाहिए। बैरेट के मामले में यह सही तरीके से, और दाहिने तरफ खिंची हुई होनी चाहिए और अर्ध कर्ण ढका हुआ होना चाहिए।

- यह स्वच्छ होना चाहिए तथा पसीने और बालों के तेल से मुक्त होना चाहिए।
- इसे उचित रीति से पहना होना चाहिए।
- बालों की कटाई छोटी और अनुसीमन लम्बाई की होनी चाहिए।

(बी) चेहरा :– दाढ़ी बनी हुई हो। एक भद्र पुरुष को नित्य दाढ़ी बनाना चाहिए (सिख अधिकारी, अपनी दाढ़ी और मूच्छों का उचित रख–रखाव करें)।

(सी) कमीजें :–

- उत्तम फिटिंग की हो एवं सभी सलवटे एक जगह एकत्र कर उचित रीति से अन्दर की हुई हो।
- उत्तम धुलाई और इस्त्री की हुई हो तथा यदि लम्बी बाजू की कमीज पहनी हुई हो तो बाजू उचित रीति से मुड़ी हुई होनी चाहिए।
- बटन अखण्ड होने चाहिएं एवं टूटा हुआ नहीं हो तथा सही तरीके से सिला होना चाहिए।
- पद के बैज स्वच्छ और उचित रीति से पहना हुआ हो।
- सिलाई से धागे के निकले हुए किनारे का दृष्टिगोचर होना स्वीकृत नहीं होगा।
- लेन यार्ड और सीटी उचित रीति से पहने हुए होने चाहिए।

(डी) बेल्ट :–

- कसी हुई पहननी चाहिए।
- बकल कपड़े के बटन के साथ मध्य और सामने की पंक्ति में होना चाहिए। वैब बेल्ट के मामले में पीतल के कुण्डे बकल के दोनों तरफ एक इंच की समान दूरी में होना चाहिए।
- बेल्ट में लगे पीतल/रजत उत्तम पालिश किया हुआ हो।
- यदि वैब बेल्ट पहन रहे हों तो पतलून की पीछे की लुप्ती बेल्ट के दोनों हुकों के मध्य में होनी चाहिए।
- वैब बेल्ट उचित तरीके से पालिश की हुई होनी चाहिए और चमड़े का बेल्ट स्वच्छ पालिश की हुई होनी चाहिए।

(ई) पतलून :–

- यह निर्धारित नियमानुसार होनी चाहिए और विशेषकर कमर में अच्छी फिटिंग की हुई हो। मोहरी न तो बहुत कसी हुई और न ही बहुत ढीली होनी चाहिए।
- उत्तम स्वच्छ और इस्त्री की हुई होनी चाहिए।
- बेल्ट के लिए कुंडे यथोचित नाप के होने चाहिए और बैल्ट के साथ उसी प्रकार के बटन के साथ सिले होने चाहिए।

(एफ)जुराब :–

1. पूरी तरह ऊपर खीचें हुए हों।
2. यदि जुराब में लचीला शिखर उपलब्ध नहीं है

या यदि लचीले ढीले हों लचीला फीता प्रयोग किया जा सकता है।

3. किसी भी अवस्था में फटे जुराब नहीं पहने जाएं।

(जी) जूते :–

➢ ये नियमानुसार नमूने के और अच्छी अवस्था में होने चाहिए। लैसों को मजबूत, इसमें ऐठन और गांठें नहीं होनी चाहिए। यह कस कर बंधी होनी चाहिए जितना हो सके जूते के छेदों और लेपों के नजदीक होना चाहिए।

➢ सफाई से पालिश की हुई होनी चाहिए।

➢ जूते के तले अच्छी तरह मरम्मत किये हुए होने चाहिए।

अभिनन्दन :–

4. प्रत्येक एवं समस्त अधिकारी को सेल्यूट के महत्व की समझ होनी चाहिए। यह उच्च अधिकारी के लिए अभिनन्दन का एक तरीका है और न कि चापलूसी का है। यह अपने उच्च अधिकारी के प्रति अनुशासन और आदर की अन्दरूनी भावना की वाह्य निशानी है। पुलिस बल में प्रचलित भावना एवं चेतना, उतने ही रीति से प्रकट किये जाते हैं जिसमें कि एक व्यक्ति सेल्यूट देता है, और अधिकारी किसी अन्य तरीके से उस सेल्यूट का प्रत्युत्तर देते हैं।

5. सैल्यूट, असल में मित्र साथियों के मध्य एक आम अभिवादन है। जब एक अधीनस्थ, वरिष्ठ अधिकारी से मिलता है तो उन्हें सैल्यूट देना, अनुशासन का बुनियादी विषय होता है। इस तरह उचित तरीके और चुस्ती से दिया गया सैल्यूट, प्रशिक्षण पर निर्भर करता है। शीघ्रता और उचित तरीके के प्रत्युत्तर में दिया गया सैल्यूट कर्तव्य की आवश्यकता है। सैल्यूट और प्रत्युत्तर में दिया गया सैल्यूट, देने में असफलता, अनुशासन के निम्नतर स्तर और अनादर की भावना को दर्शाता है। अधिकारी द्वारा वर्दी में सैल्यूट दिये जाने के लिए जोर देना और उसमें असफलता भी एक अनुशासन भंग करने के समान है।

1. निम्नलिखित रीतियों से सैल्यूट दिया जाना चाहिए।

(क) सिर पोशाक के साथ (टोपी) :–

- **वरिष्ठ अधिकारी को रिपोर्ट देते समय :–** वरिष्ठ अधिकारी को कुछ मौखिक संवाद के लिए रिपोर्ट देने के लिए अधिकारी की तरफ चुस्तता से आगे बढ़े। अधिकारी से दो कदम के फासले पर रुके और सैल्यूट करें। संवाद के पश्चात् दोबारा सैल्यूट करें, पीछे मुड़े और वापस लौटें।

जब वरिष्ठ अधिकारी को कोई वस्तु सौंपने या प्राप्त करने के लिए रिपोर्ट करते हैं, तब सैल्यूट करने के पश्चात् एक कदम आगे लें और वस्तु को सौंप दें/प्राप्त करें। इसके प्रश्चात् एक कदम पीछे लें। सैल्यूट करे, पीछे मुड़े और वापस लौट जाएं।

- **जब वरिष्ठ अधिकारियों के नजदीक से गुजर रहे हों :–**

जब वरिष्ठ अधिकारी के नजदीक से गुजर रहे हों तब पार्श्व में सैल्यूट दिया जाना चाहिए। अधिकारी से करीब तीन कदम की दूरी से पूर्व सैल्यूट देना आरम्भ किया जायेगा। सैल्यूट के दौरान अधिकारी की तरफ चेहरा घुमायें।

- **जब वरिष्ठ अधिकारी के समीप जाने पर :–**

वरिष्ठ अधिकारी के समीप पहुंचने पर सावधान में आएं। अधिकारी के तरफ चेहरा करें और सैल्यूट करें। यदि अधिकारी का एक समूह किसी अनुशासित स्थिति में एक स्थान पर उपस्थित हो, तब उनमें से वरिष्ठ वरिष्ठत्म अधिकारी की तरफ चेहरा करेगा और सावधान में बात करेंगे व अकेले सैल्यूट करेंगे।

(ख) बगैर टोपी और सादे कपड़ों में सैल्यूट करना:–

- जब एक अधिकारी को रिपोर्ट करना है। अधिकारी की तरफ बढ़े और चुस्तता से सावधान पोजीशन में ही केवल थम करे।

- जब वरिष्ठ अधिकारी के नजदीक से गुजर रहे हों, दोनों हाथों को बगल में कांटे और सिर और आंखों को पार्श्व की तरफ मोड़े। हाथों से सैल्यूट न करें।
- वरिष्ठ अधिकारी से/द्वारा वार्ता पर सावधान खड़े रहें।
- वरिष्ठ अधिकारी के गुजरने पर सावधान में खड़े रहें। यदि दो या दो से अधिक व्यक्ति अनुशासित स्थिति में एक स्थान पर उपस्थित हों तो सिर्फ वरिष्ठतम् सभी के लिए सावधान पुकारेंगे।
- जब सादे लिबास में हों, यदि पाश्चात्य ढंग की टोपी पहने हो उसे उतार कर सिर साफ करें और अधिकारी की तरफ चेहरा करते हुए सावधान में आये।

सामान्य :–

- वरिष्ठ अधिकारी के कार्यालय कक्ष में पहली बार रिपोर्ट करते समय बगैर टोपी के नहीं जाएं। वरिष्ठ अधिकारी को टोपी के साथ ऊपर निर्दिष्ट अनुसार सैल्यूट करें। दूसरी ओर लगातार समय में कार्यालय कक्ष में प्रवेश के दौरान टोपी का प्रयोग नहीं करें।
- जब किसी भवन से बाहर जा रहे हों, तो टोपी के पहने बिना नहीं जाएं।
- जब वरिष्ठ अधिकारी के कार्यालय कक्ष के अन्दर में यदि बैठने को कहा जाए, सिर से टोपी को उतारें और बैठ जाएं, विशेषतः तब जब पीक कैप प्रयोग कर रहे हो। टोपी को सिर से हटाने के पश्चात् इसे वरिष्ठ अधिकारी के मेज पर नहीं रखें। इसे गोद में रखें या एक कुर्सी इत्यादि पर जो नजदीक उपलब्ध हो, उस पर रख दें। अधिकारी से मिलकर वापस लौटने से पूर्व दोबारा सिर पर टोपी लगायें, सैल्यूट करें और वापस लौट जाएं।
- जब मैस लाउन्ज या भोजन कक्ष में प्रवेश कर रहे हों, सिर से टोपी को उतारें और इसे प्रवेश मार्ग में पूर्व निर्दिष्ट रैक पर टांग दें।
- जब अपने स्वयं के कार्यालय या अन्यत्र में बैठ रहे हों, सिर से टोपी को उतारे दें।
- अधिकारी सैल्यूट को योग्यतानुसार नम्रता के साथ प्राप्त करें और लौटायेंगे। जब दो या अधिक अधिकारी उपलब्ध हों, तो वरिष्ठ सैल्यूट का जवाब लौटाएंगे।
- जब घोड़े पर घुड़सवारी के दौरान दोनों हाथ से लगाम थामे हों तब आंखों को दाहिने या बाएं बगैर हाथों को हटाएं, देखें। जब लगाम को केवल एक हाथ से पकड़ा हो, दाहिने हाथ से सैल्यूट करें।
- जब मोटर गाड़ी (मोटर साइकिल सहित) चला रहे हों। सैल्यूट नहीं करें। परन्तु जब वाहन स्थिर हैं वरिष्ठ अधिकारी को निर्धारित विधि से सैल्यूट करेंगे।
- जब वर्दी हो तो महिलाओं को सामान्य तरीको से अभिवादन किया जाए या अभिनन्दन किया जाए, जैसे कि यदि सिर पर टोपी पहने हुए है तो सैल्यूट करके किया जाए, न कि नमस्ते करके और यदि नहीं तो सावधान में आकर करें।
- जहां पर शारीरिक असमर्थता के मामले में, दाहिने हाथ के साथ सैल्यूट करना असम्भव हो, सैल्यूट बाएं हाथ से दिया जाए।

पोशाक व्यवस्था नियम :–

सभी पदों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि वे पोशाकों (वर्दी) के नीचे दिये निर्देशों का निपुणता से अनुपालन किया जा रहा है और वे पोशाक व्यवस्था नियम का पालन करते हैं।

(क) अधिकारी सुनिश्चित करेंगे कि सभी प्रकार के यूनिफार्म उनके पास उपलब्ध हैं।

(ख) पुलिस अधीक्षक/कमांडेंट सुनिश्चित करेंगे कि सभी पदों (अधिकारियों के अतिरिक्त) को जो उनके अधीन में हैं, को निर्धारित यूनिफार्म

निर्गम किये गये हैं।

(ग) जब वर्दी में हों तो अनाधिकृत आभूषण या चिन्ह नहीं पहना जायेगा। अंगूठी पहनना स्वीकार्य है।

(घ) जो व्यक्ति दाढ़ी बढ़ाना चाहते हैं, उन्हें दाढ़ी बढ़ाने की अनुमति नहीं है। जब वर्दी में हो, चाहे ड्यूटी पर हो या जनता के बीच जा रहे हों।

(ङ) जब व्यक्ति अवकाश पर जा रहे हों, उनके साथ वर्दी ले जाने की अनुमति है जिससे आकस्मिक जरूरत पड़ने पर अधिकारी प्रयोजनों के तौर पर प्रयोग कर सकें।

(च) जिन जरूरतों पर वर्दी पहनने की आवश्यकता है–

➢ जब ड्यूटी पर हो।

➢ जब परिवहन सेवा में यात्रा कर रहे हों।

➢ जब संदेश वाहक या एस्कोर्ट ड्यूटी कर रहे हों।

➢ जब टुकड़ी के साथ यात्रा कर रहे हों।

➢ जब समारोहिक अवसरों में शामिल हो रहे हों।

➢ प्राधिकृत वर्दी के अतिरिक्त अन्य कोई वर्दी नहीं पहनी जाएगी।

नोट – जब वर्दी में हो सिर की टोपी भोजनालय, सम्मेलन, कक्षा, या जब सभा में शामिल हो रहे हैं, के अतिरिक्त पहनी जाएगी।

(छ) जब रेस्टोरेंट, होटलों या अन्य सार्वजनिक स्थानों (रेजिमेन्टल, शासकीय, सामाजिक, आवासों के अतिरिक्त) से खेल या क्लबों में वर्दी नहीं पहनी जाएगी।

(ज) खरीददारी के लिए वर्दी में पैदल/जाना निरूत्साहित करें। अपवाद स्वरूप शासकीय खरीददारी के लिए अकेले/समूह में जा सकते हैं।

(झ) अधिकारी सादी पोशाकों में रह सकते हैं।

- जब संघटीय क्रीड़ा प्रतियोगिता और अन्य मनोरंजक गतिविधियों में चाहे प्रतियोगी या दर्शक के रूप में भाग लेने आ/जा रहे हों।
- जब अधिकारी द्वारा परिवहन को सुख सुविधा कारणों से किराये पर लिया गया हो।
- जब कार्यालय में दोपहर में या अवकाश के दौरान या अन्य विशेष साप्ताहिक दिवसों में जैसा कि पुलिस अधीक्षक/कमांडेंट या अन्य वरिष्ठ अधिकारी के विवेक पर।
- जब ड्यूटी के दौरान किसी सार्वजनिक या निजी परिवहन से यात्रा कर रहे हों।

(ट) एक अधिकारी जब राष्ट्रपति और राज्यों के प्रमुख या वरिष्ठ अधिकारी की अगवानी, फील्ड/परिचालनिक क्षेत्र के अतिरिक्त कर रहे हों, तो समारोहिक वर्दी में होंगे। अन्य सिविल उच्च पदधारी महानुभावों को सामान्य वर्किंग इस पीक कैप/पगड़ी समारोहिक अवसरों के अतिरिक्त या जैसा विशेष आदेश पारित होंगे, पहना जाएगा।

(ठ) जब खुली गाड़ी में या मोटर साईकिल/स्कूटर मे सफर कर रहे हों, कोट पार्का/छोटा ग्रेट कोट/ग्रेट कोट पहना जा सकता है।

(ड) राज्य समारोहिक अवसरों या प्रतिष्ठा, स्वतंत्रता दिवस समारोह, गणतंत्र दिवस परेड, बीटिंग आफ द रिट्रट, सेना/सी.पी.ओ./सी.पी.एम.एफ. परेड, राष्ट्रपति/राज्यपाल निवास अभ्यागम या कोई विशेष रूप से घोषित अवसरों पर समारोहिक वस्त्र पहना जायेगा।

(ढ) सेवारत् अधिकारी सादी पोशाक के साथ लघु पदक नहीं पहनेंगे।

(त) तलवार केवल निम्नलिखित के द्वारा ही ले जायी जाएगी।

- सैन्य अभिवादन (गार्ड ऑफ ऑनर) के कमाण्डर और अन्य सीमित निर्धारित अधिकारीगण।
- परेड कमाण्डर निशान प्रस्तुतिकरण परेड पर, स्वतंत्रता दिवस परेड, शहीद दिवस परेड,

विदाई परेड और सभी समारोहिक परेड, बल दिवस परेड, गणतंत्र दिवस परेड और प्रस्तुतिकरण परेडों में भाग लेने वाले कमाण्डर और अन्य सीमित प्रतिभागी।

- एडजूटेन्ट या सी.डी.आई. अकादमी या अन्य प्रशिक्षण संस्थान में दीक्षान्त समारोह परेड के दौरान।
- करेक्शनल प्रशिक्षण संस्था या अन्य स्थानों पर जहां दीक्षान्त समारोह के दौरान, सभी सीमित नियुक्तिगण या अन्य दूसरे निर्धारित स्थान जहां परेड होनी है।
- पदक प्राप्त करने वाले सभी अधिकारियों।

नोट :– पुनः निरीक्षण अधिकारी और उनके साथ मंच पर जो अधिकारी हैं, तलवार ले जा सकते हैं।

पोशाकों के प्रकार :–

विभिन्न समारोहों में पहने जाने वाली पोशाकों के प्रकार का वर्णन करेक्शनल सेवाओं के सक्षम अधिकारी द्वारा आदेशों में पारित किया जायेगा।

सादी पोशाक :– अधिकारियों द्वारा सादी पोशाकों का पहनावा निम्न प्रकार है।

क्राउन और बैरेट के अन्य विवरण के परिणाम

सेंटीमीटर में नाप तोल गोलाई अन्दरूनी गोलाई		सीमा के स्तर की गहराई सभी रिबन बाइन्डिग पर क्राउन का व्यास
6	48.5	23.5
6¼	50.5	24
6½	52.5	25
6¾	54.5	25.5
7	56.5	26.5 सेमी
7¼	58.5	26.5
7½	60.5	27.5
7¾	62.5	28
8	64.5	28.5

पीक कैप का विस्तारपूर्वक विवरण :–

(ए) क्राउन :– क्राउन के ऊपर के भाग पर दोनों तरफ 5 सेमी का होगा, सामने से 6 सें. मी. और पीछे 4 सें. मी.। क्राउन के सामने से आधार से ऊपर तक जो सामने है उसका बैण्ड स्तर 11 सें. मी. का होगा। यहां पर दो रोशनदान छेद 1.5 सें. मी. दोनों तरफ होंगे। रोशनदान छेद जितना मुमकिन हो हैडबैन्ड स्तर के नजदीक होगा।

(बी) ठोडी फीता (चिन स्ट्रिप) :– कमांडेंट और ऊपर के लिए ठोडी फीता, काले पेटेन्ट चमड़े का बना हुआ होता है। ठोडी फीता की चौड़ाई 1.9 सें.मी. होगी। चिन स्ट्रिप के किनारे दो लघु बटनों से जुड़े होंगे। पीक कैप के दोनों तरफ हैड स्तर पर बटन 1.5 सें. मी. पीक के किनारे से जुड़ा होता है।

(सी) पीक :– पीक 20 डिग्री के समानान्तर कोण में सेट किया जाता है और इसके अन्दर फाइबर कसकर दबा होता है। पीक की मध्य में चौड़ाई 6.5 सें. मी. होगी पीक खाकी बराथया सर्ज से बना हुआ होता है।

(डी) हैड बैण्ड स्तर :– हैड बैण्ड स्तर की चौड़ाई, चारों तरफ से 5 सें.मी. होता है। हैडबैण्ड स्तर की मोटाई 0.5 सें. मी. होती है।

2. पीक कैप में जरी का पूरा कार्य श्वेत रंग के जरी से किया जाता है, जहां पर प्राधिकृत है।

कन्धे का पहनावा :–

1. कसीदाकार टाइटल शोल्डर – आदेश में निर्दिष्ट लेख के अनुसार कंधे का नाम लेख होगा कंधे का नाम लेख आधे इन्च की ऊंचाई में, कन्धे के फीते के अधोभाग में लगाया जाता है। कसीदा कार कन्धे का नाम लेख अनियमित वर्किंग ड्रेस में कसीदा कार पद बैग के साथ अभियान एवं अन्य दूसरी ड्यूटियों के दौरान पहना जाता है।

पद के बेज :– सफेद धातु के 5/32 से 3/4 इंच के राज्य प्रतीक पांच नोक वाले भारत के तारों वाली में तारे का आकार 1 इंच चौड़ा होता है।

एक अधिकारी द्वारा पहने जाने वाले पद का बैज उस से सम्बन्धित होगा और जैसा वास्तव में वह धारक है या कोई न कोई स्वतंत्र रूप से या एक स्थानापन्न अवसर और आईपीएस के रूप में।

नोट :– टोपी के बेज के नीचे कोई पार्श्व वस्तु प्रयोग नहीं किया जाए।

नोट :– कमांडेंट और ऊपर के द्वारा जार्जेट पेचेस कालर डांग के साथ पीछे से चमकीला जैसा प्राधिकृत है।

गर्दन पहनावा :–

स्कार्फ :–

1. समर्थ प्राधिकारी द्वारा अनुमोदित नमूने के स्कार्फ ही वर्दी के साथ पहने जाएं। समस्त पद जो दल के सदस्य के रूप में गणतंत्र दिवस परेड, प्रतिष्ठा परेड, और सैनिक अभिवादन में भाग ले रहे हैं, समारोहिक में निर्धारित नमूने का स्कार्फ पहनेंगे। समारोहिक के कार्मिक और क्वार्टर गार्ड और स्टिक अर्दली भी इसी तरह का स्कार्फ पहनते हैं।

जार्जेंट पेचेस और कालर डाग :–

2. पुलिस अधीक्षक/कमांडेंट और ऊपर के पद के अधिकारी निर्धारित नियम के अनुसार पहने जाने वाले जार्जेंट पेचेस का नाम जो विस्तार पूर्वक वर्णन इस प्रकार है।

(ए) पोशाक जिसके साथ पहना जाएगा :–

- कमीज टेरीकाट खाकी (ग्रीष्म)
- कमीज अंगोला ड्रेस (शीत)
- सर्विस ड्रेस

(बी) कमीज के साथ जार्जेंट पेचेस पहनना :– अन्दरूनी किनारा 4 सें. मी. लम्बा और वाह्य किनारा 4.5 सें. मी. लम्बा होगा। चौड़ाई 3 सें. मी. होगी जार्जेंट पेश का शिखर नुकीला जिसके साथ सम द्विबाहु त्रिभुज की बाजू 2.5 सें. मी. जिसका अंश ऊपर दिया गया हो। जार्जेंट पेच का निचला किनारा थोड़ा तिरछा होगा। आन्तरिक और वाह्य लंबाई के बीच परिवर्तन के कारण ताकि ये कमीज के कॉलर के अनुरूप हो। कॉलर के अन्दर या वेल्क्रो से जुड़े धातु की क्लिप कॉलर पर जार्जेंट पेच से कसकर जुड़ा होता है। जार्जेंट पेच कॉलर पर इस तरह से पहना जाएगा कि छोटा अन्दरूनी किनारा कॉलर के मुड़ाव की पंक्ति में हों।

(सी) व्याख्या :– एक धातु का लघु बटन, त्रिभुज के मध्य नुकीले छोर की तरफ होगा। बटन कमांडेंट और ऊपर के पदों के लिये आई.पी.एस. प्रतिरूप में होगा। जार्जेंट पेच पर सजावट का प्रयोजन, पुलिस अधीक्षक/कमाण्डेण्ट, अतिरिक्त डी.आई.जी. और डी.आई.जी. के लिये सफेद जरी पर एकल स्ट्रिप होगा। पुलिस महानिरीक्षक और ऊपर के पद के अधिकारियों के लिये जार्जेंट पेच पर सजावट का प्रयोजन एक ओक पत्ती से दो पत्तियां होंगी।

पदक और पदक रिबन :–

(ए) लगाने का वर्णन और तरीका :– पदकों को एक सख्त कठोर बकरम या धातु प्लेट जो गहरे रंग की धारियों से जुड़ा होता है। पूरे पदकों का नापतौल और पहनने की तरीका निम्नानुसार है।

- आधार का समानान्तर परिमाण 20 सें. मी. (जहां तक सम्भव हो इसे 15 सें. मी. तक सीमित) और लम्बवत् परिणाम 7.5 सें.मी. होगा।

- पदक रिबन की लम्बवत् लम्बाई, पदक के शिखर तक 4 ये 4.5 सें.मी. होगा तथा पदक का पिछला भाग, गहरे रंग की धारियों से घिरा यह 7.5 सें.मी. होगा। पदकों को इस तरह सिला जायेगा कि पदक का आधा भाग रंगीन धारियों से नीचे लटका होगा और सभी पदक सतह में एक रूप से संवरे हुए हों।
- जब पदकों की, उनकी संख्या के कारण गणना नहीं की जा सके तब पदकों को इस तरह सिला जाये कि सभी पदक दृष्टिगोचर हों। इन्हें दूसरे के ऊपर दाहिने से बाएं लगाएं जिससे कि वरिष्ठतम् अलंकरण या पदक पूर्ण रूप से स्पष्ट दिख सके।
- पूरे पदकों को कमीज या टयूनिक के बाएं जेब के ऊपर लगाया जाए जिससे कि पदकों के तल का किनारा पंक्ति में जेब के लैप बटन के कुछ ही ऊपर रहे।
- पदकों को इस तरह लगाया जाए, जिससे कि आधार एक समरूप में हो। दूसरी तरफ पर एक लम्बवत् पंक्ति पाकेट बटन के मध्य में हो।
- आधार, कमीज या टयूनिक के साथ वेल्क्रों जुड़ा होगा और ऊपर लटकने वाले धातु बार आधार से जुड़ा होगा।
- कमीज या टयूनिक के बार के द्वारा छेदों में फन्दे आधार को हुक के साथ जकड़ा होता है।

(ए) लगाने का वर्णन और तरीका :– लघु पदकों को बकरम के कठोर टुकडे में जो गहरे लाल रंग की पंक्ति से ढका होता है, जुड़ा होगा। लघु पदकों के नाप तौल और लगाने का तरीका निम्न प्रकार हैः–

- आधार का समानान्तर परिमाण – 17 सें. मी. (जहां तक सम्भव हो इसे 15 सें.मी. तक सीमित) और लम्बवत् परिमाण 4.5 सें.मी. होगा।
- पदक के रिबन की लम्बवत् लम्बाई, पदक के शिखर तक 3–5 से 4 सें.मी. होगी। पदक का पिछला भाग, गहरे रंग की धारियों से घिरा। यह 4.5 सें.मी. का होगा। पदकों को इस तरह सिला जाएगा कि पदक का आधा भाग रंगीन धारियों से नीचे लटका होगा और पदक सतह में एक रूप से संवरे हों।
- जबकि लघु पदकों को उनकी संख्या से गणना नहीं कर सकते, इस तरह जोड़े कि समस्त पूर्ण रूप से दृष्टिगोचर हों, इन्हें दाहिने से बाएं दूसरे के ऊपर लगाये जिससे कि वरिष्ठतम् अंलकरण या पदक पूर्ण रूप से स्पष्ट दिख सके।
- लघु पदकों को शीत या ग्रीष्म मैस पोशाक के बाएं जेब के ऊपर लगाया जाए जिससे कि पदक का सतह किनारा, जेब के ऊपर किनारे की पंक्ति में रहे।
- पदकों को इस तरह पहना जाए, जिससे कि आधार समरूप हो। दूसरी तरफ के लम्बवत् लाईन पाकेट बटन के मध्य की पंक्ति में हो।
- लघु पदक पहनने के अवसरः– मैस जैकेट के साथ, ग्रीष्म और शीत ऋतु में, रिट्रीट और रिवेली के दौरान।

पदक रिबन :–

(ए) लगाने का वर्णन और तरीका :– पदक रिबन एक सपाट बार में लगा होगा।

- सभी पदक पूरी तरह दृष्टिगोचर होंगे। इसमें से कोई एक दूसरे से ढका नहीं होगा।
- प्रत्येक रिबन के दृष्टिगोचर होने वाले भाग का लम्बवत् परिमाण 1.3 सें.मी. होगा।
- प्रत्येक पंक्ति में अधिकतम् चार पदक रिबन लगाया जाये। यदि अधिक संख्या में प्राधिकृत है तो इन्हें दो या तीन पंक्तियों में लगाया जाएगा।
- सबसे छोटी पंक्ति सबसे ऊपर लगायी जायेगी स्वतंत्र रूप से प्रदर्शन करते हुए मध्य से नीचे लम्बी होती जाएगी।
- अतिरिक्त इसके जब केवल एक पदक रिबन अधिकृत किया गया है, एक अकेला पदक रिबन

कभी भी एक पंक्ति की तरह नहीं पहना जाएगा। आवश्यकता पड़ने पर शिखर की पंक्तियों को इस तरह व्यवस्थित किया जाता है जिसमें कि शिखर की पंक्ति के पास दो पदक रिबन और नीचे की पंक्ति के पास तीन पदक रिबन हो।

➢ रिबन को उनकी प्राथमिकता के अनुसार लगाया जाएगा। सबसे उच्चतम् प्राथमिकता वाले रिबन को ऊपरी पंक्ति के सबसे दाहिने लगाया जाएगा। सबसे निम्न प्राथमिकता वाले रिबन को सतह पंक्ति के सबसे बाएं तरफ लगाया जाएगा।

➢ प्लास्टिक रिबन को नहीं लगाया जाएगा। नीचे की और सहारा देते हुए उसे ढलवा छत जैसी आकृति देने वाला उपयोग नहीं होगा। रिबन को पारदर्शी प्लास्टिक वस्तु के अन्दर नहीं रखा जाएगा।

लगाये जाने वाले अवसर :– सभी अवसरों पर जब वर्दी पहनी जाती है, अतिरिक्त इसके जब निम्नलिखित पहने जाएं–

➢ बाहरी वस्त्र (ग्रेट कोट, छोटा ग्रेट कोट, कोट पार्का, कुर्ता या जर्सी स्वेटर)

➢ फिल्ड स्केल मार्चिंग आर्डर

➢ पूर्ण पदक या लघु पदक

बटन :–

➢ बटन जो कि विभिन्न प्रकार की पोशाकों में प्रयोग किए जाएंगे, को आगे आने वाले अनुच्छेदों में दिया गया है।

➢ टेरिकाटन खाकी वर्दी – सामान्य खाकी अस्थि या प्लास्टिक बटन।

➢ कमीज अंगोला भूरा – इन पर, दो प्रकार के बटन प्रयोग किये जाएंगे। विवरण इस प्रकार है–

- सामने की तरफ : 2.5 सें.मी. व्यास में
- जेब पहले पर : 1–5 सें.मी. व्यास, में वर्दी के कन्धे पर तथा आस्तीन पर।

➢ पीक कैप और जार्जेट पेच पर बटन – सफेद धातु के 1.2 सें. मी. नाम के बटन

➢ बटन की पद संज्ञा :– तीन नाप के बटन जिनका उल्लेख इस परिशिष्ट में दिया गया है, कि बनावट इस प्रकार है–

➢ 2.5 सें.मी. बटन – बड़ा

➢ 1.5 सें.मी. बटन – छोटा

➢ 1.2 सें.मी. बटन – लघु

नाम पट्टी और विशेष प्रतीक

- **नाम पट्टी :–** दाहिने वक्ष पाकेट के एक जैसी दो लम्बाई पंक्ति के पाकेट बटन के ऊपर आर पार लगाया जाएगा। ये सभी पोशाकों में लगाये जाएंगे।

- नाम पट्टी की रूप रेखा, सामग्री, वर्णों का नाप और जोड़ने की प्रणाली, काम्बेट पोशाक के अतिरिक्त लगाने का तरीका इस प्रकार होगा–

  वर्ण :– काली पृष्ठभूमि में सफेद अक्षर के साथ सक्षम अधिकारी द्वारा निर्धारित लिपि से ऊपर और रोमन लिपि से नीचे।

  सामग्री – प्लास्टिक सामग्री की परतदार शीट

  माप – लम्बाई – 80 मी. मी.
  चौड़ाई – 17 मी.मी.
  मोटाई – 1.5 मी.मी.

- अक्षर का नाप :– 53 सें.मी. (वर्गीकर प्रकार का) बड़े अक्षर में

- जोड़ना :– ये कपड़ों में दबने वाले बटन, वेल्क्रो या मंटेरियल बार से लगाये जाएंगे जो छोटे बटन छेद से होकर जाएगी।

- केवल आधाक्षर तथा कुलनाम बिना पद के ही खुदा होगा।

  नाम पट्टी पर कुल नाम तथा आधाक्षर के बीच पूर्ण विराम नहीं होगा। कुल नाम आधाक्षर के बाद आएंगे।

- विशेष प्रतीक :– हकदार कार्मिकों के द्वारा

टेरिकाटन कमीज या अंगोला

➢ **कमाण्डो प्रतीक :–** डैब या टयूनिक के दाहिने वक्ष जेब के मध्य में पहना जाएगा।

➢ **अन्य प्रकार के गुणगान करने वाले बैज :–** ये किसी भी वर्दी के साथ नहीं पहने जाएंगे।

कमर का पहनावा

चमड़े की बैल्ट–

अधिकारी :– सभी अधिकारियों द्वारा पोशाक संख्या 1, 2 और 4 के साथ यूनिट क्रेस्टेड बकल के साथ चमड़े का बैल्ट पहना जाएगा। प्लास्टिक परत/आवरण इन बैल्टों के साथ प्रयोग नहीं होगा।

बैल्ट बकल :– इसका नाप 8 सें.मी. समानान्तर और 6 सें. मी. लम्बवत् पालिश से चमकाया हुआ या डल्ड धातु का बना होगा। इसे विभागीय क्रेस्ट के साथ जैसा वर्तमान में प्राधिकृत है के साथ जोड़ा जाएगा।

- **क्रास बैल्ट अर्थात् पाउच बैल्ट :–** क्रास बैल्ट अर्थात् पाउच बैल्ट केवल अधिकारियों को प्राधिकृत है और मैस पोशाकों या शीतकालिक समारोहिक पोशाक जब परेड में भाग ले रहे हो या देख रहे हों, पहना जाएगा।
- **वैब बैल्ट :–** सभी बैल्ट फील्ड सेवा या प्रशिक्षण के दौरान पहना जाएगा।

कमरबन्द :– सभी पद गणतंत्र दिवस परेड, प्रतिष्ठा क्षेत्र में परेड और सैनिक अभिनन्दन में भाग लेने वाले पहनेंगे। इसे शांति क्षेत्र, क्वार्टर गार्ड, समारोहिक परेड, में भी पहना जाएगा। चमड़े के बैल्ट क्रेस्टेड बकल्स के साथ भी कमर बन्द के ऊपर ऐसे समारोह में पहने जाएंगे।

जूते :– बूट एंकल या जूते डीएमएस (डबल माउहडेड शू) सभी पद इन जूतों को प्राधिकृत अनुसार पहनेंगे। इसका विवरण इस प्रकार है–

- वर्ण : काला/ब्राउन
- बनावट : आयुद्ध
- पहनने के अवसर : अधिकारी जब परेड में हो, प्रशिक्षण या सभी पदों के साथ एक्सरसाइज में।
- जूते :– वर्ण : काला/भूरा
  प्रकार : आक्सफोर्ड
- जुराबें :–
- अधिकारीः– : जुराबें ऊनी खाकी, या नाइलान या ऐसा रंग यूनिट द्वारा निर्धारित किया जाए।
- स्पेट्सः– वर्णन : सफेद रंग का होना चाहिए

➢ **पहनने के अवसरः–**

अधिकारी : जब कन्टीनजेन्ट कमाण्डर का कार्य कर रहे हों और सैनिक अभिनन्दन, गणतंत्र दिवस, निशान प्रदर्शन, और प्रतिष्ठा परेड पर हों।

अध्याय VIII

पदक और रिबन

सशस्त्र बलों के अधिकारियों और जवानों द्वारा पहनी जाने वाली वर्दी पर लगे पदक रिबन और पदकों से एक विशेष रहस्यमयी और आकर्षित करने वाली आभा सम्बद्ध रहती है। सामान्यतः लोग इसे, जिनको प्रदान किया गया है उन्हें किसी विशिष्ट युद्ध से सम्बद्ध कर देते हैं। किन्तु कुछ ही तुलनात्मक रूप से, विभिन्न पदकों और पदक रिबनों को सिर्फ देखकर ही उनमें भेद कर पहचान पाते हैं।

उनमें से अधिकतरों की अपनी विशेष वर्ण और धारियाँ हैं और यद्यपि यह भी सत्य है कि कुछ पदक शान्ति काल में प्रदान किये जाते हैं। एक सैनिक के पेशे का सम्पूर्ण सारांश अक्सर उसकी वर्दी पर पहने गये पदक और पदक रिबन को निरीक्षण कर प्राप्त कर सकते हैं।

पुलिस और अर्द्धसैनिक बलों के अधिकारियों और जवानों के लिए पदक एक विशिष्ट आकर्षण रखता है। वे अक्सर एक बड़े व्यक्तिगत जोखिम पर इसे जीतकर अत्यधिक गर्व महसूस करते हैं और दिखाने के लिए कि उन्हें उनके वीर कार्य के लिए विशिष्टता प्रदान की गई है। शत्रु, आतंकवादियों और अन्य राष्ट्र विरोधी तत्वों की कार्यवाहियों का सामना करने में अपनी जिन्दगी को जोखिम में डालकर साहसिक कार्रवाई करने में वीरता के लिए पदक सदैव जीता गया है और एक पुलिसकर्मी स्वयं को सम्मानीय महसूस करता है, जब उसे उसके साहसिक कार्य के लिए सम्मान और प्रशंसा मिलती है। असल में एक पुलिसकर्मी के लिए उसके पदक से अनमोल कुछ नहीं है जिसको वह गौरवान्वित होकर समारोहिक समारोहों में प्रदर्शित करता है।

युद्ध में युद्धकर्मी की वीरता और आत्म बलिदान, को सदा उच्च कोटि का लक्षण माना गया है। उन्हें पढ़ाया और प्रशिक्षित किया जाता है कि कठिनाईयों, जोखिम, चोट और मृत्यु तक को एक सामान्य आकस्मिक घटना की तरह लिया जाए। एक पुलिस कर्मी वीरता को अपने कर्तव्य का एक भाग समझता है। कुछ ऐसे पुलिस कर्मी भी होते हैं जो अंदरूनी चुनौती से प्रेरित होकर कर्तव्य की मांग के अतिरिक्त परिणाम से अनभिज्ञ होकर कर्तव्य के लिए जाते हैं।

वीरता ने सदा प्रतिष्ठा और नम्रता पर प्रभुत्व किया है। प्राचीन समाज से जाति या दल का नेतृत्व अत्यन्त साहसिक के समक्ष झुक गया। राज्य के उदगम ने देखा कि एक साहसी ने आगे बढ़कर उन्नत होकर अपना प्रभुत्व बनाया। इन्द्र, इन्डों आर्यन्स में सबसे श्रेष्ठ साहसी योद्धा राजा और नायक बना। वैदिक काल में, सैनिकों को लड़ाई में लूटे गए माल का हिस्सा देकर पारितोषिक, दिया जाता था। महाकाव्य काल में दार्शनिक और धार्मिक उपलब्धियों के साथ दिव्य पारितोषिक स्थापित करने पर दबाव दिया होगा। धर्म हेतु प्राण त्यागना स्वर्ग जाने का एक पुण्य मार्ग माना गया। महाभारत युद्ध में भगवान कृष्ण ने अर्जुन को उपदेश दिया कि युद्ध में मृत्यु तक लड़ने पर स्वर्ग प्राप्ति होती है और सफल होने पर सम्पूर्ण विश्व के आनंद का उपभोग मिलता है। वीरों को सदा शाही सत्कार मिलता है और आभूषणों तथा अन्य सम्मानों से विभूषित किया जाता है।

वीरता पुरस्कार के सम्बन्ध में, सबसे अधिक विस्तारपूर्वक उल्लेख कौटिल्य के अर्थशास्त्र में है। उसने अपने सैनिकों के लिए नकद पारितोषिक और सम्मान देने का प्रस्ताव रखा। हर्ष राजाओं के समय के दौरान विजयी सेना प्रमुखों को जमीन प्रदान की जाती थी। जिन सेना नायकों को अधिकारियों द्वारा युद्ध क्षेत्र में स्वयं की विशिष्ट साबित किया जाता था उन्हें विशेष पदवी और अन्य अलंकारों से विभूषित किया जाता था। मुगलों द्वारा उनके विशिष्ट अधिकारियों और सैनिकों को जिन्होंने युद्ध क्षेत्र में तुलनात्मक रूप से शौर्य कार्य प्रतिपादित किया है, उन्हें जवाहरातों, हथियारों और रत्न जड़ित तलवारों, मोती, पालकी घोड़े और हाथी प्रदान कर

सम्मानित किया जाता था। महाराजा रंजीत सिंह युद्ध में अनेक सोने के बाजूबन्द लेकर जाते थे और उसका एक जोड़ा उच्च पराक्रम कार्य के एवज में अपने अधिकारियों और सैनिकों को पुरस्कार स्वरूप प्रदान करते थे। कदाचित वे प्रथम भारतीय शासक थे जिन्होंने पदकों और अन्य अलंकरणों को यूरोपीय शैली में बनाया। जिसमें सर्वप्रथम था, आर्डर ऑफ महाराजा रंजीत सिंह, जो महाराजा की उर्ध्वकाय मूर्ति का प्रतिरूप था और इसके विपरीत भाग में युद्धों के नाम होते थे जिसमें पदक प्राप्तकर्ता ने भाग लिया, वहीं पर लाहौर दरबार का सर्वोत्तम आर्डर ''आस्पिसियस स्टार ऑफ पंजाब'' भी था।

निरन्तर समय प्रगति के उपरान्त पदक सम्मान और वीरता का उच्चतम प्रतीक बना। महारानी एलिजाबैथ ने वर्ष 1938 के स्पेनी महासंग्राम में विजय का गुणगान करने हेतु विशेष रूप से एक पदक बनवाया। 1943 में चार्ल्स प्रथम ने चांदी का एक बैज का निर्माण गुण सम्पन्न सेवाओं के लिए किया। इन पदकों को केवल उच्च सेना प्रमुखों, सामन्तों एवं कुलीनों को ही दिया जाता था। सामान्य सैनिकों को दिया जाने वाले पहले पदक को, संयुक्त राष्ट्र अमेरिका में अगस्त 1782 में जार्ज वाशिंगटन द्वारा ''बैज ऑफ मिलीटरी मेरिट'' के नाम से प्रारंभ किया गया। जब नेपोलियन ने ''लीजन ऑफ आनर'' नामक पदक का प्रस्ताव रखा, तो उसे बताया गया कि क्रास तथा रिबन हमारे वंश परम्परा और राज सिंहासन के आधार स्तम्भ हैं, और इनके बारे में महान विश्व विजयी रोमनों को कोई जानकारी नहीं थी। इस आलोचना के प्रत्युत्तर में नेपोलियन ने कहा ''सैनिकों के लिए और सभी व्यक्ति जो सक्रिय जीवन जी रहे हैं गौरव विशिष्टता तथा पुरस्कार एक ऐसे आहार हैं जो सैनिक सद्गुणों को बढ़ाते हैं''। एक सैनिक रंगीन रिबन के टुकड़े के लिए लम्बे समय तक कठोर युद्ध करता रहेगा। यह लोगों को अलंकृत करते हुए नेपोलियन ने कहा। डयूक ऑफ वेलिंगटन ने उन सभी टुकड़ियों को अभियान से संबंधित पदकों के वितरण की परम्परा प्रारम्भ की जिन्होंने वाटरलू युद्ध में भाग लिया था। नेपोलियन तथा वेलिंगटन दोनों ने यह महसूस किया था कि, अलंकरण तथा पदक व्यक्ति के प्रति राष्ट्रीय कृतज्ञता का प्रदर्शन नहीं है अपितु यह प्रतिस्पर्धा उत्पन्न करती है जिससे आने वाले युद्धों में सैनिकों में जोशपूर्ण उत्साह भरता है।

ईस्ट इंडिया कम्पनी ने उन सभी ब्रिटिश अधिकारियों को सोने का पदक तथा भारतीय अधिकारियों को चांदी का पदक दिया जो 1780–81 के दक्कन महासंग्राम, 1791–92 के मैसूर युद्ध और 1795–96 के सीलोन युद्ध अभियान, श्रीरंग पटट्नम पर आधिपत्य 1801 में मिस्र युद्ध में शामिल हुए थे। वाटरलू के युद्धोपरांत चाँदी के पदकों के वितरणोपरान्त ईस्ट इंडिया कम्पनी ने नेपाल का 1814–16 युद्ध, पहला बर्मीज का 1824–26 युद्ध, गजनी पर 1839 में आधिपत्य, जलालाबाद की रक्षा 1841–42 में इत्यादि के लिए पदक दिये गये थे। ग्वालियर अभियान के लिए कांसे की पांच शिखर वाले तारे की संरचना प्रदान की गई। प्रथम 1846 के सिख युद्ध में ईस्ट इंडिया कम्पनी ने पहली बार पदक वितरित किया। 1848 के पंजाब युद्ध के लिए महारानी विक्टोरिया ने पदकों को प्राधिकृत किया।

प्रारम्भ में, सभी महत्वपूर्ण युद्धों के नाम पदक के पृष्ठ भाग पर अंकित होते थे। कंधार, गजनी तथा काबुल के 1842 के युद्ध इसके उदाहरण हैं। ये सभी युद्ध एक ही वर्ष में अफगानिस्तान में लड़े गए। पदकों के पृष्ठ पर अंकन को बाद में सन्तोषप्रद नहीं पाया गया। पदक विजेताओं के आकस्मिक निरीक्षण के दौरान यह महसूस किया गया कि पदक किस युद्ध में जीते गए थे, ये ज्ञात नहीं हो पाता था।

सभी रिबन और पदक एक निश्चित क्रम में बाएं वक्ष पर पहने जाते हैं। पदकों की वरीयता वक्ष के मध्य भाग और पहनने वाले के दाहिने से बाएं तय की जाती है।

1947 में स्वतन्त्रता के पश्चात ब्रिटिश सम्मानों और पुरस्कारों को प्रदान करने की प्रथा का अन्त हो गया तथा भारतीय पुरस्कार देने की परम्परा प्रारम्भ हुई। इस प्रकार का पहला अलंकरण 26 जनवरी 1950 से प्रारम्भ हुआ, जो पुराने प्रभाव से 15 अगस्त 1947 से लागू किए गए। इन पदकों में वीर और

अशोक चक्रों की श्रृंखला शामिल है।

– परमवीर चक्र
– अशोक चक्र क्लास–1 (वर्तमान में अशोक चक्र)
– महावीर चक्र
– अशोक चक्र क्लास–2 (वर्तमान में शौर्य चक्र)
– वीर चक्र
– अशोक चक्र क्लास–2 (वर्तमान में शौय चक्र)
– सामान्य सेवा पदक, 1947
– भारतीय स्वतन्त्रता पदक 1947

द्वितीय श्रृंखला, मार्च 1953 में अस्तित्व में आई और इसमें विशिष्ट सेवा पदक, दीर्घ कालीन सेवा पदक और सुव्यवहार पदक, प्रादेशिक सेना अलंकरण, और प्रादेशिक सेना पदक शामिल किये गए।

तृतीय श्रृंखला, 1954 में अस्तित्व में आई जिसमें देश का सर्वोच्च सम्मान – भारत रत्न और पद्म श्री शामिल किया गया।

– भारत रत्न
– पद्म विभूषण
– पद्म भूषण
– पदम श्री

26 जनवरी, 1960 में विशिष्ट सेवा पदक क्लास 1/2 और 3 सैन्य सेवा पदक, विदेश सेवा पदक, सेना, नौसेना और वायु सेना पदक स्थापित किए गए। वर्ष 1965 में, भारत पाक में युद्ध के परिणाम स्वरूप रक्षा पदक, सामान्य सेवा पदक और समर सेवा पदक प्रारम्भ किए गए तथा 1971 युद्ध से, संग्राम पदक, पूर्वी स्टार और पश्चिमी स्टार स्थापित किये गए।

सामान्यतः कोई सम्मान जो एक पदक नहीं है। साधारणतः अलंकरण कहलाते हैं। पदक चार पृथक समूहों में विभाजित हैंः युद्ध कार्रवाई के दौरान वीरता पदक, युद्ध सेवा पदक, स्मरणार्थ पदक, दीर्घ सेवा पदक और उत्तम व्यवहार। शत्रु कार्रवाई के दौरान वीरता पदक (राष्ट्रपति पुलिस पदक, वीरता के लिए भारतीय पुलिस पदक और कोलेरा सर्विसेस पदक) यथार्थ में पदक केवल समारोहिक परेडों के अवसरों में पहना जाए और रिबन रोजाना सामान्य पहने जाने वाली वर्दी के साथ पहना जाए। सामान्यतः न तो पदकों को न ही रिबनों को युद्ध पोशाक में या ओवरकोट में पहना जाए।

मैडल रिबन – रंगों का अभिप्राय :–

निर्गम किए गए पदकों को रिबनों में विभिन्न रंगों के अधिकारिक विवरण का अथिप्राय ज्ञात करना सम्भव नहीं है तथापि पदकों के रंगों की व्याख्या इस प्रकार हैः–

सफेद, शुद्धता और शक्ति के लिए है।

केसरिया, कर्तव्य पर समर्पण को उजागर करता है।

नीला, आकाश के असीमित फैलाव का सूचक है।

हरा, पेड़ पौधों से संबंध का सूचक है जिस पर सभी जीवन निर्भर है और दृढ़ता और विश्वास का सूचक है।

सुनहरा पीला, सूर्य के चमकीले पन का द्योतक है।

लाल, सेना का पराक्रम और शक्ति को दर्शाता है।

पदकों और अलंकरणों का अग्रता क्रम :–

– भारत रत्न (1954–77, 1980–)
– परमवीर चक्र (1952–) संशोधित
– अशोक चक्र (1952–)
– पद्म विभूषण (1954–77, 1980–)
– पद्म भूषण (1954–77, 1980–)
– सर्वोत्तम युद्ध सेवा पदक (1980–)
– परम विशिष्ट सेवा पदक (1960–)
– महावीर चक्र (1952–)

- कीर्ति चक्र (1952–)
- पद्म श्री (1954–77, 1980–)
- सर्वोत्तम जीवन रक्षा पदक (1961–)
- उत्तम युद्ध सेवा पदक (1980–)
- अति विशिष्ट सेवा पदक (1960–)
- वीर चक्र (1952–)
- शौर्य चक्र (1952–)
- युद्ध सेवा पदक (1980–)
- वीरता के लिए राष्ट्रपति पुलिस और फायर सर्विसिज पदक (1951–)
- वीरता के लिए राष्ट्रपति पुलिस पदक
- वीरता के लिए राष्ट्रपति फायर सर्विसिज पदक
- वीरता के लिए राष्ट्रपति होम गार्ड और सिविल डिफेन्स पदक (1974–)
- सेना पदक (1961–)
- नौसेना पदक (1960–)
- वायु सेना पदक (1960–)
- विशिष्ट सेवा पदक (1960–)
- वीरता के लिए भारतीय पुलिस पदक (1948–51)
- वीरता के लिए पुलिस पदक (1951–)
- वीरता के लिए फायर सर्विस पदक
- वीरता के लिए होम गार्ड और सिविल डिफेन्स पदक (1974)
- उत्तम जीवन रक्षा पदक (1961–)
- वाउण्ड पदक (1973–)
- सामान्य सेवा पदक (1947)
- सामान्य सेवा पदक (1965) संशोधित
- समर सेवा पदक (1965)
- पूर्वी स्टार (1971)
- पश्चिमी स्टार (1971)
- सियाचिन ग्लेशियर पदक (1984–)
- पंजाब रिबन
- विशेष सेवा पदक (1986–) संशोधित
- रक्षा पदक (1965)
- संग्राम पदक (1971)
- सैन्य सेवा पदक (1960–) संशोधित
- हाई अलटीट्यूड सेवा पदक
- पुलिस (स्पेशल ड्यूटी) पदक (1962) संशोधित
- विदेश सेवा पदक (1960–) संशोधित
- विशिष्ट सेवा के लिए राष्ट्रपति पुलिस और फायर सर्विसिज पदक (1951–)
- विशिष्ट सेवा के लिए राष्ट्रपति पुलिस पदक
- विशिष्ट सेवा के लिए राष्ट्रपति फायर सर्विसिज पदक
- विशिष्ट सेवा के लिए राष्ट्रपति होम गार्ड और सिविल डिफेन्स पदक
- मेरीटोरियश सर्विस पदक (1957–)
- लोंग सर्विस और गुड कंडक्ट पदक (1957–)
- कोस्ट गार्ड मेडल फार मेरीटोरियश सर्विस
- इंडियन पुलिस मैडल फार मेरीटोरियश सर्विस
- पुलिस मेडल फार मेरीटोरियश सर्विस (1951–)
- फायर सर्विस मेडल फार मेरीटोरियश सर्विस
- होम गार्ड एण्ड सिविल डिफेन्स मैडल फॉर मेरीटोरियश सर्विस
- जीवन रक्षा पदक (1961–)
- टेरीटोरियल आर्मी डेकोरेशन (1952–)
- टेरीटोरियल आर्मी मैडल (1952–)
- इंडियन इन्डीपैंडेस मैडल (1947)
- इन्डीपेंडस मैडल (1950)

- 50वीं स्वतन्त्रता वर्षगांठ पदक (1997)
- 25वीं स्वतन्त्रता वर्षगांठ पदक (1972)
- 30 वर्ष लम्बी सेवा पदक (1980–)
- 20 वर्ष लम्बी सेवा पदक (1971–)
- 9 वर्ष लम्बी सेवा पदक (1971–)
- उन्नत रक्षा सुरक्षा कोर्पस पदक
- रक्षा सुरक्षा कोर्पस पदक
- नेशनल कैडेट कोर्पस लम्बी सेवा पदक 14 वर्ष के लिए।
- नेशनल कैडेट कोर्पस लम्बी सेवा पदक 7 वर्ष के लिए।
- मेन्सन इन डिस्पेचिस
- सीओएएस / सीएनएस / सीएएस / डीजीपी कम्नडेशन कार्ड।

महत्वपूर्ण भारतीय पदकों का विवरणः–

भारत रत्न :–

यह पुरस्कार अधिनिर्णय, कला, साहित्य, और विज्ञान की उन्नति हेतु अलौकिक कार्य के लिए एवं उच्चतम जन सेवा के अभिज्ञान में प्रदान किया जाता है।

यह अलंकरण एक पीपल की पत्ती की आकृति में होता है। यह टोण्ड कांसे का बना होता है। ऊपर में सूर्य की प्रतिकृति और नीचे शब्द भारत रत्न की उत्कीर्ण नक्काशी होती है। उत्क्रम में ऊपर राष्ट्र का प्रतीक और आदर्श वाक्य ''सत्यमेव जयते'' है। प्रतीक, सूर्य की प्रतिकृति और किनारे प्लेटिनम के हैं। इस पर लेख कांस्य से पालिश की होती है।

यह अलंकरण गर्दन में एक सफेद रिबन के साथ पहना जाता है।

पद्म विभूषण :–

यह किसी भी क्षेत्र में शासकीय कर्मियों सहित आम नागरिकों के द्वारा किए गए उच्च कार्यों को सम्मिलित कर उल्लेखनीय और विशिष्ट सेवा के लिए निर्मित है।

यह अलंकरण कांस्य का बना है और आकृति में चक्राकार रेखागणितीय आकार के घेरे में अध्यारोपित है। ऊपर में गोल घेरे में कमल का पुष्प उत्कीर्ण नक्काशी किया हुआ है। शब्द ''पदम'' ऊपर में और चार पत्तियों के नीचे शब्द ''विभूषण'' नक्काशी किया हुआ है। उत्क्रम में राष्ट्रीय प्रतीक और आदर्श वाक्य ''सत्यमेव जयते'' है। ऊपर में शब्द ''पदम विभूषण'' रेखागणितीय आकार के घेरे में और किनारे से कांस्य से पालिश की हुई हैं। अलंकरण की दूसरी तरफ सभी नक्काशी सफेद सुनहरे रंग में है। अलंकरण को बाएं वक्ष में एक सेलमोन गुलाबी रिबन के साथ पहना जाता है।

पद्म भूषण :–

यह पुरस्कार किसी भी क्षेत्र में शासकीय कर्मियों सहित आम नागरिकों के द्वारा विशिष्ट और उच्च स्तरीय सेवा के लिए निर्मित है।

इसकी आकृति ''पद्म विभूषण'' के समान है। इसके ऊपर के शब्द पद्म और कमल के पुष्प के तीन पत्तों के नीचे शब्द ''भूषण'' दृष्टिगोचर होता है। ऊपर में लेख ''पद्म भूषण'' रेखागणितीय आकृति की परिधि में अन्दर से और किनारे से कांसे से पालिश की गई है। अलंकरण के दूसरी तरफ सभी नक्काशी उच्च कोटी सुनहरे में है।

अलंकरण को बाएं वक्ष में एक सेलमोन गुलाबी रिबन में जिसे दो सफेद धारियों में विभक्त किया है के द्वारा पहना जाता है।

पद्म श्री :–

यह किसी भी क्षेत्र में शासकीय कर्मियों सहित आम नागरिकों के लिए विशिष्ट सेवा के लिए निर्मित है। इसकी आकृति पद्म विभूषण के समान है। इसके ऊपरी में शब्द ''पद्म'' और कमल के पांच पत्तियों के नीचे ''श्री'' शब्द नक्काश किया हुआ है। ऊपर में लेख ''पद्म श्री'' रेखागणितीय आकृति की परिधि में अंदर से और किनारे से कांसे की पालिश की हुई है। अलंकरण के दूसरी तरफ सभी उत्कीर्ण नक्काशी

स्टेनलैस स्टील में है।

अलंकरण को बाएं वक्ष में सेलमोन गुलाबी रेशमी रिबन, एक इंच और एक चौथाई तीन में से दो सफेद धारियों में विभक्त कर पहना जाता है।

शत्रुओं के सामने वीरता के लिए

परमवीर चक्र :–

यह उच्चतम अलंकरण शत्रु की उपस्थिति में अत्यन्त शौर्यतापूर्ण अथवा किसी दुस्साहसपूर्ण अथवा पराक्रम के अत्यंत महत्वपूर्ण कार्यों अथवा अपने प्राणों की आहूति देने के लिए प्रदान किया जाता है। चाहे वह थल, समुद्र अथवा नभ में हो।

यह अलंकरण कांसे का बना होता है और आकृति में चक्राकार होता है। इसके ऊपर इन्द्रबज्र के चार प्रति रूप राष्ट्रीय प्रतीक के मध्य में उत्कीर्ण नक्काश किए हुए हैं। इसके उत्क्रम भाग में परमवीर चक्र शब्द हिंदी और अंग्रेजी दोनों में मध्य में कमल के पुष्प के साथ उत्कीर्ण नक्काश किया हुआ है।

अलंकरण को बाएं वक्ष में सपाट बैंगनी रंग के रिबन के साथ पहना जाता है। जब केवल रिबन पहना जाता है तब उस पर वज्र का लघु प्रतिरूप लगा होता है।

इसके साथ वित्तीय भत्ता रुपये 100 प्रति माह और रुपये 40 प्रत्येक माह बार के लिए देय है।

महावीर चक्र :–

यह द्वितीय उच्चतम् अलंकरण शत्रु की उपस्थिति में किए गए शौर्यतापूर्ण कार्यों के लिए प्रदान किया जाता है। चाहे वे भूमि पर, समुद्र पर, अथवा नभ पर किए गए हों।

यह उच्चकोटि के रजत का बना होता है और आकृति में चक्राकार होता है। इसके ऊपर गुम्बददार पाँच नोक वाला सितारा, मध्य में स्वर्ण मुलम्मा युक्त राष्ट्रीय प्रतीक उत्कीर्ण नक्काश किया हुआ होता है। इसके उत्क्रम भाग में शब्द ''महावीर'' हिंदी और अंग्रेजी दोनों में मध्य में दो कमल के पुष्प के साथ उत्कीर्ण नक्काश किया हुआ है।

अलंकरण को बाएं वक्ष में आधे सफेद और आधे केसरिया रिबन जिसमें केसरिया रिबन बाएं कंधे की तरफ ही लगाया जाता है।

इसके साथ वित्तीय भत्ता रुपये 75 प्रति माह और रुपये 25 प्रति माह प्रत्येक बार के लिए देय है।

वीर चक्र :–

यह तृतीय उच्चतम अलंकरण शत्रु की उपस्थिति में किए गए शौर्यतापूर्ण कार्यों के लिए प्रदान किया जाता है। चाहे वे भूमि पर, समुद्र पर, अथवा नभ पर किए गए हों।

यह अलंकरण उच्च कोटि के रजत का बना होता है और आकृति में चक्राकार होता है। इसके ऊपर गुम्बददार पांच नोक वाला सितारा, जिसके मध्य में एक अशोक चक्र, उत्कीर्ण नक्काश किया हुआ होता है। इस चक्र के मध्य भाग में स्वर्ण मुलम्मा युक्त राष्ट्रीय प्रतीक नक्काश किया हुआ होता है। इसके उत्क्रम भाग में वीर चक्र शब्द अंग्रेजी और हिंदी दोनों में मध्य में दो कमल के पुष्प के साथ उत्कीर्ण नक्काश किया हुआ है।

वीर चक्र को बाएं वक्ष में आधे नीले और आधे केसरिया रिबन, जिसमें केसरिया रिबन बाएं कंधे के नजदीक हो, लगाया जाता है।

इसके साथ वित्तीय भत्ता रुपये 50 प्रति माह और रुपये 25 प्रति माह प्रत्येक बार के लिए देय है।

सभी सुरक्षा बलों के सदस्यों को और सिविलियनों को जो नियमित या अस्थाई रूप से सेवा में हैं और किसी सुरक्षा बलों के अधीन, दिशा–निर्देशों या पर्यवेक्षण में हो उपरोक्त तीनों में ये किसी भी पुरस्कार के पाने के लिए योग्य हैं।

यदि एक चक्र प्राप्तकर्ता दोबारा उसी पुरस्कार को अगले शौर्य कार्य के लिए दोबारा जीतता है तो अलंकरण के रिबन में एक बार को अतिरिक्त जोड़ देते हैं जिस पर अलंकरण को टांगा या लगाया जाता है। इसका अभिप्रायः है कि इसे अतिरिक्त चक्र प्राप्त हुआ है। जब सिर्फ रिबन को ही लगाया जाता है तब परमवीर चक्र के मामले में प्रत्येक बार में धातु का

इन्द्रबज्र के लघु प्रतिरूप प्रतिनिधित्व करते हैं और महावीर और वीर चक्र के मामले में संबंधित चक्र के लघु प्रतिरूप रिबन में सिले जाते हैं।

अशोक चक्र :–

यह अलंकरण अत्यंत शौर्यतापूर्ण बहादुरी अथवा किसी दुस्साहस पूर्ण अथवा पराक्रम के अत्यंत महत्वपूर्ण कार्य अथवा अपने प्राणों की आहुति देने के लिए प्रदान किया जाता है। चाहे वह थल, समुद्र अथवा नभ में हो।

यह चक्र सोने का मुलम्मा का बना होता है और आकृति में चक्रकार होता है। इसके ऊपर अशोक चक्र का प्रतिरूप कमल की मालाओं से घिरा होता है। किनारों पर कमल पत्तियों, पुष्प और कलियों का आकार है। इसके उत्क्रम भाग में शब्द ''अशोक चक्र'' हिंदी और अंग्रेजी दोनों में कमल पुष्प के साथ समान दूरी पर उत्कीर्ण नक्काश किया हुआ होता है।

चक्र को बाएं वक्ष में हरे रंग की रेशमी रिबन जो समान केसरिया के खड़े लाईन में विभक्त है, को पहना जाता है।

इसके साथ वित्तीय भत्ता रुपये 90 प्रति माह और रुपये 35 प्रति माह प्रत्येक बार के लिए देय है।

कीर्ति चक्र :–

यह अलंकरण उत्कृष्ट वीरता के कार्यों के लिए प्रदान किया जाता है।

यह उच्च कोटि के रजत का बना होता है और आकृति में चक्राकार हेाता है। इसके ऊपरी ओर उत्क्रम भाग बिल्कुल अशोक चक्र की भांति होता है। विपरीत भाग में शब्द ''कीर्ति चक्र'' हिंदी और अंग्रेजी दोनों में उत्कीर्ण नक्काश किया जाता है।

चक्र को बाएं वक्ष में हरे रंग की रेशमी रिबन जो तीन समान भागों में दो लम्बे केसरिया भागों में विभक्त हैं, के द्वारा पहना जाता है।

इसके साथ वित्तीय भत्ता रुपये 65 प्रति माह और रुपये 20 प्रति माह प्रत्येक बार के लिए देय है।

शौर्य चक्र :–

यह अलंकरण वीरता के कार्यों के लिए प्रदान किया जाता है।

यह बिल्कुल अशोक चक्र के समान होता है। अतिरिक्त इसके कि यह कांस्य का बना होता है और इसके उत्क्रम भाग में शब्द ''शौर्य चक्र'' उत्कीर्ण नक्काश किया होता है।

चक्र को बाएं वक्ष में हरे रंग के रिबन जो चार समान भागों में तीन लम्बे केसरिया लाइनों से विभक्त होते हैं, के द्वारा पहना जाता है।

समस्त भारतीय नागरिक अशोक चक्र, कीर्ति चक्र, और शौर्य चक्र के पुरस्कार को पाने के हकदार हैं।

रिबन से जुड़ा बार, इसके अधिकारिक प्राप्तकर्ता को समानांतर श्रेणी के पारितोषिक चक्र के प्रत्येक साहसिक कार्यों को स्मरण कराता है जो उसे वास्तव में प्रदान किया गया है। जब मात्र रिबन लगाया जाता है तब संबंधित अलंकरण का लघु प्रतिरूप निदिष्ट कर रिबन में सिला जाता है।

इसके साथ वित्तीय भत्ता रुपये 40 प्रति माह और रुपये 16 प्रति माह प्रत्येक बार के लिए देय है।

वीरता के लिए राष्ट्रपति पुलिस पदक और पुलिस पदक :–

सामान्य

1. साहसिक अभियान और शांति काल के दौरान उत्तम और निस्वार्थ एवं समर्पित सेवा को स्मरण करने के एवज में निम्नलिखित पदकों/अधिकार चिन्ह प्रदान किए जाते हैं:

   क. वीरता के लिए राष्ट्रपति पुलिस पदक

   ख. वीरता के लिए पुलिस पदक

   ग. विशिष्ट सेवा के लिए राष्ट्रपति पुलिस पदक

   घ. प्रधानमंत्री जीवन रक्षक पदक

   च. महानिदेशक प्रशंसा पत्र

छ. सरकार द्वारा प्रदत्त विलक्षण क्षेत्र में कठिन सेवा पदक

2. उपरोक्त के अतिरिक्त सैन्य अभियान के दौरान केन्द्रीय अर्द्धसैनिक बल यूनिट, जो सेना के परिचालन नियंत्रण में हो, को यह पदक प्रदान करने का विचार जैसे पीवीसी, एम.सी., वीर चक्र, कीर्ति चक्र, शौर्य चक्र, पी.वी.एस.एम., ए.वी.एस.एम., वी.एस.एम., सेना पदक इत्यादि भारतीय सेना कर सकती है।

3. व्यक्ति को अन्य असैनिक पारितोषिक प्रदान करने के लिए विचार किया जा सकता है।

4. डी.जी., आई.जी., डी.आई.जी. और कमाण्डेन्ट के द्वारा गुणगान नामावली और प्रशंसा प्रमाण पत्र प्रदान किया जा सकता है।

वीरता पुरस्कार :–

5. कर्तव्य निर्वाह के दौरान किसी उत्कृष्ट वीरता कार्य प्रदर्शित करने के लिए प्रदान किया जाता है। राष्ट्रपति के वीरता पुलिस पदक (या पुलिस पदक) प्राप्त करने के लिए सभी पदों के कार्मिक हकदार हैं। व्यक्ति द्वारा किए गए उत्कृष्ट वीरता कार्यों की गणना का एक दृष्टान्त महानिदेशक कार्यालय में भेजा जाएगा, जो गृह मंत्रालय को इसके परीक्षण के लिए और भारत के राष्ट्रपति को पदक प्रदान करने की संस्तुति के लिए प्रस्तुत किया जाता है। नियत समय में व्यक्ति संबंधित को पदक प्रदान करने की सूचना अध्यक्षीय अधिसूचना के द्वारा जारी की जाती है।

वीरता पुरस्कारों के लिए वित्तीय भत्ते :–

6. पुरस्कारों के प्राप्तकर्ताओं को निम्नलिखित वित्तीय भत्ते समान दर में, पद के अनपेक्षक प्रदान किया जाएगा।

क. वीरता के लिए राष्ट्रपति पुलिस पदक के लिए रु. 100 प्रति माह

ख. वीरता के लिए पुलिस पदक के लिए रु. 60 प्रति माह

पदकों का वितरण :–

7. पदकों को सामान्यतः स्थापना दिवस/प्रतिष्ठा दिवस में प्रदान किया जाता है।

पदकों को लगाना :–

8. पदकों को समारोहिक परेडों में, स्थापना दिवस परेड, स्मरोणत्सव परेड, राष्ट्र/शासन प्रमुख के दौरे के दौरान, समारोहिक अवसर या जब कार्यालय प्रमुख द्वारा विशेष आदेश पारित किया जाता है पदकों को लगाया जाता है।

सेवा शर्तें :–

9. प्रशंसनीय पुलिस पदक प्रदान करने के लिए व्यक्ति की कम से कम 15 वर्ष सेवा पूरी होनी चाहिए और प्रशंसनीय पुलिस पदक प्रदान करने के 6 वर्ष के पश्चात् विशिष्ट सेवा पदक के लिए विचार किया जाएगा।

पुरस्कार के लिए व्यक्तियों के नामांकन का चुनाव :–

10. व्यक्तियों का निम्नलिखित मापदण्ड पूरा होना चाहिएः–

क. निर्धारित न्यूनतम सेवा।

ख. आयु 50 वर्ष के लगभग को प्रमुखता दी जाएगी।

ग. जिन्होंने 1971 युद्ध में लड़ाई लड़ी है उनके मामले में वरीयता दी जाएगी।

घ. मनोनीत व्यक्ति को किसी प्रकार का दण्ड प्राप्त न हो।

च. व्यक्ति को अत्यधिक संख्या में पारितोषिक प्राप्त हो।

छ. व्यक्ति द्वारा अपने कार्यक्षेत्र अथवा विशिष्टीकरण में विशेष योगदान दिया गया हो।

प्रधानमंत्री जीवन रक्षा पदक :–

11. सभी व्यक्तियों के दृष्टान्त जिन्होंने अन्य व्यक्तियों के प्राण स्वयं की जान जोखिम में डाल कर बचाया हो, उनका प्रधानमंत्री को

जीवन रक्षा पदक प्रदान करने के लिए नामांकन भेजा जाएगा।

कठिन/विशेष क्षेत्र में सेवा के लिए प्रदान पदक :–

12. कठिन क्षेत्रों में सेवा के लिए पदक जैसे राजस्थान, जम्मू कश्मीर, उच्च ऊंचाई क्षेत्र में एक वर्ष सेवा करने के उपरान्त प्रदान किया जाता है।

पुलिस महानिदेशक का प्रशंसा पत्र :–

13. पुलिस महानिदेशक का प्रशंसा पत्र एक गौरवशाली पाारितोषिक है और विशिष्ट कार्य करने के एवज में प्रदान किया जाता है।

योग्यता दायरेः–

14. पुलिस महानिदेशक के प्रशंसा पत्र प्रदान करने के लिए सामान्यतः निम्नलिखित योग्यता दायरों का पालन किया जाएगा।

    क. किसी अभियान के दौरान उत्कृष्ट उपलब्धियों के लिए।

    ख. प्राकृतिक विपदाओं में प्रशंसनीय कार्य के लिए।

    ग. देश के लिए क्रीडा में राष्ट्रीय/अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विशिष्ट उपलब्धियों के लिए।

    घ. कोई नवीन प्रवर्तन के लिए जो बल की कार्यक्षमता में पर्याप्त उन्नति ला सके।

    च. 25 वर्ष तक स्वच्छ तथा उत्तम सेवा अभिलेख के लिए।

    छ. लगातार 20 वर्षों तक बिना दुर्घटना ड्राइविंग और उत्तम रिकार्ड के लिए।

    ज. 2 सप्ताह या अधिक अवधि के पाठ्यक्रमों में ए एक्स श्रेणी लाने के लिए।

    झ. कठिन मामलों की प्रक्रिया को सुलझाने के लिए।

    प. अन्य कोई उत्कृष्ट और विशेष कार्य जो प्रशंसनीय प्रवृति के लिए विचारणीय हों।

अधिकार चिन्ह लगाना :–

15. पुलिस महानिदेशक के प्रशंसा पत्र प्राप्त सभी विजेता अपनी वर्दी के बाएं जेब के नीचे रिबन और जेब बटन के बीच में पहनेंगे अगर मेडल के साथ है तो डिस्क को हमेशा मेडल के नीचे पहनेंगे। चाबी पॉकेट बटन के नीचे पहनेंगे। रजत डिस्क का अधिकार चिन्ह पहनेंगे। महानिदेशक के प्रशंसा पत्र पुरस्कार प्राप्त होने वाले को उस समय एक रजत डिस्क भेंट किया जाएगा जब वह अपना प्रथम प्रशंसा पत्र प्राप्त करता है। अतिरिक्त प्रशंसा पत्र के पुरस्कार के लिए कोई अन्य डिस्क नहीं लगाया जाएगा। इसका तात्पर्य यह है कि एक निर्दिष्ट व्यक्ति को मात्र एक बार रजत डिस्क प्रदान किया जाएगा जबकि वह प्रथम बार सेवा काल का प्रशंसा पत्र प्राप्त कर रहा हो। यद्यपि उसको तदनन्तर संख्या में महानिदेशक का प्रशंसा पत्र प्राप्त हो।

रिबन :–

16. रिबन वर्किंग ड्रेस का एक भाग होगा और हमेशा वर्किंग ड्रेस के साथ पहना जाएगा। अभ्यासों, और अभियानों में जाते समय और जर्सी पर रिबन को कभी भी नहीं पहना जाएगा।

बैण्ड संगीत

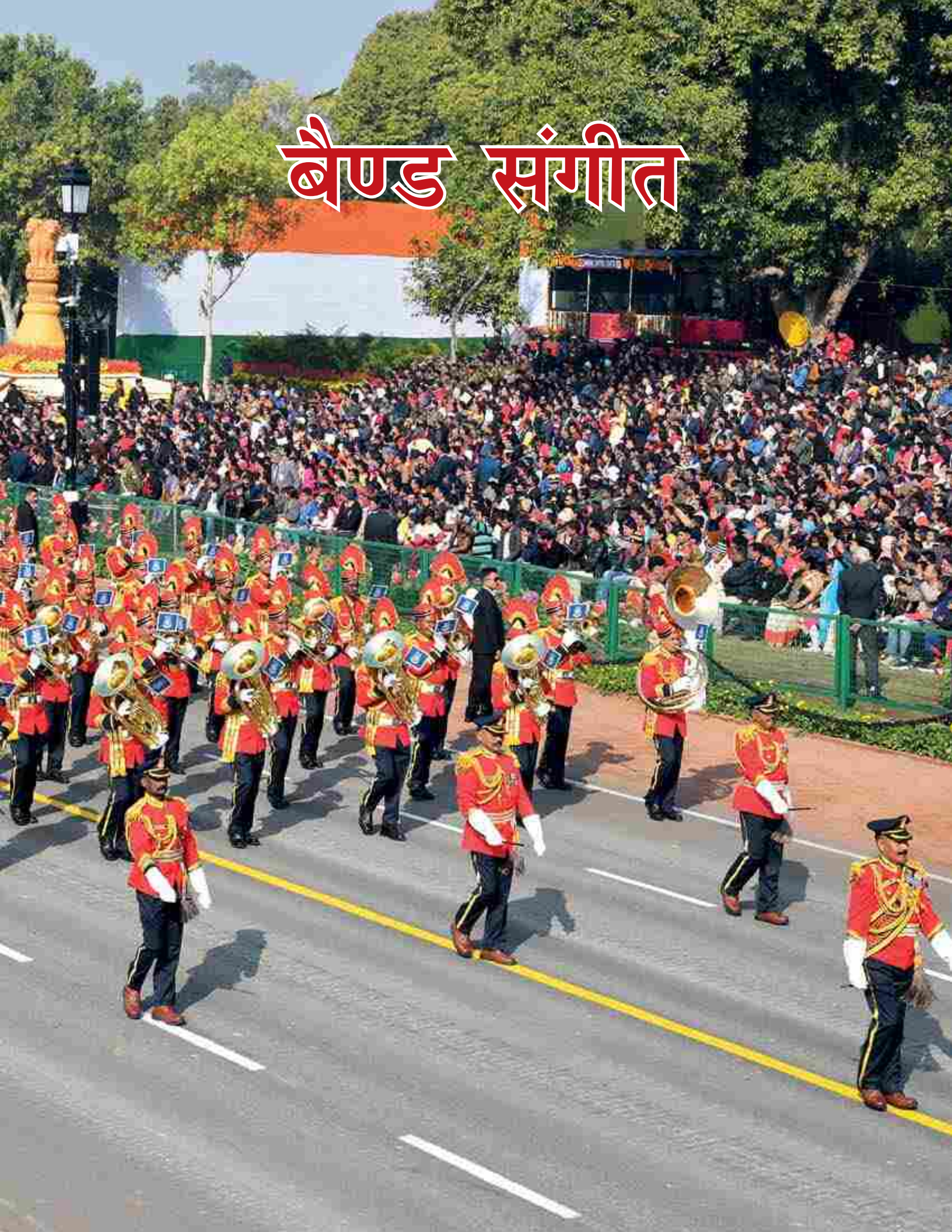

अध्याय IX

बैण्ड संगीत

संगीत तथा संगीतमय ध्वनि का प्रयोग सैनिकों को आदेशों, संदेशों एवं संकेतों को पहुंचाने के लिये बहुत पहले से किया जा रहा है। सैन्य संगीत प्राचीन भारतीय युद्धकला का नियमित अंग रहा है। युद्ध भूमि में सैनिक शंक, ढोल तथा नगाड़ों की ध्वनि के साथ प्रवेश करते थे। ऋग्वेद के अनुसार संगीत वाद्य को केवल बलिदान एवं उत्सवों के दौरान प्रयोग में लाए जाते थे। दंदुभी, केतली के तरह का एक संगीत वाद्य ''बाकूरा'' इत्यादि अपनी विविधता के साथ केवल युद्ध के समय प्रयोग में लाए जाते थे। ''दस्युओं'' के विरुद्ध एक अभियान में अश्विनों ने शत्रुओं के विरुद्ध जोश दिलाने के लिये ''बाकूरा'' का प्रयोग किया।

मौलिक रूप से, शंख, सींग तथा ढोलक से निकलने वाली आवाज समय के अन्तराल में सैन्य संगीत बन गये, जिनकी रागात्मकता ने सामान्यजनों एवं सैनिकों में गर्व भाव एवं आवेग का संचार किया। युद्ध एवं शक्ति काल में सैन्य संगीत दलों ने उच्च कोटि की परम्परा को प्रोत्साहन दिया है, एवं समारोहों की शान बढ़ाया है। आजकल कोई भी समारोह उस समय तक सम्पूर्ण नहीं मानी जाती है, जब तक कि उसमें सैन्य संगीत दल शामिल न किया गया हो। इसका प्रयोग समारोहिक परेडों, उच्चाधिकारियों की प्रतिष्ठा के सम्मान गार्दो, संगीत समारोहों तथा कुछ राष्ट्रीय समारोहों में किया जाता है।

सैन्य समारोहों में, सैन्य संगीत दलों के प्रदर्शन का सन्दर्भ ईसा पूर्व अभिलेखों में भी मिलता है। ''बैण्ड'' शब्द का प्रयोग 19वीं शताब्दी से पूर्व नहीं हुआ था, तथा ''सैन्य बैण्ड'' का प्रयोग प्रारम्भतः जर्मनों ने इंगलैण्ड में किया। युद्ध के दौरान संगीत वाद्य का प्रयोग प्राचीन भारत में शंक, सींग, बिगुल तथा ढोलों को संकेतों के रूप में प्रयोग तक सीमित था। सैन्य संगीत, पाइप तथा ड्रम जैसा कि अब तक माना जाता है, मूलतः पश्चिम की उत्पत्ति है। जहां तक ज्ञात है भारत में इन परम्पराओं की शुरूआत ब्रिटिश लोगों ने की थी। स्वतंत्रता के पूर्व सैन्य संगीत के वाद्यक भारतीय होते थे, जबकि बैण्ड मास्टर या संचालक सामान्यतः ब्रिटिश होते थे। जो पश्चिमी या स्थापित अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिमानों के अनुसार संगीत विद्या प्रदान करते थे।

1947 में ब्रिटिशों के भारत से प्रस्थान के पश्चात् यह महसूस किया गया कि नेल्लर हॉल लन्दन के तर्ज पर भारत में एक सैन्य संगीत संस्थान की स्थापना की जाए। भारत से ब्रिटिश अधिकार के समाप्ति पर भारतीय सेना के विभिन्न बैण्ड दलों को विशुद्ध भारतीय बनाने के लिए फिर से अनुकूलित किया गया। यह कार्य इतना आसान नहीं था, क्योंकि देश विभाजन के उपरान्त कई यूनिटों के बैन्ड कर्मी पाकिस्तान चले गये थे। जनरल के एम करियप्पा ओ बी ई तत्कालीन भारतीय सेना के कमाण्डर इन चीफ के उचित संरक्षण से संगीत से सम्बन्धित एक सैन्य पाठशाला की स्थापना 1950 में पंचमढ़ी में की गई थी विभिन्न रक्षा सेनाओं के बैन्ड कर्मी यहाँ विभिन्न वाद्य यंत्रों का प्रशिक्षण पाते हैं जिनका प्रयोग सैन्य संगीत में होता है। पंचमढ़ी स्थित मिलिटरी संगीत विंग ने न केवल 200 से अधिक संगीत संयोजनों की रचना की है, बल्कि भारत में सैन्य संगीत का स्तर ऊँचा रखने में भी सक्षम हुए है जो कि रिक्रुट बैन्ड कर्मी पाइपर तथा ड्रमर के लिए विभिन्न कोर्सों की रचना से सम्भव हो पाया है।

तीनों सेनाओं के सैन्य बलों के प्रशिक्षण के अतिरिक्त पुलिस तथा अर्धसैनिक बलों के एवं मित्र विदेशी देशों के बैण्डकर्मी भी यहां शिक्षा पाते हैं। मिलिटरी संगीत विंग यहां 10 कोर्सों को चलाता है। जिसमें से चार विशुद्ध रूप से मिलिटरी बैण्ड के लिए रूपांकन किया गया है इनमें से सबसे उच्च स्तर का कोर्स पोटेन्शियल बैण्ड मास्टर कोर्स है जो कि तीन वर्ष के अवधि का है। यह कोर्स समस्त

सैन्य वाद्य यंत्रों में व्यवहारिक कुशलता बढ़ाने के साथ–साथ संयोजन, व्यवस्थित तथा संचालन में भी प्रभावी प्रशिक्षण प्रदान करता है। संगीतज्ञ की योग्यता लीसेन्टीयेट इन मिलिटरी म्यूजिक पुरस्कार से मापी जाती है। प्रशिक्षणार्थियों को यहां भारतीय वाद्य यंत्रों की शिक्षा भी दी जाती है एवं कोर्स की समाप्ति के उपरान्त उन्हें ''हिन्दुस्तानी संगीत'' में डिप्लोमा प्रदान किया जाता है।

भारतीय और पश्चिमी संगीत परम्पराओं का संयोजन हालांकि बहुत मुश्किल से हो पाता है। सैन्य संगीत विंग ऐसा करने में सक्षम रहा है जैसे सितार, सरोद, सन्तूर, और तबला आजकल मिलिटरी संगीत बैण्ड का सम्पूर्ण संगीत बैण्ड का अंग है। कई प्रसिद्ध भारतीय लोक धुनों एवं रागों को इन संयोजकों द्वारा सजाया जा चुका है और ऐसे धुनों की संख्या नित्य बढ़ रही है। संगीत का एक अन्य रूप जो सैनिकों के दायरों में लोकप्रिय हो रहा है वह समूह संगीत है। ऐसे लोकप्रिय समूह गानों में है वतन की राहों में, कैसा सुन्दर और बहादुर, दोहि शिवा वर मोहे इहे (सेना गीत), जैसे बिरले सैन्य या असैन्य दर्शकों को रोमांचित करने से पीछे नहीं रहते हैं। तत्कालिक देशभक्ति गानों की श्रृखंला में नया गाना वीर सिपाही, जिसका संयोजन मेजर जनरल के एन भट्ट ने किया है, इसको कुछ वर्ष पूर्व ही बीटिंग दि रिट्रीट के दौरान बजाया गया था।

चूंकि उपयुक्त मूल भारतीय संगीत वाद्य यंत्रों की कमी होने से अपने प्रारंभिक दिनों में पुलिस बैण्ड कार्मिकों को पश्चिमी बैण्ड संगीत बजाना पड़ता था। शनैः शनैः कुछ वर्षों में संयोजकों ने सैन्य संगीत बैण्ड का एक छोटा दल बनाया जो प्रादेशिक लोक परम्पराओं पर आधारित था। ये लोक परम्पराएं भारतीय रक्षा सेनाओं के बल हैं। इस प्रकार के लोक संगीतों में पंजाब, राजस्थान, मारवाड़, गढ़वाल और तटीय कोंकण के भारतीय संयोजकों को प्रेरित किया।

जब ब्रास बैण्ड यूनिट बैरकों में बजता है तो सब पदों को अत्यधिक खुशी प्रदान करता है और यह अधिकारी मैस में मेहमान रात्रि में भी बजाया जाता है। नियत काल में क्लब और पार्क लॉन और अन्य सार्वजनिक स्थानों पर दोपहर के समय बजाया जाता है।

किन्तु परम्पराओं के अलावा इसने अन्यों को भी उत्साहित किया है, सैन्य संगीत की अपने स्वयं की परम्परा रही है जिसको तीनों सेनाओं के संगीतज्ञों ने बखूबी से बढ़ाने में अच्छा योगदान दिया है।

यह उपयुक्त माना गया है कि संगीत और गीत कार्मिकों के मनोबल को बढ़ाते हैं और इसलिये इसे सशस्त्र बलों में प्रोत्साहित किया गया है। एक यूनिट के व्यक्ति जो गाने का सहारा लेते हैं उन लोगों की अपेक्षा जो दुखी और असन्तुष्ट हैं, से कम उत्तेजित होते हैं। ऐसी यूनिट जो अपने अभियानों में गानों का सहारा लेती है विशेष रूप से लम्बे पेट्रोलिंग के दौरान कम थकती है। पुलिस और अर्धसैनिक बलों में सैन्य संगीत मनोबल को बढ़ाने में सहायक होते हैं।

सैन्य परेड, कवायद एवं मार्चिंग के लिए संगीतः–

विभिन्न प्रकार के मार्चिंग और संगीत काल्स के अतिरिक्त, समारोहिक संगीत में तीन अन्य धुनों का संयोजन होता है जिनमें से दो तेज समय में और एक धीमें समय में बजाये जाते हैं। इनमें से प्रत्येक का समारोहिक कवायद में विशेष महत्व है और सभी सेना, पुलिस और अर्धसैनिक बलों में इनका विस्तारपूर्वक प्रयोग होता है।

जनरल सेल्यूट।

समीक्षा क्रम में आगे बढ़ना।

प्वाइन्ट आफ वार।

उन सभी अवसरों पर जब उप–महानिरीक्षक या उससे उच्च ओहदे के अधिकारी सलामी लेते हैं, जनरल सेल्यूट बजाया जाता है। जनरल सेल्यूट की व्यवस्था में तेज मार्च का अंश पृष्ठभूमि में हो सकता है। जबकि विगुल और ट्रम्पट से सेल्यूट बजाते हैं।

समीक्षा क्रम में आगे बढ़ाना समारोहिक परेड का एक भाग है। जब मार्च पास्ट के पश्चात् परेड 15 कदम आगे बढ़ती है बैण्ड और ड्रम 5 पेस रोल

बजाते हैं साढ़े सात बारों के खत्म होने पर बैण्ड तथा ड्रम बजना बन्द हो जाते हैं। इसके पश्चात् परेड पुनर्निरीक्षण अधिकारी को सलामी प्रस्तुत करता है। परेड बाजू शस्त्र में जाती है और अगले आदेश का इन्तजार करती है।

प्वाइन्ट आफ वार एक धीमी मार्च है और कम ही बजाया जाता है, क्योंकि यह केवल उन समारोहों के लिए आरक्षित है जिसमें निशान और स्टेंडर्ड भाग लेते हैं। वास्तव में यह एक ऐसी निश्चित ध्वनि है जो निशान के परेड ग्राउन्ड में आने और जाने के दौरान बजाया जाता है यह एक ऐसी सैन्य संयोजन भी है जिसका अभ्यास पुराने सैन्य परम्पराओं के रूप में निशान और स्टेंडर्ड समारोहों में किया जाता है।

बैग पाइपरः

बैग पाइप प्राचीनतम संगीत वाद्य यन्त्रों में से एक है। इसका उल्लेख अनेक प्राचीन लेखों में है और हिट्टिटे कार्विंग्स के अस्तित्व के दौरान हजारों वर्ष ई.पू. इसका प्रयोग सार्वजनिक किया गया। इसका इस्तेमाल रोमन सेना ने किया और उसकी एक ऐजेन्सी के द्वारा यह ब्रिटेन पहुंचा।

सभी यूरोपीय देशों के साहित्यों के मध्य कालीन युग में बैग पाइप का विश्व व्यापक प्रमाण मौजूद है। इसे 13वीं सदी में दान्ते के द्वारा निर्दिष्ट, 14वीं सदी में चौसर, फ्रोईसार्ट और बोक्काकियों। 16वीं सदी में रेबेलाइस रोनसार्ड, सरवेन्टस स्पेन्सर और शैक्सपीयर, 17वीं सदी में डैट्रोन, मिल्टन, बटलर और पेपीज, 18वीं सदी में बीउमारचीस और अन्य द्वारा, 19वीं सदी में जार्ज सैण्ड ने उनके एक उपन्यास में और विक्टर हुगों ने दि टोइल्र्स आफ दि सी में अपने अंग्रेजी ज्ञान को प्रदर्शन करने की इच्छा में इसे बेग पाईप कहा है। अधिकांश देशों में बेगपाइप एक से अधिक स्वरूपों में है। इस वाद्य यंत्र ने महान संयोजक माने जाने वालों का कुछ ही ध्यान अपनी तरफ आकृष्ट किया है लेकिन इसने सामाजिक जीवन के आंगन में बड़ी भूमिका निभाई है और सभी खेमों में इसका अभ्यास आज भी किया जाता है।

हाइलैण्ड पाईप या स्काटिश पाईप–1594 में स्काटिश सैन्य इतिहास में पहली बार निर्दिष्ट। स्काटिश जनता के द्वारा उनकी सेना में प्रयोग हुई और भारतीय सेना में यह विश्वभर में पहली मानी जाती हैं।

बैग पाईप के संगीत के अल्प ध्वनि का चार और सात नोट का अद्वितीय पैमाना होता है। चेन्टर और डौन्स दोनों ही की ध्वनि मर्मज्ञ है और इसकी पहली बलिंग पर उनको अभ्यस्त नहीं होते हैं। न केवल सिर्फ पैमाने के अप्राथमिक बलपूर्वक ध्वनि अन्तराल से, बल्कि ग्रेस नोट्स के प्रचुर प्रयोग से (प्रत्येक लय नोट के पहले अतिशीघ्र नोट बजाने से) जो जब तक कि मुख्य धुन की प्रवृति के अलंकृत को पहचाने। वास्तव में इस उपकरण की तकनीक में पूर्णता लाना बेशक काफी कठिन है बनिस्पत अन्य उपकरण के जिसके नोटस की रेन्ज काफी कम है। अन्य कठिनाई वास्तव में ये है कि वादक को प्रत्येक लय याद होनी चाहिये जो उसने प्रिन्टेड संगीत से सीखा है।

यह ज्ञात नहीं है कि भारतीय सेना में पाईप कब अस्तित्व में आये, जिसके पश्चात् ही यह पुलिस में आया।

बैण्ड धुनः–

राष्ट्रीय गान (एन्थम) :– भारत का राष्ट्रीय गान जनगण मन, रविन्द्रनाथ टैगोर द्वारा संकलित और लिखित।

वन्दे मातरम् :– राष्ट्रीय गीत (सोंग) वन्दे मातरम् को बंकिमचन्द चटर्जी के द्वारा लिखा गया है।

सारे जहां से अच्छा :– भारतीय सशस्त्र बलों का तेज मार्च। इस संकलन के शब्दों को उर्दू कवि मोहम्मद इकबाल के द्वारा लिखा गया। इसे सैन्य बलों के लिए प्रोफेसर ए. लोबो द्वारा क्रम बद्ध किया गया। इस रूपान्तर में तीनों सेवाओं के संयुक्त बैण्ड के द्वारा तेज मार्च में बजाया जा रहा है।

मार्च करना :– पुलिस और अर्ध सैनिक बलों के लिए कुछ बहुधा प्रयोग में आने वाली धुनें निम्नानुसार है–

अमर सेनानी :– तेज मार्च करना। इस धुन को बजाने के लिए कोई निश्चित अवसर नहीं है।

ध्वज का रक्षक :– धीमे मार्च करना। यह धुन मिश्रित मार्च के लिए है बैण्ड प्लाटून, धीमी मार्च करती है और परेड मैदान में विभिन्न रचनाएं बनाती है।

गुलमर्ग :– तेज मार्च करना। इस धुन को बजाने के लिए कोई निश्चित अवसर नहीं हैं गुलमर्ग, जम्मू कश्मीर में एक अत्यन्त रमणीय बाग है।

बनिहाल :– भारतीय सेना का तेज मार्च। बनिहाल हिमालय के एक दर्रे का नाम है।

उत्तरी सीमाएं :– भारतीय सेना की तेज मार्च।

सुवरूथ :– भारतीय सेना की तेज मार्च।

विजयी भारत :– भारतीय रक्षा बलों का तेज मार्च।

हिन्द महासागर :– भारतीय नौसेना का तेज मार्च।

नवल इन्साइन :– भारतीय नौसेना का तेज मार्च कमोडोर एस.ए. अन्चीज, निदेशक संगीत, भारतीय नौसेना द्वारा संयोजित।

सी लार्ड :– भारतीय नौसेना का धीमे मार्च। यह मिश्रित मार्चिंग धुन है। बैण्ड प्लाटून धीमे मार्च करती है और परेड मैदान में विभिन्न रचनाएं बनती है। इस मार्च को शासी नौसेना से लिया गया है।

वायु सेना निशान :– यह धुन तेज मार्च नहीं है, लेकिन अन्य अधिकारिक समारोहों में बजाया जाता है। जब यह धुन बजाया जाता है बैण्ड मार्च नहीं करता है।

नभ रक्षक :– भारतीय वायु सेना का तेज मार्च।

अन्तरिक्ष बाण :– भारतीय वायु सेना का तेज मार्च।

ध्वनि अवरोध :– भारतीय वायु सेना का तेज मार्च।

निर्मलजीत :– भारतीय वायु सेना का तेज मार्च। ला. आफि. निर्मल जीत सिंह शैखो, पीवीसी की याद में।

सिकी अमोले :– हिम्न की एक प्रार्थना, गिरे सैनिकों की याद में बजाया जाता है। जब यह धुन बजाया जाता है, बैण्ड नहीं चलता है।

वायस आफ गन :– तेज मार्च। इस धुन को बजाने का कोई निश्चित अवसर नहीं है। मौलिक रूप से एक अंग्रेजी धुन है, लेकिन भारतीय सेना द्वारा भी बजाया जाता है। धुन का संयोजन केनेथ अल्फोर्ड ने किया था। कर्नल बोगे संयोजक है जिन्होंने सदाबहार शास्त्रीय धुन संयोजित किया।

सारे जहां से अच्छा :– भारतीय सशस्त्र बलों का अधिकारिक मार्च (अर्धसैनिक और एनसीसी बल आम तौर पर कदम कदम बढ़ाये जा बजाते हैं) इसकी रिकार्डिंग में यह धुन सभी तीनों बैण्डों के द्वारा बजाया जाता है (सेना नौसेना और वायु सेना) यह धुन हमेशा सैन्य परेड के दौरान अन्त में बजाया जाता है या अन्य कोई शासकीय अवसर, जहां बैण्ड उपस्थित रहता है।

देशों का सरताज भारत :– भारतीय सशस्त्र बलों का तेज मार्च। इस रिकार्डिंग में धुन बैन्ड द्वारा गाया गया और भारतीय नौसेना की मण्डली। यह 13वीं, 16वीं और 19वीं कुमांऊ बटालियनों की रेजिमेन्टल धुन है और महार रेजिमेन्ट की भी रेजिमेटल धुन है

हैव दि एन.सी.सी. स्पिरिट इन यू :– राष्ट्रीय केडैट कोर्स का तेज मार्च। सन् थोमे हाई स्कूल के द्वारा बजाया गया था।

स्वागतम् :– यह धुन चलने के लिये नहीं है लेकिन दूसरे समारोहिक अवसरों के दौरान बजाया जाता है यह नरेन्द्र शर्मा के गीतों पर निर्भर है और एल. बी. गुरूंग द्वारा संयोजित किया गया है।

चन्ना बिलवारी :– धीमे मार्च सूबेदार रामपाल द्वारा संयोजित, जो कुमांऊ रेजिमेन्ट के बैन्ड मास्टर थे। यह धुन कुमांऊ घाटी की एक लोकप्रिय लोक धुन से ग्रहण की गई है। यह गाना एक लड़की के द्वारा गाया गया है जो उसके पिता से अनुरोध करती है कि उसकी शादी गांव चन्ना बिलवारी के एक लड़के से नहीं की जाये जो एक बहुत गर्म और गीला है सर्द मौसम के विलास का प्रयोग, लड़की वर्णन करती है कि कैसे उसके लिए चन्ना बिलवारी की गर्म लहरों में

व्यवस्थित करना कठिन होगा। यह आमतौर पर परेडों के निरीक्षण के दौरान बजाया जायेगा।

अलमोरे मार्च :– यह एक तेज मार्च है जिसे सूबेदार मेजर कुमांऊ बैण्ड मास्टर रेजिमेन्ट गणेश गुरूंग के द्वारा संयोजित किया गया है यह एक कुमांऊनी लोक धुन पर आधारित है।

गंगोत्री :– यह स्तम्भ करने वाली तेज मार्च वर्ष 1976 में हुई। सेना बैण्ड प्रतियोगिता में सर्वश्रेष्ठ तेज चलने का निर्णय दिया गया और लारेन्स डी मैल्ला शील्ड प्राप्त किया इसे सूबेदार मेजर बचन सिंह नेगी के द्वारा संयोजित किया गया जो (गढ़वाल राइफल रेजिमेन्टल सेन्टर के बैण्ड मास्टर थे) गंगोत्री हिमालय के एक ग्लेसियर का भी नाम है।

सेम बहादुर :– एल. बी. गुरूंग द्वारा संयोजित तेज मार्च। यह धुन फील्ड मास्टर एस. एस. एफ जे मानेक शा, 1971 युद्ध के नायक के नाम पर है। मानेक शॉ ने कुछ गोरखा यूनिटों को कमाण्ड किया और स्नेह से सेम बहादुर कहलाते थे।

हे कांछा :– पाइप बैण्ड द्वारा बजाया गया तेज मार्च। एल बी गुरूंग द्वारा संकलित। कांछा का गोर्खाली में अर्थ है जवान लड़का। यह भारतीय सेना में गोरखा सैनिकों के सन्दर्भ में एक स्नेहपूर्ण शब्द है।

कदम बढ़ाये जा :– एक स्तम्भ करने वाली तेज मार्च, जमादार सेटे ने संयोजित किया यह पैरा रेजिमेन्ट का तेज मार्च का रेजिमेन्टल धुन भी है।

सम्मान गार्ड :– धीमे चलता एल बी गुरूंग द्वारा संयोजित। इस धुन का प्रयोग सैनिक अभिनन्दन के निरीक्षण के दौरान किया जाता है।

राजस्थान :– धीमें मार्च एफ एच रेड द्वारा संयोजित।

दि जनरल सेल्यूट :– दि जनरल सेल्यूट धुन पुलिस और अर्धसैनिक बल बैण्ड द्वारा बजाया गया। जनरल सेल्यूट ब्रिगेडियर और ऊपर के लिए प्राधिकृत है।

बिगुल कॉल

बिगुल कॉल्स :– बिगुल सेना के लिए युद्ध और शान्ति कॉल में एक अत्यधिक महत्वपूर्ण संगीतमय उपकरण रहा है। पुलिस और अर्धसैनिक बलों में बिगुलरों का प्रयोग विभिन्न कॉल बजाने में किया गया है, जिनमें से कुछ हैं–

रिवेलि :– बिगुल काल, जो दिन के शुरूआत को चिन्हित करता है। रेजिमेन्टल झण्डा, क्वार्टर गार्ड में फहराया जाता है।

फाल – इन :– बिगुल कॉल, लोगों को परेड में आने का आदेश होता है।

जनरल सेल्युट :– जनरल सेल्युट के लिए बिगुल कॉल। जनरल सेल्यूट उप महानिरीक्षक और ऊपर के पद के लिए ही बजाया जाता है। बिगुल उस समय बजाया जाता है जब बैंड मौजूद नहीं होता है।

रिट्रीट :– बिगुल कॉल जो दिन के समाप्ति को चिन्हित करता है सूर्य अस्त के दौरान बजता है। रेजिमेन्ट झण्डे को उतारा जाता है।

लास्ट पोस्ट :– बिगुल कॉल जो सैनिकों को आदेश देता है कि सभी रोशनी बन्द करो और सोने जाओ। समान कॉल को सैनिक अन्त्येष्टि के दौरान बजाया जाता है, जिसमें इसे लास्ट बिगुल कॉल कहते हैं जो एक सैनिक आखिरी आराम से पूर्व सुनता है।

बीटिंग दि रिट्रीट :–

बीटिंग रिट्रीट या बीटिंग दि रिट्रीट एक सैन्य समारोह है जो 16वीं सदी के काल में वापस लौटाता है और मौलिक रूप से नजदीक की पेट्रोलिंग यूनिटों को किले में वापस बुलाने के लिए प्रयोग में लायी जाती थी मौलिक रूप से यह चौकसी योजना जानी गई और सूर्यास्त में संध्या को तोप से एक अकेला गोला फायर करके दर्शाया जाता था।

इंग्लैण्ड के जेम्स II के दिनांक 18 जून, 1690 के सैन्य आदेश से उनके ढोल के थाप से उनकी सैन्य टुकड़ियों को लौट आने और आदेश देने के लिए सन्देश होता था, 1964 में विलियम के लेख से रेजिमेन्ट का बड़ा ढोल और ढोल बजाने वाले को

मुख्य गार्ड का कप्तान के द्वारा जोर से ढोल पीटने को कहा जाता या जैसे आदेश दिया जाता इसका प्रत्युत्तर सभी गार्डों द्वारा ढोल बजा कर दिया जाता और प्रत्येक रेजिमेन्ट के चार ढोल बजाने वालों के द्वारा उनके सम्बन्धित निवासी से किसी भी प्रकार से दोनों में से एक या दोनों आदेश समारोहिक टट्टू (सैनिकों को डेरे पर बुलाने के लिए ढोल बजाना) के सन्दर्भ में हैं।

भारत में, यह अधिकारिक तौर पर गणतन्त्र दिवस उत्सव काल के समापन को निर्दिष्ट करता है। इसका आयोजन 29 जनवरी की संध्या को किया जाता है। गणतन्त्र दिवस के तीन दिन पश्चात् भारतीय सेना के तीनों अंगों भारतीय सेना, भारतीय नौसेना और भारतीय वायुसेना के बैण्ड के द्वारा किया जाता है। इसका स्थान रायसिना पहाड़ियाँ और एक समीपवर्ती चौराहा पार्श्व में भारतीय संसद के उत्तरी और दक्षिणी ब्लाक में होता है। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि भारत के राष्ट्रपति होते हैं राष्ट्रपति सुरक्षा गार्ड (पी बी जी) की एक अश्वारोही इकाई के द्वारा मार्ग रक्षकों से घिरे पहुंचते हैं।

समारोहः

समारोह तीनों सेवाओं की बड़ी संख्या में एक साथ बैण्ड मार्चिंग प्रसिद्ध मार्चिंग धुन जैसे कर्नल बोगी और सन्स आफ दि ब्रेव से आरम्भ होता है। पहले फनफेयर (स्वागत) तेज समय में, सामने चलने के साथ, तब तुरन्त ही धीमी समय में परिवर्तित होते हुए, फिर मिश्रित चलते हुए, उलझाने वाले और सुन्दर तरीके के व्यूह बनाते हुए हरकत करते हैं बैण्ड दोबारा, तेज समय में परिवर्तित होते हुए और रायसिना पहाड़ियों के दूरतम् पार्श्व में चले जाते है। फिर भारतीय सेना के पाइप और ढोल परम्परागत् स्काटिश धुन और भारतीय धुन जैसे गोरखा ब्रिगेड और चान्दनी बजाती हैं। ये बैण्ड मिश्रित मार्च करते हैं आखिर में नौ सेना और वायु सेना के इकट्ठे बैण्ड द्वारा प्रदर्शन किया जाता है। समारोह का यह भाग उनके मिश्रित मार्च के साथ समाप्त होता है।

तीनों बैण्ड दल आगे बढते हैं और राष्ट्रपति आसन के नजदीक स्थान लेते हैं। ड्रम बजाने वाले अकेले प्रर्दशन (ड्रमर्स काल जाना जाता है) इस अवसर पर रिट्रीट से पूर्व नियमित अन्तिम धुन बजाया जाता है यह है प्रसिद्ध क्रिश्चियन हिम्न एबाइड विद मी जो विलियम एच मोंक के द्वारा संकलित है टयूवूलर बेल्स से एक लय में बनाये उचित दूरी पर स्थित, व्यापक सम्मोहित करने वाली धुन उत्पन्न करती हैं।

इसके पश्चात् बिगुल कॉल द्वारा रिट्रीट बजाता है और सारे झण्डे धीरे–धीरे नीचे उतारे जाएंगे तब बैण्ड मास्टर राष्ट्रपति की ओर बढ़ेंगे और बैण्ड को ले जाने की अनुमति का अनुरोध करते हैं और समापन समारोह के समाप्त होने की जानकारी देते हैं। बैण्ड पीछे मुड़कर मशहूर धुन ''सारे जहां'' से अच्छा बजाते हुए रायसिना पहाड़ियों को पार करते हैं। तुरंत ही संसद के नार्थ और साउथ ब्लाक के पीछे चमकीला चमत्कारिक प्रदर्शन शुरू हो जाते हैं।

भारत की ध्वज संहिता

अध्याय X

भारत की ध्वज संहिता

भारतीय राष्ट्रीय ध्वज भारत के लोगों की आशाओं एवं आकांक्षाओं का प्रतिनिधित्व करता है। यह हमारे राष्ट्रीय गर्व का प्रतीक है। गत पांच दशकों से अधिक समय से सशस्त्र बलों के सदस्यों सहित अनेकों लोगों ने तिरंगे झण्डे के सम्पूर्ण गौरव को कायम रखने के लिए हंसते–हंसते अपने प्राणों की आहुति दी है।

डा. एस. राधाकृष्णन ने राष्ट्रीय ध्वज के रंगों एवं चक्र के महत्व के बारे में संविधान सभा, जिसने राष्ट्रीय ध्वज को सर्वसम्मति से अंगीकार किया था, में विस्तार से वर्णन किया है। डा. एस. राधाकृष्णन ने व्याख्या की है–'' भगवा अथवा केसरिया रंग निःस्वार्थता एवं निष्पक्षता को इंगित करता है। हमारे नेताओं को भौतिक लाभों के प्रति अनिवार्यतः उदासीन होना चाहिए और उनको अपने कर्तव्यों के प्रति समर्पित होना चाहिए। मध्य में सफेद रंग प्रकाश का द्योतक है जो हमारे आचरण का मार्गदर्शन करने के लिए सत्य पथ है। हरा रंग भूमि व वनस्पति जीवन से हमारे संबंध को दर्शाता है, जिस पर अन्य सभी प्राणी आश्रित रहते हैं। सफेद रंग के मध्य में अशोक चक्र धर्म का नियम चक्र है। जो इस ध्वज के अधीन काम करते हैं उनके लिए सच्चाई अथवा सत्य, धर्म अथवा सद्गुण नियन्त्रण सिद्धान्त होने चाहिए। दूसरी तरफ चक्र गति को इंगित करता है। गतिहीनता मृत्यु है और गति ही जीवन है। भारत को परिवर्तन का अधिक प्रयास नहीं करना चाहिए। यह चक्र एक गतिमय शांतिपूर्ण परिवर्तन का प्रतिनिधित्व करता है।

राष्ट्रीय ध्वज के लिए सभी के हृदय में सार्वभौमिक स्नेह तथा सम्मान और निष्ठा होती है। फिर भी राष्ट्रीय ध्वज के प्रदर्शन के लिए लागू होने वाले कानूनों, प्रक्रियाओं एवं प्रथाओं के संबंध में जागरूकता की बोधगम्य कमी केवल लोगों में ही नहीं अपितु सरकारी एजेंसियों/संगठनों में भी प्रायः देखने में आती है। सरकार द्वारा समय–समय पर जारी गैर सांविधिक अनुदेशों के अलावा, राष्ट्रीय ध्वज का प्रदर्शन ''प्रतीक एवं नाम (गलत प्रयोग की रोकथाम) अधिनियम, 1950 (1950 का सं. 12) तथा राष्ट्रीय गौरव के अपमान की रोकथाम अधिनियम, 1971 (1971 का सं. 69) के अंतर्गत शासित होता है। भारत की ध्वज संहिता, 2002 सभी संबंधितों के मार्गदर्शन एवं हितलाभ के लिए इन सभी कानूनों, प्रथाओं एवं अनुदेशों को एकत्रित करने का प्रयास है।

भारत की ध्वज संहिता, 2002 को सुविधा की दृष्टि से तीन भागों में विभाजित किया गया है। भाग–एक में राष्ट्रीय ध्वज के सामान्य विवरण निहित हैं। संहिता के भाग–दो में सरकारी, निजी संगठनों, शैक्षिक संस्थानों इत्यादि के सदस्यों द्वारा राष्ट्रीय ध्वज का प्रदर्शन करने का तरीका निहित है। संहिता का भाग–तीन केन्द्रीय/राज्य सरकारों एवं उनके संगठनों व एजेंसियों द्वारा राष्ट्रीय ध्वज का प्रदर्शन किए जाने से संबंधित है।

भारतीय ध्वज संहिता, 2002 को दिनांक 26 जनवरी, 2002 से प्रभावी माना जाएगा और यह इससे पूर्व लागू भारतीय ध्वज संहिता का स्थान लेगी।

भाग–एक

सामान्य

1.1 राष्ट्रीय ध्वज तीन आयताकार पट्टियों अर्थात् समान चौड़ाई की उप पट्टियों से निर्मित एक तिरंगी पट्टिका के रूप में होगा। ऊपर पट्टी का रंग भारतीय केसर (केसरिया) और निचली पट्टी भारतीय हरे रंग की होगी। बीच की पट्टी का रंग सफेद होगा जिसके मध्य में नेवी नीले रंग से बना हुआ अशोक चक्र का परिरूप होगा, जिसमें बराबर दूरी पर 24 आरे बने होंगे। अशोक चक्र अधिमानतः स्क्रीन मुद्रित या अन्य तरीके से मुद्रित या स्टेंसिल या उचित ढंग से कशीदाकारी किया हुआ होगा और सफेद पट्टी के मध्य में ध्वज के दोनों ओर पूरी तरह दृष्टिगोचर होगा।

1.2 भारत का राष्ट्रीय ध्वज हाथ से काते हुए और हाथ से बुने हुए ऊनी/सूती/सिल्क/खादी ध्वजपट से बना होगा।

1.3 राष्ट्रीय ध्वज आयताकार आकार में होगा। ध्वज की लम्बाई से ऊंचाई (चौड़ाई) का अनुपात 3:2 का होगा।

1.4 राष्ट्रीय ध्वज का मानक आकार निम्न प्रकार होगा–

ध्वज आकार सं.	मि.मी. में लम्बाई–चौड़ाई
1.	6300–4200
2.	3600–2400
3.	2700–1800
4.	1800–1200
5.	1350–900
6.	900–600
7.	450–300
8.	225–150
9.	150–100

1.5 प्रदर्शन के लिए समुचित आकार का चयन किया जाना चाहिए। 450–300 मि.मी. आकार के ध्वज वी.वी.आई.पी. उड़ानों पर विमानों के लिए, 225X150 मि.मी. आकार के ध्वज मोटर कारों तथा 150X100 मि.मी. आकार टेबल ध्वजों के लिए नियत होता है।

भाग–दो

सरकारी, निजी संगठनों, शैक्षिक संस्थानों इत्यादि के सदस्यों द्वारा राष्ट्रीय ध्वज को फहराना/प्रदर्शन/प्रयोग करना।

धारा–1

2.1 प्रतीक एवं नाम (गलत प्रयोग की रोकथाम)

***प्रतीक एवं नाम (गलत प्रयोग की रोकथाम) अधिनियम 1950.**

धारा : 2 इस अधिनियम में, जब तक संदर्भ में अन्यथा अपेक्षित न हो:–

अधिनियम, 1950' में दी गई सीमा को छोड़कर, सरकार निजी संगठनों, शैक्षिक संस्थानों इत्यादि के सदस्यों द्वारा राष्ट्रीय ध्वज का प्रदर्शन करने पर कोई प्रतिबंध नहीं होगा, और (क) ''प्रतीक'' का अर्थ है शिड्यूल में विनिर्दिष्ट कोई भी प्रतीक, सील, ध्वज, राज चिह्न, कुल चिह्न या सचित्र प्रदर्शन,

धारा : 3 अभी तक लागू किसी कानून में किसी बात के होते हुए भी, कोई व्यक्ति, ऐसे मामलों में तथा ऐसी शर्तों के अंतर्गत, जो केन्द्र सरकार द्वारा निर्धारित की गई हों, शिड्यूल में विनिर्दिष्ट किसी भी व्यापार, व्यवसाय, पेशा, अथवा वृति अथवा किसी पेटेन्ट की उपाधि अथवा डिजाइन के किसी ट्रेडमार्क, किसी नाम अथवा प्रतीक अथवा उसकी कोई आभासी नकल को केन्द्र सरकार अथवा ऐसे सरकारी अधिकारी जो इसके लिए केन्द्र सरकार द्वारा प्राधिकृत किया गया हो, की पूर्ववर्ती अनुमति के बिना प्रयोग नहीं करेगा और न ही प्रयोग करना जारी रखेगा।

टिप्पणी : भारतीय राष्ट्रीय ध्वज को राष्ट्रीय गौरव के अपमान की रोकथाम, अधिनियम, 1971'' के शिड्यूल तथा इस विषय में बनाए गए किसी अन्य कानून के अन्तर्गत प्रतीक के रूप में विनिर्दिष्ट किया गया है।

(i) ध्वज को ''प्रतीक एवं नाम'' (गलत प्रयोग की रोकथाम) अधिनियम, 1950 के उल्लंघन में व्यावसायिक उद्देश्यों के लिए प्रयोग नहीं किया जाएगा।

(ii) किसी व्यक्ति या वस्तु को सलामी देते समय ध्वज को झुकाया नहीं जाएगा।

''राष्ट्रीय गौरव के अपमान की रोकथाम हेतु अधिनियम, 1971

(यथा संशोधित राष्ट्रीय गौरव के अपमान की रोकथाम (संशोधन) अधिनियम–2003)

जो भी भारतीय राष्ट्रीय ध्वज.....अथवा इसके किसी हिस्से को प्रकट रूप में किसी सार्वजनिक स्थल अथवा किसी अन्य स्थल पर जलाता है, विकृत करता है, विरूप करता है, अपवित्र करता है,

बिगाड़ता है, नष्ट करता है, कुचलता है अथवा अन्य प्रकार से इसका अनादर करता है अथवा तिरस्कार (चाहे बोल चाल या लिखित रूप में अथवा दोनों प्रकार से शब्दों द्वारा अथवा कार्यों द्वारा) करता है तो उसे कैद की सजा दी जाएगी जो तीन वर्ष तक बढ़ाई जा सकती है अथवा जुर्माने की सजा अथवा दोनों सजाएं दी जाएंगी।

स्पष्टीकरण – 1 भारतीय राष्ट्रीय ध्वज के प्रति नापसंदगी प्रकट करने या आलोचना करने या कानूनी तरीके से भारतीय राष्ट्रीय ध्वज में परिवर्तन करने संबंधी टिप्पणी करने से इस धारा के अंतर्गत अपराध स्थापित नहीं होता है।

स्पष्टीकरण – 2 ''भारतीय राष्ट्रीय ध्वज'' अभिव्यक्ति में भारतीय राष्ट्रीय ध्वज या किसी पदार्थ से बने या किसी पदार्थ पर चित्रित उसके किसी हिस्से या हिस्सों के चित्र, रंगसाजी, चित्रकारी या फोटोग्राफ या अन्य प्रत्यक्ष प्रतिरूप शामिल हैं।

स्पष्टीकरण – 3 ''सार्वजनिक स्थल'' अभिव्यक्ति का अर्थ है पब्लिक की पहुंच के स्थल अथवा उसके प्रयोग के लिए नियत स्थल। इनमें लोक वाहन भी शामिल हैं।

स्पष्टीकरण – 4 भारतीय राष्ट्रीय ध्वज के प्रति अनादर का अर्थ है अथवा उसमें शामिल हैं:–

(क) भारतीय राष्ट्रीय ध्वज का घोर अपमान अथवा अनादर करने के लिए की गई चेष्टा; अथवा

(ख) किसी व्यक्ति या वस्तु को सलामी देते समय भारतीय राष्ट्रीय ध्वज को झुकाना; अथवा

(ग) सरकार द्वारा जारी अनुदेशों के अनुसार जिन अवसरों पर ध्वज को सरकारी भवनों पर आधा झुका हुआ फहराना है, उन अवसरों को छोड़कर भारतीय राष्ट्रीय ध्वज को आधा झुका हुआ फहराना; अथवा

(घ) राजकीय अन्त्येष्टि क्रिया अथवा सशस्त्र बलों अथवा अन्य अर्ध सैनिक बलों की अन्त्येष्टि क्रियाओं को छोड़कर भारतीय राष्ट्रीय ध्वज को किसी भी प्रकार से वस्त्र के रूप में प्रयोग करना; अथवा

(ङ) भारतीय राष्ट्रीय ध्वज को किसी भी प्रकार की वर्दी या पोशाक के एक भाग के रूप में अथवा कुशनों, रूमालों, नैपकिनों अथवा किसी भी ड्रेस सामग्री पर कशीदाकारी या मुद्रण करके प्रयोग करना, अथवा।

(च) भारतीय राष्ट्रीय ध्वज पर किसी भी प्रकार लेख अंकित करना;

(छ) गणतंत्र दिवस अथवा स्वतंत्रता दिवस सहित विशेष अवसरों पर समारोह के रूप में भारतीय राष्ट्रीय ध्वज को फहराने से पहले उसमें पुष्प पंखुड़ियां रखने के सिवाय उसमें कोई भी वस्तु प्राप्त करने, सुपुर्द करने अथवा ले जाने के लिए उसको एक पात्र के रूप में प्रयोग करना; अथवा

(ज) भारतीय राष्ट्रीय ध्वज को एक प्रतिमा या एक स्मारक या एक वक्ता की मेज या एक वक्ता के मंच को आच्छादित करने के लिए प्रयोग करना; अथवा

(झ) भारतीय राष्ट्रीय ध्वज को जानबूझकर जमीन या फर्श से स्पर्श कराना, या पानी में घसीटना, अथवा

(ञ) भारतीय राष्ट्रीय ध्वज को वाहन, रेलगाड़ी, किश्ती या विमान या ऐसी ही किसी वस्तु के छत्र, ऊपरी हिस्से और किनारों अथवा पिछले हिस्से को आच्छादित करने हेतु प्रयोग करना, अथवा

(ट) भारतीय राष्ट्रीय ध्वज को भवन के आवरण के रूप में प्रयोग करना, अथवा

(ठ) भारतीय राष्ट्रीय ध्वज के केसरिया रंग को जानबूझकर नीचे करके प्रदर्शित करना।

3.क द्वितीय या अनुवर्ती अपराध पर न्यूनतम सजा

यदि कोई धारा–2 के अंतर्गत पहले भी अपराध का दोषी पाया गया है और दोबारा ऐसे अपराध का दोषी पाया जाता है तो उसे दूसरे एवं

प्रत्येक अनुवर्ती अपराध के लिए कैद की सजा दी जाएगी जिसकी अवधि एक वर्ष से कम नहीं होगी।

(iii) सरकार द्वारा जारी अनुदेशों के अनुसार ध्वज को जिन अवसरों पर आधा झुका हुआ फहराया जाना है उन अवसरों को छोड़कर ध्वज को आधा झुका हुआ नहीं फहराया जाएगा।

(iv) ध्वज को किसी भी प्रकार से वस्त्र के रूप में प्रयोग नहीं किया जाएगा। इसमें प्राइवेट अन्त्येष्टि भी शामिल हैं।

(v) ध्वज को किसी प्रकार की वर्दी या पोशाक के एक हिस्से के रूप में प्रयोग नहीं किया जाएगा अथवा उसको कुशनों, रूमालों, नेपकिनों या किसी वर्दी की सामग्री पर कशीदाकारी या मुद्रित नहीं किया जाएगा।

(vi) ध्वज पर किसी प्रकार का अक्षर लेखन नहीं किया जाएगा।

(vii) ध्वज को किसी भी वस्तु को प्राप्त करने, सुपुर्द करने, रखने या ले जाने के लिए पात्र के रूप में प्रयोग नहीं किया जाएगा।

बशर्ते कि गणतंत्र दिवस और स्वतंत्रता दिवस जैसे राष्ट्रीय दिवसों पर तथा विशेष अवसरों पर समारोह के एक हिस्से के रूप में ध्वज को फहराने से पूर्व उसमें पुष्प पंखड़ियां रखने में कोई आपत्ति नहीं होगी।

(viii) एक प्रतिमा का अनावरण करने के अवसर पर प्रयोग करते समय ध्वज को अलग से स्पष्ट रूप से प्रदर्शित किया जाएगा तथा इसका प्रयोग प्रतिमा अथवा स्मारक के आच्छादित करने के लिए नहीं किया जाएगा।

(ix) ध्वज को वक्ता की मेज पर आवरण के रूप में प्रयोग नहीं किया जाएगा और न ही इसे वक्ता के मंच को आच्छादित करने के लिए प्रयोग किया जाएगा।

(x) ध्वज को जानबूझकर जमीन से या फर्श से स्पर्श कराने अथवा पानी में घसीटने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

(xi) ध्वज को, एक वाहन, रेलगाड़ी, किश्ती, या विमान के छत्र, शिखर, किनारों या पिछले हिस्से पर आच्छादित नहीं किया जाएगा।

(xii) ध्वज को भवन को ढकने के लिए प्रयोग नहीं किया जाएगा।

(xiii) ध्वज को जानबूझकर केसरिया रंग को नीचे करके प्रदर्शित नहीं किया जाएगा।

2.2 सरकार, गैर सरकारी संगठन या शैक्षिक संस्थान का सदस्य राष्ट्रीय ध्वज को सभी दिवसों, अवसरों, समारोहों या अन्य दिवसों पर राष्ट्रीय ध्वज के गौरव एवं प्रतिष्ठा के अनुकूल फहरा/प्रदर्शित कर सकता है।

(1) जब कभी राष्ट्रीय ध्वज फहराया जाए तब इसकी स्थिति सम्मानजनक होनी चाहिए तथा इसे प्रतिष्ठापूर्वक स्थापित किया जाना चाहिए।

(2) क्षतिग्रस्त अथवा अस्त व्यस्त ध्वज नहीं फहराया जाना चाहिए।

(3) एक मस्तूल–शिखर से एक साथ किसी अन्य ध्वज या ध्वजों के साथ ध्वज नहीं फहराया जाना चाहिए।

(4) इस संहिता के भाग–तीन के खंड–9 में निहित प्रावधानों के अलावा ध्वज किसी वाहन पर नहीं फहराया जाना चाहिए।

(5) जब ध्वज किसी वक्ता के मंच पर प्रदर्शित किया जाता है तब यह वक्ता के दाहिनी तरफ फहराया जाना चाहिए क्योंकि उसका मुख श्रोतागण की ओर होता है, या ऊपर सीधे–दीवार पर तथा वक्ता के पीछे होना चाहिए।

(6) जब ध्वज किसी दीवार पर समतल या क्षैतिज रूप में फहराया जाए तब केसरिया पट्टी सबसे ऊपर होनी चाहिए तथा जब लम्बवत फहराया जाता है तब केसरिया पट्टी ध्वज के संदर्भ में दाहिनी तरफ होगी (अर्थात् ध्वज की तरफ मुख किए व्यक्ति के बाएं)

(7) ध्वज यथा संभव इस संहिता के भाग एक में निर्धारित विनिर्देशों के अनुरूप होना चाहिए।

(8) कोई भी अन्य ध्वज या ध्वज–पट राष्ट्रीय ध्वज से उच्चतर या ऊपर या पास–पास नहीं रखा जाना चाहिए और न ही ध्वज–मस्तूल, जिससे ध्वज फहराया जाता है, के समीप या ऊपर पुष्प या हार या प्रतीक सहित कोई वस्तु रखी जानी चाहिए।

(9) ध्वज का प्रयोग तोरण, गुच्छा या ध्वजपट या सजावट हेतु किसी अन्य प्रकार से नहीं किया जाना चाहिए।

(10) महत्वपर्ण राष्ट्रीय, सांस्कृतिक समारोहों तथा खेल–कूद प्रतियोगिताओं के अवसरों पर आम जनता द्वारा कागज निर्मित ध्वज फहराए जा सकते हैं। तथापि इस प्रकार के कागजी ध्वजों को समारोह के पश्चात् जमीन पर नहीं फेंका जाना चाहिए। जहां तक संभव हो ध्वज की गरिमा के साथ इनका निपटान उचित ढंग से गुप्त रूप से किया जाना चाहिए।

(11) जहां ध्वज खुले मे प्रदर्शित किया जाता है वहां मौसम की स्थितियों का लिहाज किए बिना इसे, जहां तक संभव हो, सूर्योदय से सूर्यास्त तक फहराया जाना चाहिए।

(12) ध्वज को किसी ऐसे ढंग से प्रदर्शित या कस कर नहीं बांधा जाना चाहिए जिससे कि यह क्षतिग्रस्त हो जाए तथा

(13) ध्वज के क्षतिग्रस्त या गंदा हो जाने की स्थिति में इसे ध्वज की गरिमा के साथ अधिमानतः जलाकर या किसी अन्य संगत उपाय द्वारा समग्र रूप से एकान्त में नष्ट किया जाएगा।

धारा–दो

2.3 ध्वज के प्रति आदर उत्पन्न करने हेतु शिक्षण संस्थाओं (स्कूल, कॉलेज, खेल शिविर, स्काउट शिविर इत्यादि) में राष्ट्रीय ध्वज फहराया जा सकता है। मार्गदर्शन हेतु अनुदेशों का आदर्श रूप निम्नलिखित हैः–

(1) स्कूल खुले चौकोर रचना में एकत्र होगा जिसमें तीन तरफ छात्र होंगे तथा चौथी तरफ केन्द्र में ध्वज स्टाफ होगा। प्रधानाध्यापक, छात्र नेता तथा ध्वज फहराने वाला व्यक्ति (यदि प्रधानाध्यापक से अन्य है) ध्वज–स्टाफ से तीन कदम पीछे खड़ा होगा।

(2) छात्र कक्षाओं के अनुसार तथा दस की टुकड़ी (या नफरी के अनुसार अन्य संख्या) में खड़े होंगे। ये दस्ते एक दूसरे के पीछे व्यवस्थित किए जाएंगे। कक्षा का छात्र नेता अपनी कक्षा की प्रथम पंक्ति के दाहिनी तरफ खड़ा होगा तथा कक्षा अध्यापक अपनी कक्षा की अंतिम पंक्ति से तीन कदम पीछे मध्य की तरफ खड़ा होगा। इन कक्षाओं को वर्ग के साथ–साथ वरियता क्रम में व्यवस्थित किया जाएगा जिसमें वरिष्ठतम कक्षा दायीं ओर अंत में खड़ी होगी।

(3) प्रत्येक पंक्ति के बीच कम से कम एक कदम (30 इंच) की दूरी होनी चाहिए तथा कक्षा से कक्षा के बीच का अंतर समान होना चाहिए।

(4) जब प्रत्येक कक्षा तैयार हो जाती है तब कक्षा नेता एक कदम आगे बढ़ेगा तथा चयनित स्कूल छात्र नेता को सलामी देगा। ज्योंही सभी कक्षाएं तैयार हो जाती हैं, स्कूल छात्र नेता प्रधानाध्यापक की तरफ बढ़ेगा तथा उन्हें सलामी देगा। प्रधानाध्यापक सलामी का उत्तर देगा। तत्पश्चात् ध्वज फहराया जाएगा। इसमें स्कूल छात्र नेता सहायता कर सकते हैं।

(5) परेड के प्रभारी छात्र नेता ध्वज के फहराए जाने से ठीक पूर्व परेड (या सभा) को सावधान करेगा तथा ध्वज के फहराते ही उन्हें सलामी देने के लिए कहेगा। परेड थोड़े समय के लिए सलामी अवस्था में रखी जाएगी और उसके बाद कमान ''आदेश'' पर परेड सावधान अवस्था में आ जाएगी।

(6) ध्वज सलामी के साथ–साथ राष्ट्रगान होगा। इस समारोह के दौरान परेड सावधान

अवस्था में रखी जाएगी।

(7) सभी अवसरों पर जब प्रतिज्ञा ली जाती है तब प्रतिज्ञा के बाद राष्ट्रगान होगा। प्रतिज्ञा लेने के समय सभा सावधान अवस्था में खड़ी होगी तथा प्रधानाध्यापक औपचारिक रूप से प्रतिज्ञा दिलाएंगे तथा उनके बाद सभा इसे दोहराएगी।

(8) राष्ट्रीय ध्वज के प्रति निष्ठा की प्रतिज्ञा लेते समय स्कूलों में अपनायी जाने वाली प्रक्रिया निम्नलिखित हैः–

हाथ जोड़कर खड़े रहते हुए सभी एक साथ निम्नलिखित प्रतिज्ञा दोहराएंगेः

''मैं राष्ट्रीय ध्वज के प्रति तथा इसके प्रभुसत्ता–सम्पन्न समाजवादी, धर्म निरपेक्ष, प्रजातांत्रिक गणराज्य स्वरूप के प्रति निष्ठावान रहने की प्रतिज्ञा लेता हूं।''

भाग–तीन

केन्द्र तथा राज्य सरकारों और उनके संगठनों तथा एजेंसियों द्वारा राष्ट्रीय ध्वज फहराना/प्रदर्शन

धारा–1

रक्षा संस्थापन/मिशन/चौकियों के अध्यक्ष

3.1 रक्षा संस्थापनों के लिए इस भाग के प्रावधान लागू नहीं होंगे क्योंकि राष्ट्रीय ध्वज के प्रदर्शन हेतु उनके अपने स्वयं के नियम हैं।

3.2 बाहर उन देशों में भी मिशनों/चौकियों के अध्यक्षों के मुख्यालयों तथा आवासों पर राष्ट्रीय ध्वज फहराया जा सकता है जहां राजनयिक तथा वाणिज्यदूत प्रतिनिधियों के लिए अपने सरकारी आवासों पर अपने राष्ट्रीय ध्वज फहराने की प्रथा है।

धारा–दो

सरकारी प्रदर्शन

3.3 उपरोक्त खण्ड–एक में निहित प्रावधानों की शर्त पर सभी सरकारों तथा उनके संगठनों/एजेंसियों के लिए यह अनिवार्य होगा कि वे इस भाग में निहित प्रावधानों का अनुसरण करें।

3.4 सभी अवसरों पर सरकारी प्रदर्शन हेतु केवल भारतीय मानक ब्यूरो द्वारा निर्धारित विनिर्देशों के अनुरूप तथा उनके मानक चिह्न वाले ध्वज का ही प्रयोग किया जाएगा। अन्य अवसरों पर भी यह वांछनीय है कि केवल उपयुक्त आकार के ऐसे ध्वजों को ही फहराया जाए।

धारा–तीन

सही प्रदर्शन

3.5 जहां कहीं ध्वज फहराया जाए इसकी स्थिति सम्मानजनक होनी चाहिए तथा इसे प्रतिष्ठापूर्वक स्थापित किया जाए।

3.6 जहां किसी सार्वजनिक भवन पर ध्वज फहराने की प्रथा हैं वहां उस भवन पर रविवार तथा छुट्टी के दिनों सहित सभी दिवसों पर इसे फहराया जाएगा तथा, इस संहिता में निहित शर्तों के अतिरिक्त, मौसम की स्थितियों का लिहाज किए बिना इसे सूर्योदय से सूर्यास्त तक फहराया जाएगा। ऐसे भवनों पर ध्वज रात्रि में भी फहराया जा सकता है परंतु यह केवल अति विशेष अवसरों पर ही होना चाहिए।

3.7 ध्वज सदैव तेजी से फहराया जाएगा तथा धीरे–धीरे और औपचारिक रूप से नीचे लाया जाएगा। जब ध्वज को फहराने तथा नीचे उतारने की कार्रवाई उपयुक्त बिगुल आह्वान के द्वारा हो तो ध्वज फहराने तथा नीचे उतारने की कार्रवाई बिगुल आह्वान के साथ–साथ होनी चाहिए।

3.8 जब ध्वज को एक ध्वज दण्ड द्वारा क्षैतिज रूप से या खिड़की की दहलीज से एक कोण पर, छज्जे या भवन के अग्रभाग से प्रदर्शित किया जाता है तो केसरिया पट्टी दण्ड के अगले सिरे पर होगी।

3.9 जब ध्वज किसी दीवार पर समतल तथा क्षैतिज रूप में प्रदर्शित किया जाता है तो केसरिया पट्टी ऊपरी होगी तथा जब लम्बवत प्रदर्शित किया जाता है तब केसरिया पट्टी ध्वज के संदर्भ में दाहिनी तरफ होगी अर्थात् यह इसके सम्मुख व्यक्ति के बाएं तरफ हो सकती है।

3.10 जब ध्वज वक्ता के मंच पर प्रदर्शित किया जाता है तब यह वक्ता के दाहिनी तरफ एक दण्ड पर फहराया जाएगा क्योंकि उसका मुख श्रोतागण की ओर होता है अथवा दीवार के सामने ऊपर समतल भाग पर तथा वक्ता के पीछे फहराया जाएगा।

3.11 जब किसी प्रतिमा के अनावरण जैसे अवसर पर प्रयुक्त किया जाता है तब ध्वज प्रतिष्ठापूर्वक तथा अलग से प्रदर्शित किया जाएगा।

3.12 जब ध्वज किसी मोटर–कार पर अकेले प्रदर्शित किया जाता है तब यह एक डण्डे के साथ फहराया जाएगा जो या तो बोनट के अग्रभाग पर मध्य में या कार के दाहिने तरफ अग्रभाग पर मजबूती से जुड़ा होना चाहिए।

3.13 जब ध्वज किसी जुलूस या परेड में ले जाया जाता है, तब यह या तो प्रयाण (मार्चिंग) के दाहिनी तरफ अर्थात ध्वज के अपने दाहिने रहेगा अथवा यदि अन्य ध्वजों की पंक्ति है तो पंक्ति के आगे मध्य में रहेगा।

धारा–चार

गलत प्रदर्शन

3.14 क्षतिग्रस्त या अस्त–व्यस्त ध्वज का प्रदर्शन नहीं किया जाएगा।

3.15 ध्वज किसी भी व्यक्ति या वस्तु की सलामी में नहीं झुकाया जाएगा।

3.16 कोई भी अन्य ध्वज या ध्वजपट राष्ट्रीय ध्वज से उच्चतर या ऊपर या, इसके आगे जैसा दिया गया है, को छोड़कर, पास–पास नहीं रखा जाएगा और न ही ध्वज मस्तूल जिससे ध्वज फहराया जाता है, के पास या ऊपर पुष्प या हार या प्रतीक सहित कोई वस्तु रखी जाएगी।

3.17 ध्वज का प्रयोग बंदनवार, गुच्छा या ध्वजपट या सजावट हेतु किसी अन्य प्रकार से नहीं किया जाएगा।

3.18 ध्वज का प्रयोग न तो वक्ता की मेज को ढकने के लिए किया जाएगा और न ही वक्ता के मंच को इससे आच्छादित किया जाएगा।

3.19 ध्वज के प्रदर्शन में ''केसरिया'' को नीचे नहीं रखा जाएगा।

3.20 ध्वज को जल में घसीटा या भूमि या फर्श से स्पर्श नहीं करने दिया जाएगा।

3.21 ध्वज को किसी ऐसे ढंग से प्रदर्शित या कसकर नहीं बांधा जाएगा जिससे कि यह क्षतिग्रस्त हो जाए।

धारा–पांच

दुरूपयोग

3.22 राजकीय/सैन्य/केन्द्रीय अर्ध सैनिक बलों की अन्त्येष्टि क्रियाओं को छोड़कर ध्वज का प्रयोग किसी भी स्थिति में वस्त्र के रूप में नहीं किया जाएगा।

3.23 किसी वाहन, रेलगाड़ी या नाव के छत्र, शीर्ष भाग, किनारे या पृष्ठभाग को ध्वज से आच्छादित नहीं किया जाएगा।

3.24 ध्वज का प्रयोग या रख–रखाव इस प्रकार से नहीं किया जाएगा जिससे यह क्षतिग्रस्त या मैला हो जाए।

3.25 जब ध्वज क्षतिग्रस्त या मैला हो जाए तब इसे फेंका नहीं जाएगा या इसका निरादरपूर्वक निपटान नहीं किया जाएगा बल्कि समग्र रूप में गुप्त ढंग से अधिमानतः जलाकर या ध्वज की गरिमा के अनुकूल किसी अन्य तरीके से नष्ट किया जाएगा।

3.26 भवन को ढकने के लिए ध्वज का प्रयोग नहीं किया जाएगा।

3.27 ध्वज का प्रयोग किसी पोशाक या किसी भी प्रकार की वर्दी के भाग के रूप में नहीं किया जाएगा। इसे गद्दों, रूमालों, नैपकिनों या सन्दूकों पर काढ़ा या छापा नहीं जाएगा।

3.28 ध्वज के ऊपर किसी भी प्रकार के अक्षर अंकित नहीं किए जाएंगे।

3.29 ध्वज का प्रयोग किसी भी प्रकार के विज्ञापन के लिए नहीं किया जाएगा और न ही कोई विज्ञापन

चिह्न उस डण्डे पर बांधा जाएगा जिस पर ध्वज फहराया जाता है।

3.30 ध्वज का प्रयोग कुछ भी ग्रहण करने, सौंपने, पकड़ने अथवा ले जाने के पात्र के रूप में नहीं किया जाएगा।

विशेष अवसरों तथा राष्ट्रीय दिवसों जैसे गणतंत्र दिवस व स्वतंत्रता दिवस जैसे समारोह में ध्वज को फहराने से पूर्व ध्वज के अंदर फूल की पंखुड़ियों को रखने पर कोई आपत्ति नहीं की जाएगी।

धारा–छह

सलामी

3.31 ध्वज को फहराने एवं उतारने के समारोह के दौरान अथवा परेड में ध्वज गुजरते समय अथवा निरीक्षण के दौरान सभी उपस्थित व्यक्ति ध्वज के सम्मुख होंगे तथा सावधान खड़े होंगे। जो व्यक्ति वर्दी में उपस्थित हैं वे उपयुक्त सलामी देंगे। जब ध्वज गतिमान दस्ते में हो तो उपस्थित व्यक्ति ध्वज के उनके सामने से गुजरते समय सावधान खड़े होंगे एवं सलामी देंगे। प्रतिष्ठित व्यक्ति बिना टोपी के सलामी ले सकते हैं।

धारा–सात

अन्य राष्ट्रों तथा संघ राष्ट्रों के ध्वजों के साथ फहराना/प्रदर्शन

3.32 जब सीधी पंक्ति में अन्य देशों के ध्वजों के साथ फहराया जाता है तो राष्ट्रीय ध्वज बिल्कुल दाहिनी अर्थात् यदि कोई पर्यवेक्षक श्रोताओं के सम्मुख है और ध्वजों की कतार के मध्य में खड़ा है तो राष्ट्रीय ध्वज उसके बिल्कुल दाहिनी ओर होना चाहिए। स्थिति को नीचे सचित्र दर्शाया गया है।

3.33 विदेशों के ध्वज संबंधित देशों के नामों के अंग्रेजी रूपांतरण के आधार पर वर्णानुक्रम में राष्ट्रीय ध्वज से ही अग्रसर होंगे। ऐसे मामलों में यह अनुज्ञेय होगा कि ध्वजों की पंक्ति राष्ट्रीय ध्वज से ही प्रारंभ हो और उसपर ही समाप्त हो तथा राष्ट्रीय ध्वज को सामान्य देशवार वर्णानुक्रम में भी सम्मिलित किया जाए। राष्ट्रीय ध्वज को पहले फहराया जाएगा और उसे सबसे अंत में उतारा जाएगा।

3.34 यदि ध्वजों को खुले वृत्त अर्थात् एक वृत्तांश अथवा अर्धवृत्त में फहराया जाना है तो वही प्रक्रिया अपनाई जाएगी जो इस धारा की पूर्ववर्ती परन्तुक में दर्शाई गई है। यदि ध्वजों को बंद घेरे अर्थात पूर्ण–वृत्त में फहराया जाना है तो राष्ट्रीय ध्वज घेरे का प्रारम्भिक चिह्न होगा तथा उसके बाद दक्षिणावृत्त ढंग से अन्य देशों के ध्वजों को इस प्रकार लगाया जाना चाहिए कि अंतिम ध्वज राष्ट्रीय ध्वज के निकट स्थापित हो। शुरूआत और ध्वजों के अंत को चिह्नित करने के लिए अलग राष्ट्रीय ध्वज उपयोग करने की आवश्यकता नहीं है। ऐसे निकटतम वृत्त में राष्ट्रीय ध्वज को भी वर्णानुक्रम में शामिल किया जाएगा।

3.35 जब राष्ट्रीय ध्वज को अनुप्रस्थ दंडो से अन्य ध्वज के साथ दीवार में प्रदर्शित किया जाता है तो राष्ट्रीय ध्वज दांई ओर अर्थात ध्वज के अपने दांई ओर होगा तथा उसका दंड अन्य ध्वज के दंड के सामने होगा। स्थिति को नीचे सचित्र दर्शाया गया है।

3.36 जब संयुक्त राष्ट्र के ध्वज को राष्ट्रीय ध्वज के साथ फहराया जाता है तो उसे राष्ट्रीय ध्वज के किसी ओर प्रदर्शित किया जा सकता है। सामान्य प्रथा यह है कि राष्ट्रीय ध्वज को उस दिशा, जो उसके सामने है के बिल्कुल दांई दिशा में फहराया जाए (अर्थात एक पर्यवेक्षक जो फहराते हुए ध्वजों के दण्डों के समक्ष खड़ा है उसके बिल्कुल बांई ओर)। स्थिति को नीचे सचित्र दर्शाया गया है।

3.37 जब राष्ट्रीय ध्वज को अन्य राष्ट्रों के ध्वजों के साथ फहराया जाना हो तो ध्वज के दण्ड समान आकार के होने चाहिए। अंतर्राष्ट्रीय प्रथा के अनुसार शांति काल में एक राष्ट्र का ध्वज किसी अन्य राष्ट्र के ध्वज के ऊपर लगाया जाना वर्जित है।

3.38 राष्ट्रीय ध्वज को एक ही मस्तूल–शिखर पर एक

साथ किसी अन्य ध्वज अथवा ध्वजों के साथ नहीं फहराया जाएगा। भिन्न ध्वजों के लिए अलग–अलग मस्तूल–शिखर होने चाहिए।

धारा–आठ

सार्वजनिक भवनों/सरकारी आवासों पर प्रदर्शन

3.39 सामान्यतः राष्ट्रीय ध्वज केवल महत्वपूर्ण सार्वजनिक भवनों जैसे उच्च न्यायालय, सचिवालय, आयुक्त कार्यालयों, कलक्ट्रेट, जेलों तथा जिला बोर्डों, नगरपालिकाओं तथा जिला परिषदों के कार्यालयों तथा विभागीय/सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों में ही फहराया जाना चाहिए।

3.40 सीमान्त क्षेत्रों में, राष्ट्रीय ध्वज को सीमा कस्टम चौकियों, जांच चौकियों, सीमा चौकियों तथा अन्य विशेष स्थानों पर जहां ध्वज को फहराना विशेष महत्व रखता है, फहराया जाए। इसके अतिरिक्त, इसे सीमान्त गश्ती टुकड़ियों के शिविर स्थलों पर फहराया जाए।

3.41 राष्ट्रीय ध्वज को राष्ट्रपति, उप राष्ट्रपति, राज्यपाल तथा उप राज्यपाल के मुख्यालय में उनकी उपस्थिति के दौरान उनके सरकारी आवास पर तथा मुख्यालय के बाहर होने पर उनके दौरों के स्थानों पर उस भवन में जहां उनका प्रवास है, पर फहराया जाना चाहिए। तथापि सरकारी आवास पर फहराए जा रहे ध्वज को प्रतिष्ठित व्यक्ति द्वारा मुख्यालय छोड़ने पर उतार लिया जाना चाहिए तथा मुख्यालय में वापस आने पर जैसे ही वे भवन में मुख्य द्वार से प्रवेश करते हैं तो भवन पर पुनः ध्वज फहराया जाना चाहिए। जब प्रतिष्ठित व्यक्ति मुख्यालय के बाहर दौरे पर होते हैं तो उस भवन के मुख्य द्वार से उनके प्रवेश करते ही उस भवन पर ध्वज फहराया जाना चाहिए तथा उनके द्वारा उस स्थान को छोड़ते ही ध्वज को उतार लेना चाहिए। तथापि गणतंत्र दिवस, स्वतंत्रता दिवस, महात्मा गांधी के जन्मदिवस, राष्ट्रीय सप्ताह (जलियांवाला बाग के शहीदों की स्मृति में 6 से 13 अप्रैल) भारत सरकार द्वारा विनिर्दिष्ट किसी विशेष हर्षोल्लास के दिन अथवा राज्य के मामलों में राज्यों के स्थापना दिवस की वर्षगांठ के अवसर पर सूर्योदय से सूर्यास्त तक इन सरकारी आवासों पर इस बात पर विचार किए बिना कि प्रतिष्ठित व्यक्ति मुख्यालय में मौजूद हैं अथवा नहीं, ध्वज फहराया जाना चाहिए।

3.42 जब राष्ट्रपति, उप राष्ट्रपति अथवा प्रधानमंत्री किसी संस्था का दौरा करते हैं तो उनके सम्मान के रूप में उस संस्था पर राष्ट्रीय ध्वज फहराया जाए।

3.43 किसी विदेशी प्रतिष्ठित व्यक्ति, अर्थात् राष्ट्रपति, उप राष्ट्रपति, सम्राट/राजा अथवा युवराज और प्रधानमंत्री द्वारा भारत के दौरे के अवसर पर ऐसे निजी संस्थानों द्वारा जो दौरे करने वाले विदेशी प्रतिष्ठित व्यक्तियों का स्वागत करते हैं और ऐसे सरकारी भवनों पर जिनका विदेशी प्रतिष्ठित व्यक्ति दौरा करते हैं, संस्थान में दौरे के दिन राष्ट्रीय ध्वज को संबंधित बाहरी देश के ध्वज के साथ धारा–सात में निहित नियमों के अनुसार फहराया जाएगा।

धारा–नौ

मोटर कार पर प्रदर्शन

3.44 मोटर कारों पर ध्वज फहराने का विशेषाधिकार निम्नलिखित तक सीमित है:–

(1) राष्ट्रपति

(2) उप राष्ट्रपति

(3) राज्यपालों व उप राज्यपालों

(4) बाहरी देशों में भारतीय मिशनों/चौकियों के प्रमुख जिन्हें प्राधिकृत किया गया है।

(5) प्रधानमंत्री तथा अन्य केन्द्रीय मंत्री।

संघ के राज्य मंत्रियों तथा उप मंत्रियों।

मुख्यमंत्री तथा राज्य या संघ शासित क्षेत्र के अन्य केबिनेट मंत्रियों।

राज्य तथा संघ शासित क्षेत्र के राज्य मंत्री एवं उप मंत्री।

(6) लोक सभा अध्यक्ष

राज्य सभा के उप सभापति

लोक सभा के उपाध्यक्ष

राज्य में विधान परिषद के अध्यक्ष

राज्यों तथा संघ शासित क्षेत्रों में विधान सभा अध्यक्ष राज्यों में विधान परिषद के उप सभापति

राज्यों तथा संघ शासित क्षेत्रों में विधान सभाओं के उपाध्यक्ष

(7) भारत के मुख्य न्यायाधीश

सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश

उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश

उच्च न्यायालय के न्यायाधीश

3.45 पैरा 3.44 के परन्तुक (5) से (7) में उल्लिखित प्रतिष्ठित व्यक्ति जब कभी भी आवश्यक अथवा उपयुक्त समझे तो अपनी कार पर राष्ट्रीय ध्वज फहरा सकते हैं। 3.46 जब विदेशी प्रतिष्ठित व्यक्ति सरकार द्वारा उपलब्ध कराई गई कार में यात्रा कर रहे हों तो कार के दांई ओर राष्ट्रीय ध्वज फहराया जाएगा तथा बाहरी देश का ध्वज कार के बांई ओर फहराया जाएगा।

धारा–दस

रेलगाड़ी/हवाई जहाज पर प्रदर्शन

3.47 जब राष्ट्रपति देश के भीतर ही विशेष रेलगाड़ी द्वारा यात्रा करते हैं तो जिस स्टेशन से रेलगाड़ी रवाना होती है उसके प्लेटफार्म की तरफ रुख करते हुए चालक के कैब से राष्ट्रीय ध्वज फहराया जाना चाहिए। ध्वज केवल तभी फहराना चाहिए जब विशेष रेलगाड़ी रुकी हुई हो अथवा उस स्टेशन पर आने पर जिसपर उसे रुकना है।

3.48 राष्ट्रपति, उप राष्ट्रपति अथवा प्रधानमंत्री के बाहरी देश के दौरे पर ले जाने वाले हवाई जहाज पर राष्ट्रीय ध्वज फहराया जाएगा। राष्ट्रीय ध्वज के साथ–साथ उस देश का ध्वज भी फहराया जाना चाहिए जिसका दौरा किया जा रहा है। परन्तु जब हवाई जहाज रास्ते में आने वाले देशों में उतरता है तो शिष्टाचार व सद्भावना स्वरूप उस ध्वज के स्थान पर उन देशों का राष्ट्रीय ध्वज फहराया जाएगा जिन देशों में वह उतरता है।

3.49 जब राष्ट्रपति भारत के भीतर ही दौरा करते हैं, तो राष्ट्रीय ध्वज उस ओर प्रदर्शित किया जाएगा जिस ओर से वे जहाज में चढ़ेंगे व उतरेंगे।

धारा–ग्यारह

राष्ट्रीय ध्वज को आधा झुकाना

3.50 निम्नलिखित प्रतिष्ठित व्यक्तियों के निधन पर प्रत्येक के समक्ष निर्दिष्ट स्थानों पर प्रतिष्ठित व्यक्ति की मृत्यु के दिन राष्ट्रीय ध्वज आधा झुका रहेगाः–

प्रतिष्ठित व्यक्ति	**स्थान**
राष्ट्रपति	सम्पूर्ण भारत में
उप राष्ट्रपति	
प्रधानमंत्री	
लोक सभा का अध्यक्ष	दिल्ली
भारत का मुख्य न्यायधीश	
संघीय केबिनेट मंत्री	दिल्ली तथा सभी राज्यों की राजधानी
संघीय राज्य मंत्री या उप मंत्री	दिल्ली
राज्यपाल	संबंधित सम्पूर्ण राज्य अथवा संघीय क्षेत्र
उप राज्यपाल	
राज्य के मुख्य मंत्री	
संघीय क्षेत्र के मुख्य मंत्री	
राज्य के केबिनेट मंत्री	संबंधित राज्य की राजधानी

3.51 यदि किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति की मृत्यु की सूचना दोपहर बाद प्राप्त होती है तो राष्ट्रीय ध्वज उपरोक्त निर्दिष्ट स्थान या स्थानों पर अगले दिन भी आधा झुका रहेगा बशर्ते कि उस दिन सूर्योदय से पूर्व अन्त्येष्टि न हुई हो।

3.52 उपरोक्त प्रतिष्ठित व्यक्तियों की अन्त्येष्टि के दिन, उस स्थान पर, जहां अन्त्येष्टि की जाएगी ध्वज

आधा झुका रहेगा।

3.53 यदि किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति के निधन पर राजकीय शोक मनाया जाना है तो संघ के प्रतिष्ठित व्यक्ति के मामले में शोक अवधि के दौरान सम्पूर्ण भारत में ध्वज आधा झुका रहेगा तथा राज्य या संघ राज्य क्षेत्र के प्रतिष्ठित व्यक्ति के मामले में संबंधित सम्पूर्ण राज्य या संघ राज्य क्षेत्रों में ध्वज आधा झुका रहेगा।

3.54 प्रतिष्ठित विदेशी व्यक्तियों की मृत्यु पर ध्वज को आधा झुकाना तथा आवश्यकतानुसार राजकीय शोक मनाया जाना विशेष निर्देशों के अधीन नियंत्रित होगा जो कि प्रत्येक मामले में गृह मंत्रालय द्वारा जारी किये जाएंगे।

3.55 उपरोक्त प्रावधानों के होते हुए भी यदि गणतंत्र दिवस, स्वतंत्रता दिवस, महात्मा गांधी के जन्म दिन, राष्ट्रीय सप्ताह (जलियाँ वाले बाग के शहीदों की स्मृति में 6 से 13 अप्रैल), भारत सरकार द्वारा विशेष रूप से उल्लिखित राष्ट्रीय हर्ष मनाने का कोई विशिष्ट दिवस या राज्य के मामले में उस राज्य की वर्षगांठ का दिन आधा ध्वज झुकाने के दिन पड़ जाता है तो केवल उस भवन को छोड़कर जहां मृतक का शव रखा गया है, ध्वज को आधा झुकाकर नहीं फहराया जाएगा। शव के हटाए जाने के उपरांत वहां ध्वज को पूर्ण अवस्था में लाकर फहराया जाएगा।

3.56 यदि ध्वज के साथ किसी परेड या जुलूस में शोक मनाया जाना हो तो ध्वज के भाले की नोक के साथ काले क्रेप की दो पताकायें इस प्रकार लगी होंगे कि पताकाएं स्वाभाविक रूप से नीचे झुकी रहें। काले क्रेप का इस ढंग से प्रयोग केवल सरकारी आदेश द्वारा ही किया जाएगा।

3.57 जब ध्वज आधा झुका हुआ फहराया जाना हो तो तब एक क्षण के लिए ध्वज को शीर्ष तक फहराया जाएगा फिर उसे झुकी हुई अवस्था में नीचे लाया जाएगा। परंतु उस दिन ध्वज को नीचे लाए जाने से पूर्व उसे पुनः शीर्ष तक ले जाया जाएगा।

नोट :– झुके हुए ध्वज से अभिप्राय ध्वज को शीर्ष तथा ध्वज की रस्सी के मध्य आधी दूरी तक खींचने से है तथा ध्वज की रस्सी की अनुपस्थिति में ध्वजदंड के अर्धभाग से है।

3.58 राजकीय/सैन्य/केन्द्रीय अर्ध सैनिक बलों की अंत्येष्टि क्रियाओं के अवसर पर ध्वज अर्थी या ताबुत पर लपेटा जाएगा जिसमें केसरिया भाग अर्थी/ताबुत के शीर्ष (ऊपर) की तरफ होगा। ध्वज न तो ताबुत के साथ कब्र में उतारा जाएगा और न ही चिता के साथ जलाया जाएगा।

3.59 किसी विदेशी सरकार के राष्ट्राध्यक्ष अथवा शासनाध्यक्ष की मृत्यु पर उस देश के साथ अधिकृत भारतीय मिशन राष्ट्रीय ध्वज को आधा झुकाकर फहरा सकता है चाहे वह घटना गणतंत्र दिवस, स्वतंत्रता दिवस, महात्मा गांधी का जन्म दिन, राष्ट्रीय सप्ताह (जलियां वाला बाग के स्मृति में 6 से 13 अप्रैल), या भारत सरकार द्वारा विनिर्दिष्ट राष्ट्रीय हर्ष का कोई अन्य विशेष दिवस के दिन ही क्यों ना घटित हुई हो। उसी देश के अन्य किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति के निधन पर मिशनों द्वारा राष्ट्र ध्वज आधा झुकाकर नहीं फहराया जाना चाहिए जब तक स्थानीय प्रथा या राजनयिक आचार संहिता (जो आवश्यकतानुसार, राजनयिक निकाय के अध्यक्ष से सुनिश्चित होनी चाहिए) के अंतर्गत यह आवश्यक न हो कि उस देश में विदेशी मिशन राष्ट्र ध्वज भी आधा झुका हुआ फहराया जाना चाहिए।

अध्याय XI

5.56 एमएम इन्सास राईफल के साथ

उद्देश्य :

इस पीरियड में शस्त्र कवायद का एक और सबक जिसमें काम होगा बाजू शस्त्र से सलामी शस्त्र और सलामी शस्त्र से बाजू शस्त्र। सबसे पहले है बाजू शस्त्र से सलामी शस्त्र। इसी कार्रवाई का दुरुस्त नमूना देखें।

दुरुस्त नमूना :

मेरे लिए वर्ड ऑफ कमाण्ड शस्त्र कवायद सलामी शस्त्र एक–दो–तीन–एक, दो–तीन–एक, दो–तीन–एक। जैसे थे। इसी कार्रवाई को गिनती से देखें।

गिनती से नमूना :

मेरे लिए वर्ड ऑफ कमाण्ड गिनती से शस्त्र कवायद सलामी शस्त्र एक–एक, स्क्वाड दो–दो, स्क्वाड तीन–तीन, स्क्वाड चार–चार। जैसे थे। इसी कार्रवाई को गिनती और बयान के साथ देखें और सुनें।

गिनती और बयान से नमूनाः

बाजू शस्त्र से वर्ड ऑफ कमाण्ड मिलता है गिनती से शस्त्र कवायद सलामी शस्त्र एक तो बाएं हाथ से फोरहैड गार्ड को पकडें, शाउटिंग करें एक। यहां तक के मूवमेंट को देखें।

मेरे लिए वर्ड ऑफ कमाण्ड गिनती से शस्त्र कवायद सलामी शस्त्र एक–एक। इस पोजीशन में देखने की बातें, बाएं हाथ से फोरहैड गार्ड को पकड़ा हुआ, चारों अंगुलियां बाहर से अंगूठा अंदर से, बाएं हाथ कोहनी से कलाई तक कमर बैल्ट लाइन में, बाकी पोजीशन पहले की तरह। जैसे थे। इसी कार्रवाई का अभ्यास मेरे वर्ड ऑफ कमाण्ड से गिनती से करेंगे।

अभ्यास :

उस्ताद के वर्ड ऑफ कमाण्ड से गिनती से नम्बर 1 स्टेज का अभ्यास करें।

उस्ताद वर्ड ऑफ कमाण्ड बातें स्क्वाड खुशी से पहली हरकत का अभ्यास करें।

नमूना :

उस्ताद नम्बर 1 पोजीशन में राइफल लाएं। वर्ड ऑफ कमाण्ड मिलता है स्क्वाड दो तो दाहिने हाथ के बट् स्ट्राइक करें, शाउटिंग करें दो। यहां तक के मूवमेंट को देखें। स्क्वाड दो–दो। इस पोजीशन में देखने की बातें, दाहिना हाथ स्माल ऑफ द बट् पर, चारों अंगुलियां बाहर से अंगूठा अन्दर से जमीन को पाइंट करते हुए। जैसे थे। इसी कार्रवाई का अभ्यास मेरे वर्ड ऑफ कमाण्ड से गिनती से करेंगे।

अभ्यास :

उस्ताद के वर्ड ऑफ कमाण्ड से गिनती से नम्बर 2 स्टेज का अभ्यास करें।

उस्ताद वर्ड ऑफ कमाण्ड बातें स्क्वाड खुशी से दूसरी हरकत का अभ्यास करें।

नमूना :

उस्ताद नम्बर 2 पोजीशन में राइफल लाएं। वर्ड ऑफ कमाण्ड मिलता है स्क्वाड तीन तो दोनों हाथों की मद्द से राइफल को बदन के सामने और बीच में लाएं, साथ ही बाएं हाथ को छोड़ कर राइफल के बाएं बगल में लगाएं, शाउटिंग करें दो। यहाँ तक के मूवमेंट को देखें। स्क्वाड तीन–तीन। इस पोजीशन में देखने की बातें, राइफल बदन के सामने और बीच में, 90 डिग्री पर खड़ी मैगजीन मंच के सामने कोहनी से कलाई तक बाएं हाथ राइफल से मिला हुआ, चारों अंगुलियां और अंगूठा मिला हुआ और अंगूठा फोरहैड गार्ड के निचले किनारे पर टच करता हुआ, दाहिने हाथ से स्माल ऑफ द बट् को पकड़ा हुआ, चारों अंगुलियां बाहर से और अंगूठा अन्दर से बाकी पोजीशन सावधान। जैसे थे। इसी

कार्रवाई का अभ्यास मेरे वर्ड ऑफ कमाण्ड से करेंगे।

अभ्यास :

उस्ताद के वर्ड ऑफ कमाण्ड से गिनती से नम्बर 3 स्टेज का अभ्यास करें।

उस्ताद वर्ड ऑफ कमाण्ड बातें स्क्वाड खुशी से तीसरी हरकत का अभ्यास करें।

नमूना :

उस्ताद नम्बर 3 पोजीशन में राइफल ले जाएं। वर्ड ऑफ कमाण्ड मिलता है स्क्वाड चार तो दाहिने हाथ से राइफल को नीचे करें, बाएं हाथ से राइफल को सामने से फोरहैड गार्ड को पकड़ें साथ ही दाहिने पांव को बाएं पांव के साथ चलती हालत में उठा कर लगाएं, शाउटिंग करें चार। यहां तक के मूवमेंट को देखें। स्क्वाड चार–चार। इस पोजीशन में देखने की बातें, बाएं हाथ फोरहैड गार्ड पर अंगूठा बैरल को पाइंट करता हुआ, दाहिना हाथ स्माल ऑफ द बट् पर, चारों अंगुलियां बाहर से अंगूठा अन्दर से, दाहिना पांव बाएं पांव के साथ चलती हालत में। जैसे थे। इसी कार्रवाई का अभ्यास स्क्वाड मेरे वर्ड ऑफ कमाण्ड पर करेंगे।

अभ्यास :

उस्ताद के वर्ड ऑफ कमाण्ड से स्क्वाड गिनती से अभ्यास करें।

उस्ताद वर्ड ऑफ कमाण्ड बातें स्क्वाड खुशी से अभ्यास करें।

उस्ताद के वर्ड ऑफ कमाण्ड से स्क्वाड समय पुकारते हुए अभ्यास करें।

उस्ताद के वर्ड ऑफ कमाण्ड से स्क्वाड समय के अंदाज़े से अभ्यास करें।

भाग दो : सलामी शस्त्र से बाजू शस्त्र

उद्देश्य :

अभी है सलामी शस्त्र से बाजू शस्त्र।

जरुरत :

सलामी देने के बाद राइफल को नीचे लाने के लिए बाजू शस्त्र की कार्रवाई की जाती है। इसी कार्रवाई का दुरुस्त नमूना देखें।

दुरुस्त नमूना :

मेरे लिए वर्ड ऑफ कमाण्ड बाजू शस्त्र एक, दो–तीन–एक, दो–तीन–एक। जैसे थे। इसी कार्रवाई को गिनती से देखें।

गिनती से नमूना :

मेरे लिए वर्ड ऑफ कमाण्ड गिनती से शस्त्र कवायद बाजू शस्त्र एक–एक, स्क्वाड दो–दो, स्क्वाड तीन–तीन। जैसे थे। इसी कार्रवाई को गिनती और बयान के साथ देखें और सुनें।

गिनती और बयान से नमूनाः

जब सलामी शस्त्र से वर्ड ऑफ कमाण्ड मिलता है बाजू शस्त्र एक तो दाहिने हाथ को पिस्तौल ग्रिप पर ले जाएं, साथ ही दाहिने पांव को बाएं पांव के साथ सावधान हालत में उठा कर मिलाएं, शाउटिंग करें एक। यहां तक के मूवमेंट को देखें।

मेरे लिए वर्ड ऑफ कमाण्ड निगती से शस्त्र कवायद बाजू शस्त्र एक–एक। इस पोजीशन में देखने की बातें, दाहिने हाथ से पिस्तौल ग्रिप को पकड़ा हुआ, चारों अंगुलियां नीचे से और अंगूठा ऊपर से, दाहिना पांव सावधान हालत में, बाकी पोजीशन पहले की तरह। वर्ड ऑफ कमाण्ड मिलता है स्क्वाड दो तो दोनों हाथों से राइफल को दाहिने बगल में ले जाएं, शाउटिंग करें दो। यहां तक के मूवमेंट को देखें। स्क्वाड दो–दो। इस पोजीशन में देखने की बातें, बाएं हाथ कोहनी से कलाई तक बैल्ट के मुठबाजी और फोरहैड गार्ड को चारों अंगुलियां बाहर से अंगूठा अन्दर से पकड़ा हुआ, राइफल दाहिने बगल में, दाहिने हाथ की पकड़ पिस्तोल ग्रिप पर। वर्ड ऑफ कमाण्ड मिलता है स्क्वाड तीन तो बाएं हाथ को सावधान पोजीशन में लाएं, शाउटिंग करें तीन। यहां तक के मूवमेंट को देखें। स्क्वाड तीन–तीन। इस पोजीशन में देखने की बातें, राइफल दाहिने बगल में 90 डिग्री पर, दाहिने हाथ से पिस्तौल

ग्रिप को पकड़ा हुआ, पोजीशन बाजू शस्त्र या दुरुस्त सावधान। जैसे थे। इसी कार्रवाई का अभ्यास स्क्वाड मेरे वर्ड ऑफ कमाण्ड से करेंगे।

अभ्यास :

उस्ताद के वर्ड ऑफ कमाण्ड के स्क्वाड गिनती से अभ्यास करें।

उस्ताद वर्ड ऑफ कमाण्ड बातें स्क्वाड खुशी से अभ्यास करें।

उस्ताद के वर्ड ऑफ कमाण्ड से स्क्वाड समय पुकारते हुए अभ्यास करें।

उस्ताद के वर्ड ऑफ कमाण्ड से स्क्वाड समय के अंदाजे से अभ्यास करें।

नोट :– 5.56 एमएम इनसास राइफल अपने आकार और वजन की वजह से 7.62 एम.एम. एस.एल.आर. की ड्रिल से कुछ भिन्न हैं। इसके साथ ड्रिल की हैंडलिंग इस तरह से की जाएगी।

(क) 5.56 एम.एम. इनसास राइफल हमेशा 7.62 एम.एम. एस.एल.आर. के बगल शस्त्र की तरह दाहिने बगल में रहेगी। इसे बाजू शस्त्र पोजीशन कहा जाएगा।

(ख) 5.56 एमएम इनसास राइफल के साथ सावधान और विश्राम बाजू शस्त्र हालत से ही किया जाएगा। आराम से के वर्ड ऑफ कमाण्ड पर राइफल बदन के आगे बाएं हाथ में फोरहैड गार्ड से पकड़ा जाएगा, परेड, स्क्वाड या जैसे थे के वर्ड ऑफ कमाण्ड पर राइफल वापिस बाजू शस्त्र पोजीशन में आएगी।

(ग) 7.62 एमएम एस.एल.आर. की तरह बगल शस्त्र और बाजू शस्त्र की कोई कार्रवाई नहीं की जाएगी।

(घ) अगर एक ही परेड में 7.62 एमएम एस.एल. आर. और 5.56 एमएम इनसास राइफल परेड में शामिल हों तो सलामी शस्त्र के वर्ड ऑफ कमाण्ड पर एस.एल.आर. ट्रुप्स, 5.56 एमएम इनसास राइफल के सलामी शस्त्र के चार मूवमेंट के साथ ड्रिल मिलाने के लिए नम्बर दो मूवमेंट पर रुकेंगे। एस.एल.आर. ट्रुप्स का नम्बर दो और नम्बर तीन मूवमेंट, 5.56 एमएम इनसास राइफल के नम्बर तीन और चार मूवमेंट के साथ होंगे।

अध्याय XII

स्क्वाड–कवायद–थम की हालत में

खंड–1

फासला रखकर स्क्वाड बनाना

एक लाइन में एक हाथ की दूरी पर कुछ जवानों को खड़ा किया जाता है। इस प्रकार खड़े होने पर स्क्वाड को, फासले पर खड़ा स्क्वाड कहा जाता है।

एक लाइन में खड़े स्क्वाड को अच्छी तरह हिदायत दी जा सकती है। किन्तु स्थान की कमी हो तो स्क्वाड को दो लाइनों में खड़ा किया जा सकता है। ऐसा होने पर पिछली लाइन के जवान पहली लाइन में खड़े जवानों के बीच के फासले में खड़े होंगे जिससे मार्चिंग करते समय के अध्याय iv के खंड–2 में निर्दिष्ट स्थान पर खड़े हो सकें।

जब रंगरूट खंड–5 में दिये अनुसार सजना सीख जाएं तो उन्हें बिना किसी अगले आदेश के लाईन में खड़ा होना, जल्दी से सीधी पंक्ति बनाना तथा फासला ठीक करना सिखाया जाएगा।

स्क्वाड में किसी भी पोजीशन पर खड़े रहने पर किस प्रकार सजा जाता है यह सीखने के लिये रंगरूट के खड़े रहने का स्थान बदलते रहना चाहिये।

खंड–2

सावधान

"स्क्वाड सावधान"

निम्नलिखित स्थिति में आएं : दोनों एडियां मिली हुई तथा सिधाई में हों। पैर आगे से 30^0 के कोण पर हों और घुटने सीधे हों शरीर तना हुआ हो तथा शरीर में जांघों के ऊपर सिधाई हो (कंधे सीधे और सामने से बराबर हों) कंधे नीचे की ओर तथा मामूली से पीछे की ओर हों, जिससे छाती सामान्यतः उठी हुई रहे तथा इसके लिये विशेष जोर न लगाना पड़े तथा छाती कड़ी न करनी पड़े। बाहें कंधों से इस प्रकार सिधाई पर लटकी हों जितना बाहों को प्राकृतिक रूप से मोड़ सकने के लिए जरूरी हो। हाथ की कलाइयां सीधी हों, मुट्ठी बंद हो तथा थोड़ी सी कसी हुई हों। अंगुलियों का पिछला हिस्सा जांघों की कुछ छूता हुआ हो। अंगूठा सामने की तरफ और तर्जनी के पास हो और दोनों अंगूठे पैन्टों या निकरों की सिलाई के साथ लगे हों। गर्दन सीधी हो। सिर गर्दन पर बीचों बीच हो आगे की ओर निकला हुआ न हो, आंखें अपनी ऊंचाई की सीध में ठीक सामने देख रही हों।

शरीर का भाग दोनों पैरों पर बराबर–बराबर होना चाहिये तथा यह पैरों के अगले भाग और एड़ियों पर भी बराबर–बराबर हो।

सांस की गति सामान्य हो तथा न शरीर का कोई भाग अंदर की ओर सिकोड़ा हुआ हो और न ही बाहर की ओर निकाला हुआ हो।

इस स्थिति में जवान तैयार होता है, कमान–शब्द कहे जा सकते हैं और जब किसी वरिष्ठ अधिकारी से बात करनी हो या अधिकारी उसे संबोधित कर रहा हो तो जवानों को तब भी इस स्थिति में रहना होता है।

सामान्य गलतियां

(i) शरीर का तना होना और ऐसी कृत्रिम स्थिति में होना जिसमें सांस लेने में रुकावट पैदा हो;

(ii) आँखों का अस्थिर होना और हिलना;

(iii) पैर और शरीर सामने सिधाई पर न होना, एडियों का न मिलना; एक पैर आगे और दूसरा पीछे होना;

(iv) बाहें कुछ झुकी हुई और आगे को निकली हुई होना;

(v) हाथों का पिछला हिस्सा आगे होना जिससे, स्कंधास्थि (शोल्डर ब्लेड) अधिक खिंची हुई और छाती सिकुड़ी हुई हो।

खंड–3

विश्राम की स्थिति में खड़े होना

विश्राम

बांया पैर करीब–करीब 12 इंच बाएं को ले जाएं जिससे शरीर का बोझ दोनों पैरों पर बराबर रहे। इसी समय दोनों हाथ पीछे ले जाओ और दाहिने हाथ का पिछला भाग बांये हाथ की हथेली पर रखो तथा अंगुलियां तथा अंगूठे से हल्के से पकड़ी तथा बाजुओं को पूरा सीधा होने दो।

जब रंगरूट लाइन में खड़ा हो तब सीध में खड़े होने के बाद विश्राम की स्थिति में खड़ा होगा।

सामान्य गलतियां

(i) पैर को 12 इंच ऊपर न ले जाना;

(ii) दाहिने पैर को हिलाना तथा सीध में न आना;

(iii) पैर ऊपर उठाते समय कमर झुकाना।

खंड–4

आराम से खड़े होना

आराम से

जवान अंग, सिर तथा शरीर की हरकत कर सकता है लेकिन वह पैर नहीं हिलाएगा जिससे सावधान की स्थिति में आने पर सीध बनी रहे। किसी भी झुकी हुई मुद्रा में खड़े होने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिये। यदि जवान का दोनों में से कोई भी पैर हिलेगा तो, लाइन सीधी नहीं रहेगी।

''स्क्वाड'' आदि का संकेत मिलने पर स्क्वाड विश्राम की स्थिति में आ जाएगा।

सामान्य गलतियां

(i) पैर हिलाना जिससे सीध बिगड़ जाती है।

(ii) झुकना और बातचीत करना।

स्क्वाड का निर्धारित फासले से सजना :

एक लाइन में सजना दाहिने/बाएं सजना

जिस दिशा में सजने का आदेश दिया गया हो उसमें एक छोटा तेज कदम (15 इंच) आगे बढ़ेंगे, उस स्थिति में थोड़ी देर रुकेंगे और इसके बाद अपना सिर तथा आँख उस दिशा में दाहिनी या बांयी ओर करेंगे जिस दिशा में सजने का आदेश दिया गया हो तथा अपनी दाहिनी बाजू सीधी फैलाएंगे (सिर्फ सामने की लाइन के जवान) यदि रायफल हाथ में हो तो बांया हाथ बांयी दिशा की ओर फैलाएंगे, मुट्ठी बन्द होगी तथा अपनी दाहिनी ओर खड़े जवान के कंधे को स्पर्श करेगी तथा बाद में छोटे–छोटे कदमों से जवान सीध में खड़े हो जाएंगे तथा तब तक सीध में आते रहेंगे जब तक उन्हें अपने से दूसरे नंबर पर खड़े जवान के चेहरे का निचला भाग दिखाई न देने लगे। पैरों के हरकत द्वारा ही शरीर को आगे या पीछे ले जाना चाहिए। कंधे खींचे हुए हों और अपनी वास्तविक स्थिति में हों, जब स्क्वाड भली भांति सज जाए तब प्रशिक्षक निम्नलिखित कमान देगाः–

''सामने देख''

आदेश प्राप्त होते ही सिर तथा आँखों को एक ही झटके से फुर्ती से सामने किया जाएगा तथा हाथों को नीचे लाया जाएगा और जवान सावधान की स्थिति में आ जाएंगे।

सामान्य गलतियां

(i) दोनों पैर एक साथ जमीन से ऊपर उठा कर आगे की ओर उछलना।

(ii) पैर और कंधे सामने की तरफ सीधे न रखना। सीध में खड़े होते समय आगे झुकना।

(iii) पैर हिलाते समय कमर का झुकना।

(iv) गलत दूरी, फासला ठीक न रखना और सीध में न होना।

खंड–5

गिनती से मुड़ना और आधा मुड़ना

(1) गिनती से दाहिने मुड़ना–दाहिने मुड़–एक–

उक्त आदेश प्राप्त होने पर दोनों घुटनों को सीधा और शरीर को तानकर दाहिनी एड़ी पर दाहिने पंजे तथा बाएं पंजे पर बांयी एड़ी को उठाते हुए 90

अंश पर दाहिने मुड़ो।

यह आरंभिक हरकत पूरी होने के बाद दाहिना पैर जमीन पर बराबर हो तथा बांयी एड़ी उठी हुई हो तथा ऐसा करते हुए दोनों घुटने सीधे हों। शरीर का वजन दाहिने पैर पर हो तथा शरीर तना हुआ हो।

दो–बाएं पैर को चुस्ती से पूरी तरह जमीन से ऊपर उठा कर दाहिने पैर पर लाया जाए।

(2) गिनती से बाएं मुड़ना–दाहिने मुड़ एक– दो– दांया पैर फुर्ती से बाएं पैर के पास लाएं

उक्त हरकत के लिये दाहिने के स्थान पर बांया कहा जाए और शेष आदेश उपर्युक्त से विपरीत क्रम में दिए जाएं।

(3) गिनती से आधा मुड़ना–आधा दाहिने मुड़–एक

इस आदेश पर उसी प्रकार हरकत की जाती है जैसे दाहिने मुड़ का हुक्म मिलने पर की जाती है। केवल 90 अंश मुड़ने के बजाय 45 अंश पर मुड़ा जाता है।

''स्क्वाड दो'' ऊपर दिये अनुसार।

टिप्पणी : सजने और कवर करने के विभिन्न पहलू तत्काल बताये जाएं। प्रत्येक जवान का दाहिना कंधा अगले जवान की पीठ के मध्य में रहे और मध्य और पिछली लाइन के व्यक्तियों का बांया कंधा मूलतः कवर किये गये जवान की पीठ के मध्य में होना चाहिये।

(4) गिनती से पीछे मुड़ना

स्क्वाड पीछे मुड़ – एक

ऐसा आदेश मिलने पर दोनों घुटनों को सीधा रखते हुए शरीर तानकर पूरी तरह अपने दाहिने 180 अंश पर दाहिनी एड़ी तथा बाएं पंजे पर घूमकर तथा दाहिने पंजे तथा बांयी एड़ी को ऊपर उठाया जाए लेकिन दाहिनी एड़ी जमीन पर मजबूती से जमा ली जाए। यह हरकत पूरी होने पर दाहिना पैर जमीन पर रखा जाए, बांयी एड़ी ऊपर उठाई जाए, दोनों घुटने सीधे रखे जाएं और शरीर (जो तना हुआ हो) का वज़न दाहिने पैर पर हो। मुड़ने की पहली हरकत के दौरान दोनों हाथ शरीर से लगे होने चाहिये तथा हाथ न हिलें।

टिप्पणी :

(i) पैंट की प्रत्येक हाथ के अंगूठे और तर्जनी से सिलाई वाली जगह को हल्के से पकड़ने पर बहुत सहायता मिलती है, ऐसा करने पर हाथ इधर उधर तब नहीं हिलेंगे जब रक्वाड इस कवायद का पर्याप्त अभ्यास कर लें तब पैंट को अंगूठों तर्जनियों से पकड़ने की परिपाटी समाप्त कर दी जाए।

(ii) यह कवायद पूरी होने के बाद दोनों जांघों को परस्पर मिलाये रखने में भी इससे सहायता मिलेगी क्योंकि इससे शरीर को संतुलित रखने में सहायता मिलेगी।

''स्क्वाड दो''

बाएं पैर को जमीन से पूरी तरह ऊपर उठा कर चुस्ती से दाहिने पैर तक लाया जाए।

सभी स्थितियों से मुड़ने के समय हथियार बाजू (साइड) में रखे जाने चाहिये जैसे सावधान की स्थिति में किया जाता है। मुड़ते समय ''समय का ध्यान रखते हुए'' आदेश ''दाहिने'' या बाएं, या पीछे मुड़ आधा दाहिने (या बाएं) मुड़ के लिये होते हैं। ऊपर वर्णित हरकतें मुड़ या आधे मुड का आदेश प्राप्त हाने पर की जाएं तथा ये दोनों गतियाँ स्पष्ट तौर पर अलग–अलग की जाएं।

सामान्य गलतियां

(i) शरीर का वज़न पिछले पैर पर डालना, अगले पैर की एड़ी को सामान्य ढंग से घुमाने की बजाय जमीन पर घुमाना।

(ii) पिछले पैर को आगे लाते समय हाथ हिलाना।

(iii) पैर लाते समय कमर झुकाना।

(iv) शरीर और कंधे की पहली हरकत में न रखकर सीधे मुड़ना।

मार्च करना

अध्याय XIII

मार्च करना

खंड–1

कदमों के बीच फासला और मार्च करने की गति –

धीरे और तेज चाल में दो कदमों के बीच 30 इंच का फासला होता है। लम्बे कदम में 33 इंच का फासला होता है। दौड़ चाल में कदमों का फासला 40 इंच और छोटे कदम में 21 इंच तथा बगली कदम में 12 इंच का फासला होता है।

धीरे चाल में एक मिनट में 70 कदम चलना होता है और तेज चाल में 120 कदम चला जाता है। यह 100 गज के बराबर होता है।

किन्तु रंगरूटों के प्रशिक्षण के प्रारंभिक कुछ सप्ताहों में रंगरूट मार्चिंग आदेश प्राप्त होने पर तेज चाल में एक मिनट में 130 कदम चलता है।

दौड़ चाल में एक मिनट में 180 कदम चलेगा जो 200 गज के बराबर होता है।

बगली चाल में चलने का समय तेज चाल के समय के समान होता है।

रंगरूट या रंगरूटों के स्क्वाड़ को जब तक कि जरूरी न हो ड्रम और पेस स्टिक के लगातार प्रयोग के बिना मार्चिंग सिखाई जाए। जिस समय जवान थम की पोजीशन में हो उस समय पहले ड्रम जवानों की चलने की रफ्तार के अनुसार बजाया जाएगा तथा इसी प्रकार से जवानों के चलने की कार्रवाई के साथ–साथ ड्रम बजाया जायेगा। जब जवानों के खड़े होने पर ड्रम बजना बंद हो जाएगा तो प्रशिक्षक स्क्वाड़ कार्यवाई करने का आदेश देगा।

मार्च करते समय कदमों के फासले की जांच पेस स्टिक से की जाएगी और फासले को ठीक किया जाएगा। यह जांच समय–समय पर की जाएगी।

कवायद के मैदान में 100 और 200 गज के फासले पर निशान लगाये जाएंगे तथा जवानों को समय के अनुसार सही कदम लेने का अभ्यास करवाया जाएगा।

खंड–2

मार्चिंग के समय जवानों की स्थिति –

मार्च करते समय रंगरूट अपने सिर तथा शरीर को अध्याय–III के खंड–2 में बताये अनुसार रखेगा। रंगरूट को अपने शरीर का संतुलन रखना होगा। धीरे चाल में उसके हाथ और बाजू शरीर के दोनों ओर स्थिर रहना चाहिये। तेज चाल में बाजुओं को अपनी स्वाभाविक स्थिति में रखा जाए और दोनों बाजू कंधे से पूरे स्वाभाविक रूप से आगे पीछे हिलाएं, बाजुओं को कमर पेटी (बेल्ट) के अगले तथा पिछले हिस्से की सीध तक उठाया जाए मुट्ठियां बंद होनी चाहिए और अंगूठे को हमेशा सामने रखना चाहिए।

रंगरूट को कवायद सिखाते समय हाथों को पूरी तरह आगे पीछे हिलाने का प्रशिक्षण देते समय शुरू–शुरू में कठनाई महसूस हो सकती है। इसलिये यह महत्वपूर्ण है कि रंगरूटों को मार्चिंग के समय हाथों को पूरी ऊंचाई तक उठाने पर कम जोर देना चाहिये। ज्यों ज्यों शिक्षण आगे बढ़े हाथों को ठीक प्रकार से हिलाने पर जोर दिया जाए तथा हाथ कमर पेटी के सामने वाले तथा पिछले हिस्से की सीध तक ले जाने के लिये कहा जाए।

यह समझ में आ जाएगा कि यदि हाथों को पिछली ओर पूरी तरह सही ढंग से हिलाने पर बल दिया जाए तो अगली ओर हाथ ले जाने का कार्य अपने आप सही ढंग से आ जाता है।

टांगों को स्वाभाविक रूप से कूल्हों के जोड़ से आगे की ओर लाना चाहिए। जैसे ही टांग आगे की ओर आए उसे रखने के पहले घुटने के पास पर्याप्त रूप से मोड़े जिससे पैर जमीन से ऊपर उठ सके। पैर को पीछे ले जाये बिना सीधा आगे लाया जाए तथा घुटने के साथ सीधे जमीन पर रखा जाए। लेकिन ऐसा करते समय शरीर को झटका नहीं लगना चाहिए।

किसी जवान द्वारा पंजों को बाहर या भीतर या दोनों तरफ किये जाने पर उसे रोका जाए।

यद्यपि बहुत से रंगरूटों को एक स्क्वाड से रुक–रुक कर कवायद करवाई जाती है किन्तु उन्हें स्वतंत्र रूप से और निश्चित रूप से इस प्रकार हरकत करनी चाहिये कि जैसे उन्हें एक इकाई के रूप में सिखाया जा रहा हो। इस प्रकार रंगरूट फासले और समय को ध्यान में रखते हुए तथा स्क्वाड के दूसरे जवान की ओर ध्यान न देकर सजते हुए मार्च करना और सही कदम उठाना सीख जाएंगे।

स्क्वाड को चलाने से पहले स्क्वाड का प्रशिक्षक यह मान कर चलेगा कि स्क्वाड का प्रत्येक जवान सही और दूसरों से सजता हुआ खड़ा है। रंगरूट को यह सिखाया जाएगा कि वह चलने से पहले अपनी सीध में कोई निशान चुन ले और अपनी आंखों को उस निशान पर रखे जिससे मार्चिंग ठीक प्रकार से हो सके।

खंड–3

तेज चाल और धीरे चाल में चलना

1. धीरे चाल

मार्चिंग के समय रंगरूट से तेज चाल चलने की अपेक्षा करने से पहले धीरे चाल सिखाने के लिये ''धीरे चाल'' का प्रयोग किया जाता है। यह चाल ''कदमों का संतुलन'' रखते हुए सिखाई जाती है।

धीरे चल – गिनती से – एक

यह आदेश प्राप्त होने पर बाएं पैर को तेजी से 15 इंच आगे ले जाया जाए, पंजा थोड़ा सा मुड़ा हुआ जमीन को छुए बिना जमीन की ओर झुका हुआ हो। शरीर के ऊपरी भाग तना हुआ हो। दोनों हाथ बगल में सीधे हों तथा शरीर का वजन दाहिने पैर पर हो।

स्क्वाड–दो

यह आदेश मिलने पर 30 इंच का फासला पूरा करो। पहले पंजा जमीन को छूए इसके बाद शरीर का भार बाएं पैर पर डाल दो तथा इसके साथ–साथ दाहिनी टांग पीछे की ओर थोड़ी सी झुकी हो जिससे पंजा जमीन से ऊपर उठाया जा सके।

स्क्वाड–आगे बढ़

इस आदेश पर बाएं पैर से सीखे हुए तरीके के अनुसार दाहिने पैर से कवायद की जाए और टांग को आराम से आगे की ओर बढ़ाया जाए। यह हरकत तब तक जारी रखी जाए जब तक स्क्वाड अपना संतुलन न बना ले तथा आगे बढ़ के स्थान पर थम जा आदेश न मिल जाए।

रंगरूट को प्रशिक्षण देते समय स्क्वाड कवायद का केवल ''धीरे चाल'' में बार–बार अभ्यास करवाना चाहिये। इसके लिये ''धीरे चल'' कमान शब्द का प्रयोग किया जाए। यह आदेश प्राप्त होने पर जवान अपने कदम बढ़ाएंगे और उसी प्रकार से कार्रवाई करेंगे जैसे तेज चाल में की जाती है लेकिन वे धीरे चाल में आएंगे और दोनों बाजू और हाथ दोनों साइडों में स्थिर रखेंगे तथा अंगूठा सामने होगा प्रत्येक टाँग को एक समान गति से आगे लाया जाएगा तथा जैसे ही टाँग आगे आएगी टाँग को सीधा रखा जाएगा, पंजा जमीन की ओर झुका हुआ होगा तथा इसे एड़ी से पहले जमीन पर रखा जाएगा।

पुलिस के जवान को और विशेष रूप से रंगरूट को धीरे चाल में सही तरीके से कवायद का प्रशिक्षण देने में महत्व पर जितना बल दिया जाए उतना ही कम है क्योंकि इससे जवान में सही कवायद की नींव पड़ती है तथा इससे कवायद में ऐसी आधारभूत गलतियाँ और चूकें नहीं रह पाती हैं जो तेज चाल के दौरान पकड़ में नहीं आती हैं। इससे न केवल ठीक कवायद की नींव डलती है बल्कि पुलिस का जवान धीरे चाल कवायद से अपने शरीर का संतुलन रखना और शरीर का नियंत्रण रखना सीखता है। इससे सही व्यक्तित्व और चाल ढाल विकसित करने में भी सहायता मिलती है। रंगरूट का तब तक तेज चाल से कवायद करने की अनुमति नहीं होनी चाहिये जब तक वह धीरे चाल की सभी हरकतों को पूर्णतया सही ढंग से न सीख ले। तभी प्रशिक्षक यह सुनिश्चित कर सकता है कि वह मजबूत नींव पर इमारत बना रहा है।

समय का अनुमान रखते हुए धीरे चल

स्क्वाड आगे बढ़ेगा दाहिने से धीरे चल

यह आदेश प्राप्त होने पर बाएं पैर को झटके से 15 इंच आगे की ओर करो तथा बीच में थोड़ा समय देकर 30 इंच का कदम पूरा करो और जमीन का छुओ। जैसे ही बांया पैर जमीन को छुए दाहिने पैर को झटके से 15 इंच आगे करो। दाहिने या बाएं पैर को 15 इंच आगे ले जाने के बाद अपेक्षित क्षणों तक रुक कर इन हरकतों को बारी–बारी से करो।

थम :– गिनती से धीरे चाल का अभ्यास करते समय ''थम'' आदेश स्क्वाड दो की हरकत पूरी होने के बाद दिया जाए अर्थात् स्क्वाड एक के स्थान पर ''स्क्वाड–थम'' आदेश दिया जाए।

समय का अनुमान रखते हुए ''धीरे चाल'' के अभ्यास के दौरान जब बायां पैर जमीन की ओर दाहिने पैर के स्तर (लेवल) पर आ गया हो तब ''स्क्वाड थम'' का आदेश दिया जाए। यह आदेश प्राप्त होने पर उचित समय का विश्राम देकर बाएं पैर से 30 इंच लम्बा कदम भरें तथा जैसे ही बांया पैर जमीन को स्पर्श करे दाहिने पैर को झटके से डबल टाइम में आगे ले जाएं और उसे बाएं पैर को सीधा ले आएं दोनों एड़ियों को मिलाया जाए ताकि सावधान की स्थिति बन जाए।

2. तेज चाल

तेज चाल गिनती से – एक

यह आदेश प्राप्त होने पर बाएं पैर को झटके से 30 इंच आगे ले जाएं। पंजों को ऊपर उठाया जाए लेकिन एड़ी मजबूती से जमीन पर जमी रहे; शरीर का ऊपरी हिस्सा तना हुआ रहे तथा शरीर का वज़न दोनों टांगों पर बराबर हो। दाहिनी टांग की एड़ी ऊपर उठाई जाए किन्तु पंजा जमीन को स्पर्श करें, हाथ खंड–2 बताई गई स्थिति में रहे (अर्थात् दाहिना हाथ आगे और बायां हाथ पीछे)

स्क्वाड–दो

यह आदेश प्राप्त होने पर शरीर को आगे ले जाएं तथा दाहिने घुटने को थोड़ा मोड़कर पूरे 30 इंच का डग भरा जाए। इसमें दाहिनी एड़ी जमीन को छू ले और पंजा ऊपर उठा हो। बांयी एड़ी उठाई जाए और पंजा जमीन को छूता रहे; शरीर का वज़न दोनों पैरों पर रहे। यह कवायद करते समय साथ ही साथ हाथों को भी एक के बाद दूसरा आगे पीछे किया जाए। (अर्थात् बांया हाथ आगे ले जाएं और दाहिना हाथ पीछे ले जाएं)

टिप्पणी : इन हरकतों को गिनती से जारी रखते हुए आदेश शब्द ''स्क्वाड एक'' और ''स्क्वाड दो'' होंगे। बाएं ओर दाहिने पैर को क्रमशः आगे लाएं ''स्क्वाड थम'' आदेश होने तक ये हरकतें जारी रखी जाएं।

''समय का ध्यान रखते हुए तेज चल''

''स्क्वाड आगे बढ़ेगा दाहिने से – तेल चल''

यह आदेश मिलने पर स्क्वाड एक साथ बाएं पैर से आगे बढ़ेगा और एक सामान्य हरकत से कदम को 30 इंच आगे बढ़ाएगा तथा इसके बाद एड़ी से जमीन को छूएगा। इस प्रकार दाहिने पैर से भी यही हरकत की जाए और इसके बाद बाएं और दाएं फिर दाहिने और बाएं। इसके साथ–साथ ऊपर के पैर 18–2 में बताये अनुसार हाथ को आगे पीछे किया जाए।

3. थम

जब दाहिना पैर जमीन को छुए तब ''स्क्वाड थम'' आदेश दिया जाएगा। इसके बाद बांया पैर 30 इंच आगे बढ़ाया जाएगा तथा इसके बाद दाहिना पैर बाएं पैर की सीध में लाया जाएगा। इसी के साथ दाहिने और बाएं हाथ चुस्ती से बगल में लाये जाएंगे।

सामान्य गलतियां

(क) धीरे चाल में चलते हुए

(i) एड़ियां पहले जमीन पर लगना।

(ii) कुहनियां दोनों साइडों से दूर होना।

(iii) हाथों से टांगें पकड़ना तथा इसके कारण इनका चलते समय हिलना।

(iv) शरीर का वजन पिछले पैर पर न डालना जिससे शरीर का संतुलन बिगड़ना।

(v) अगले पैर के जमीन पर लगते ही पिछले पैर को तेजी से 15 इंच आगे की ओर न लाना।

(ख) तेज चाल में चलना

(i) एड़ियों पर मार्च न करना।

(ii) हाथों का असमान रूप से हिलना, टेढ़ा होना, सीधा न होना और कवर न करना, टांगों को बहुत अधिक कड़ा रखना तथा कदम आगे बढ़ाते समय मिट्टी को खुरचना।

(iii) हाथों को कुहनी से मोड़ना।

(ग) थमना (धीरे और तेज चाल में)

(i) अगले पैर को घुटने से मोड़ना या और कमर से मोड़ना।

(ii) बाहों को मोड़ना।

(iii) नीचे देखना।

(iv) थम के बाद तत्काल शरीर को हिलाना।

4. लम्बा कदम भरना

लम्बा कदम : यह आदेश प्राप्त होने पर हिलाया जाने वाला पैर अपना कदम पूरा करेगा तथा जवान अपने कदम का फासला तीस इंच बढ़ाएगा तथा थोड़ा से आगे झुकेगा किन्तु ये दोनों कार्य एक साथ होंगे।

यह कदम उस समय लिया जाता है जब एकही समय पर गति में तेजी लानी होती है। तेज (या धीरे) चाल का आदेश प्राप्त होते ही कदमों की लम्बाई सामान्य हो जाएगी।

5. छोटा कदम लाना

छोटा कदम

आगे बढ़ने वाला पैर पूरा कदम लेगा और इसके बाद जब तक तेज चल या धीरे चल के आदेश नहीं मिलते तब तक कदम की लम्बाई 9 इंच कम की जाएगी। उक्त आदेश प्राप्त होने पर कदम की लम्बाई सामान्य हो जाएगी।

कदम ताल

यह आदेश प्राप्त होने पर आगे आने वाला पैर पूरा कदम लेगा और इसके बाद आगे बढ़े बिना ''कदम ताल'' की कवायद की जाएगी। इसमें प्रत्येक पैर को एक के बाद दूसरा बारी–बारी से 6 इंच ऊपर उठाया जाएगा तथा पैर जमीन के लगभग समानान्तर रखा जाएगा। यह हरकत पंजे को नीचे दबाकर की जा सकती है। घुटना आगे बढ़ाया जाए, हाथ अपनी अपनी साइड में स्थिर हों तथा सीधी हो। ''आगे बढ़'' को आदेश प्राप्त होने पर जवान जितने ''तेज कदम'' से चल रहे थे उतने ही तेज कदम से चलने लगेंगे।

धीरे चाल में कदम ताल के दौरान पैर बारह इंच ऊपर उठाये जाएं तथा पैर को घुटने से एकदम नीचे किया जाए तथा पंजे नीचे झुके हुए हों।

सामान्य गलतियां

(i) अपने स्थान पर स्थिर न रहना तथा इसके परिणाम स्वरूप सीधे और फासला न रखना।

(ii) शरीर कंधे या बाहें हिलाना।

(iii) नीचे देखना।

(iv) मार्चिंग से अधिक रफ्तार बढ़ाना।

(v) आगे झुकना।

(vi) पैर इस प्रकार उठाना कि पंजे और घुटने के बिन्दु के नीचे रहने की बजाए यह बहुत पीछे रह जाए।

खंड–4

कदम आगे और पीछे ले जाना

कदम आगे या पीछे चल :– यह आदेश प्राप्त होने पर बाएं पैर से आगे या पीछे 30 इंच का कदम लिया जाए तथा बाहें साइडों में स्थिर रखी जाएं।

इस प्रकार जवानों को ज्यादा से ज्यादा 4 कदम आगे या पीछे चलने का आदेश दिया जाए।

सामान्य गलतियां

(i) जल्दबाजी में ठीक लम्बा कदम न रख पाना।

(ii) पैर मोड़ना अर्थात् कदम आगे बढ़ाना और दोनों पैर जमीन से ऊपर उठा कर ''फुदकना''।

(iii) कमर के स्थान से झुकना।

खंड–5

धीरे और तेज चाल में कदम बदलना

टिप्पणी : यह गिनती से सिखाया जाए तथा धीरे चाल से आरंभ किया जाए।

गिनती से कदम बदलना, बांया पैर आगे

1. **''कदम ताल – एक'' :–** (जैसे ही दाहिना पैर जमीन पर लगेगा यह आदेश दिया जाएगा) अब बाएं पैर से कदम पूरा करो जिससे बांया पैर जमीन पर सपाट रहे तथा दाहिने पैर से 30 इंच आगे रहे।

2. **''स्क्वाड–दो'' :–** दाहिना पैर आगे लायें जिससे वह बाएं पैर की एड़ी के खोखले स्थान में सपाट रखा जा सके।

3. **''स्क्वाड–तीन'' :–** बाएं पैर को दाहिने पैर के 30 इंच सामने जमीन पर झटके से सपाट रखें।

4. दाहिना पैर आगे करके कदम बदलने की कार्रवाई इसी प्रकार सिखाई जा सकती है। लेकिन प्रत्येक मामले में ''बाएं'' के स्थान पर ''दाहिना'' पढ़ा जाए।

5. गिनती से उक्त हरकतें सिखाने के बाद स्क्वाड बिना रुकावट के कवायद करेगा। ऊपर उल्लिखित पहली और तीसरी हरकत मार्चिंग की गति से की जाए। दूसरी हरकत इससे दुगने समय में की जाती है। कमान शब्द बारी–बारी से और बाद वाले कदमों के अनुसार दिया जाता है।

6. तेज चाल में गिनती से कदम बदलना इसी प्रकार सिखाया जाता है और इसके कमान शब्द और हरकतें एक सी होती हैं।

7. **कदम ताल में कदम बदलना :–** यह कमान शब्द बारी से और बाद वाले कदम पर बोला जाता है। यदि बाएं पैर पर ''बदल'' कहा जाए और दाहिने पैर पर ''कदम'' कहा जाए तो जितना समय मार्चिंग में लगता है उतने समय में बांया पैर दो बार पटका जाए। इसके बाद सामान्य कदम ताल में कवायद होगी। इसी प्रकार यदि इससे उलट पैर पर आदेश दिया जाए तो दाहिने पैर को दो बाद पटका जाए।

धीरे और तेज दोनों चालों में एक समान हरकतें होती है।

सामान्य गलतियां

(क) मार्च करते समय

(i) कंधों को हिलाना।

(ii) तीसरी हरकत के लिये पूरा कदम न बढ़ाना।

(ख) कदम ताल के समय

(i) शरीर को हिलाना।

(ii) मार्चिंग की रफ्तार बढ़ाना।

खंड–6

दौड़ चाल में मार्च करना

1. **दौड़ चाल**

''स्क्वाड आगे बढ़ेगा–दौड़ के चल''

बाएं पैर को आगे बढ़ाते हुए पंजों से दौड़ के चलें। इसमें शरीर को थोड़ा आगे झुकाएं लेकिन चाल सही बनी रहे। प्रत्येक कदम उठाते समय पैरों को ज़मीन से पूरा उठाना चाहिये तथा जांघ, घुटने और टखनों के जोड़ बिना रुकावट के स्वाभाविक रूप से हिलने चाहिये इन्हें कड़ा करके नहीं रखना चाहिये।

पिछले पैर के धक्के से पूरा शरीर बिना किसी प्रयत्न के आगे आना चाहिए। एड़ियों को सीट की तरफ ज्यादा ऊपर नहीं उठाना चाहिये। लेकिन पैर को सीधे सामने लाया जाए तथा पंजे, जमीन पर धीरे से रखे जाएं। बाजू कंधों से स्वाभाविक रूप से हिलने चाहिये, कुहनियों से मुड़े हुए होने चाहिये बाजू का अगला हिस्सा पिछले हिस्से के साथ 135 अंश

का कोण बनाते हुए रखा जाए। (अर्थात् हाथ के मध्य भाग तक सीधा और कुहनी के बीच समकोण बनाता हुआ हो) मुट्ठी थोड़ी बन्द हो। हाथों का पिछला भाग बाहर की ओर हो और हाथ शरीर से पर्याप्त दूर हों जिससे सीना एकदम तना हुआ रहे। कंधों को स्थिर रखा जाए और वह शरीर के अगले भाग के बीचों बीच हो तथा सिर सीधा हो। कदमों की लम्बाई 40 इंच हो और एक मिनट में 180 कदम मार्च किया जाए।

सामान्य गलतियां

(i) कंधों को हिलाना।

(ii) नीचे देखना।

(iii) स्क्वाड के सबसे आगे वाले जवान द्वारा लम्बे कदम लेने से पीछे वाले जवानों द्वारा कवर करने में अधिक परिश्रम करना।

(iv) एड़ियों से दौड़ना तथा जिससे सीध, दूरी और फासला सही न रहना।

(v) तेज रफ्तार से मार्च करना।

2. कदम ताल

इसमें पैर के गोले (बाल) को जमीन पर रखने की क्रिया को छोड़कर तेज चाल में समान हरकत की जाती है तथा बाजू बगल में झुकी हुई पोजीशन में होती है तथा दौड़ चाल की रफ्तार जारी रखी जाती है।

3. थमना

जैसा कि तेज चाल से थम होता है उसी प्रकार दौड़–चाल से भी थम की हरकत की जाती है और उसी समय हाथों को तेजी से बगल में नीचे गिराया जाता है। जैसे दाहिना पैर जमीन को छुये ''थम'' आदेश दिया जाए। इसके बाद बाएं पैर से तीन कदम लिये जाएं और चौथा कदम दाहिने पैर से लेकर वहीं बाएं पैर के साथ मिला दिया जाए। सावधान की स्थिति में आने से पहले तथा शरीर की तेज गति को रोकने के लिये उक्त तीन कदम लेने जरूरी होते हैं किन्तु यह एक आम बात है कि दौड़ चाल में ''थम'' का आदेश देने से पहले तेज चाल में आना होता है।

सामान्य गलतियां

(i) दोनों पैरों को एकदम जमीन से ऊपर उठा कर कूदना।

(ii) थमते समय अव्यवस्थित होना।

खंड–7

धीरे चाल, तेज चाल और दौड़ चाल में चलना

1. धीरे चाल से तेज चाल में आना

''तेज चाल में आ – तेज चल'' :– जैसे ही बांया पैर जमीन पर लगे कमान शब्द ''तेज'' बोला जाए तथा जैसे ही दाहिना पैर जमीन को छूए ''चल'' बोला जाए। यह आदेश प्राप्त होने पर बाएं पैर और दाहिने बाजू को आगे लाया जाए और बाएं हाथ को मार्चिंग की गति से, पीछे ले जाया जाए। इसके बाद तेज चाल में मार्चिंग जारी रहे।

सामान्य गलतियां

(i) शुरू में ही पहला कदम बहुत जल्दी लेने के कारण ठीक गति से मार्च न कर पाना।

(ii) पहले कदम में बाएं पैर को जोर से जमीन पर मारना या पटकना जिससे लम्बाई में कमी होना।

(iii) बाएं बाजू को पीछे की ओर न झुला पाना।

(iv) बाएं पैर को पूरा 30 इंच आगे न ले जाना।

2. तेज चाल से धीरे चाल में आना

इसके लिये ''धीरे चाल में आ–धीरे चल'' आदेश होगा। धीरे चाल में बिना रुके आना होगा। जैसे ही बांया पैर दाहिने पैर की सीध में आकर आगे की ओर जाता है ''मार्च'' कमान शब्द दिया जाता है। यह आदेश प्राप्त होने पर दाहिने पैर को सामान्य रफ्तार से पूरा 30 इंच आगे लाया जाता है। यह हरकत चेक कदम का कार्य करेगी। इसके बाद बाएं पैर को धीरे चाल से चला कर और 15 इंच का कदम लेकर 30 इंच पूरा किया जाए। जब दाहिना पैर (चैक कदम)

जमीन पर आए तब दोनों हाथों को तेजी से गिरा कर बगल में कर दिया जाए।

सामान्य गलतियां

(i) दाहिने कंधे को पीछे की ओर झुकाना।

(ii) शरीर पीछे झुकने देना।

(iii) हाथों को तेजी से बगल में न गिराना।

3. तेज चाल से दौड़ चाल में आना

"दौड़ चाल में आ, दौड़ के चल" :– जैसे ही बांया पैर आए कमान शब्द ''चल'' दिया जाए। इसके बाद दाहिने पैर से पूरा 30 इंच का कदम लिया जाए। इसके बाद एक मिनट में 180 कदम की गति से बाएं कदम को आगे लाते हुए, दौड़ चाल में आएं। यह हरकत करते हुए बाजुओं को मोड़ लिया जाए।

सामान्य गलतियां

(i) एकाएक अपने शरीर पर नियंत्रण खो देना तथा सामंजस्य न हो पाना।

(ii) सिर आगे होने देना।

4. दौड़ चाल से तेज चाल में आना

"तेज चाल में आ, तेज चल" :– बाद वाले कदमों के संबंध में ''तेज चल'' कमान शब्दों में आदेश दिया जाता है। जैसे ही बांया पैर जमीन पर पहुंचे तो ''तेज'' का आदेश और दाहिना पैर जमीन पर पहुंचे तो ''चल'' का आदेश दिया जाता है।

यह आदेश मिलने पर दो कदम दौड़ चाल में लिये जाते हैं तथा कदम को 30 इंच तक ही आगे बढ़ाया जाता है और इसके बाद अपने आप तेज चाल में आ जाते हैं।

सामान्य गलतियां

तत्काल सही मार्च न कर पाना।

खंड–8

बगली कदम (साइड पेस)

स्क्वाड के अधिक से अधिक 8 कदम दाहिने या बाएं चलाने के लिये 12 इंच का बगली कदम लिया जाए। यदि स्क्वाड को इससे अधिक चलाना हो तो दाहिने या बाएं मोड़कर चलाना चाहिए।

स्क्वाड के कदमों की संख्या चार निश्चित की जा सकती है और ऐसी स्थिति में स्क्वाड अपने आप रुक जायेगा अन्यथा स्क्वाड तब तक चलता रहेगा जब तक ''थम'' का आदेश प्राप्त न हो जाए।

(1) सामान्यतः स्क्वाड को ''विश्राम'' के बाद पहले बांई तरफ से बगली कदम लेना सीखना चाहिये।

(2) ...कदम बाएं बाजू चल – यह आदेश प्राप्त होने पर बाएं पैर को 12 इंच बांयी तरफ ले जाओ (जैसा विश्राम में किया जाता है) इसी प्रकार दाहिने पैर को बाएं पैर के साथ मिलाओ। यह कार्रवाई दौड़ चाल में तथा कदम पूरा करते हुए की जाए। जब तक निर्धारित कदम पूरे न हो जाएं तब तक यह कवायद जारी रखो। इसमें केवल पैरों की हरकत को छोड़कर सावधान की स्थिति रहेगी।

(3) बाएं बाजू चल – इसमें कदमों की संख्या निश्चित नहीं होती इसलिए यह कार्रवाई तब तक जारी रखी जाए जब तक की ''थम'' आदेश न मिल जाए या आठ कदम पूरे न हो जाएं।

(4) ''स्क्वाड–थम– जैसे ही दोनों पैरों की एड़ियां मिले यह आदेश दिया जाए। इसके बाद स्क्वाड एक और कदम पूरा करेगा और बाद में स्थिर खड़ा रहेगा।

खंड–9

मार्च करते समय मुड़ना

(1) यह कार्रवाई पहले धीरे चाल में तथा गिनती से सिखाई जाती है।

(2) मार्च के दौरान प्रत्येक बार मुड़ने के समय मार्चिंग की सही स्थिति बनाये रखी जाए। स्क्वाड की नई दिशा की ओर एक दम मुड़ कर सीधे, आगे पीछे की कवरिंग, दूरी तथा फासला सही रखना होगा। यह स्क्वाड के प्रत्येक जवान की जिम्मेदारी होती है।

(क) दाहिने (या बाएं) मुड़

''दाहिने'' (या बाएं) मुड़ आदेश प्राप्त होने पर बांया (या दाहिना) पैर आगे लाया जाएगा जब तक कि यह दाहिने (या बाएं) पैर के सामने न आ जाए। इसके बाद प्रत्येक जवान अपेक्षित दिशा में मुड़ेगा। मुड़ते समय वह अपने बाएं (या दाहिने) पैर को धुरी बनाएगा तथा दाहिने (या बाएं) पैर से नई दिशा में धुरी बनाएगा तथा दाहिने (या बाएं) पैर से नई दिशा में पूरा 30 इंच कदम से आगे बढ़ेगा।

दाहिनी ओर मुड़ने के लिये बांया पैर और बांयी तरफ मुड़ने के लिये दाहिने पैर का इस्तेमाल किया जाएगा।

(ख) पीछे मुड़ना

यह आदेश प्राप्त होने पर दाहिने पैर से कदम पूरा करो इसके बाद बाएं पैर से पीछे मुड़ की कार्यवाई करो। स्क्वाड जिस चाल से चल रहा हो उसके तीन कदम मुड़ने में लगने वाले समय के भीतर कार्रवाई पूरी करो। मुड़ने की कार्यवाई पूरी करने के बाद स्क्वाड एकदम आगे बढ़ेगा। चौथा कदम पूरा लिया जाएगा तथा दाहिने पैर से लिया जाएगा। तेज चाल में ''पीछे मुड़का आदेश प्राप्त होने पर जैसे ही दाहिना पैर जमीन पर आए'' दोनों हाथ तेजी से बगल में गिराने चाहिये तथा उन्हें तब तक वहां रखा जाना चाहिये जब तक चौथा कदम अर्थात् दाहिना पैर आगे न आ जाए। दाहिना पैर आगे आने पर बांया हाथ चुस्ती से आगे आना चाहिये और पीछे जाना चाहिये।

यदि स्क्वाड लाइन फार्मेशन में चल रही हो और बीच में खाली (ब्लैंक फाइल) हो तो ब्लैंक लाइन ''पीछे'' कमान शब्द होते ही दो कदम ताल करेगी और इस प्रकार पीछे मुड़ की कार्यवाई होने पर अपने ठीक स्थान पर सामने की लाइन में आ जाएगी। मार्ग दर्शकों को इसी प्रकार व्यवस्थित किया जाए।

(ग) आधे दाहिने (या बाएं) मुड़

जैसे ही मुड़ का आदेश प्राप्त हो ऊपर उप पैरा (क) में बताएं अनुसार निर्धारित दिशा की ओर आधा मुड़ो।

(घ) मार्च करते समय मुड़ने या हरकत में परिवर्तन किये जाने पर 'कमान शब्द' दिया जाए अर्थात् ''दाहिने चलेगा''–''स्क्वाड आगे बढ़ेगा'' धीरे चाल में ''आधा मुड़ेगा'' आदि।

सामान्य गलतियां

(i) सिर और कंधों को एक ही झटके से निर्धारित दिशा की ओर पूरा न मोड़ना।

(ii) हाथों और बाजुओं को सावधान की स्थिति में न रखना।

बिना शस्त्र के सैल्यूट करना

अध्याय XIV

बिना शस्त्र के सैल्यूट करना

प्रशिक्षक रंगरूटों को सैल्यूट का महत्व बताएगा। सैल्यूट उच्च अधिकारी को अभिवादन का तरीका है चापलूसी का नहीं। यह आंतरिक अनुशासन की भावना का बाहर प्रकट किया जाने वाला प्रतीक है और वरिष्ठ अधिकारियों के प्रति आदर की भावना की अभिव्यक्ति है। जिस तरीके से बल का जवान सैल्यूट करता है और उच्च अधिकारी इस सैल्यूट का उत्तर देता है उससे बल में मौजूद सामान्य वातावरण और भावना का पता चलता है।

सैल्यूट वस्तुतः सेना के सशस्त्र जवानों के आपस में मिलने पर अभिवादन करने का तरीका है। अफसर का बड़े अफसर से मिलने पर सैल्यूट करना अनुशासन का मूलभूत आधार पर है। यदि सैल्यूट ठीक प्रकार से और चुस्ती से दिया जाता है तो इससे यह जाहिर होता है कि जवान को अच्छा प्रशिक्षण मिला है। सैल्यूट न करना अनादर की भावना, आलसीपन और अनुशासन के निम्न स्तर की ओर संकेत करता है। वर्दी पहने हुए अधिकारी सैल्यूट न करने वाले अधिकारी से सैल्यूट करने के लिए आग्रह नहीं करते तो इससे बल का अनुशासन भंग होगा।

खंड–1

थम पर सैल्यूट करना

(1) थम पर सैल्यूट करना कवायद का पहला पाठ है किन्तु बहुधा प्रशिक्षित जवानों के गलत ढंग से सैल्यूट करने की आदतों को सुधारने के लिये यह कवायद दुहरानी पड़ती है। खुली लाइन में और तिरछे मुड़ होने पर इस हरकत का अच्छा अभ्यास हो सकता है क्योंकि इस स्थिति में शरीर को स्वत्रंतापूर्वक हिलाया डुलाया जा सकता है।

(2) सामने की ओर सैल्यूट करना

(i) गिनती से : ''गिनती से सामने सैल्यूट''–

एकः इसमें दाहिना हाथ सीधा रखा जाता है और बगल की ओर से तब तक उठाया जाता है जब तक कि वह आड़ा नहीं हो जाता। हथेली सामने की ओर हो, अंगुलियां सीधी हों और अगूंठा तर्जनी के पास हो।

दोः ऊपरी हाथ को स्थिर रखा जाए। हाथ और कलाई सीधी हो। कोहनी को तब तक मोड़ा जाए जब तक दाहिने हाथ की तर्जनी का अगला हिस्सा दाहिनी आंख से एक इंच ऊपर न हो जाए। यह हरकत करते समय ध्यान में रखने योग्य बातें इस प्रकार हैः

(क) बाँह का ऊपरी हिस्सा आड़ा हो तथा साइड की तरफ समकोण बनाता हुआ हो, बाँह का अगला हिस्सा, कलाई और अंगुलियां एक सीध में हो।

(ख) हथेली खड़ी हो तथा कलाई मुड़ी हुई न हो।

''स्क्वाड–तीन''

''सावधान'' की स्थिति में वापस आने के लिये हाथ सबसे छोटे रास्ते से अर्थात् कुहनी को आगे करके एक दम झटके से नीचे गिराया जाता है जिससे हाथ बगल में चला जाता है। हाथ को नीचे लाते समय अंगुलियों को मोड़ लिया जाए।

(ii) समय का अनुमान लगाते हुए सैल्यूट करनाः– समय का अनुमान लगाते हुए सैल्यूट करते समय दाहिने हाथ को तेजी और झटके से गोलाई में मोड़कर सिर तक उसी प्रकार लाया जाए जैसा कि गिनती से सैल्यूट करना सिखाया गया है। हाथ सैल्यूट की स्थिति में कुछ देर तक रहे। इसके लिए ''सामने सैल्यूट–सैल्यूट'' कमान शब्दों का इस्तेमाल होगा।

सामान्य गलतियां

(i) बांयी ओर झुकना, मांस पेशियों को खींच कर रखना और पीछे की ओर झुकना।

(ii) कुहनी आगे रखना; बांह का अगला भाग, कलाई और अंगुलियां सीधी लाइन में न रखना।

(iii) हाथ का माथे के मध्य भाग से बहुत ऊपर होना या दूर होना; हाथ आगे झुकना; अंगुलियां मिली हुई न होना, बांयी बाजू हिलना, सिर आगे करना।

हाथ तेजी से नीचे गिराते समय

(iv) कुहनी सीधा न करना जिसके कारण सावधान की सही स्थिति में न आना।

दाहिना बाजू नीचे गिराते समय बायां हाथ हिलाना।

सामान्यत :– सामने का सैल्यूट करते समय यह गलती खास तौर से हो जाती है कि जवान थमने तथा बोलना बन्द होने आदि से पहले हरकत शुरू कर देता है तथा जवान हरकत सही ढंग से पूरी होने से पहले बोलना शुरू कर देता है।

3. किसी दिशा (फ्लैक) की तरफ सैल्यूट करना

''दाहिने सैल्यूट–सैल्यूट :– इसको सामने सैल्यूट की सही स्थिति में सही ढंग से सिखाया जा सकता है। इसके लिये रंगरूट को यह बताया जाए कि वह अपने सिर तथा आंखों को सीधा रखते हुए दाहिनी ओर मोड़े लेकिन ऐसा करते समय दाहिनी बाजू, कलाई या हाथ की स्थिति में परिवर्तन न हो तथा हाथ को ऐसी जगह रखे कि दाहिनी आंख केवल हथेली देख सके। यह हरकत करते समय रंगरूट को अपनी लम्बाई की ऊंचाई तक या जिस अधिकारी को सैल्यूट करना हो उसकी आंखों की सीध में देखना चाहिये। इसका अभ्यास तब तक करना चाहिये जब तक सिर आंखों और हाथों की हरकत एक साथ नहीं होती।

सामान्य गलतियां

(i) आगे झुकना, हाथ के पिछले भाग की तरफ देखना या अधिकारी के चेहरे की ओर सीधे न देखना।

(ii) हाथ ज्यादा ऊंचा रखना।

(iii) बाएं कंधे को आगे आने देना।

(iv) दाहिनी कुहनी आगे आने देना और पीछे की ओर गिराना या गिरना।

(v) दिशा (फ्लैंक) की तरफ सीधे सामने न देखना।

(vi) कलाई उठाना।

4. ''बाएं सैल्यूट–सैल्यूट''

ऊपर बताये अनुसार करें। हाथ और आंखें तेजी से बाएं मोड़ी जाएं तथा दाहिना हाथ, कलाई और बाजू सही स्थिति में दाहिनी आंख के ऊपर होना चाहिए।

सामान्य गलतियां

(i) कंधा बांयी ओर मोड़ना और दाहिनी कुहनी आगे गिराना।

(ii) दाहिने हाथ को सही स्थिति में न आने देना।

(iii) कलाई गिराना।

खंड–2

मार्च करते हुए सैल्यूट करना

मार्च करते हुए सैल्यूट किसी दिशा में या सामने का हो सकता है और तेज चाल या धीरे चाल में हो सकता है।

2. ''दाहिने (बाएं) को सैल्यूट – स्क्वाड सैल्यूट''

जैसे ही बांया पैर जमीन पर आए यह आदेश दिया जाए। इसके बाद जैसे ही दाहिना पैर जमीन को छुए वैसे ही सैल्यूट किया जाए और सैल्यूट के बाद प्रथम दाहिने कदम से छठे कदम पर हाथ को झटके से नीचे गिराया जाए।

3. जब अधिकारी के सामने से गुजरें

जब कोई अधीनस्थ अधिकारी अपने किसी अधिकारी के पास से गुजरे तब उसे अधिकारी के पास पहुंचने से तीसरे कदम पर सैल्यूट करे और

आगे गुजरने के तीन कदम बाद हाथ नीचे लाए सैल्यूट के दौरान जवान अपनी नजर पूरी तरह अधिकारी के चेहरे की ओर रखे।

टिप्पणी : (i) दो या तीन रंगरूटों को एक साथ मार्चिंग का अभ्यास करवाया जाए तथा दोनों तरफ सैल्यूट–बिन्दु रखे जाएं। जब सैल्यूट करने वाले बहुत से जवान हों तब सैल्यूट बिन्दु से सबसे नजदीक का जवान सैल्यूट के लिए टाइम (समय संकेत) देगा।

(ii) जवानों को चलते–फिरते हुए सैल्यूट ''बिन्दुओं'' और स्थिर सैल्यूट ''बिन्दुओं'' को सैल्यूट करने पर अभ्यास करवाया जाना चाहिए।

सामान्य गलतियां

ऊपर उल्लिखित गलतियों के साथ–साथ जवानों में कंधे हिलाने की आदत होती है और वे मार्चिंग की दिशा छोड़कर सैल्यूट की दिशा में चले जाते हैं। यह बाद वाली गलती स्क्वाड के शिक्षक के मार्ग दर्शन से ठीक हो सकती है।

4. सामने सैल्यूट करना

''सामने सैल्यूट–सैल्यूट'' :– इसके लिए ''थम'' के समान ही कमान शब्द का प्रयोग किया जाता है अर्थात् जैसे ही बांया पैर धीरे चाल में जमीन पर आता है और दाहिना पैर तेज चाल में जमीन पर आता है तब यह आदेश दिया जाता है। यह आदेश मिलने पर स्क्वाड थम करेगा, सैल्यूट करेगा, कुछ समय के लिये रुकेगा, पीछे मुड़ेगा, थोडी देर रुकेगा और फिर यथा स्थिति तेज या धीरे चाल में चलेगा।

टिप्पणी : (i) किसी अधिकारी से किसी प्रकार बातचीत की जाए या संदेश दिया जाए, यह सिखाने के लिए इस कवायद का अभ्यास कराया जाता है।

(ii) सैल्यूट करते समय बीच में रुकने का समय सही होना चाहिए तथा प्रशिक्षक जवानों को समय की सही गणना; करने पर जोर दे।

(iii) प्रारम्भिक प्रशिक्षण के दौरान धीरे चाल में सामने सैल्यूट करने का अभ्यास करवाया जा सकता है किन्तु वस्तुतः वरिष्ठ के पास रिपोर्ट करने के समय तेज चाल में सैल्यूट करना चाहिये।

5. संदेश के साथ सामने सैल्यूट करना

''संदेश के साथ सामने सैल्यूट स्क्वाड–सैल्यूट''–इसके लिये ऊपर पैरा 4 में दिए ''कमान शब्दों'' का प्रयोग किया जाए। इसके लिए भी ऊपर पैरा–4 में दी गई कार्रवाई की जाए। लेकिन इस में पहली बार सैल्यूट करने के बाद जवान एक कदम आगे बढ़ेगा, संदेश सौंपेगा, फिर एक कदम पीछे हटेगा और दूसरी बार सैल्यूट करेगा।

खंड–3

बिना शस्त्र के विसर्जन करना

जब स्क्वाड को थोड़ा विश्राम देना हो तो ''लाइन तोड़'' की कमांड दी जाएगी। इसके थोड़ी देर बाद उसकी पुनः संरचना होगी। तब भी ''लाईन तोड़'' की कमाण्ड दी जाएगी।

''लाइन तोड़'' की कमांड होने पर स्क्वाड दांए घूमेगी और तेज गति में दो कदमों की थाप देकर बिखर जाएगी और उस स्थान को छोड़ देंगे। इस वक्त कोई भी सैल्यूट नहीं दिया जाएगा।

''स्वस्थान'' इस शब्द की कमांड तब दी जाएगी जब स्क्वाड का किसी हाल अथवा कक्षा से विसर्जित करना होगा।

''स्वस्थान'' शब्द को कमांड होने पर कक्षा एकदम से सीधे स्थिति में आ जाएगी। सबके दोनों हाथ सीधे होकर घुटनों पर आ जाएंगे। इसके बाद वे सब खड़े होंगे और स्थान को छोड़ देंगे। इस समय भी कोई सैल्यूट नहीं दिया जाएगा।

''विसर्जन''– इन शब्दों की कमांड उस समय दी जाएगी जब स्क्वाड विसर्जित करना होता है और उनकी पुनर्निमाण अपेक्षित नहीं होता है।

''विसर्जन'' शब्द की कमांड होने पर स्क्वाड दांए मुड़ेगी। सैल्यूट देंगे (सिर और आंखें अधिकारी की तरफ मुड़ जाएंगी) और बहुत कम समय में रैंकों

के अनुसार बिखर जाएंगे एवं जल्द से जल्द परेड ग्राउंड छोड़ देंगे।

सामान्य गलतियां

सामान्यतः जवानों में यह आदत होती है कि वे ''विसर्जन'' को ''किसी खराब कार्य का अंत'' समझते हैं। इस प्रकार सोचना ठीक नहीं है। इसलिये इस पर तुरन्त रोक लगायी जाए। विसर्जन का उद्देश्य परेड में उपस्थित उच्च अधिकारियों का अभिवादन करता है। अतः इसी बात को ध्यान में रखते हुए विसर्जन की कार्रवाई की जाए। स्क्वाड प्रशिक्षक हमेशा, इस बात का ध्यान रखेगा कि यह कार्रवाई अच्छी प्रकार हो और वह सैल्यूट की जांच करता रहे, चाहे सैल्यूट कवायद पूरी होने के बाद हो रहा हो या किसी अन्य परेड के बाद।

अध्याय XV

छड़ी कवायद (केन ड्रिल)

खंड–1

प्रस्तावना

बेटन/केन सामान्यतः यूनिफार्म का एक हिस्सा है और विशेष अवसर पर अन्य अधिकारियों द्वारा सामान्य सेवा के दौरान सब–इंस्पेक्टर एवं ऊपर के अधिकारियों द्वारा ड्यूटी के दौरान इसका प्रयोग किया जाता है।

एन.सी.ओ. एवं कांस्टेबल द्वारा भी केन का प्रयोग किया जा सकता है। यह उनके द्वारा केवल तब ही प्रयोग में लाई जाएगी जब वे रेजीमेंटल ड्यूटी जैसे आर.पी.ड्यूटी, केन अर्दली एवं स्टिक अर्दली के रूप में कार्य कर रहे हों।

खंड–2

बेटन एवं केन में अंतर

बेटन की लम्बाई 60 सें.मी. और परिधि लगभग 6 सें.मी. की होती है और इसके 43 सें.मी. की लम्बाई के बाद दोनों छोरों पर चांदी की दो टोपियां होती हैं। बेटन के ऊपर के हिस्से पर संगठन का चिह्न जो धातु–मुठ पर चिपकाया (वैल्ड) हुआ होता है।

केन के ऊपरी भाग में एक गोल घुमावदार मुठ जिस पर चिह्न अंकित होता है। केन के नीचे के हिस्से पर धातु की एक टोपी होती है। केन निम्नलिखित तरह की हो सकती हैः–

(क) **बेव केन :** सामान्यतः यह केन 24'' से 27'' तक की होती है। इस केन में धातु की मुठ नहीं होती है लेकिन शीर्ष पर चमड़े का एक हैंडल (हत्था) होता है तथा नीचे की तरफ 2 फितियां होती हैं। यह केवल घुड़सवार दस्ते द्वारा ही प्रयोग में लाई जाती है।

(ख) **सामान्य केन :** इस केन की लम्बाई 27'' से 30'' के बीच होती है। इसके शीर्ष पर गोल मुठ होती है जिस पर संगठन का चिह्न अंकित (छपा) होता है। साथ ही नीचे एक धातु की टोपी होती है।

(ग) **रेजीमेंटल केन :** सामान्यतः इस केन की लम्बाई 30'' से 33'' तक की होती है। इसके शीर्ष पर धातु की गोल घुमावदार मुठ होती है और नीचे की ओर एक धातु की टोपी होती है। यह सामान्य केन से थोड़ी मोटी होती है। और इसे चांदी के चेन से सजाया गया होता है। इसका प्रयोग रेजीमेंटल ड्यूटी के दौरान अर्दली द्वारा किया जाता है अथवा परेड समारोह के दौरान अति–विशिष्ट व्यक्ति के पथ–प्रदर्शन के समय किया जाता है।

केन धारक के निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिएः–

1. हाथों में केन घुमानी नहीं चाहिए।
2. पैरों की साइडों पर केन को नहीं मारना चाहिए।
3. केन द्वारा किसी और की तरफ इशारा नहीं करना चाहिए।
4. धरती पर केन द्वारा चित्र आदि नहीं बनाना चाहिए।

घड़ी की स्थिति

1. सावधान की मुद्रा में छड़ी की स्थिति

घड़ी दाहिने हाथ में मजबूती से खड़ी हालत में पकड़ी जाए तथा वह शरीर की दाहिनी तरफ हो, दाहिने हाथ के अंगूठे के पास वाली अंगुली छड़ी के नाब के नीचे हो तथा उसका रुख जांघ की ओर हो। अंगूठा छड़ी के सामने की तरफ हो तथा बाकी तीन अंगुलियों से छड़ी पकड़ी हुई हो।

2. विश्राम की मुद्रा में छड़ी की स्थिति

इस मुद्रा में दाहिने हाथ का पिछला भाग बाएं हाथ की हथेली में हो, छड़ी दाहिने हाथ से पकड़ें

तथा दाहिने हाथ और शरीर के बीच में रखी जाएं। छड़ी का ऊपरी भाग अर्थात् पतला हिस्सा दाहिने ऊपर की ओर तिरछा रहे।

3. मार्च करते समय छड़ी की स्थिति

''तेज चल'' आदेश मिलने पर जिस प्रकार बिना छड़ी के तेज चाल मे बताया गया है वैसा किया जाए। जैसे की बांया पैर पहली बार जमीन पर आए दोनों हाथों को तेजी से छड़ी के बीच लाया जाए (एक हरकत) तथा छड़ी शरीर की दाहिनी तरफ खड़ी स्थिति में रखी जाए। जैसे ही बांया पैरा दुबारा जमीन पर आए बाएं हाथ को चुस्ती से शरीर की साइड में गिराया जाए। छड़ी को चुस्ती से दाहिनी तरफ लाया जाए और जमीन के समानान्तर तथा अंगूठे और दाहिने हाथ की पहली दो अंगुलियों के बीच संतुलित करके रखा जाए तो छड़ी का रुख सामने की ओर हो। हाथों को उसी प्रकार हिलाया जाए जैसे बिना छड़ी की कवायद में हिलाया जाता है। मार्च करते समय छड़ी जमीन में समानान्तर रखी जाए।

अब छड़ी आड़ी में लेगी। यदि स्क्वाड लाइन में चल रही हो तो सावधान की स्थिति के समान छड़ी रखी जाए।

4. थमना

''थम'' आदेश मिलने पर छड़ी आड़ी कर ली जाए तथा थोड़ी देर रुकने के बाद दो हरकतें करके काम को सावधान की स्थिति में लाया जाए जैसेः–

(क) छड़ी बाएं हाथ के बीच में से पकड़ी जाए और शरीर की दाहिनी तरफ खड़ी हालत में लाई जाए। इसके साथ–साथ दाहिना हाथ सावधान की मुद्रा के समान छड़ी के नॉब के पास ले जाएं।

(ख) इसके बाद बांया हाथ चुस्ती से बायीं ओर गिराया जाए।

5. पीछे मुड़ना

जब स्क्वाड ''थम'' में हो तब ''पीछे मुड़'' की पहली हरकत करके छड़ी तेजी से सावधान की स्थिति में रखी जाए।

मार्चिंग के दौरान पीछे मुड़ की पहली हरकत (बाएं पैर से) छड़ी चुस्ती से दाहिने कंधे के सामने खड़े रुख में रखें। छड़ी का ऊपरी भाग बाजू (साइड) में रखें। अग्रबाहु आड़ी हो तथा हाथ कमर पेटी की सीध में हो। दाहिने से मुड़ने के बाद पहला कदम बढ़ाते समय छड़ी आड़ी रखी जाए।

खंड–3

छड़ी से सैल्यूट करना

1. छड़ी से सामने को सैल्यूट करना

यह कार्यविधि लिखित या मौखिक संदेश देते समय या अधिकारी से बात करते समय अपनाई जाती है।

2. ''सामने को सैल्यूट – स्क्वाड सैल्यूट''

जैसे ही दाहिना पैर जमीन पर आए ''सैल्यूट'' आदेश दिया जाए (जैसा थम के लिए किया जाता है)। आदेश मिलने पर स्क्वाड ''थम'' करेगा, कुछ समय के लिए रुकेगा। (तेज चाल में दो कदम आगे बढ़ने में लगने वाले समय तक, छड़ी को तेजी से बाएं हाथ के नीचे लाएं तथा छड़ी का सिरा पीछे करें। दाहिने हाथ को तेजी से बगल में गिराया जाए व सैल्यूट किया जाए। इसके बाद एक कदम आगे बढ़ाया जाए लिखित संदेश यदि कोई हो, दाहिने हाथ से अधिकारी को दिया जाए। बाद में एक कदम पीछे हट कर फिर से सैल्यूट किया जाए तथा छड़ी को बाएं हाथ में रखकर पीछे मुड़े तथा तेज चाल में मार्च करते हुए लौट जाएं। यदि कोई लिखित संदेश न देना हो और मौखिक रूप से कुछ कहना हो तो पहले सैल्यूट के बाद एक कदम आगे बढ़ना आवश्यक नहीं है। दो भिन्न भिन्न हरकतों के बीच तेज चाल में दो पदाघातों में लगने वाले समय के बराबर समय तक रुका जाए। जैसे ही बांया पैर पहली बार जमीन पर आए छड़ी को दाहिने हाथ से यथा संभव बीच से पकड़ा जाए। पकड़ते समय अंगूठा नीचे की तरफ हो और हाथ का पिछला भाग अधिक ऊपर की ओर हो। दूसरा बांया पैर जमीन पर लगते ही छड़ी झटके से आड़ी कर ली जाए।

3. छड़ी घुमाते हुए दाहिने (या बाएं) सैल्यूट करना "दाहिने (या बाएं) को सैल्यूट–स्क्वाड सैल्यूट"

इसमें जैसे ही बांया पैर जमीन पर आए "सैल्यूट" आदेश दिया जाए। "सैल्यूट" आदेश मिलने पर जैसे ही बांया पैर पहली बार जमीन पर आए छड़ी को चुस्ती से बांयी बगल में ले लें, छड़ी का पहला भाग पीछे की ओर हो। अगली बार (अर्थात् चौथे कदम के बाद) जब बांया पैर जमीन पर आए दाहिना हाथ झटके से बगल में गिराओ और सिर को निर्दिष्ट दिशा में ला कर छठे कदम पर सैल्यूट करो। 12वें कदम पर (बाएं पैर से) दाहिना हाथ झटके से बगल में गिराएं और सिर सामने की ओर हो। 14वें कदम पर जैसे ही बांया पैर जीमन पर आए दाहिने हाथ से छड़ी को यथा संभव बीच से पकड़ो। हथेली का पिछला भाग एकदम ऊपर हो तथा अंगूठा नीचे की तरफ हो। 16वें कदम पर जैसे ही बांया पैर जमीन पर आए छड़ी चुस्ती से शरीर की दाहिनी ओर कर लो। सैल्यूट करते समय बाएं हाथ को न हिलाएं। छड़ी से होने वाली सभी हरकतें बाएं पैर से आघात से होंगी।

खंड–4

छड़ी से विसर्जन

"स्क्वाड विसर्जन"

यह आदेश मिलने पर स्क्वाड दाहिनी ओर मुड़े। छड़ी बांयी ओर रखी जाए। छड़ी का ऊपरी भाग पीछे तथा दाहिना हाथ बगल में (साइड में) हो तथा सिर और आंखों को मोड़े बिना सैल्यूट किया जाए तथा स्क्वाड तेज चाल से अपने स्थान पर लौट जाए। ये सभी हरकतें एक ही स्थान पर तेज चाल से होंगी। चौथे कदम पर हाथ को बगल में ले जाएं। यदि परेड के मैदान में कोई अफसर न हो तो स्क्वाड सैल्यूट नहीं करेगा। दाहिनी ओर मुड़ते समय छड़ी को सावधान की स्थिति में रखा जाए।

टिप्पणी : कोई अफसर किसी दूसरे अफसर से बात करते समय या निरीक्षण करते समय छड़ी बांई बगल में दबा लेगा तथा छड़ी को बाएं हाथ की अंगुलियों से पकड़ेगा। छड़ी थोड़ी ऊपर रखी जाए, अंगूठा सीधा तथा दाहिनी ओर हो। इस प्रकार छड़ी हाथ के बाहरी भाग अर्थात् अंगूठे और तर्जनी के बीच रहे।

खंड–5

बेटन/केन के साथ मार्च करते हुए ड्रिल करना

(क) बाजू केन से बगल केन : सावधान की स्थिति में बेटन/केन को दाएं हाथ की बगल के नीचे लिया जाएगा। दांया हाथ तेजी के साथ नीचे की तरफ आ जाएगा और उसी समय बांया हाथ केन की मुठ को पकड़ लेगा, अंगुलियां आपस में मिली हुई बांई तरफ को बढ़ी हुई एवं केन का मुंह तिरछी व ऊपर की ओर होगा तथा अंगूठा दाएं तरफ को सीधा होगा। इसके बाद केन अंगूठे एवं अंगुलियों के पोरों पर टिकी होगी।

(ख) बगल केन के स्थिति में केन के साथ सैल्यूट : इस स्थिति में जब सैल्यूट देना है तो बांया हाथ नीचे आएगा और दांया हाथ सैल्यूट के लिए ऊपर जाएगा। जैसे ही सैल्यूट पूरा होगा वैसे ही दांया हाथ तेजी से नीचे आ जाएगा और बांया हाथ अपनी मूल जगह यानि केन/बेटन पर आ जाएगा।

(ग) बगल केन से बाजू केन : दांया हाथ तेजी से उस जगह पर जाएगा जहां बाएं हाथ ने पकड़ रखा था। दाएं हाथ द्वारा पकड़ने के बाद बांया हाथ तेजी से नीचे की तरफ आ जाएगा।

दाएं हाथ की मदद से बाएं हाथ के नीचे से केन, को खींच लिया जाएगा और बगल केन की स्थिति में ले लिया जाएगा।

(घ) तोल केन से बगल केन : "बगल केन" शब्दों की कमांड होने पर दांया हाथ तेजी से नीचे की ओर आएगा और उसके हाथ की गांठ ऊपर की तरफ होगी।

दांया हाथ तेजी से नीचे की तरफ आएगा और इसी समय बांया हाथ केन के ऊपर अंगुलियां आपस में मिलाकर आ जाएगा और जो बांयी तरफ को होगी।

(ङ) बगल केन से तोल केन : दांया हाथ तेजी से केन के बीच से पकड़ लेगा जिससे अंगुलियों की गांठ ऊपर को रहेगी और कलाई छाती के सामने होगी।

तोल केन की स्थिति में दांया हाथ तेजी से नीचे की ओर आएगा।

अध्याय XVI

सैल्यूट के बारे में सामान्य अनुदेश

खंड–1

बिना टोपी या पगड़ी पहने और सादी पोशाक आदि में सैल्यूट करना

इस खंड में एक पुलिस मैन (इनमें राजपत्रित पुलिस अफसरों के साथ–साथ उच्च अधीनस्थ शामिल हैं) को यह बताया गया है कि यदि कोई अफसर उसके पास से गुजरे या कोई अफसर उससे बात करे या उसकी अफसर से मुलाकात ऐसे समय में हो जब वह टोपी या पगड़ी न पहने हो या सादे कपड़ों में हो, वर्दी में न हो तो उसे कैसा व्यवहार करना होगा। ऊपर उल्लिखित सभी बातें जवान के शिक्षण का एक हिस्सा हैं इसलिये इन्हें जवान के सामने स्पष्ट किया जाए, प्रदर्शन किया जाए और मैदान में इनका अभ्यास करवाया जाए।

1. बिना टोपी या पगड़ी पहने

किसी भी समय जब टोपी या पगड़ी न पहनी हो

(क) यदि कोई अफसर बगल से गुजर रहा हो तो अपने दोनों हाथ झटके से बगल में गिराए तथा बाएं कदम पर अपना सिर और आंखें अफसर की दिशा में मोड़ें और छह कदम आगे बढ़ जाने तक इस दिशा में रहें। इसके बाद सिर सामने कर लें।

(ख) यदि अफसर उससे बात करे तो वह सावधान की स्थिति में खड़ा रहे।

(ग) यदि कोई अधिकारी उसके पास से गुजरे तो वह सावधान की स्थिति में खड़ा रहे।

2. सादे कपड़ों में होने पर

यदि कोई पुलिस मैन पश्चिमी टोपी पहने हुए हो तो वह अपनी टोपी पूरी तरह सिर से हटा लेगा और सीधे अफसर की आंखों की ओर देखेगा। यदि पुलिस ने भारतीय टोपी या पगड़ी पहनी हो तो वह उसे सिर से नहीं हटाएगा। वह केवल अपने दोनों हाथों को तेजी से बगल में गिरा कर अपना सिर अधिकारी की दिशा में मोड़ेगा। यदि अधिकारी उससे बात करे या वह अधिकारी से बात करे तो बातचीत के दौरान वह सावधान की मुद्रा में खड़ा रहे।

3. बैठकर सैल्यूट करना

यदि कोई अफसर ऐसे में समय आए जब पुलिस मैन बैठा हो तो वह अफसर के सामने खड़ा हो जाएं और हाथ से सैल्यूट करे। यदि उस स्थान पर दो या दो से अधिक जवान बैठे या खड़े हों तो वरिष्ठ–अधिकारी नान–कमीशंड अफसर या सबसे पुराना पुलिसमैन अफसर की ओर चेहरा करके खड़ा हो, सभी को सावधान होने के लिए कहे लेकिन अकेला ही सैल्यूट करे।

4. अफसर से बात करते समय या उसे संदेश देते समयः

पुलिस मैन चुस्ती से अफसर के पास तेज चाल में मार्च करते हुए जाएगा उससे दो कदम दूर खड़ा रहेगा। सैल्यूट करेगा अफसर से बात करेगा या अपना संदेश देगा (एक कदम आगे बढ़कर तथा संदेश देने के बाद एक कदम पीछे हटकर) फिर से सैल्यूट करेगा, पीछे मुड़ेगा और तेज चाल में मार्च करता हुआ लौट जाएगा।

सामान्य गलतियां

(i) अपेक्षित तरीके से अभिनन्दन न कर पाना।

(ii) बिना हैट या टोपी पगड़ी पहने सैल्यूट करना।

खंड–2

विविध

राष्ट्र गीत

1. निम्नलिखित व्यक्तियों को 'राष्ट्रीय सैल्यूट' किया जाएगाः–

   (क) भारतीय गणतंत्र के राष्ट्रपति;

   (ख) राज्यपालों को अपने–अपने राज्य में।

2. ऐसे उच्च पदाधिकारी जो समारोह के अवसर पर सैल्यूट लेने के हकदार हों उन्हें ''सामान्य सैल्यूट'' (जनरल सैल्यूट) दिया जाएः–

3. निम्न व्यक्तियों के लिए और अवसरों पर राष्ट्रगीत (जन गण मन) बजाया जाएः–

(क) भारतीय गणतंत्र के राष्ट्रपति के लिए;

(ख) राज्यपालों के लिए अपने–अपने राज्यों में;

(ग) समारोहों; उत्सवों और परेडों में – चाहे ऊपर के पैरा 1 (क) और 1 (ख) में उल्लिखित हो या न हो, 15 अगस्त और 26 जनवरी को।

4. विशेष अवसरों पर राज्य सरकार की पूर्वानुमति से भारत के प्रधान मंत्री के लिये भी राष्ट्रगीत की धुन बजाई जा सकती है।

5. (क) जब भी राष्ट्रगीत की धुन बजाई जाए तब वर्दी पहने सभी जवान सावधान की स्थिति में खड़े रहें। राजपत्रित और अराजपत्रित तथा अधीनस्थ अधिकारी सैल्यूट करेंगे।

(ख) यदि सेरिमोनियल परेड में राष्ट्रगीत की धुन बज रही हो तो वर्दी में खड़े ऐसे सभी जवान जो परेड के कमान अफसर के अधीन नहीं हैं ऊपर पैर 5 (क) में बताये अनुसार सावधान की स्थिति में खड़े रहें तथा समारोह परेड में राष्ट्रगीत की धुन बजने पर सैल्यूट लेने वाले मुख्य उच्च पदधिकारी के साथ अधीनस्थ अधिकारी तथा सैल्यूट करने वाले अधिकारी केवल सावधान की स्थिति में खड़े रहें सैल्यूट न करें।

(ग) रैंक के जो जवान सादे कपड़ों में हों वे सावधान की स्थिति में खड़े रहें तथा पश्चिमी ढंग की टोपी पहने हुए सभी अफसर अपनी टोपी सिर से उतार दें। मार्च करने वाली पार्टी को कमांड करने वाले सभी अफसर या अधीनस्थ अफसर अपनी पार्टी को थमने के लिये कहें। यह पार्टी कंधे शस्त्र या सावधान की स्थिति में खड़ी रहेगी तथा अफसर या अधीनस्थ अफसर सैल्यूट करेगा। यदि पार्टी के साथ खुली हुई तलवार हो तो अफसर ''सामने तलवार'' की स्थिति में खड़े रहेंगे। संतरी कंधे शस्त्र की स्थिति में रहे।

6. सैल्यूट लेना

अफसर सैल्यूट स्वीकार करेगा तथा शिष्टता में इसका जवाब सैल्यूट से देगा। यदि दो से अधिक साथ हों तो इनमें से जो अफसर वरिष्ठ होगा वह सैल्यूट का जवाब देगा।

7. बाएं हाथ से सैल्यूट करना

यदि शारीरिक अक्षमता के कारण दाहिने हाथ से सैल्यूट करना असंभव हो तो बाएं हाथ से सैल्यूट किया जाए।

8. पुलिस और सैनिक अंत्येष्टि क्रिया

पुलिस या सैनिक अंत्येष्टि क्रिया में शामिल होने वाले अफसर और जवान शव की ओर दाहिने या बाएं देखकर ''सैल्यूट'' करेंगे। पार्टी का वरिष्ठ प्रभारी अफसर सैल्यूट करेगा।

9. घोड़े पर सवार होने पर सैल्यूट करना

बिना शस्त्र घोड़े पर सवार अफसर दाहिने हाथ से सैल्यूट करेगा तथा यदि पुलिस मैन बिना शस्त्र के घोड़े पर सवार हो तो वह नीचे बताये अनुसार सैल्यूट करेगा।

(क) यदि पुलिस मैन ने दोनों हाथों से लगाम पकड़ी हो तो वह अपने हाथ हिलाये बगैर, दाहिने या बाएं देखेगा।

(ख) यदि लगाम एक हाथ से पकड़ी हो तो दाहिने हाथ को दाहिनी जांघ के पीछे पूरा सीधा करेगा, अंगुलियां आधी बन्द होंगी हाथ का पिछला हिस्सा दाहिनी ओर होगा तथा दाहिनी या बांयी ओर देखेगा।

10. गाड़ी (इसमें साइकिल भी शामिल है) चलाते समय

साइकिल (पैडल वाली या मोटर लगी हुई) या यांत्रिक वाहन का चालक साइकिल या वाहन के गति में रहने की अवधि में सैल्यूट नहीं करेगा क्योंकि सैल्यूट करते समय आंखें सड़क से हटानी पड़ती है।

जब वाहन स्थिर हो तब वह दाएं या बाएं देखकर सैल्यूट करेगा किन्तु वह अपने हाथ हैंडिलबार या स्टीअरिंग व्हील से नहीं हटाएगा।

यदि पुलिस मैन घोड़े पर या जुते हुए वाहन में या मशीनी वाहन में यात्री के रूप में बैठा हो और यदि संभव हो तो वह दाहिने हाथ से सैल्यूट करके अभिनन्दन करेगा अन्यथा पुलिस मैन पैदल जवानों के लिए निर्धारित अनुदेशों का पालन करेंगे। चालक सावधान की स्थिति में बैठेगा। यदि चालक उस दिशा में मुंह करके बैठा हो जिधर वाहन जा रहा हो तो वह दाहिनी या बांयी ओर देखकर सैल्यूट करेगा तथा यदि किसी अन्य दिशा में मुंह करके खड़ा हो तो वह सीधे अपने सामने देखेगा।

अध्याय XVII

थम पर तीन लाइनों में कवायद करना

इस अध्याय में तीन लाइनों में प्लाटून द्वारा कवायद के बारे में अनुदेश दिये गये हैं ये अनुदेश जवानों के किसी छोटे समूह के लिए भी समान रूप से उपयोगी हैं। तथापि अभ्यास में रंगरूटों को एक स्क्वाड के जवानों का एक लाइन में होना बहुत अच्छा होता है जिससे स्क्वाड के सभी जवान शिक्षक को उस समय तक ठीक से देख सकें जब तक वे कवायद की सारी बातें न सीख जाएं। कवायद की सारी हरकतें सीख लेने के बाद उनसे दो लाइनों में और अन्त में तीन लाइनों में कवायद की कार्यवाही की जा सकती है।

खंड–1

स्क्वाड या प्लाटून बनाना

1. स्क्वाड या प्लाटून बनाने का सबसे सही तरीका यह है कि प्रशिक्षण ''दाहिने दर्शक को बुलाएं''। ''दाहिना दर्शक'' (अगली लाइन को दाहिनी ओर का जवान या तैनात कोई भी जवान) प्रशिक्षण के पास जा कर सावधान की मुद्रा में या यदि हथियार बन्द हो तो कंधे शस्त्र में, उसके सामने खड़ा हो जाए। इसके बाद प्रशिक्षक जवान को विश्राम की स्थिति में खड़ा होने के लिए कहे और कमान शब्द बोले।

2. **''स्क्वाड या प्लाटून लाइन बन''**

   यह आदेश मिलने पर सभी जवान चुस्ती से दर्शक की बांयी ओर तीन लाइनें बनाते हैं और विश्राम की स्थिति में खड़े हो जाते हैं।

3. जवानों के बीच पूरे एक हाथ की मुट्ठी बन्द करके फैलाने जितना फासला रहे। दो लाइनों के बीच एक कदम अर्थात् 30 इंच का फासला रहे। जवानों को लाइन बनाते समय दाहिनी ओर से सजना चाहिए तथा आगे से शुरू करके पीछे की तरफ कवर करना चाहिए।

टिप्पणी : सेक्शन कमांडर की स्थिति : एक संगठित प्लाटून में तीन लाइनों में से प्रत्येक लाइन एक सेक्शन होती है तथा सेक्शन कमाण्डर अपने सेक्शन की दाहिनी ओर होता है। यदि सेक्शनों की उप सेक्शनों में बांटा जाए तो उप सेक्शनों के कमाण्डर अपने उप सेक्शनों के दाहिनी ओर की लाइन में होते हैं।

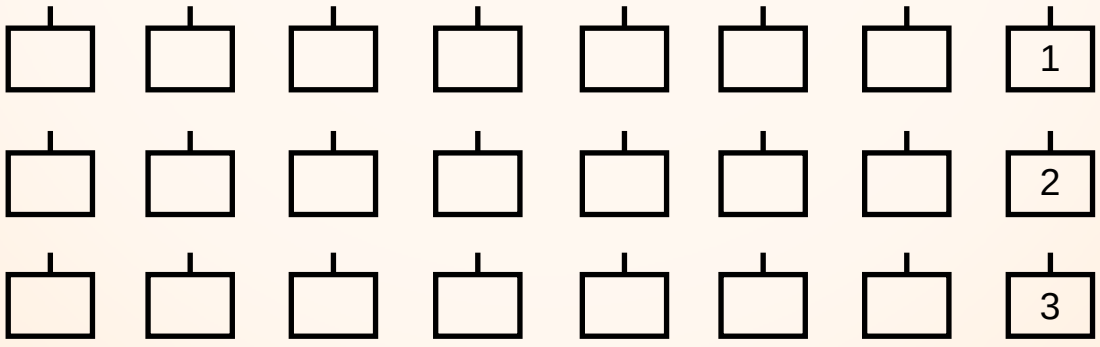

रेखा चित्र–1

खंड–2

खाली फाइल (ब्लैंक फाइल)

1. यदि जवानों की कुल संख्या इतनी हो कि इसे पूरी पूरी फाइलों में न खड़ा किया जा सकता हो तो एक खाली फाइल (तीन जवानों की अधूरी फाइल) बनाई जाएगी। खाली फाइल बाएं से दूसरी फाइल के बीच वाली लाइन में होगी जैसा कि चित्र–2 में दिखाया गया है।

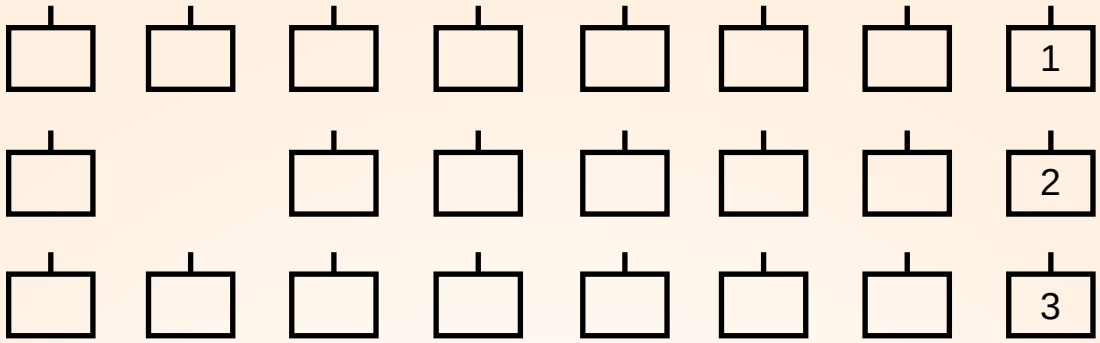

रेखा चित्र–2

2. यदि दो जवान कम हों तो पिछली लाइन में भी दूसरी खाली फाइल बनाई जाएगी जैसा कि चित्र–3 में दिखाया गया हैः–

3. सामने के रैंक में खाली फाइल (खाली स्थान) कभी न बनाई जाए। इसलिए जब चित्र–3 में दिखाये गये प्लाटून को पीछे मुड़ने के लिए कहा जाए तब पिछली लाइन जो अब आगे होगी उसका एक जवान आगे आएगा और खाली स्थान भरेगा।

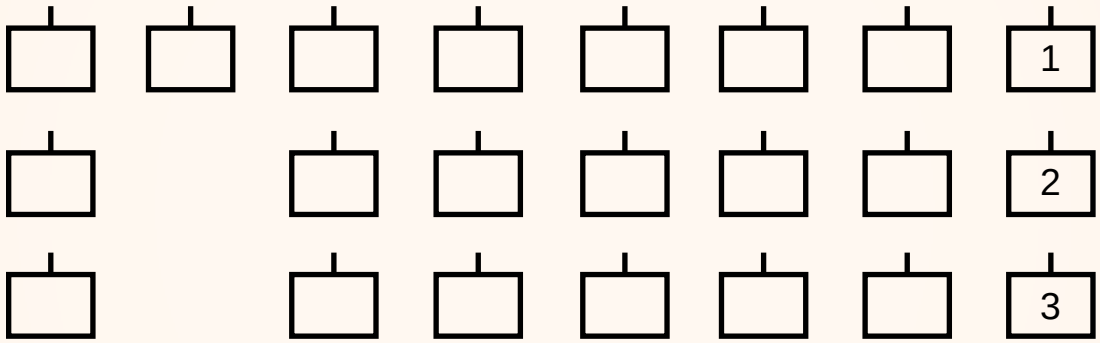

रेखा चित्र–3

सजना (ड्रेसिंग)

1. ''दाहिने सज''

दाहिनी ओर खड़े जवान को छोड़कर सभी जवान 15 इंच का एक छोटा कदम आगे बढ़ाएं, कुछ देर रुक तथा अपने सिर और आंखों को चुस्ती से दाहिनी ओर मोड़ें और इसके साथ–साथ मुट्ठी बन्द करके अपना दाहिना हाथ (यदि दाहिने हाथ में शस्त्र हो तो बांया हाथ) फैलायें। इस हाथ के टखने दाहिने जवान के कंधे को छूए। इसके बाद छोटे तेज कदमों से चलकर लाइन में तब तक सजता रहे जब तक उसे अपने से अगले व्यक्ति के चेहरे का निचला हिस्सा न दिखाई देने लगे। उक्त कार्रवाई करते समय यह सावधानी बरती जाए। कंधे ठीक स्थिति में अपने स्थान पर रहें तथा शरीर को तना हुआ रखा जाए।

2. ''सामने देख''

सिर और आंखें चुस्ती से सामने की ओर मोड़ी जाएं बाजू को अपनी अपनी साइड में तेजी से गिराया जाए तथा जवान सावधान की स्थिति में लौट आएं।

3. सजने के बारे में सामान्य टिप्पणी

परेड करने वाले जवानों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे मार्चिंग करते समय अपनी सीध में रहें तथा ''थम'' का आदेश मिलने पर अपने आप अपनी सीध में आ जाएं। इसका तात्पर्य यह है कि जिस

क्षण प्लाटून को थमने का आदेश मिल जाए उसी क्षण प्रत्येक जवान अपनी दाहिनी या बांयी ओर देखें और अपनी सीध ठीक करे, कवर करे तथा अपना सिर एक दम फिर सामने करे तथा सावधान की स्थिति में खड़ा रहे। यह कार्य बिना किसी आदेश के करे। इसके लिए हाथ नहीं उठाया जाता है। हाथ केवल तभी उठाया जाता है जब ''दाहिने या बाएं सज'' आदेश दिया जाता है।

टिप्पणी : प्रारंभिक प्रशिक्षण की अवधि में जवानों को सही फासले के बारे में जानने के लिये हाथ उठाने की अनुमति दी जा सकती है। सजते समय इस बात का ध्यान रखा जाए कि सजने की कार्रवाई केवल तीन या चार सेकण्डों में पूरी हो जानी चाहिए।

खंड–4

चलने की कवायद

1. मार्चिंग के बारे में सामान्य टिप्पणी और निश्चित दिशा

परेड के मैदान में की जाने वाली कवायद के लिए यह माना जाता है कि प्लाटून के लिए एक ''दिशा निश्चित है'' ''दाहिना गाइड'' (सामने की लाइन में खड़ा दाहिना जवान जो सामान्यतः सं. 1 सेक्शन कमाण्डर होता है) महत्वपूर्ण व्यक्ति होता है। जब प्लाटून दाहिने गाइड के साथ लाइन में हो तब ''प्लाटून सामने होता है'' या ''आगे बढ़ रहा होता है।'' जब प्लाटून को पीछे मुड़ने के लिये कहा जाता

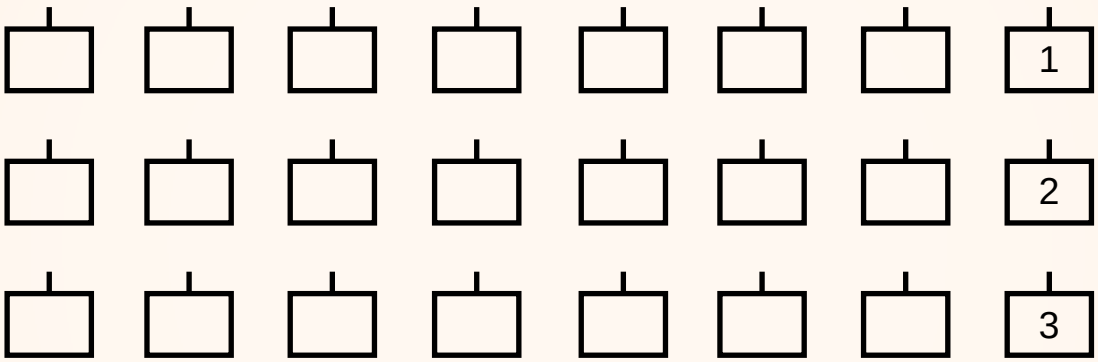

रेखा चित्र–4

पीछे लौटने की स्थिति

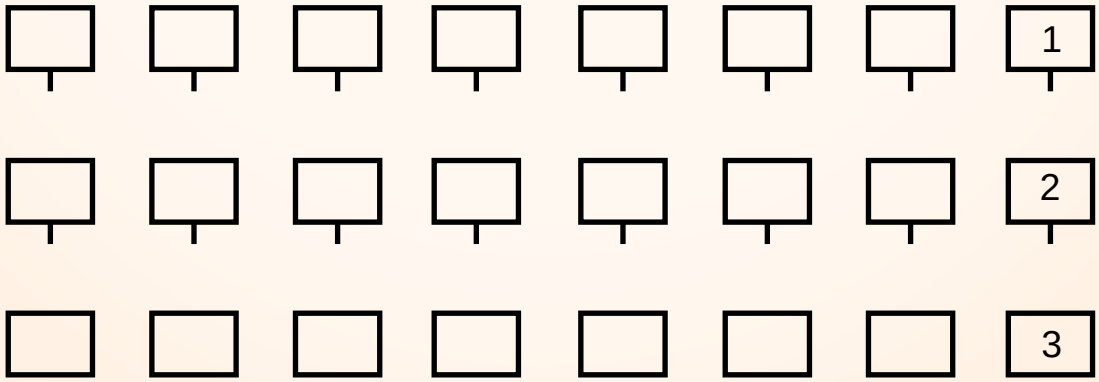

रेखा चित्र–5

है (दाहिना गाइड पिछली लाइन की बांई फ्लैंक में होता है) तब प्लाटून अपने ''पीछे की ओर मुंह करके'' खड़ा होता है या ''पीछे लौटने'' की स्थिति में होता है। ये शब्द ''दाहिने गाइड'' की स्थिति और

मूल प्रथम लाइन को ध्यान में रखकर प्रयुक्त किये जाते हैं, मैदानी कवायद की किसी विशिष्ट साइड को ध्यान में रखकर प्रयुक्त नहीं किये गये हैं।

खंड–5

प्लाटून लाइन में और तीनों – तीन में

प्लाटून कवायद के मैदान में सिर्फ दो तरह की कवायद करती है:

(क) प्लाटून लाइन सामने या पीछे मुँह करके तीन रैंकों में खड़ी होती है। जैसा की चित्र 4 और 5 में दिखाया गया है।

(ख) तीनों–तीन में जब प्लाटून को दाहिने या बाएं मोड़ दिया जाता है, जैसा कि चित्र 6 और 7 में दिखाया गया है।

खंड–6

मार्च करते समय सजना

जब मार्च करने का आदेश दिया जाता है तब सामान्यतः सीध की दिशा भी निर्धारित कर दी जाती है और सबसे अगले रैंक का आखिरी जवान जिसका उल्लेख हो चुका है, दिशा और कदम के लिए जिम्मेदार होता है। वह ''गाइड'' कहलाता है तथा उसे सीधे सामने देखना चाहिए शेष प्लाटून उसकी सीध में खड़े हो तथा ठीक ढंग से एक दूसरे के पीछे चले।

निर्देश फ्लैंक– यदि कोई विशिष्ट कारण न हो तो प्लाटून लाइन में मार्च करते समय दाहिने से आगे बढ़ती है अर्थात् (दाहिना गाइड) जब प्लाटून वापस लौटती है (मूल दाहिनी लाइन से) तब वह बाएं गाइड से लौटती है। जब तीनों–तीन दाहिनी ओर चलती

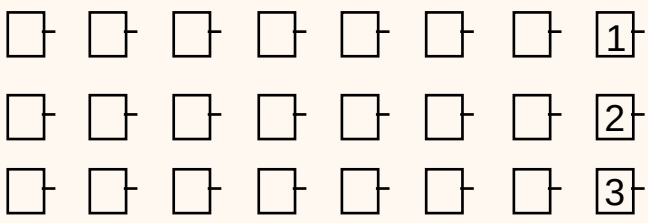

रेखा चित्र–6

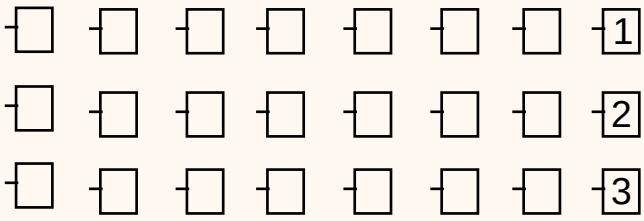

रेखा चित्र–7

है तब बाएं से मार्च करती है (दोबारा दाहिने गाइड से) तथा बांयी ओर तीनों–तीन चलते समय दाहिने से मार्च करती है।

यदि प्लाटून थम की स्थिति के बाद पहली बार चल रही हो तब सामान्यतः आदेश के साथ ही सजने की दिशा बता दी जाती है। किन्तु जब प्लाटून को चलते–चलते कवायद करवायी जा रही हो तो यह माना जाता है कि प्लाटून को दिशा मालूम हो जैसा कि पहले बताया जा चुका है और प्रशिक्षण प्राप्त प्लाटून को बार–बार याद दिलाने की आवश्यकता नहीं है।

खंड–7

लाइन में मार्च करना

1. **''दाहिने से तेज–चल''–** पहले ''प्लाटून आगे बढ़ेगा'' सतर्क करने वाल कमान शब्दों का प्रयोग किया जाए।

यह आदेश प्राप्त हाने पर प्लाटून दाहिने से सीध लेती हुई बाएं कदम से आगे बढ़ेगी।

मार्च करने के बारे में विशेष ध्यान दें।

मार्चिंग आरंभ करते समय पहला कदम तेज तथा 30 इंच का हो। इसके लिये एक मिनट में 120 कदम की रफ्तार से चलें। सिर तना हुआ आँखें सामने की तरफ, हाथ सीधे स्वाभाविक मुड़े हुये हों तथा कंधे के पास से प्राकृतिक रूप से झूलते हुए हों, बाजू सामने की तरफ हिलने चाहिए न कि शरीर के आड़े तरफ, मुट्ठियां कुछ बन्द हों। कवायद की ताल जवानों द्वारा समय पर एक साथ उठाये गये कदमों तथा हाथों को सीधे सामने हिलाने के ऊपर निर्भर करती है।

2. प्लाटून पीछे लौटेगा– ''पीछे मुड़''

प्लाटून दाहिने से पीछे मुड़े और दाहिने पैर से आगे बढ़े तथा बाएं से सीध में आए। पीछे मुड़ने का सही तरीका नीचे बताए अनुसार हैः– जैसे ही बांया पैर जमीन पर आता है आदेश सुनाया जाता है। इसके बाद जवान दाहिने पैर से एक पूरा कदम आगे बढ़ें तीन बार ताल (बांया/दाहिना/बांया) करते हुए पीछे मुड़े तथा अंत में दाहिना पैर आगे बढ़ाएं।

3. सही कदम पर आदेश देना

जवान चुस्ती से कवायद करें इसके लिये सही कदम पर आदेश दिये जाने चाहिए। इसके लिये अभ्यास आवश्यक होता है। इसका तात्पर्य यह है कि जैसे ही बांया पैर दाहिने पैर के पास से गुजरे अर्थात् जमीन पर आ रहा हो तथा जवानों को आदेश मिल जाना चाहिए। इससे इस बात का पता चलता है कि यदि प्रशिक्षक अपनी प्लाटून से बहुत दूर हो तो आदेश उस स्थिति की अपेक्षा थोड़ा पहले दिया जाए जबकि प्रशिक्षक अपनी प्लाटून के नजदीक हो। थोड़ा सा अभ्यास करने पर प्रशिक्षक सही कदम पर आदेश दे सकेगा इससे जवान चुस्ती से एक साथ कवायद कर सकेंगे।

(ख) खाली फाइल : ''पीछे मुड़'' का आदेश देते समय ''पीछे'' और ''मुड़'' शब्दों के बीच में कुछ समय दिया जाता है। यदि दो खाली फाइलें हों तो सामने की लाइन का जवान ''पीछे'' शब्द सुनते ही दो बार कदम ताल करें और ''मुड़'' आदेश प्राप्त होने पर मुड़े। यह कार्रवाई ठीक ढंग से करने पर पिछली लाइन का जवान कमान शब्दों का उच्चारण पूरा होने पर जैसे ही मुड़ेगा वह सामने की लाइन में आएगा।

4. प्लाटून आगे बढ़ेगा – ''पीछे मुड़''

जवान सामान्य ढंग से पीछे मुड़ेंगे। इस कमान से प्लाटून अपनी पहले वाली स्थिति में आ जाएगा। संबोधन शब्द का ध्यान रखें। इस संबंध में एक बात का ध्यान और रखा जाए कि यदि प्लाटून को किसी स्थान तक या अफसर के पास ले जाया जा रहा हो तो प्लाटून का रुख सामने की ओर (दाहिना–गाइड दाहिनी पार्श्व में) हो। इसमें यह गलती होने की संभावना होती है कि पिछली लाइन आगे हो जाती है।

खंड–8

एक फ्लैंक को लाइन बदलने के लिए दिशा निर्देश देना

1. इस हरकत का प्रयोग दाहिने या बाएं को दिशा बदलते समय होता (अर्थात् 90 अंश के कोण पर मुड़ते समय) है।

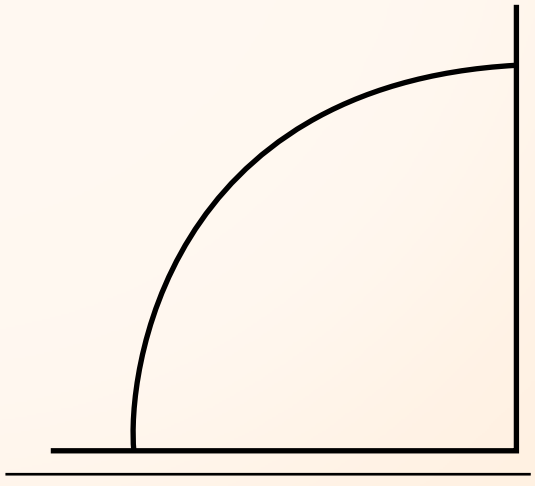

रेखा चित्र–8

किसी लाइन को आधा दाहिने या बाएं मोड़ने के लिए भी इसका प्रयोग हो सकता है। (अर्थात् 45 अंश

पर मुड़ने के लिए)। ऐसी स्थिति में सामान्य आदेश से पहले ''थम'' आदेश दिया जाता है।

2. यह ''थम'' और ''मार्च'' दोनों स्थितियों में हो सकता है। इसका अभ्यास पहले–पहले आधा मुड़ कर करना बेहतर होगा।

(क) ''थम'' पर लाइन बदलने के लिए दिशा निर्देश देना– ''दाहिने दिशा बदल, दाहिने बन''

(i) दाहिना दर्शक पूरी तरह दाहिनी ओर मुड़ता है तथा शेष सामने का रैंक आधा दाहिने मुड़ता है। बाकी जवान उसी स्थिति में खड़े रहते हैं।

''तेज चल''

(ii) दाहिना गाइड तीन कदम आगे बढ़ता है और बाद में कदम ताल करता है। बाकी बचा हुआ अगला रैंक दाहिने से सीध लेकर घूमकर अपने स्थान पर आ जाता है। दूसरी और तीसरी रैंक के जवान की लाइन के पीछे चल कर अपनी अपनी जगह पर आ जाते हैं तथा पूरा प्लाटून तब तक कदम ताल करता है जब तक अगला आदेश नहीं मिल जाता।

रेखा चित्र 9 देखें

टिप्पणी : (1) ''थम कर'' इस आदेश से पहले दाहिने बन का संबोधन दिया जाता है। तो इसका अर्थ यह है कि जवान यह हरकत पूरी करने के बाद थम की स्थिति में आयेंगे।

(2) ''बाएं दिशा बदल–बाएं बन–तेज चल'' : यह आदेश तब दिया जाता है जब बांयी तरफ लाइन बनानी हो। सामान्यतः इसमें वही हरकतें हैं बांयी ओर का जवान पूरी तरह बांयी ओर मुड़ता है आदि। जवान अपनी स्थिति में आने पर बाएं से सीध लेते हैं।

(ख) चलते समय लाइन की दिशा बदलना

इसमें प्लाटून चल रही होती है इसलिये ''तेज चल'' बोलने की आवश्यकता नहीं होती चाहे अन्य कमान शब्द वही हों। इसकी हरकतें ऊपर बताये अनुसार ही होती है। यदि प्रशिक्षक यह चाहता हो कि यह हरकत पूरी होने के बाद लाइन थम जाए तो ''थम कर'' आदेश से पहले ''दाहिने बन'' आदेश दिया जाए।

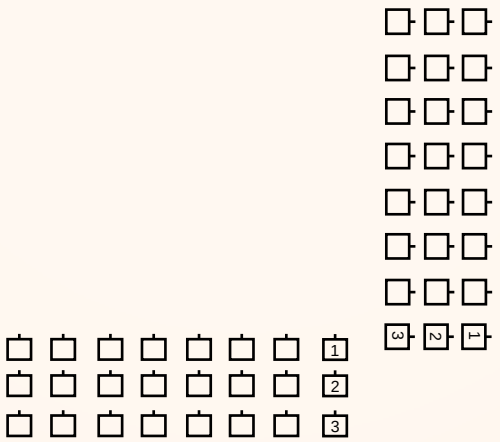

रेखा चित्र–9

3. ''दाहिने दिशा बदल–दाहिने बन''

यहां ''बन'' इस कवायद का आखिरी आदेश है। यह आदेश मिलने पर दाहिना दर्शक अपनी दाहिनी ओर मुड़ कर तीन कदम मार्च करे (अपनी पिछली लाइन के जवान के लिए स्थान बनाने के लिए) ओर कदम ताल करे तथा उसके पीछे वाले दूसरी और तीसरी लाइन के जवान घूमते हुए उसका अनुसरण करें। सामने की लाइन के बाकी जवान आधा दाहिने मुड़कर दाहिने दर्शक की लाइन में खड़े होकर सजें। अन्य दो लाइनें इनका अनुसरण करें और दाहिनी और से सजें।

विशेष ध्यान दें:– (1) जैसे ही दाहिना पैर बाएं पैर के पास से गुजरे उसी समय कमान देने का सबसे सही समय है। इसके बाद जवान सामान्य तरीके से दाहिने मुड़े।

(2) बाएं से सीध लेकर भी इसी प्रकार की हरकत की जा सकती है।

4. ''प्लाटून आगे बढ़''

जो जवान कदम ताल में चल रहे हों उन्हें फिर से आगे लाने के लिये यह आदेश जरूरी होता है। अब प्लाटून नई दिशा की ओर जो मूलतः दाहिने बाजू थी आगे बढ़ेगी।

खंड–9

तीनों–तीन में मार्च करना

1. जब प्लाटून परेड ग्राउन्ड में किसी दिशा की ओर तीन लाइनें बना कर मुड़ती है तब ''तीनों–तीन'' कहा जाता है। ''तीनों–तीन में दाहिने चलेगा, दाहिने मुड़।''

यह आदेश मिलने पर प्लाटून सामान्य तरीके से दाहिनी ओर मुड़े।

''बाएं से तेज चल''

यह आदेश मिलने पर प्लाटून बाएं पैर को आगे लाए तथा बांयी ओर का सबसे आगे का जवान (दाहिना दर्शक) कदम और दिशा बनाये रखे।

विशेष ध्यान दें :– तीनों–तीन में बांयी ओर भी चल सकते हैं। तब दाहिनी ओर (बाएं दर्शक) से सीध ली जाती है।

2. ''तीनों–तीन में बाएं चलेगा–पीछे मुड़''

यह आदेश मिलने पर प्लाटून सामान्य तरीके से पीछे मुड़ता है तथा विपरीत दिशा में मार्चिंग करना जारी रखता है। इस स्थिति में दाहिनी ओर (मूल दिशा) से सजने की सीध ली जाती है।

खंड–10

चलती हुई प्लाटून की तीनों–तीन से लाइन बनाने के लिये मोड़ना

यदि प्लाटून तीनों–तीन में मार्च कर रही हो तो इसका अर्थ यह है कि जहां तक सामने की तरफ ''नियत स्थान'' का संबंध है यह किसी फ्लैंक की ओर जा रही है। अतएव ''दाहिने मुड़'' और ''बाएं

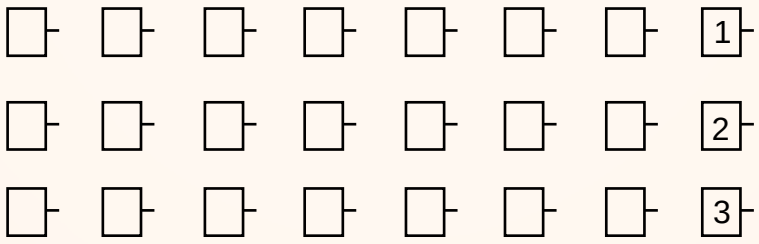

रेखा चित्र–10

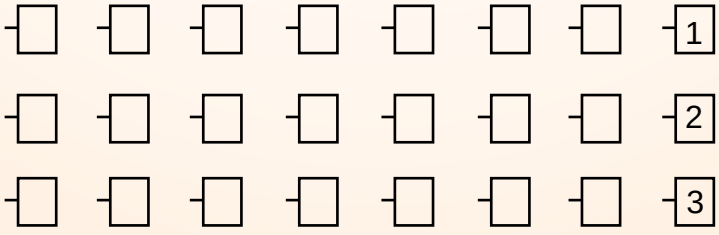

रेखा चित्र–11

मुड़'' के आदेशों से पहले सतर्क करने वाले नीचे दिए गये सही आदेश दिए जाएंः–

(क) स्क्वाड या प्लाटून दाहिनी ओर जा रही है यह मान कर–

''प्लाटून आगे बढ़ेगा – बाएं मुड़''

इस आदेश से जवान ऐसी लाइन में आ जाएंगे, जिसमें उनका चेहरा सामने की ओर होगा। (इसमें दाहिनी ओर से सीध ली जाए क्योंकि प्लाटून का दाहिना दर्शक दाहिनी ओर होता है)।

''प्लाटून पीछे लौटेगा – दाहिने मुड़''

इस आदेश पर प्लाटून पीछे की तरफ मुंह करके लाइन में आ जाए। (इसमें बाएं से सीध ली जाती है)।

(ख) यह मानकर कि स्क्वाड या प्लाटून बांयी ओर जा रही है–

''प्लाटून आगे बढ़ेगा – दाहिने मुड़''

यह आदेश मिलने पर प्लाटून सामने की ओर मुंह करके लाइन में आ जाए। (इसमें दाहिने दर्शक से सीध ली जाती है)

''प्लाटून पीछे लौटेगा – बाएं मुड़''

यह आदेश मिलने पर प्लाटून का रुख पीछे की ओर होगा और प्लाटून लाइन में होगा। (इसमें बाएं दर्शक से सीध ली जाएगी)

खंड–11

चलते हुए लाइन में तीनों–तीन में मुड़ना

इसमें भी वही हरकतें की जाती हैं जो पिछली खंडों में दी गई है। चूंकि ये हरकतें चलते हुए होती है इसलिए ''तेज चल'' आदेश देना आवश्यक नहीं है। प्लाटून लाइन में चल रही हो या लौट रही हो तो यह हरकत की जा सकती हैं किन्तु ''सामने के नियत भाग'' के अनुसार अलग–अलग आदेश दिये जाएं।

(क) यदि प्लाटून आगे बढ़ रही हो तो–

''तीनों–तीन में दाहिने चलेगा–दाहिने मुड़''

''तीनों–तीन में बाएं चलेगा–बाएं मुड़''

(ख) यदि प्लाटून लौट रही हो तब भी उक्त आदेश ही दिया जाएगाः

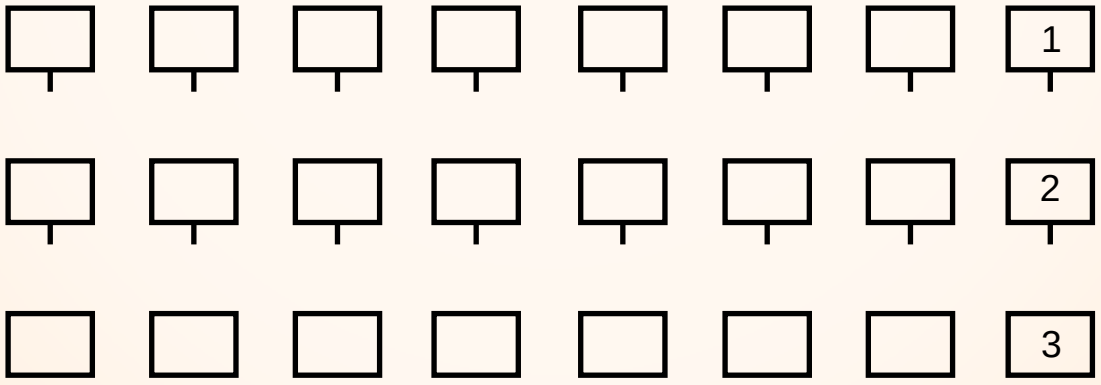

रेखा चित्र–12

''तीनों–तीन में बाएं चलेगा – दाहिने मुड़'' के आदेश प्लाटून को मूल फ्लैंक में मोड़ने के लिये दिया जाए।

''तीनों–तीन में दाहिने चलेगा – बाएं मुड़'' यह आदेश प्लाटून को मूल दाहिने फ्लैंक की ओर मोड़ने के लिए दिया जाए।

खंड–12

तीनों–तीन में घूमना

यह आदेश मिलने पर तीनों–तीन टुकड़ी के सबसे अगले भाग का भीतरी जवान एक चौथाई

गोलाई जिसका अर्धव्यास चार फीट होगा, में घूमेगा तथा छोटे कदम लेगा। बाकी जवान भी लम्बा कदम लेकर उसकी सीध में आ जाएंगे ताकि उससे सीध रखी जा सके। प्रत्येक फाइल का अंदरवाला जवान अपना सिर आंखें बाहर वाले जवान की ओर मोड़ेगा। बाकी जवान अपने सिर और आंखें अन्दर वाले जवान की ओर मोड़ेंगे। ज्यों ही एक चौथाई गोलाई घूम ली जाए सब जवान अपने सिर और आंखें सामने कर देंगे और नई दिशा की ओर चलेंगे। बाकी फाइल अपने कदम और रफ्तार ठीक रखकर आगे वाले जवानों से कदम मिलाएंगे।

विशेष ध्यान दें:– (1) घूमने की सही कार्रवाई वही होगी जिसमें प्रत्येक टुकड़ी एक ही केन्द्र बिन्दु के आस–पास और सीध में आ जाए तथा कवरिंग बनाये रखी जाए। यदि वह कार्रवाई सुस्ती से की जाए तो प्लाटून का रुख सीधा नहीं रहेगा दाहिने या बाएं हो जाएगा।

(2) यदि शिक्षक प्लाटून को थोड़ा समकोण से कम ही मोड़ना या घुमाना चाहता हो तो इसके लिए वह जब भी चाहे आगे बढ़ का हुक्म देगा।

खंड–13

तीनों–तीन से एक ही दिशा में लाइन बनाना

यह कार्रवाई परेड में बहुत उपयोगी होती है। इसका उद्देश्य तीनों–तीन से उसी दिशा में लाइन बनाना होता है जिसमें प्लाटून मार्च कर रहा हो। यदि प्लाटून तीनों–तीन में अपनी दाहिनी ओर आगे बढ़ रही हो तो कमान इस प्रकार होगा :

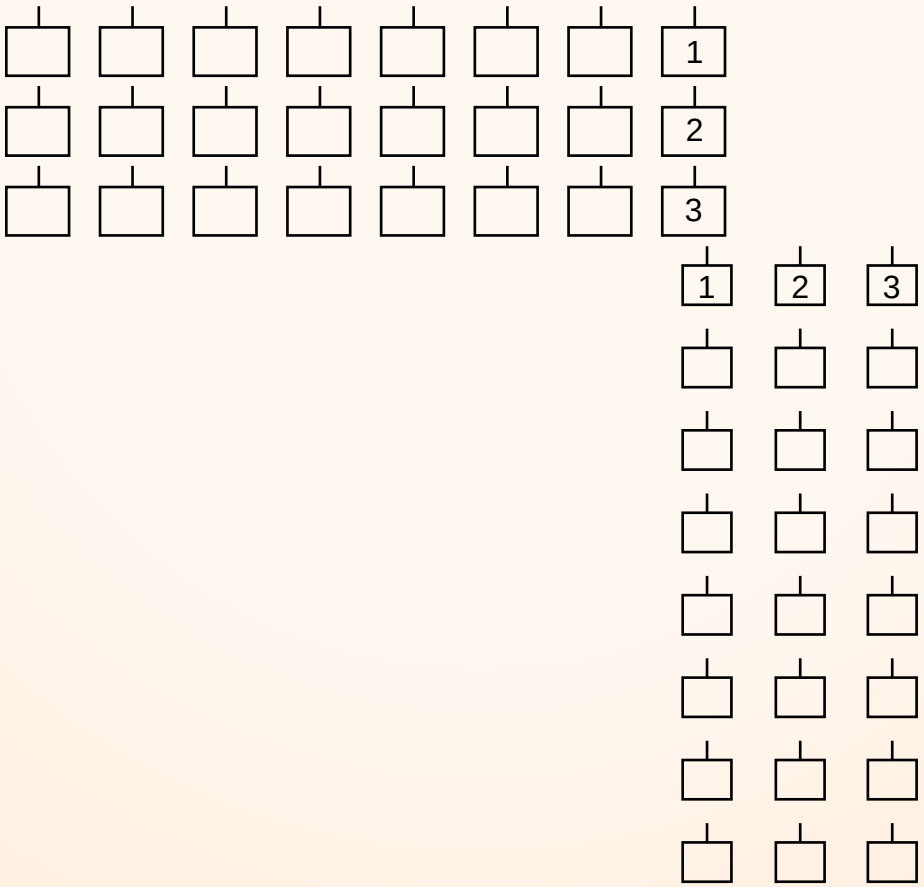

रेखा चित्र–13

''बाएं को स्क्वाड या प्लाटून बना''

यह आदेश मिलने पर बांयी ओर का जवान (दाहिना गाइड) तीन कदम आगे बढ़े और कदम ताल करे। उसकी दाहिनी ओर के जवान (अन्य टुकड़ी कमाण्डर) उसके पीछे चलें तथा सही फासले पर कवर करें। बाकी स्क्वाड या प्लाटून आधा बाएं मुड़कर अपनी तीन रेंक की स्थिति में आने तक मार्च करे, कवर करें और दाहिने दर्शक की सीध में आ जाए पूरा स्क्वाड या प्लाटून कदम ताल करे तथा यह सुनिश्चित करे की सीध ठीक है और अगले आदेश की प्रतीक्षा करे।

विशेष ध्यान दें:– यदि यह कार्यवाई पूरी होने पर जवानों को ''थम'' का आदेश देना हो तो आदेश से पहले ''थमकर'' कहना होगा। तब बांयी ओर का आदमी (दाहिना दर्शक) तीन कदम चलने के बाद ''थम'' जाए। इसी प्रकार बाकी जवान भी अपनी जगह पहुंचने पर थम जाएं।

3. दाहिने को स्क्वाड या प्लाटून बना

इसमें तीसरी (पिछली) लाइन सामने आ जाएगी वह आदेश उसी स्थिति में दिया जाना चाहिए जब प्लाटून या

स्क्वाड को जिस दिशा में वह पहले से चल रही हो उससे विपरीत दिशा में लाइन में खड़ा करना हो। इसके बाद पीछे मुड़, का आदेश दिया जाए इससे सामने की लाइन अपनी सही पोजीशन में आ जाएगी।

विशेष ध्यान दें– (1) यदि स्क्वाड या प्लाटून तीनों–तीन में बांयी ओर मार्च कर रही हो तो इससे विपरीत आदेश दिया जाए उदाहरणार्थ ''दाहिनी ओर स्क्वाड या प्लाटून बना'' आदेश देने पर सामने की लाइन आगे आ जाएगी।

(2) जब तक कोई विपरीत आदेश न दिया जाए प्लाटून जिस धुरी से – घूमती है वह जिस फ्लैंक में हो उससे सीध ली जाए।

(3) यह कार्यवाई पहले ''थम'' की स्थिति में तथा बाद में मार्च करते समय सिखाई जाए। यह कार्यवाई थम पर करते समय (जिसमें दाहिना दर्शक आगे होता है) जैसे ही ''बाएं को स्क्वाड बना'' आदेश मिले तीनों–तीन की आगे वाली फाइल के बांयी ओर के जवान (अर्थात् स्क्वाड या प्लाटून का मूल दाहिना दर्शक) को छोड़कर पूरा स्क्वाड या प्लाटून आधा बाएं मुड़े और खड़ा रहे। इसके बाद ''तेज चल'' का आदेश दिया जाए। यह आदेश मिलने पर दर्शक (जो मुड़ा न हो) तीन कदम मार्च कर बाद में कदम ताल करे। सामने की लाइन के बाकी जवान दाहिने दर्शक से सजते तथा घूमते हुए गाइड की बांयी ओर खड़े हो जाएं (2) और (3) लाइन (अर्थात् बीच वाला और पिछला रैंक) मार्च करते हुए घूमकर अपने अगली लाइन के जवान के पीछे खड़ी हो जाए (पूरा प्लाटून या स्क्वाड तब तक कदम ताल करता रहे जब तक नया आदेश नहीं मिल जाता। यदि दाहिनी ओर से फार्मेशन हुई हो तो आगे वाली लाइन का दाहिना गाइड तीन कदम आगे बढ़ेगा तथा पिछली लाइन सामने आ जाएगी।)

(4) मार्च या थम पर यह फार्मेशन करते समय तीनों–तीन की प्रत्येक फाइल एक साथ नई स्थिति में आ जाए तथा एक कदम ताल या थम करे।

अध्याय XVIII

दो लाइनें बनाना

बहुधा स्ट्रीट लाइनिंग और दंगा कवायद (रायट ड्रिल) के उद्देश्य से दो लाइनें बनाना जरूरी होता है। दो लाइनें बनाने के लिये केवल बीच वाली लाइन को चलना होता है। दो लाइनें बनाने से पहले स्क्वाड सजेगा तथा गिनती कार्रवाई जाएगी।

खंड–1

तीन लाइनों से दो लाइन बनाना

1. "दो लाइन बना"

पहली हरकत – इसमें बीच वाली लाइन बाएं पैर से बांयी ओर को 24 इंच का बगली कदम ले।

दूसरी हरकत – अब विषम संख्या पर खड़े जवान अपने दाहिने पर से 30 इंच का पूरा कदम लेकर आगे बढ़ें, इसी प्रकार सम संख्या पर खड़े जवान अपने दाहिने पैर को पूरे 30 इंच पीछे ले जाएं।

तीसरी हरकत – बीच वाली लाइन फिर से सावधान की स्थिति में आ जाए – विषम संख्या पर खड़ा जवान सामने की लाइन के फासले में आ जाएं और सम संख्या पर खड़े जवान पिछली लाइन के फासले में आ जाएं।

2. यदि बीच वाली लाइन में खाली फाइल हो तो उस लाइन का बांया जवान ऊपर दी गई हरकत से विपरीत हरकत करेगा अर्थात् यदि वह विषम संख्या पर खड़ा है तो सम संख्या पर खड़े जवान के समान हरकत करेगा और यदि सम संख्या पर खड़ा है तो विषम संख्या वाले जवान के समान हरकत करेगा। यदि किसी स्क्वाड में सामने की लाइन में समसंख्या वाला जवान खड़ा हो तो खाली फाइल में बीच की पिछली लाइन का जवान न हो तो बीच वाली लाइन का बांया जवान सम संख्या वाले जवान द्वारा की जाने वाली हरकत के समान कार्रवाई करेगा।

सामान्य गलतियां

(i) बीच वाली लाइन के जवानों को अपनी सही संख्या न मालूम होना,

(ii) तीन लाइनों में सही फासला न होना जिससे बीचवाली लाइन के जवान के लिए आने की जगह न होना। इसको ठीक करने के लिए हरकत शुरू करने से पहले जवानों को "दाहिने सज" का आदेश दिया जाना चाहिए।

(iii) पहली हरकत में बाएं पैर को पूरी तरह से बांयी ओर न ले जाना। इसके परिणामस्वरूप जवानों का आपस में टकराना तथा ठीक प्रकार से कवर न करना।

(iv) दूसरी हरकत में पूरी तरह आगे न पहुंच पाने के कारण नयी सही लाइन में न पहुंच पाना।

3. **"दो लाइन, में, दाहिने सज":–** इसमें हाथ के फासले के बिना होने वाली कवायद को छोड़कर सामान्य कवायद की हरकतें की जाएं। लाइनों में प्रत्येक जवान के बीच 24 इंच का फासला हो तथा पिछली लाइन सामने की लाइन से पीछे 30 इंच के दो कदमों के फासले पर रहे।

खंड–2

दो लाइनों से तीन लाइनें बनाना

1. "तीन लाइन बना":– यह आदेश मिलने पर मूलतः बीचवाली लाइन के जवान नीचे बताए अनुसार अपनी मूल स्थिति में आ जाएं:–

पहली हरकत– यदि पहली लाइन में हो तो जवान बाएं पैर को 30 इंच के एक कदम के बराबर पीछे ले जाएं तथा पीछे की लाइन के जवान बाएं पैर को 30 इंच के एक पूरे कदम के बराबर आगे बढ़ाएं।

दूसरी हरकत – इसमें सभी संबंधित जवान दाहिने पैर से 24 इंच का एक बगली कदम लें।

तीसरी हरकत – बीच वाली लाइन के जवान फिर से सावधान की स्थिति में आ जाएं।

2. "तीन लाइन में दाहिने सज":– इसमें एक हाथ के फासले पर सीध ली जाएगी।

सामान्य गलतियां

दूसरी हरकत में दाहिने कदम को पूरी तरह 24 इंच न ले जाने के कारण कवरिंग ठीक न हो पाना।

अध्याय XIX

एक फाइल में मार्च करना

बहुधा एक स्क्वाड को तीन लाइनों में से एक लाइन बनाने की जरूरत पड़ जाती है। उदाहरणार्थ किसी इमारत में मार्च करते समय या किसी सकरे मार्च से गुजरते समय ऐसी जरूरत पड़ जाती है।

खंड–1

तीनों तीन में दाहिनी तरफ मुंह करके खड़े होने वाले ऐसे स्क्वाड का जिसमें सामने की लाइन बांयी ओर हो – एक फाइल में मार्च करना।

1. ''थम'' की स्थिति में होने पर

''बाएं से एक फाइल बना – तेज चल''

''तेज चल'' – आदेश मिलने पर अगली लाइन मार्च करेगी और बाकी दोनों लाइनें कदम ताल करेंगी। सामने की लाइन का आखिरी जवान जैसे ही बीच वाली लाइन के सामने के जवान के पास से गुजर जाए, बीच वाली लाइन सामने की लाइन के पीछे चले पिछली लाइन भी यही हरकत करे।

2. मार्च के दौरान

''बाएं से एक फाइल बना''

''बाएं'' आदेश मिलते ही बांयी टुकड़ी (सामने की लाइन) मार्चिंग शुरू कर देगी और बाकी दो लाइनें, (बीच वाली और पिछली) कदम ताल करेंगी जब लाइन का आखिरी जवान टुकड़ियों के दर्शकों के पास से गुजर जाए तब शेष दोनों लाइनें इसका अनुसरण करें।

''तीन लाइन बनाना''

3. थम की स्थिति में होने पर

''दाहिने थमकर तीनों–तीन बना–'' ''तेज चल'' ''तीनों–तीन'' आदेश मिलते ही सामने की लाइन स्थिर रहे और बाकी दोनों लाइनें आधा दाहिनी ओर मुड़ें।

''तेज चल'' आदेश मिलते ही बीच वाली और पिछली लाइनें सामने की लाइन के दाहिने तीनों–तीन बनाएं।

4. मार्च करते समय

''दाहिने पर तीनों तीन बन''

यह आदेश मिलने पर अगली लाइन कदम ताल करे और बाकी दोनों लाइनें सामने की लाइन की दाहिनी ओर तीनों–तीन बनाएं और कदमताल करें।

खंड–2

तीन लाइनों के स्क्वाड द्वारा आगे बढ़ने की दिशा में एक फाइल में मार्च करना।

1. थम की स्थिति में होने पर

''दाहिने से एक फाइल से आगे बढ़–तेज चल''

''दाहिने'' आदेश मिलने पर तीनों लाइनों के दाहिने दर्शक अपनी जगह स्थिर रहें और स्क्वाड के बाकी जवान आधा दाहिने मुड़े।

2. ''तेज चल'' आदेश मिलते ही सामने की लाइन का दाहिना दर्शक आगे बढ़े और इस लाइन के बाकी जवान उसका (दाहिने दर्शक का) अनुसरण करें। अन्य दो लाइनें (बीचवाली और पिछली) कदमताल करें। जब अगली लाइन का आखिरी जवान बीचवाली लाइन के दाहिने दर्शक के पास से गुजरे तब बीचवाली लाइन अपने दाहिने दर्शक के नेतृत्व में आगे बढ़े और सामने की लाइन का अनुसरण करे। पिछली लाइन भी ऐसा ही करे।

3. मार्च करते समय

''दाहिने से एक लाइन बना''

यह आदेश मिलने पर पूरा स्क्वाड कदम ताल करे और टुकड़ी के दर्शकों को छोड़कर सभी जवान आधा दाहिनी ओर मुड़ें। इसके साथ–साथ सामने की लाइन अपने दाहिने दर्शक के नेतृत्व में आगे बढ़े।

जब सामने की लाइन का आखिरी जवान बीच वाली लाइन के दाहिने दर्शक के पास से गुज़रे तब बीच वाली लाइन आगे बढ़े और सामने की लाइन का अनुसरण करे। इसी प्रकार पिछली लाइन बीच वाली लाइन का अनुसरण करे।

टिप्पणी : एक फाइल बनाते समय लाइनें उस बिन्दु से घूमेगी जहां से उनके अपने–अपने दर्शक घूमे थे।

तीन लाइनें बनाना

4. थम की स्थिति में होने पर

''बाएं थमकर लाइन बना – तेज चल''

''लाइन बना'' आदेश मिलते ही तीनों लाइनों के दाहिने दर्शक स्थिर रहेंगे तथा स्क्वाड के बाकी जवान आधा बांयी ओर मुड़ेंगे।

''तेज चल'' आदेश मिलते ही अगली लाइन का दाहिना दर्शक स्थिर रहे और सामने की लाइनों के बाकी जवान मार्च करके दाहिने दर्शक के बांयी ओर लाइन बनाएं।

बीच वाली और पिछली लाइन भी ऐसी कार्रवाई करे।

ये दोनों लाइने आगे बढ़ें और सामने की लाइन के पीछे लाइन बनाएं। इन लाइनों में उतना ही फासला और दूरी होगी जितना तीन लाइनों के स्क्वाड में होता है।

5. मार्च करते समय

''बाएं पर लाइन बना''

यह आदेश मिलने पर सामने की लाइन का दाहिना दर्शक कदम ताल करे और इसी लाइन के बाकी जवान उसकी बांयी ओर लाइन बनाएं अन्य दो टुकड़ियां जो कदमताल कर रही होंगी, आगे बढ़े और सामने की लाइन के पीछे लाइन बनाएं और अपना फासला और दूरी ठीक करें।

टिप्पणी : यदि आदेश से पहले ''थम'' कहा गया हो तो जवान अपनी सही स्थिति में पहुंचने के बाद थमे।

अध्याय XX

शस्त्र कवायद (आर्म्स ड्रिल)

खंड–1

सामान्य नियम – राइफल अभ्यास

1. शस्त्रों के साथ स्क्वाड द्वारा कवायद के मामले में निम्नलिखित हिदायतें दी जाएंगीः–

   (क) राइफल के मुख्य भागों के नामों की जानकारी के साथ–साथ हथियारों की देखभाल।

   (ख) निशाना लगाना और दागना।

2. यह आवश्यक है कि जब से रंगरूट को राइफल जारी की जाए तभी से उपर्युक्त हिदायतें देनी शुरू की जाएं ताकि प्रारंभिक अवस्था में ही गलत प्रशिक्षण को रोका जा सके।

3. जब एक जगह खड़े होकर राइफल कवायद की जाए तब समय का अनुमान रखते हुए, एक हरकत से दूसरी हरकत के बीच तेज चाल से दो कदम चलने पर लगने वाले समय के बराबर समय लिया जाए। जब कवायद मार्च करते हुए कार्रवाई की जाए तो प्रत्येक हरकत की जाए जब बांया हुई, जमीन की ओर झुकी हुई और कोहनी पीछे की ओर हो।

4. पूर्ववर्ती खंडों में वर्णित भिन्न–भिन्न मार्चों और कदमों में स्क्वाड को राइफल सहित कवायद करवाई जाएगी। खाली हाथ को प्राकृतिक रूप से हिलाया जाएगा।

5. राइफल अभ्यास में राइफल पर नियंत्रण न रखना एक बहुत ही आम दोष है। इसके कारण शरीर में फालतू गति होती है। राइफल अभ्यास में बाजू और कोहनी शरीर से सटे होते हैं। जब तक विशेष रूप से कहा न जाए तब तक सिर या शरीर को हिलाया नहीं जाए।

6. जैसा कि निरीक्षण के लिए किया जाता है, परेड पर राइफल और संगीन साफ और सुखाए हुए होने चाहिए।

7. शस्त्र कवायद पहले गिनती बोलकर और बाद में समय का अनुमान रख कर सिखाई जाए।

खंड–2

आदेश पर राइफल सहित लाइन बनाना

1. ''स्क्वाड लाइन बना''

जैसा पहले बताया जा चुका है, जवान दाहिने हाथ में खड़ी हालत में राइफल पकड़ कर लाइन बनाएंगे। राइफल दाहिनी तरफ, उसका कुन्दा ज़मीन पर लगा हुआ और कुन्दे का हत्था दाएं बूट के पंजे (अगले हिस्से) के साथ मिला हुआ हो। बाजू थोड़ा झुका हुआ हो और राइफल बाहरी बैंड या उसके पास पकड़ी जाए, हाथ का पिछला भाग दाहिनी ओर, अंगूठा जंघा के सामने, उंगलियां मिली हुई, जमीन की ओर झुकी हुई और कोहनी पीछे की ओर हो।

2. जब प्रत्येक जवान अपनी सिधाई ले (इस मामले में मुट्ठी बन्द करके अपना बांया हाथ सीधा करके दांयी ओर देखें) तक, जैसा कि खण्ड 4 में बताया गया है, विश्राम की मुद्रा में खड़ा हो जाए। जब कंधे से सिधाई ली जाए, तब दाहिना बाजू उठाया जाएगा।

खंड–3

सावधान

इसमें ''सावधान'' की सामान्य स्थिति में खड़ा हुआ जाता है अंतर केवल यह होता है कि दाहिने हाथ से राइफल दांई ओर सीधी खड़ी हालत में पकड़ी गई हो, अंगूठा राइफल के बांई ओर टांग को छूता हुआ हो, उंगलियाँ राइफल के दाहिनी ओर मिली हुई और जमीन की ओर झुकी हुई हों। हाथ का पिछला भाग दाहिनी और कलाई राइफल के ठीक पीछे हो, कुंदे का हत्था दाएं बूट के पंजे की सीध में हो और मैगज़ीन का रुख सामने की ओर हो।

टिप्पणी : प्रदर्शन करते समय शिक्षक अपनी बंदूक पर

संगीन चढ़ाएगा और यह दिखाएगा कि संगीन के कारण राइफल की लम्बाई बढ़ जाने पर किस प्रकार बाजू से और शरीर के बीच में नहीं, बल्कि बाजू के बाहर की ओर आ जाती है। यह एक प्राकृतिक स्थिति है और यही एक स्थिति है जिसमें, संगीन लगी होने पर भी सिधाई लेते समय संगीन कपड़ों में उलझेगी नहीं।

सामान्य गलतियां

(i) कुंदा गलत स्थिति में होना।

(ii) राइफल सीधी खड़ी न होना और स्विंग ठीक प्रकार से सामने की तरफ न होना।

(iii) हाथ का पिछला भाग सामने की ओर मुड़ा होना।

(iv) कलाई राइफल के पीछे न होना और कोहनी बगल से दूर होना।

(v) उंगलियां एक साथ मिली हुई न होना और राइफल के सामने की ओर मुड़ी हुई होना।

खंड–4

विश्राम और आराम से खड़ा होना

1. विश्राम

"**विश्राम**"– आदेश होने पर बांईं टांग बाईं तरफ ले जाओ ताकि दोनों सिरों के बीच लगभग 12 इंच की दूरी हो, बांया बाजू साथ रहे। दांया बाजू सीधा रखते हुए राइफल सामने की ओर बाहर निकालो। राइफल पर लगे हाथ और कुंदे का हत्था बिना हटाए या कंधा बिना झुकाए तेजी से दांया हाथ पूरी तरह बाहर की ओर फैलाओ और शरीर का भार दोनों पैरों पर बराबर रखो।

सामान्य गलतियां

(i) कुंदा हिलाना।

(ii) राइफल दांई या बांई ओर झुकाना।

(iii) बांया बाजू हिलाना।

(iv) राइफल के सामने के हिस्से पर उंगलियां रखना।

(v) दांए बाजू और बांई टांग के बीच तालमेल न होना।

2. "आराम से"

इस आदेश पर दांया हाथ राइफल की नोज़ कप तक ले जाओ अंगूठा और उंगलियां राइफल के चारों ओर मुड़ी हुई हों, दांया हाथ मोड़ों ताकि राइफल सीधी और सही हालत में रखी जा सके।

3. आराम से विश्राम में आना

स्क्वाड के आदेश पर दाहिना हाथ झटके से नीचे ले जाओ और राइफल ठीक विश्राम वाली हालत में ले आओ। शरीर तान कर रखो।

4. विश्राम से सावधान होना

"स्क्वाड–सावधान" – इस आदेश पर राइफल अपनी तरफ खींचो कुन्दा जमीन पर रहे, बांया बाजू बगल के साथ सटा हुआ हो, और खण्ड 3 में बताई गई स्थिति में आ जाओ।

सामान्य गलतियां

(i) राइफल का कुन्दा जमीन पर टिकाना और जोर से मारना।

(ii) पांव और बाजू के बीच तालमेल में कमी।

(iii) कमर से आगे की ओर झुकना।

खंड–5

कंधे शस्त्र और बाजू शस्त्र (बाजू शस्त्र से कंधे शस्त्र, कंधे शस्त्र से बाजू शस्त्र)

बाजू शस्त्र से कंधे शस्त्र

1. **"गिनती से कंधे शस्त्र–स्क्वाड एक" :** इस आदेश पर कलाई से झटका देकर राइफल को तेजी और मजबूती से दाहिनी तरफ ऊपर (दाहिनी बगल) की ओर उछालों और कमर की बेल्ट की सीध में दाहिना हाथ झटके से दोबारा सीधा करो। उसी समय बांया हाथ शरीर के सामने से लाकर राइफल को ऊपरी स्लिंग फिरकी के ठीक नीचे से पकड़ों, हाथ दांए आर्मपिट की सीध में हो, राइफल वापस दांए कंधे पर ठोकते हुए उसे हथेली और

हत्थी से ठोको, बाएं हाथ की उंगलियों और अंगूठे से बन्दूक को चारों ओर से पकड़ो और जैसे ही बांया हाथ राइफल पर लगे, बाएं हाथ की उंगलियों और अंगूठे से राइफल का कुन्दा पकड़ो।

टिप्पणी : बाएं हाथ की उंगलियों की स्थिति सही हो तो सावधान हालत में होती है परन्तु वे राइफल का कुंदा इस प्रकार पकड़ें कि तर्जनी (उंगली) कुंदे की गांठ (नकल) की सीध में हों, राइफल खड़ी हालत में और मैगजीन सामने की तरफ हो।

2. **''स्क्वाड – दो'' :** इस आदेश पर राइफल शरीर के सामने से कंधे पर ले जाओ ताकि नालमुख चेहरे के सामने से गुजरे। जैसे ही नालमुख चेहरे के सामने से गुजरे और बांया हाथ ऊपर की बांई जेब के पास पहुंचे राइफल पर से बांया हाथ हटा लो और नीचे कर लो ताकि कोहनी (सावधान हालत की भांति) बगल से लगी हुई हो, बाजू का अगला भाग जमीन के समानान्तर हो तथा शरीर के समकोण पर हो, कलाई सीधी हो, उसी समय दांए हाथ के अंगूठे और उंगलियां राइफल के गिर्द ले जाएं और मैगजीन के बांया कन्धा छूने से ठीक पहले कुन्दा बांई हत्थी तक ले जाओ ताकि अंगूठा कुन्दे के अगले भाग पर और कुन्दा प्लेट से लगभग एक इंच ऊपर हो और बीच की गांठों से पोरखों तक उंगलियां मिलकर कुन्दे के सिरे पर हों और उनका रुख नालमुख की तरफ हो।

टिप्पण : अब मैगजीन का रुख बांई तरफ और कंधे पर समान होगा।

3. **''स्क्वाड – तीन'' :** इस आदेश पर दाहिना हाथ झटके से शीघ्रतापूर्वक सावधान हालत में ले आओ। हाथ नीचे आते समय कलाई सख्त और उंगलियां मुड़ी हुई हों।

राइफल स्थिर और सीधी रखो।

सामान्य गलतियां

पहली हरकत में

(i) दाहिने हाथ से राइफल जल्दी न छोड़ना जिससे राइफल एक साथ दोनों हाथों से नहीं पकड़ी जाती।

(ii) दाहिना कंधा पीछे की तरफ झुकाना।

दूसरी हरकत

(iii) बाएं हाथ से काफी देर तक राइफल पकड़े रहना जिससे कुन्दा हाथ पर लगने से पहले कंधे पर लग जाना।

(iv) सिर और शरीर हिलाना।

(v) बाजुओं के ऊपरी हिस्से और कोहनी को बगल से अलग रखना।

(vi) बांई कोहनी शरीर के साथ सटी हुई और बाजू का अगला भाग जमीन के समानान्तर और शरीर से 90 अंश पर न रखना।

तीसरी हरकत

(vii) दांए हाथ की कोहनी को शरीर से दूर रखकर मोड़ना, जिससे हाथ का बाहर की ओर शरीर के सामने आ जाना।

(viii) राइफल कंधे पर हिलाना

कंधे शस्त्र से बाजू शस्त्र

4. **''गिनती से बाजू शस्त्र, स्क्वाड–एक'' :** इस आदेश पर बाएं हाथ से राइफल को हाथ की लम्बाई तक पूरी नीचे लाओ, राइफल बाएं हाथ से पहले की तरह मजबूती से पकड़े रखो ताकि राइफल जमीन से खड़े रुख रहे और बांई कोहनी के अंदर वाले भाग से लगी रहे उसी समय दाहिना हाथ शरीर के आड़े तिरछे ले जाओ ताकि दांया हाथ राइफल को बाएं कन्धे और उंगलियां राइफल के गिर्द हों।

टिप्पणी : यह क्रिया प्रशिक्षक द्वारा अवश्य दिखाई जाए।

5. **''स्क्वाड –दो'' :** इस आदेश पर राइफल शरीर के सामने नीचे ले आओ, दांया हाथ सावधान हालत में हो। राइफल का मैगज़ीन सामने की ओर और कुन्दा जमीन से लगभग एक इंच ऊपर हो। उसी समय बांया हाथ और बाजू का

अगला भाग शरीर के सामने से ऊपर की ओर ले जाओ, साथ–साथ उंगलियां फैली हुई और आपस में मिली हुई हों, राइफल स्थिर करती हुई उसके नौज कैप पर हल्की सी टिकी हुई हो। राइफल स्थिर करते ही दांए हाथ की उंगलियों और अंगूठे को राइफल के अगले भाग से हटा कर सावधान की सी हालत में आ जाओ।

6. **"स्क्वाड–तीन"** – इस आदेश पर बांया हाथ बाईं ओर सावधान हालत में ले जाओ और सावधान की स्थिति बनाओ।

टिप्पणी : राइफल हलके से जमीन की ओर झुका दें ओर जैसे दांया बाजू सीधा किया जाए, नालमुख थोड़ा सा पीछे की ओर कर दिया जाए।

सामान्य गलतियां

पहली हरकत में

(i) सिर हिलाना।

(ii) बाएं हाथ की पकड़ ढीली करना।

(iii) दाहिना हाथ ऊपर की तरफ से शरीर के सामने निकट लाकर हरकत करने की बजाए उसे गोलाई में ला कर हरकत करना।

(iv) दाहिना हाथ पूरी ऊंचाई तक नहीं पहुंचाना या बाहरी मोड़ से भी काफी ऊंचाई पर पहुंचाना जिसके फलस्वरूप तीसरी हरकत में लाने के लिए उसे दोबारा हिलाना पड़ता है।

दूसरी हरकत में

(v) शरीर के सामने तक लाकर राइफल का कुन्दा छोड़ना।

(vi) दांया कन्धा पीछे की ओर गिराना।

(vii) राइफल पर बाएं हाथ के लाने और दांए हाथ की उंगलियों की हरकत एक समय में न होना।

तीसरी हरकत में

(viii) राइफल का कुन्दा जोर से जमीन पर मारना।

(ix) बांया बाजू गोल घुमा कर दूर ले जाना और उसे अत्यधिक पीछे तक ले जाना।

खंड–6

कन्धे शस्त्र से सलामी और सलामी शस्त्र से कंधे शस्त्र

कन्धे शस्त्र से सलामी शस्त्र

1. **"गिनती से सलामी शस्त्र, स्क्वाड–एक"** – इस आदेश पर दाहिने हाथ से राइफल का (कुन्दा) दस्ता (स्माल ऑफ द बट) पकड़ो, बाजू का अगला भाग शरीर से सटा हुआ हो।

2. **"स्क्वाड – दो"** – इस आदेश पर दाहिने हाथ से राइफल शरीर के बीचों बीच खड़ी हालत में पकड़ो, मैगजीन का रुख बांई ओर हो। उसी समय बांया हाथ चुस्ती से कुन्दे (स्टाक) पर रखो, कलाई मैगजीन पर हो और उंगलियां ऊपर की तरफ हों, अंगूठा तर्जनी उंगली के साथ मिला हुआ हो, अंगूठे का सिरा मुंह की सीध में हो, बांई कोहनी कुन्दे से सटी हुई और दांई और कुन्दा शरीर से मिले हुए हों।

3. **"स्क्वाड – तीन"** – इस आदेश पर बाएं हाथ से राइफल छोड़ते हुए उसे शरीर के बीचों बीच लगभग तीन इंच की दूरी पर सामने की ओर खड़े रुख नीचे ले आओ, दाहिने हाथ की पूरी लम्बाई पर पकड़े हुए मैगजीन सामने की ओर मोड़ो, उंगलियां आपस में मिली हुई और नीचे की ओर झुकी हों। और तत्काल बाएं हाथ से राइफल को स्लिंग के बाहरी और बैक फाइट के पास से चुस्ती से पकड़ो। अंगूठे का सिरा नालमुख की तरफ हो। उसी बीच दाहिने पैर का तलवा बांई एड़ी के साथ और दोनों घुटने सीधे रखो राइफल का वजन साधने के लिए बाएं हाथ की मदद ली जाए।

सामान्य गलतियां

पहली हरकत में

(i) दाहिना बाजू गोलाई देकर मोड़ना और दांई कोहनी शरीर से अलग रखना।

(ii) दाहिने हाथ की उंगलियों से कुन्दा चारों ओर से कस कर न पकड़ना।

(iii) राइफल का कुन्दा दाहिने हाथ से मिलाने के लिए दाहिनी तरफ ले जाना।

दूसरी हरकत में

(iv) दांए हाथ का मूल स्तर ज्यादा उठाना।

(v) बांई कोहनी कुन्दे के साथ न मिलाना।

(vi) राइफल पर नजर जमाकर रखना जिससे पीछे की ओर झुकने की प्रवृत्ति बन जाना।

(vii) सिर हिलाना।

तीसरी हरकत में

(viii) दाहिना हाथ नीचे की ओर ले जाना शुरू करने से पहले ही राइफल ऊपर की ओर धकेलना।

(ix) बांया हाथ राइफल से न हटा पाना जिसके कारण हाथ का बहुत ऊंचा हो जाना।

(x) उसे राइफल के पीछे की ओर हटाना।

(xi) दांया हाथ बाहर मोड़ना जिसके कारण दांया कन्धा पीछे की ओर खिंच जाना।

(xii) हाथ–पैर की हरकत में समन्वय न होना।

सलामी शस्त्र से कन्धे शस्त्र

4. **"गिनती से कन्धे शस्त्र, स्क्वाड–एक"** – इस आदेश पर दाहिना पैर ऊपर लाकर बाएं पैर के साथ मिलाओ, उसी बीच, जिस प्रकार बाजू शस्त्र से कन्धे शस्त्र की दूसरी हरकत में बताया गया है, राइफल बाएं कन्धे पर रखो।

5. **"स्क्वाड–दो"** – इस आदेश पर दाहिना हाथ झटके से बगल में ले जाओ किन्तु राइफल पर स्थिर रहे।

खंड–7

संगीन लगाना, संगीन उतारना, संगीन लगाना

1. **"स्क्वाड संगीन लगाएगा संगीन"** – इस आदेश पर दाहिने हाथ से राइफल आगे करो जैसा कि विश्राम हालत में किया जाता है और बांयी कोहनी बांयी ओर पीछे के तरफ मोड़ों, बाएं हाथ से संगीन का दस्ता पकड़ो, अंगूठा पीछे की तरफ छूता हुआ हो, उंगलियाँ संगीन की चारों ओर मुड़ी हुई हो, बांयी बाजू नीचे की ओर सीधा करो, हाथ का पिछला भाग शरीर को छूता हुआ हो बाजू बगल से सटी हुई हो, स्थान ऊपर की ओर दांयी तरफ मुड़ी हुई हो, बांयी कलाई झुकी हुई हो ताकि संगीन का फलक बाएं कुल्हे की तरफ लगभग खड़े रुख रखा जा सके।

सामान्य गलतियां

(i) शरीर दांयी ओर झुकाना।

(ii) दांए और बाएं बाजुओं की हरकतों में समन्वय न होना।

(iii) ऊपर की ओर जोर लगाकर म्यान से संगीन बाहर खींचने का प्रयास करना।

2. **"स्क्वाड लगा"** – इस आदेश पर सिर नीचे और दांयी तरफ करो ताकि राइफल का नालमुख देख सको, संगीन को शरीर और बाजू के बीच लाओ और उसे राइफल पर लगाओ संगीन के दस्ते पर आघात करो ताकि बांया बाजू लगभग सीधा हो जाए, बाजू का अगला भाग कलाई और हाथ एक सीध में हों, अंगूठा और उंगलियां मिली हुई तथा सीधी हों।

सामान्य गलतियां

(i) बांया हाथ बगल से बहुत अधिक दूर ले जाना।

(ii) संगीन लगाते समय कूल्हों पर से शरीर आगे की ओर झुकना।

3. **"स्क्वाड सावधान"** – इस आदेश पर राइफल बांयी ओर खींच कर सावधान हालत में आओ उसी बीच बांया हाथ कम फासले वाली जगह बांई ओर को ले जाओ फिर सामने की ओर लाओ।

सामान्य गलतियां

(i) बाजुओं और पिछली हरकतों के बीच समन्वय न होना।

(ii) राइफल का कुन्दा जमीन पर हिलाना।

(iii) कलाई ढीली छोड़कर दांयी भुजा दूर ले जाना।

संगीन उतारना :

4. **"स्क्वाड संगीन उतारेगा–संगीन" –** इस आदेश पर दाहिने हाथ से राइफल उठाओ और उसका कुन्दा पैरों के बीच जमीन पर रखो ताकि कुन्दे का अगला भाग बूटों के अगले भाग की सीध में हो, घुटनों के बीच (जो थोड़े मुड़े हों) राइफल को मजबूती से जकड़ो और बाएं हाथ से नोज टोपी (नोजकेप) के बिल्कुल नीचे मुठ (स्टाक) पर आघात करो। बाएं हाथ से राइफल मजबूती से पकड़े रहो और दांया हाथ संगीन के दस्ते पर मारो। दांए हाथ की बीच वाली उंगली से रोक–स्प्रिंग को दबाओ, संगीन को राइफल के नालमुख से निकालने के लिए जोर लगाते हुए बांई तरफ ऐंठो, इसे दांयी तरफ मोड़ो और उठाकर नोज टोपी (नोजकैप) से निकाल दो ताकि उसका फलक पिछले रिंग पर खड़े रुख हो।

टिप्पणी: यदि संगीन का रोक–स्प्रिंग बांई तरफ हो, तो उसे बाएं अंगूठे से दबाया जाए और नोज टोपी से बिल्कुल बाहर निकालने के लिए दांए हाथ सीधा ऊपर की ओर उठाया जाय।

सामान्य गलतियां

(i) घुटनों के बीच राइफल मजबूती से न पकड़ना।

(ii) एड़ियाँ खुली रखना।

(iii) राइफल से संगीन निकालने के लिए कूल्हे पर से शरीर आगे को झुकाना।

(iv) संगीन की तरफ नीचे की ओर देखना।

5. **"स्क्वाड – उतार" –** इस आदेश पर दांयी कलाई के झटके से संगीन को बांई तरफ मोड़ो और बाएं हाथ से म्यान पकड़ो और उसे यथा संभव आगे की ओर खींचो ताकि उसका मुंह संगीन के आगे हो। संगीन को म्यान में पूरी तरह घुसा दो, बांई कोहनी पीछे की ओर बिल्कुल सीधी हो, कंधे सामने तने हुए हो दांयी कोहनी शरीर के सामने के भाग के निकट लगी हुई हो। जैसे ही दांयी कलाई से प्रारंभिक हरकत में संगीन को झटका दिया जाए वैसे ही सिर नीचे बांई तरफ मोड़ो ताकि यह देखा जा सके कि संगीन म्यान में जा रही है।

सामान्य गलतियां

(i) बांया कन्धा पीछे की तरफ लटकाना।

(ii) बांई कोहनी सामने की ओर ले जाना।

(iii) दांयी कोहनी शरीर से परे होना।

6. **"स्क्वाड सावधान" –** राइफल की मूठ पर बांया हाथ उसी तरह मारो जैसा कि सावधान हालत में किया गया था। उसी बीच सिर को सावधान वाली स्थिति में वापस ले जाओ, नियमित समय दे कर राइफल को दाहिने कदम की तरफ उठाकर रखो, और सावधान की स्थिति में आ जाओ।

सामान्य गलतियां

(i) एड़ियां खुली रखना।

(ii) सिर, बाजुओं और घुटनों की हरकतों में समन्वय न होना।

खंड–8

कंधे शस्त्र से सैल्यूट करना

1. **"गिनती से सामने सैल्यूट, स्क्वाड–एक" –** इस आदेश पर राइफल के कुन्दे के दस्ते के बिल्कुल नीचे मारने के लिए दांया हाथ शरीर के सामने से लाया जाए, उंगलियां फैली हुई और सीधी हों और अंगूठा तर्जनी उंगली से मिला हुआ हो, हाथ का अगला भाग जमीन के समानान्तर हो।

2. **"स्क्वाड – दो"** – इस आदेश पर दाहिना हाथ झटके से कम से कम दूरी वाली जगह से दांयी तरफ ले आओ।

टिप्पणी : यदि कंधे पर राइफल के साथ मार्च करते हुए अभिनंदन करना हो, तो अफसर के पास पहुंचने से तीन कदम पहले जैसा कि कन्धे शस्त्र की पहली हरकत में किया जाता है हाथ ऊपर लाया जाएगा और उसके पास से तीन कदम गुजरने के बाद तेजी से नीचे गिराया जाएगा। सिर और आंखें सैल्यूट लेने वाले अधिकारी की तरफ मुड़ी हुई हों और जैसे ही बांया हाथ नीचे गिराया जाए, सिर और आंखें शीघ्रतापूर्वक सामने की ओर कर ली जाएं।

सामान्य गलतियां

(i) कोहनी लटकी हुई होना।

(ii) कंधे शस्त्र की ठीक हालत में हिल जाना विशेष कर राइफल के कुन्दे को दांए हाथ से मिलाने के लिए बांयी तरफ खिसकाना।

खंड–9

बाजू शस्त्र से बाएं शस्त्र और बाएं शस्त्र से बाजू शस्त्र

1. **"बाएं शस्त्र"** – इस आदेश पर दांए हाथ की कलाई और बाजू के अगले भाग की मदद से झटके से राइफल को शरीर के तिरछे रुख फेंको, नालमुख आगे की तरफ और मैगजीन बाई तरफ और नीचे की ओर हो, बैरल बाएं कन्धे के दूसरी ओर निकली हो (बांया हाथ कमर–पेटी की सीध से ऊपर न उठने दो) अब बाएं हाथ से राइफल को साधने वाली जगह से पकड़ो, अंगूठा और उंगलियां ऊपर की बांई जेब बटन की सीध में राइफल के चारों ओर हों। जैसे ही बाएं हाथ से राइफल बार पकड़ लो, दांया हाथ राइफल पर लाओ, अंगूठा और उंगलियां कुन्दे के चारों ओर हों और अंगूठा शरीर के निकट तक हो।

सामान्य गलतियां

(i) एक हाथ से दूसरे हाथ में राइफल पलटना।

(ii) जैसे ही राइफल शरीर के सामने से तिरछी उछाली जाए, शरीर को पीछे की ओर झुकाना। बाएं शस्त्र से बाजू शस्त्र।

2. **"गिनती से बाजू शस्त्र, स्क्वाड–एक"** – इस आदेश पर राइफल को बाएं शस्त्र की स्थिति में जहां से पकड़े हुए हो उसी स्थान पर बांया हाथ मारो, अंगूठा और उंगलियां राइफल के चारों ओर हों ताकि अंगूठा शरीर से निकटतम दूरी पर हो, दांए बाजू का अगला भाव और कोहनी राइफल से लगी हुई हो।

3. **"स्क्वाड–दो"** – इस आदेश पर दांए हाथ से राइफल को शरीर के सामने से तिरछे रुख नीचे की ओर खींचो, और जैसे कंधे शस्त्र से बाजू शस्त्र की दूसरी हरकत में किया जाता है राइफल की मूंठ पर बांया हाथ मारो।

सामान्य गलतियां

वही गलतियां जो कन्धे शस्त्र से बाजू शस्त्र की दूसरी हरकत की है।

4. **"स्क्वाड – तीन"** – इस आदेश पर वही हरकत की जाएगी जो कंधे शस्त्र से बाजू शस्त्र की तीसरी हरकत में की जाती है।

खंड–10

कंधे शस्त्र से बाएं शस्त्र और बाएं शस्त्र से कंधे शस्त्र

1. **"गिनती से बाएं शस्त्र, स्क्वाड–एक"** – सलामी शस्त्र की पहली हरकत में राइफल को जिस प्रकार पकड़ा जाता है इस आदेश पर उसी प्रकार दाहिने हाथ से पकड़ो।

2. **"स्क्वाड–दो"** – दांए हाथ से राइफल को शरीर के सामने से नीचे की तरफ खींचो उसे बाएं हाथ से छोड़ दो और राइफल को ऊपर की बांई जेब के सामान पकड़ने के लिए बांया हाथ अन्दर की ओर से ऊपर की तरफ ले जाओ।

सामान्य गलतियां

वही गलतियां जो सलामी शस्त्र की पहली हरकत करते समय होती है।

बाएं शस्त्र से कंधे शस्त्र

3. **"गिनती से कंधे शस्त्र, स्क्वाड–एक"** – जिस प्रकार बाजू शस्त्र से कंधे शस्त्र की दूसरी हरकत में किया जाता है इस आदेश पर उसी प्रकार बाएं हाथ से राइफल ले जाओ।

4. **"स्क्वाड–दो"**–जैसा कि बाजू शस्त्र से कंधे शस्त्र की तीसरी हरकत में किया जाता है इस आदेश पर बांया हाथ तेजी से दांयी तरफ गिराओ।

खंड–11

निरीक्षण के लिए बाएं शस्त्र, बोल्ट चलाना

टिप्पणी : स्क्वाड को बाएं शस्त्र का आदेश देने पर निम्नलिखित हरकतें सिखाई जाएं:

निरीक्षण के लिए बाएं शस्त्र

1. **"गिनती से निरीक्षण के लिए बाएं शस्त्र, स्क्वाड–एक"** – इस आदेश पर दांए अंगूठे से सेफ्टी कैप को आगे की तरफ करो।

2. **"स्क्वाड–दो"** – दांए हाथ के अंगूठे और तर्जनी उंगली के बीच बोल्ट की नाब पकड़ो शेष उंगलियां मुड़ी हुई हों दांयी कोहनी शरीर से सटी हो।

3. **"स्क्वाड–तीन"** – दांए हाथ के बोल्ट हैण्डल को ऊपर की तरफ मोड़ो और बोल्ट का पीछे की तरफ पूरा खींचो।

4. **"स्क्वाड–चार"** – दांया हाथ कुन्दे पर इस प्रकार मारो कि हथेली कुन्दे पर रहे उंगलियां आपस में मिली हुई कुन्दे के सामने होकर जमीन की ओर हों, अंगूठा कुन्दे के अन्दर की तरफ अड़ा हो, नाखून घोड़ा (काकन पीस) की सीध में हो और दांयी कोहनी शरीर के साथ सटी हो।

टिप्पणी : समय का ध्यान रखते हुए कमान शब्द निरीक्षण के लिए बाएं शस्त्र कंधे या बाजू शस्त्र में किया जा सकता है।

सामान्य गलतियां

(i) बाएं हाथ से ठीक नियंत्रण न होने के कारण राइफल का हिलना।

(ii) दांया हाथ एक कार्रवाई से दूसरी कार्रवाई के लिए रोके बिना घुमाना।

(iii) अन्तिम स्थिति में दांए हाथ का पिछला भाग और कलाई चाप की तरह रखना।

बोल्ट चलाना

5. **"गिनती से बोल्ट चला, स्क्वाड–एक"**– इस आदेश पर दांए हाथ के अंगूठे और तर्जनी उंगली के बीच बोल्ट नॉब पकड़ो, बाकी उंगलियां मुड़ी हुई हों, दांयी कोहनी शरीर के साथ सटी हो।

6. **"स्क्वाड–दो"** – दांए हाथ से बोल्ट को तीन बार या जब तक सारी गोलियां बाहर न निकल आएं, खोलो और बन्द करो।

7. **"स्क्वाड–तीन"** – दांए हाथ से जोर लगाकर बोल्ट को अन्दर करो और बोल्ट हैंडल को नीचे की ओर मोड़ दो।

8. **"स्क्वाड चार"** – दांयी तर्जनी उंगली के अगले भाग से राइफल का घोड़ा दबाओ।

9. **"स्क्वाड–पांच"** – दांए हाथ की उंगलियों से बोल्ट हैंडिल पर चोट करो और उसे नीचे की ओर जोर से खींचो। तर्जनी उंगली के पिछले भाग से सैफ्टी कैच को पीछे की ओर मोड़ो।

10. **"स्क्वाड–छह"** – दांया हाथ कुन्दे के दस्ते पर वापस लाओ।

सामान्य गलतियां

(i) बाएं हाथ से नियंत्रण न होने कारण राइफल का हिलना।

(ii) दांया हाथ एक कार्यवाई से दूसरी कार्यवाई के लिए रोके बिना घुमाना।

खंड–12

बाएं शस्त्र से जांच शस्त्र, बोल्ट चलाना, जांच शस्त्र से बाएं शस्त्र, जांच से बाजू शस्त्र।

बाएं शस्त्र से जांच शस्त्र

1. **"जांच शस्त्र"** – इस आदेश पर बांया पैर आगे

और बांई तरफ लोडिंग पोजीशन जैसी स्थिति में ले आओ, बाजू थोड़ा झुका हुआ रखते हुए बाएं हाथ से नालमुख नीचे की तरफ झुकाओ ताकि राइफल दांए कंधे के सामने हो और राइफल का नालमुख निरीक्षण अधिकारी की आंखों की सीध में हो, कुंदा, दांयी जांघ की बाहरी ओर लगा हुआ हो, दांया अंगूठा चार्जर गाइड में रखे, नाखून ऊपर की तरफ ऐसी स्थिति में हो, जिससे बैरल में रोशनी हो सके, उंगलियां एक साथ मिली हुई राइफल की दांयी तरफ और जमीन की ओर सीधी हों।

सामान्य गलतियां

(i) कूल्हे पर से शरीर को आगे की ओर झुकाना।

(ii) बांया पंजा सामने की ओर मोड़ना।

(iii) बांया अंगूठा ठीक कोण पर न होना।

बोल्ट चलाना

2. **"बोल्ट चला"** – निरीक्षण के लिए बाएं शस्त्र की तरह ही इसमें कार्रवाई की जाती है।

जांच शस्त्र से बाएं शस्त्र

3. **"बाएं शस्त्र"** – इस आदेश पर बाएं हाथ से राइफल शरीर की तरफ खींच कर बाएं शस्त्र की सही हालत में लाओ। राइफल के कुन्दे के दस्ते पर दांया हाथ मारो, तर्जनी उंगली ट्रिगर रक्षी (ट्रिगर गार्ड) के बाहर की ओर हो, जैसे सावधान की स्थिति में किया जाता है वैसे ही एड़ियां मिली हों।

जांच शस्त्र से बाजू शस्त्र

4. **"गिनती से बाजू शस्त्र, स्क्वाड–एक"** – इस आदेश पर दांया हाथ राइफल के उसी स्थान पर मारो जहां से उसे बाजू शस्त्र की स्थिति में पकड़ा जाता है अंगूठा और उंगलियां राइफल के चारों ओर मुड़ी हुई हों और बाजू का अगला भाग और कोहनी स्टाक पर हो इसी समय में एड़ियां मिलाओ।

5. **"स्क्वाड–दो"** – जैसा कि कंधे शस्त्र से बाजू शस्त्र की दूसरी हरकत में किया जाता है, राइफल नोज कैप के ठीक नीचे बांया हाथ मारते हुए उसे दांयी ओर नीचे खींचो।

6. **"स्क्वाड–तीन** – बांया हाथ झटके से बगल की ओर गिराओ और दांए हाथ से राइफल ज़मीन पर उसी प्रकार रखो जैसे कंधे शस्त्र से बाजू शस्त्र की तीसरी हरकत में किया जाता है।

टिप्पणी : बाजू शस्त्र से भी जांच शस्त्र की पोजीशन में लाया जा सकता है।

सामान्य गलतियां :

पहली हरकत में

(i) बाएं हाथ से ठीक दूरी पर राइफल न पकड़ना।

(ii) बाएं हाथ से राइफल अपनी तरफ खींचना।

दूसरी और तीसरी हरकत में

(iii) उसी प्रकार की गलतियां होती हैं जैसी कंधे शस्त्र से बाजू शस्त्र की दूसरी और तीसरी हरकतों में होती हैः

टिप्पणी : (i) जब किसी स्क्वाड में एक जवान की राइफल का निरीक्षण हो जाए, जब तक उससे एक छोड़कर दूसरे जवान का निरीक्षण नहीं रहा हो तब तक वह प्रतीक्षा करेगा। उसके पश्चात् ही वह बोल्ट चलाएगा, बाजू शस्त्र करेगा और विश्राम स्थिति में खड़ा होगा।

(i) यदि स्क्वाड निरीक्षण के लिए बाएं शस्त्र स्थिति में है और एक या एक से अधिक व्यक्तियों को अगल–अलग जांच शस्त्र का हुक्म मिलता है तो बोल्ट चलाने आदि से पहले अपनी पहली वाली स्थिति में आएंगे।

खंड–13

बाजू शस्त्र से तोल शस्त्र और तोल शस्त्र से बाजू शस्त्र

1. **"तोल–शस्त्र"** – इस आदेश पर दाहिनी कलाई के झटके से नालमुख आगे और नीचे की ओर फेंको, दांए हाथ से राइफल को संतुलन स्थान

से पकड़ो, अंगूठा और उंगलियां राइफल के चारों ओर हो, हाथ का पिछला भाग दांयी तरफ, बाजू सीधा हो ताकि राइफल आड़ी रहे, नालमुख सामने की ओर हो और मैगजीन नीचे की ओर हो।

सामान्य गलतियां

(i) राइफल आड़ी न होना।

(ii) नालमुख दांयी या बांयी तरफ होना।

(iii) दांया अंगूठा राइफल के गिर्द होने के बजाए उसकी दांयी ओर होना।

तोल शस्त्र से बाजू शस्त्र

2. **''बाजू शस्त्र''** – इस आदेश पर दांए हाथ से राइफल का कुन्दा जमीन पर और नालमुख ऊपर की ओर उठाकर ''सावधान'' की सही स्थिति बनाओ।

सामान्य गलतियां

(i) राइफल का कुन्दा सही स्थान पर न रखना।

(ii) कुन्दा जमीन पर पटकना।

खंड–14

कंधे शस्त्र से तोल शस्त्र और तोल शस्त्र से कंधे शस्त्र

1. **''गिनती से तोलशस्त्र, स्क्वाड–एक''** – इस आदेश पर दांए हाथ से राइफल को संतुलन स्थान पर पकड़ो, अंगूठा और उंगलियां राइफल के चारों तरफ हों और हाथ का पिछला भाग ऊपर की ओर हो।

2. **''स्क्वाड–दो''** – दांए हाथ से राइफल को नीचे की ओर शरीर सामने से लाकर सही तोल शस्त्र की स्थिति में लाओ। साथ–साथ बांया हाथ नीचे लाकर सावधान की स्थिति बनाओ।

सामान्य गलतियां :

पहली हरकत में

(i) पर्याप्त ऊंचाई पर राइफल न पकड़ना।

दूसरी हरकत में

(ii) बगल में कोहनी दूर रखना जिससे राइफल पर सही नियन्त्रण नहीं रहता।

(iii) सिर हिलाना।

तोल शस्त्र से कंधे शस्त्र

3. **''गिनती से कंधे शस्त्र, स्क्वाड–एक''** – इस आदेश पर राइफल को शरीर के सामने से कन्धे पर ले जाओ और बाएं हाथ की हथेली राइफल के कुन्दे पर रखो जैसा कि बाजू शस्त्र की दूसरी हरकत में किया जाता है।

4. **''स्क्वाड–दो''** – दांया बाजू झटके से नीचे बगल के साथ ले जाओ जैसा कि बाजू शस्त्र से कन्धे शस्त्र की तीसरी हरकत में किया जाता है।

टिप्पणी : पहली हरकत में पर्याप्त ऊंचाई पर राइफल न पहुंचना।

खंड–15

कंधे शस्त्र से संभाल शस्त्र और संभाल शस्त्र से कंधे शस्त्र

1. **''गिनती से संभाल शस्त्र, स्क्वाड–एक''** – जिस प्रकार कन्धे शस्त्र से बाजू शस्त्र की पहली कार्रवाई में किया जाता है उसी प्रकार इस आदेश पर इसमें भी वही कार्रवाई की जाती है।

2. **''स्क्वाड–दो''** – मैगजीन का रुख सामने की तरफ मोड़ो, बांया हाथ कुन्दे पर से हटा कर राइफल को आर्म पिट की सीध में पकड़ो, उंगलियां राइफल के चारों ओर हों और अंगूठे का सिरा नाल–मुख की ओर हो, बाएं हाथ का पिछला भाग बांयी ओर हो, कोहनी नीचे की ओर बांयी तरफ हो।

3. **''स्क्वाड–तीन''** – दांए हाथ से नालमुख सामने की तरफ नीचे करो ताकि राइफल का निशाना दाएं पंजे की दिशा में थोड़ा नीचे की ओर हो, राइफल का बोल्ट का हिस्सा बायीं बगल में हो,

दाएं हाथ से राइफल छोड़ दो, दांया हाथ झटके से सावधान की स्थिति में ले जाओ।

सामान्य गलतियां :

पहली हरकत में

(i) वही गलतियां जो कन्धे शस्त्र से बाजू शस्त्र में की जाती है।

दूसरी हरकत में

(ii) बाएं हाथ से राइफल इतनी ऊंचाई तक न पहुंचाना, जिससे अन्तिम स्थिति में बोल्ट वाला भाग बगल के नीचे होना असंभव हो जाता है।

तीसरी हरकत में

(iii) बांया हाथ आगे ले जाना जिसके कारण बोल्ट वाला भाग बगल के आगे आ जाना। अंगूठा नाल के चारों ओर रखना।

खंड–16

संभाल शस्त्र से बाजू शस्त्र

4. **"गिनती से बाजू शस्त्र, स्क्वाड–एक"** – इस आदेश पर दांए हाथ से राइफल को उसी स्थान पर पकड़ो जहां बाजू शस्त्र में पकड़ा जाता है।

5. **"स्क्वाड–दो"** – राइफल का कुन्दा नीचे की तरफ करो और राइफल दांयी तरफ खीचों और उस पर बांया हाथ मारो जैसा कि कंधे शस्त्र से बाजू शस्त्र की दूसरी हरकत में किया जाता है।

6. **"स्क्वाड–तीन"** – उसी प्रकार कार्यवाई करो जिस प्रकार कंधे शस्त्र से बाजू शस्त्र की तीसरी हरकत में किया जाता है।

सामान्य गलतियां :

पहली हरकत में

(i) दांई कोहनी शरीर से दूर रखना और हथेली को राइफल के कुन्दे पर ठीक प्रकार से मारना।

दूसरी हरकत में

(ii) राइफल का कुन्दा शरीर के सामने काफी दूरी पर झुलाना।

तीसरी हरकत में

(iii) वही गलतियां जो कन्धे शस्त्र से बाजू शस्त्र की तीसरी हरकत में की जाती है।

खंड–17

तोल शस्त्र पर बदल शस्त्र

1. **"गिनती से बदल शस्त्र, स्क्वाड–एक"–** राइफल को दांए कंधे के सामने बाजू के ऊपरी भागों को हिलाए बिना खड़े रुख लाओ, जैसा कि बाजू शस्त्र से संभाल शस्त्र की पहली हरकत (खंड 16) में किया जाता है।

2. **"स्क्वाड– दो"** – जिस प्रकार बाजू शस्त्र से संभाल शस्त्र की दूसरी हरकत में किया जाता है उसी प्रकार राइफल को शरीर के सामने से बांई तरफ फेंको।

3. **"स्क्वाड–तीन"** – बांया बाजू नीचे की तरफ सीधा करो ताकि राइफल तोल शस्त्र की स्थिति में लाई जा सके।

सामान्य गलतियां :

राइफल (श्रम साध्य तरीके से हिलाना) और शरीर को हिलाना।

टिप्पणी : दांयी तरफ फिर से तोल शास्त्र के लिए ठीक उसी प्रकार विपरीत क्रम में कार्रवाई की जाएगी।

खंड–18

भूमि शस्त्र, उठा शस्त्र

कंधे शस्त्र से भूमि शस्त्र

1. **"गिनती से भूमि शस्त्र, स्क्वाड–एक"** – इस आदेश पर नीचे झुको और राइफल को दांई तरफ जमीन पर रखो राइफल के मैगजीन का रुख दांई तरफ बाहरी बैंड दांए पंजे की सीध में हों जैसे ही राइफल को जमीन पर रखा जाए, दांया हाथ पंजे की सीध में और नालमुख सामने की तरफ होगी। इस हरकत के दौरान सिर और आंखें सामने की तरफ रहें।

टिप्पणी : नीचे झुककर जमीन पर राइफल रखते समय टांगें सीधी रखी जाएं।

2. **''स्क्वाड–दो''** – चुस्ती से सावधान स्थिति में आ जाओ।

उठा शस्त्र

3. **''गिनती से भूमि शस्त्र, स्क्वाड–एक''** – इस आदेश पर नीचे झुककर दांए हाथ से बाहरी बैड पर राइफल पकड़ो।

4. **''स्क्वाड–दो''** – राइफल उठाओ और चुस्ती से बाजू शस्त्र की स्थिति में आ जाओ।

टिप्पणी : यदि कोई स्क्वाड राइफल सहित सावधान स्थिति में हो और उसे राइफल को जमीन पर रखने की बजाए किसी दीवार, पेड़ आदि के साथ खड़ी करने को कहा जाए तो आदेश दिया जाएगा कि ''दीवार (आदि) के साथ राइफल रखो'' इस कमांड पर स्क्वाड दांई तरफ मुड़ेगा, रुकेगा और लाइन तोड़ेगा, अपनी–अपनी राइफल दीवार के साथ रख कर दोबारा उसी स्थान पर आकर लाइन में खड़ा हो जाएगा।

सामान्य गलतियां :

दोनों हरकत में

(i) जमीन की ओर देखना और उसके परिणाम स्वरूप टोपी या पगड़ी का गिर जाना।

(ii) राइफल जमीन पर पटकना।

(iii) राइफल का बाहरी बैंड दांए पंजे की सीध में न होना।

खंड–19

समतोल शस्त्र

कोई कमान शब्द नहीं

जमीन से लगभग 3 इंच ऊपर राइफल उठाओ और बाजू शस्त्र की स्थिति बनाए रखो।

यदि बाजू शस्त्र की पोजीशन में खड़े हों दांए या बाएं मिलने या पीछे कदम हटाने या गिनती के कितने ही कदम लेने के आदेश हुए हों जवान समतोल शस्त्र करेंगे।

खंड–20

लटका शस्त्र

1. संगीन लगाए बिना

''लटका शस्त्र'' – इस आदेश पर जवान अपना सिर और दांया बाजू सिर और राइफल के बीच में से निकालेगा, राइफल की स्लिंग पूरी तरह ढीली की हुई हो, नालमुख ऊपर की ओर हो, राइफल पीठ के पीछे तिरछे रुख लटकी हुई हो।

2. संगीन लगाए हुए

लटका शस्त्र – स्लिंग पर्याप्त रूप से ढीली रखकर राइफल की स्लिंग दांए या बाएं कंधे के ऊपर से गुजारते हुए राइफल को कंधे के पीछे खड़ी हालत में लटकाओ।

3. ''आराम के चल''

इस आदेश पर, जब राइफल सहित कंधे शस्त्र से चल रहें हों, तो राइफल को बांई तरफ नीचे खींचो जैसा कि बाजू शस्त्र की पहली हरकत में किया जाता है और उसके बाद ऊपर बताए गए अनुसार लटका शस्त्र की कार्रवाई करो। एक साथ कार्रवाई करना आवश्यक नहीं है।

खंड–21

बाजू शस्त्र के सलामी शस्त्र

1. ''गिनती से सलामी शस्त्र, स्क्वाड–एक''

इस ओदश पर वैसा ही करो जैसा कि बाजू शस्त्र से कंधे शस्त्र की पहली हरकत में किया जाता है।

2. ''स्क्वाड–दो''

राइफल खड़ी हालत में लाओ जैसा कि कंधे शस्त्र से सलामी शस्त्र की दूसरी हरकत में किया जाता है।

3. ''स्क्वाड–तीन''

वैसा ही करो जैसा कि कंधे शस्त्र से सलामी शस्त्र की तीसरी हरकत में किया जाता है।

"सलामी शस्त्र से बाजू शस्त्र, स्क्वाड–एक"

4. "गिनती से बाजू शस्त्र, स्क्वाड–एक"

इस आदेश पर राइफल दांयी तरफ ले जाओ और उसे दांए हाथ से पकड़ो, बांया हाथ तना हुआ हो और हल्के से नौज कैप पर लगा हुआ हो, कुंदा जमीन से थोड़ा ऊपर हो, उसी समय झटके से दांया पैर बाएं पैर के साथ मिलाओ।

5. "स्क्वाड–दो"

राइफल का कुन्दा धीरे से जमीन पर रखो जैसा कि बाजू शस्त्र में किया जाता है। बांया हाथ झटके से नीचे गिराओ।

खंड–22

कंधे शस्त्र से तान शस्त्र

1. "गिनती से तान शस्त्र, स्क्वाड–एक"

इस आदेश पर दायें हाथ से राइफल के कुन्दे का दस्ता पकड़ो जैसे कि बाएं शस्त्र की पहली हरकत में किया जाता है।

1. "स्क्वाड–दो"

बांया घुटना झुकाओ और पैर को दांए पैर के सामने 27 इंच आगे जमीन पर सपाट रखो, घुटना थोड़ा झुका हुआ रखो और शरीर को थोड़ा आगे की ओर झुकाओ ताकि शरीर का वजन बांयी टांग पर पड़े, बांया कन्धा आगे की ओर हो, दांयी टांग पीछे की ओर तनी हुई और पैर जमीन पर सपाट हो, सिर आगे की ओर हो। उसी समय राइफल दांए कन्धे के सामने नीचे की तरफ लाओ, तथा बाएं हाथ से उसे यथा संभव ऊपर से पकड़ो ताकि बाजू का अगला भाग थोड़ा झुका हुआ और शरीर से सटा हुआ हो, संगीन गले की सीध में हो, कुन्दा दांए कूल्हे के बाहर के रुख हो, मैगजीन नीचे की ओर, दांई तर्जनी ट्रिगर गार्ड के बाहरी तरफ हो, हाथ दांई जंघा के बिल्कुल सामने और बाजू का अगला भाग कुन्दे के सिरे पर दबा हो।

तान शस्त्र से कंधे शस्त्र

1. "गिनती से कंधे शस्त्र, स्क्वाड–एक"

इस आदेश पर बांया घुटना झुकाओ और बांई एड़ी के साथ मिलाओ, शरीर को सीधा रखते हुए सिर सावधान की स्थिति में लाओ उसी समय राइफल का कुन्दा बाएं हाथ में लाते हुए राइफल को शरीर के सामने से लाकर वापस खींचो जैसा कि बाजू शस्त्र से कंधे शस्त्र की दूसरी हरकत में किया जाता है।

1. "स्क्वाड–दो"

दांया हाथ तेजी से नीचे की ओर गिराओ।

खंड–23

बाजू शस्त्र से तान शस्त्र, तान शस्त्र से बाजू शस्त्र

1. "तान शस्त्र"

इस आदेश पर राइफल दांए कन्धे के सामने ऊपर की तरफ फेंको और उसी समय दोनों हाथ राइफल पर लाते हुए तान शस्त्र की स्थिति बनाओ।

2. "गिनती से बाजू शस्त्र, स्क्वाड–एक"

इस आदेश पर बांया घुटना मोड़ो और बांई एड़ी दांयी एड़ी के साथ मिलाओ, शरीर सीधा और सावधान की स्थिति में हो। उसी समय दांए हाथ से राइफल बाजू शस्त्र में उसी तरह पकड़ो जैसा कि जांच शस्त्र से बाजू शस्त्र में पकड़ा जाता है।

3. "स्क्वाड–दो"

राइफल दांई तरफ लाओ जैसा कि जांच शस्त्र से बाजू शस्त्र की पहली हरकत में किया जाता है। बांया हाथ तेजी से बांई तरफ नीचे ले जाओ।

खंड–24

कंधे शस्त्र से ऊंचा बाएं शस्त्र और ऊंचा बाएं शस्त्र से कंधे शस्त्र

1. "गिनती से ऊंचा बाएं शस्त्र, स्क्वाड–एक"

इस आदेश पर दांए हाथ से राइफल के कुन्दे का दस्ता पकड़ो जैसा कि कंधे शस्त्र से बाएं शस्त्र में किया जाता है।

2. "स्क्वाड–दो"

राइफल को शरीर के सामने ऊंचा बाएं शस्त्र की स्थिति में लाओ। ऐसा करने के लिए मैगज़ीन

सामने की तरफ मोड़ो और राइफल को बाएं हाथ से पकड़ो।

3. "गिनती से कंधे शस्त्र, स्क्वाड–एक"

इस आदेश पर राइफल बाएं कन्धे पर रखो जैसा कि बाजू शस्त्र की दूसरी हरकत में किया जाता है।

4. "स्क्वाड–दो"

दांया हाथ तेजी से दांई तरफ गिराओ।

खंड–25

बाजू शस्त्र से ऊंचा बाएं शस्त्र और ऊंचा बाएं शस्त्र से बाजू शस्त्र

1. "ऊंचा बाएं शस्त्र"

दांई कलाई के झटके से राइफल को शरीर के सामने से तिरछे रुख फेंको, उसी समय उसे दोनों हाथों से पकड़ो, बांया हाथ बाएं कन्धे के सामने और शरीर से आवश्यकता के अनुसार दूर हो ताकि कुन्दा तत्काल फायरिंग स्थिति में लाया जा सके। दांया हाथ कुन्दे के ऊपर हो और दांया बाजू का अगला भाग जमीन के समानान्तर हो।

2. "गिनती से बाजू शस्त्र, स्क्वाड–एक"

उसी प्रकार कार्रवाई की जाए जैसी कि बाएं शस्त्र से बाजू शस्त्र के लिए की जाती है, केवल दांए हाथ का पिछला भाग राइफल के सिरे पर हो।

3. "स्क्वाड–दो"

वही कार्रवाई की जाए जो बाएं शस्त्र से बाजू शस्त्र में की जाती है।

4. "स्क्वाड–तीन"

वही कार्रवाई की जाए जो बाएं शस्त्र से बाजू शस्त्र में की जाती है।

खंड–26

बाजू शस्त्र से बगल शस्त्र और बगल शस्त्र से बाजू शस्त्र

(अ) बाजू शस्त्र से बगल शस्त्र

1. "गिनती से बगल शस्त्र, स्क्वाड एक" की कमांड होने पर राइफल का मुंह ऊपर हो जाएगा। दाएं हाथ की बीच की उंगली ट्रिगर पकड़ेगी उसी समय बांया हाथ पेट के सामने तिरछा होकर बाहरी फ्लैंक की तरफ आ जाएगा।

"स्क्वाड दो" की कमांड होते ही बांया हाथ तेजी से नीचे की तरफ आ जाएगा।

(ब) बगल शस्त्र से बाजू शस्त्र

1. "गिनती से बाजू शस्त्र, स्क्वाड एक" की कमांड पर दांए हाथ की बीच की उंगली बन्दूक की लिबलिबि को छोड़ देगी और राइफल को नीचे की तरफ होने देगी। इसी समय बांया हाथ तिरछा होकर (पैर पर से नोज कैप के पास) शरीर के पास आएगा। उसी समय उंगलियों को खींचकर आपस में लाकर नोज कैप के पास से हल्के से पकड़ लेगा।
2. "स्क्वाड–दो" की कमांड पर राइफल सावधान की स्थिति में आ जाएगी और बांया हाथ दांयी तरफ को आ जाएगा।

किर्च कवायद

अध्याय XXI

किर्च कवायद (ड्रिल)

किर्च, पद और सम्मान का परम्परागत प्रतीक है। यह कवायद केवल समारोहों पर ही की जाती है। इसे ठीक–ठीक और आकर्षक रूप से करने का प्रयास अवश्य किया जाए क्योंकि यही इसकी मुख्य विशेषता हैं।

किर्च दो मुख्य भागों में बँटी होती है अर्थात् मूठ (हिल्ट) और फलक (ब्लैड)।

फलक के तीन भाग होते हैं :

(i) **अग्रभाग :** अग्र मूठ के निकट का भाग।

(ii) **मध्य मार्ग :** फलक के बीच वाला भाग।

(iii) **नोक :** फलक का सबसे नीचे वाला भाग।

मूठ के भी अलग–अलग तीन भाग होते हैं:–

(i) **घुण्डी (पामल) :** दस्ते पर घुंडी।

(ii) **दस्ता (हैण्डल) :** वह भाग जहां से तलवार कस कर पकड़ी जाती है।

(iii) **मूठ :** दस्ते के सामने का हिस्सा जिससे उंगलियों की सुरक्षा होती है।

किर्च हमेशा (अनुमोदित किस्म का बना हुआ) तेग बन्द (Sword Knot) लगाकर ही धारण की जाए।

खंड–1

किर्च कवायद की हरकतें :

1.	**सावधान स्थिति**	बाएं हाथ से किर्च की म्यान पकड़ो, बायां सीधा रखो (जब किर्च निकली हुई न हो तब बांया बाजू मूठ के बाहर की ओर झुका हुआ हो), हाथ का पिछला भाग बांयी तरफ, अंगूठा सामने की ओर लिपटा हुआ, तर्जनी उंगली नीचे की ओर म्यान की तरफ, अन्य उंगलियां पिछे की तरफ मुड़ी हुई हों। बाएं हाथ की यह स्थिति कवायद करते हुए हर समय नहीं रहती जब किर्च म्यान से बाहर निकाले बिना विश्राम हालत में खड़े हुए हों।
2.	**गिनती से निकाल किर्च स्क्वाड–एक**	एक हरकत में दांया हाथ शरीर के सामने से ले जाओ, किर्च का दस्ता पकड़ो और तब तक किर्च को बाहर निकालो जब तक बाजू का अगला भाग तिरछा होकर कंधे की सीध में न आ जाए। हाथ का पिछला भाग पीछे की ओर, अंगूठा और उंगलियां दस्ते के चारों तरफ लिपटी हुई हों।
	स्क्वाड–दो	म्यान का निचला सिरा थोड़ा पीछे की ओर करते हुए तेजी से किर्च आगे ऊपर की तरफ निकालों बांया हाथ सावधान की हालत में ले आओ।
	खड़ा किर्च	जैसे की किर्च की नोक म्यान के मुंह से बाहर आ जाए, वैसे ही उसे फुर्ती से ''खड़ा किर्च'' की स्थिति में ले आओ अर्थात् फलक सीधा खड़े रुख, धार बांयी तरफ, मूठ का ऊपरी भाग मुंह की सीध में उसके विपरीत हो, अंगूठा मुंह की तरफ दस्ते की बगल में हो।
	स्क्वाड–तीन सामने किर्च	दांया बाजू तेजी से बगल में लाओ, कोहनी मिली हुई, बाजू का अगला भाग आड़ा और सामने की तरफ हो। फलक सीधा खड़े रुख, धार सामने की तरफ, और दस्ता धीरे से पकड़ो, अन्य उंगलियां आपस में मिली हुई और थोड़ी मुड़ी हुई हों, मूठ हाथ के ऊपरी भाग पर टिकी हुई हो।
3.	**कंधे किर्च**	किर्च की नोक पीछे की तरफ नीचे लाओ ताकि फलक का पिछला भाग गर्दन और कन्धे के बीच में टिके। बाजू का अगला भाग और हाथ स्थिर रखो, लेकिन पिछली तीन उंगलियों की पकड़ छोड़ दो और सबसे छोटी उंगली दस्ते के पीछे रखो।

4. गिनती से वापस किर्च, स्क्वाड–एक किर्च की मूठ बाएं कन्धे के बड़्ढे के पास लाओ, उसका फलक खड़े रुख हो, धार बांयी तरफ हो, दांए बाजू का अगला भाग तिरछा हो और कोहनी कन्धे की सीध में हो, हाथ का पिछला भाग सामने की ओर हो। उसी समय म्यान का सिरा थोड़ा पीछे ले जाओ। बाएं हाथ से म्यान का मुंह पकड़ो और शीघ्रता पूर्वक दांई कलाई मोड़कर बाएं कन्धे के बाहर की ओर से फलक को तर्जनी उंगली की सहायता से किर्च की नोक नीचे की ओर म्यान में डाल दो। किर्च को म्यान में इस तरह डालो कि निकाल किर्च की पहली हरकत में आ सको। कन्धे सामने सीधे तने हुए रखो।

स्क्वाड–दो किर्च म्यान में पूरी डाल दो, बांया हाथ और म्यान सावधान हालत में रखो। दायां हाथ मूठ के ऊपर बना रहे, हाथ का पिछला भाग ऊपर की तरफ, अंगूठा और उंगलियां आपस में मिली हुई और सीधी हों, बाजू का अगला भाग तिरछा और शरीर के निकट हो।

स्क्वाड–तीन दांया हाथ से बगल में ले जाओ।

5. स्क्वाड विश्राम

(i) जब किर्च म्यान में हो : बांया पैर और म्यान लगभग 12 इंच बाएं ले जाओ ताकि शरीर का भार दोनों पैरों पर बराबर रहे। उसी बीच हाथ पीठ के पीछे ले जाओ और दांए हाथ का पिछला भाग बांई हथेली में रखो, उसे अंगूठे और उंगलियों से हल्के से पकड़ो, बाजुओं को सामान्य तरीके से पूरी तरह नीचे की ओर लम्बा करो।

(ii) जब किर्च कंधे पर न हो : बांया पैर लगभग 12 इंच बांई तरफ ले जाएं, किर्च को दांए कन्धे पर कन्धे किर्च की स्थिति में लाओ। बाएं हाथ की पकड़ म्यान पर उसी प्रकार बनी रहे जैसी सावधान हालत में होती है।

6. विश्राम से सावधान, स्क्वाड–सावधान किर्च सामने लाओ और सावधान स्थिति बनाओ, किर्च को सामने किर्च की स्थति में लाओ और सावधान हालत में आओ।

7. तेज चाल बाएं हाथ से बांई तरफ किर्च या खाली म्यान स्थिर पकड़ी जाए। यदि किर्च निकाली हुई हो तो उसकी स्थिति वैसी ही होगी जैसी नीचे सामान्य टिप्पणियों में बताई गई है।

8. स्क्वाड थम स्क्वाड थम सावधान की स्थिति में आ जाओ।

खंड–2

किर्च के साथ सैल्यूट करना

1. थम कर सैल्यूट करना

गिनती से सामने सैल्यूट

स्क्वाड–एक किर्च को पुनः खड़ी किर्च की स्थिति में लाओ।

स्क्वाड–दो जब तक किर्च की नोंक जमीन से 12 इंच ऊपर न रह जाए और सामने से दांयी ओर 45 अंश का कोण न बना ले तब तक किर्च को नीचे ले जाओ, किर्च की धार बांयी तरफ, दांया बाजू किर्च एक सीधी लाइन में हों, किर्च के दस्ते पर अंगूठा चपटा हो।

स्क्वाड–तीन किर्च को पुनः खड़ा किर्च की स्थिति में लाओ।

स्क्वाड–चार किर्च को पुनः सामने किर्च की स्थिति में ले आओ।

टिप्पणी : (i) जब किर्च निकली हुई न हो तो हाथ से सामान्य सैल्यूट दिया जाए।

(ii) जब राइफल सहित सशस्त्र सैन्य–दल परेड पर हो और उसे सलामी शस्त्र का आदेश दिया जाए, तो किर्च वाले अधिकारी सलामी शस्त्र की पहली और तीसरी हरकतों पर कार्रवाई करेंगे। कन्धे शस्त्र के आदेश पर व जवानों के साथ मिलकर कार्रवाई करेंगे। (iii) जब अफसर लाइन तोड़ने का आदेश दिया जाए तो वे किर्च से सैल्यूट करेंगे, वरिष्ठ अधिकारी के पीछे लाइन बनाएंगे और विश्राम हालत में खड़े होने से पहले किर्च में वापस करेंगे।

2. चलते हुए सैल्यूट करना तेज चाल और धीरे चाल दोनों ही में सैल्यूट की कार्रवाई दो हरकतों में पूरी की जाती है। पहली और दूसरी हरकतों में क्रमशः तब की जाती है जब कमान शब्द के तुरन्त बाद एक के बाद एक दांए और बाएं पैर लगातार जमीन पर पड़े। जब बांया पैर जमीन पर पड़े तभी ये कमान शब्द दिए जाते है।

ये हरकतें निम्न प्रकार की जाती हैं:–

(क) सैल्यूट करते समय

(i) **पहली हरकत :–** जब बांया पैर जमीन पर पड़े तब आदेश शब्द दिए जाते हैं। जब अगला दांया पैर जमीन पर पड़े तब किर्च को खड़ा किर्च स्थिति में लाओ। चेहरा सीधा रहे।

(ii) **दूसरी हरकत :–** जब बांया पैर दूसरी बार जमीन पर पड़े, सिर पुनरीक्षण अधिकारी की तरफ मोड़ो और पैरा 9 में बताए अनुसार किर्च को सैल्यूट वाली स्थिति में लाओ।

(ख) सैल्यूट के बाद 'सामने देख' की स्थिति में आते हुए–

(i) **पहली हरकत :–** जब बांया पैर जमीन पर पड़े तब सामने देख की स्थिति में आने के आदेश शब्द दिए जाते हैं। जब अगला दांया पैर जमीन पर पड़े तब खड़ा किर्च की स्थिति में आओ, सिर वापस सामने की तरफ हो।

(ii) **दूसरी हरकत :–** जब बांया पैर जमीन पर दोबारा पड़े, किर्च को सामने किर्च की स्थिति में लाओ।

खंड–3

सामान्य टिप्पणियां

(i) थम की स्थिति में जब जवान सावधान या कंधे शस्त्र की स्थिति में हो तो किर्च सामान्यतः सामने किर्च की स्थिति में होती है।

(ii) चलते हुए किर्च को ऊपर निकालने के साथ कन्धे किर्च किया जाता है और थमकर सामने किर्च हालत में लाया जाता है। परन्तु निम्नलिखित अवसरों पर किर्च हमेशा सामने किर्च की स्थिति में होगी:–

(क) सैल्यूटिंग बेस की तरफ मुड़ने या घूमते हुए या उसके पास पहुंचते समय।

(ख) जब अफसर लाइन बना रहे हों या लाइन तोड़ रहे हों।

(ग) जब समीक्षा क्रम में आगे बढ़ रहे हो।

(घ) जब गारद आरोहण कर रही हों।

(ङ) यदि किर्च निकली हुई हो तो सारे समय उस समय के सिवाय जब जवान विश्राम की स्थिति में खड़े हों और जब किसी परेड ग्राउंड की ओर या वहां से चल रहे हों, सामने किर्च की स्थिति में होंगे।

परेड ग्राउंड की ओर जाते या वहां से बाहर होते समय वे कन्धे शस्त्र की स्थिति में होंगे।

(iii) जब जवान लटका शस्त्र बिना विश्राम की स्थिति से चलें, तब किर्च कन्धे शस्त्र होगी।

(iv) जब जवान राइफल के साथ लटका शस्त्र की स्थिति में विश्राम से चल रहे हो, किर्च वापस की स्थिति में होगी। सावधान स्थिति से चलते समय किर्च बाएं पैर पर काम करते हुए दोबारा बाहर निकाली जाएगी।

अध्याय XXII

क्षेत्र में फैले हुए दल को कवायद का आदेश

खंड–1

प्रस्तावना

युद्ध क्षेत्र में किसी दल पर विशेषकर जब वह फैला हुआ हो, या किसी जगह पर लगाया गया हो तब उन पर मौखिक या लिखित संदेशों की अपेक्षा संकेतों द्वारा बहुत अच्छी तरह नियंत्रण किया जा सकता है। जब किसी दल को डाकुओं के विरुद्ध किसी निश्चित कार्रवाई के लिए वस्तुतः लगाया जाना हो, तो जब भी सम्भव हो कमाण्डर उन्हें पूरी तरह अनुदेश दे।

यदि जवान फैले हुए और लाइन में चल रहे हों तो सामान्यतः राइफल तोल शस्त्र की स्थिति में ले जाई जाए। इसके लिए सही सिधाई या कदम से कदम मिलाकर चलना अपेक्षित नहीं है परन्तु लगभग एक लाइन बना ली जाए। अन्यथा जब जवान फैले हुए हों तब वे अपनी ही पार्टी के अन्य जवानों की फायर की सीध में आ सकते हैं। कमाण्डर ऐसे स्थान पर हों जहां से वे अपने आदेशों का सबसे अच्छी प्रकार अनुपालन सुनिश्चित कर सकें। उन्हें यह भी बता दिया जाए कि फायर तेज करने तथा जानी नुकसान से बचने के लिए प्रायः जवानों को फैली हुई स्थिति में नियुक्त किया जाता है इसलिये यह कार्रवाई हमेशा दौड़ चाल में की जाए। फैली हुई लाइन को तभी निकट लाया जाए जब वह आड़ में हो या जब गोली न चल रही हो। इसलिये जब तक चलते हुए सिमटने के लिए न कहा जाए, निकट आने की कार्रवाई तेज चाल में की जाए। जब तक अन्य आदेश न दिए जाएं, जवान मध्य लाइन से फैले और मध्य लाइन में ही सिमटें और उसका नाम लिया जाए।

किसी स्क्वाड या प्लाटून को क्षेत्रीय कवायद (फील्ड ड्रिल) में लगाने से पहले यह देख लिया जाए कि सब जवान सीध में हैं, गिनती हो गई है और निम्नलिखित आदेश देखकर मध्य देकर मध्य फाइल की जांच कर ली गई है–

''नम्बर ––– मध्य फाइल और दिशा के फाइल से उद्देश्य है।''

इस आदेश पर निर्दिष्ट फाइल के जवान अपना खाली हाथ उठाकर संकेत करेंगे। यदि किसी पार्श्व में चलना आवश्यक हो तो उस पार्श्व लाइन का सामने का जवान आगे बढ़ेगा।

जब स्क्वाड या प्लाटून को संकेत द्वारा परिनियोजित करना हो तो संकेत करने से पहले जब भी संभव हो जवानों का ध्यान आकर्षित करने के लिए हल्की सीटी बजाई जाए।

जब कमांडर आश्वस्त हो जाए कि उसके संकेत समझ लिए गए हैं तो कमांडर अपना उस तरफ का हाथ गिराएगा जिस तरफ उसके अधीन यूनिटें उसके दिए गए आदेश के अनुसार कार्य करेंगी।

खण्ड 3 और 4 में लिखित संकेतों का भी फील्ड कवायदों में प्रयोग किया जाएगा।

किसी स्क्वाड को सामने, मध्य और पीछे की ओर से नियोजित करने के लिए निम्नलिखित आदेश शब्दों और हाथ के संकेतों का प्रयोग किया जाएगा।

खंड–2

आदेश शब्द

(क) नियोजन

''दाहिने फैल'' : इस आदेश पर पिछली रैंक का बांया गाइड अपनी जगह खड़ा रहे और मध्य, सामने और पिछली रैंकों के बाकी जवान एक ही लाइन में दांयी तरफ निम्न प्रकार से फैल जाएं:–

बाएं गाइड के सिवाय पिछली रैंक के सभी जवान दांयी तरफ मुड़ें। सामने की लाइन के जवान पहले हरकत करें, उनके पीछे मध्य लाइन और अन्त में पिछली लाइन के जवान चलें। प्रत्येक जवान के

बीच 2 कदम का फासला हो उसके बाद सभी बाएं मुड़े और विश्राम की स्थिति में खड़े हो जाएं।

''बाएं फैल'': इसमें सभी कार्रवाई ऊपर बताये अनुसार ही की जाए। अन्तर केवल यह है कि सामने की लाइन का दांया गाइड खड़ा रहे और बाकी सब जवान बांयी तरफ फैल जाएं।

''मध्य से फैल'' : इस आदेश मध्य लाइन का बीच वाला जवान खड़ा रहे और बाकी सभी जवान दांए या बाएं मुड़ें।

टिप्पणी : यदि कदमों की गिनती न बताई जाए, तो जवान दो–दो कदम के फासले पर फैलेंगे।

(ख) सिमटना या निकट आना (क्लोजिंग)

दांए सिमट : इस आदेश पर सामने की लाइन का दांया गाइड खड़ा रहे और शेष सभी जवान दांयी तरफ पहली स्थिति में सिमट जाएं।

बाएं सिमट : इस आदेश पर पिछली लाइन का बांया गाइड खड़ा रहे और शेष सभी जवान बांयी तरफ अपनी पहली स्थिति में सिमट जाएं।

मध्य पर सिमट : इस आदेश पर बीच वाली लाइन मध्य खड़े व्यक्ति के निकट सिमट जाए और मध्य वाला व्यक्ति अपनी जगह स्थिर खड़ा रहे सामने की लाइन और पिछली लाइन बाएं और दांए मुड़े और अपनी पहली स्थिति में आ जाए।

खंड–3

हाथ के संकेत

दांयी तरफ फैलना : दांया बाजू सिर के ऊपर पूरा फैलाएं और धीरे–धीरे एक तरफ से दूसरी तरफ हिलाया जाए, हाथ खुला हो, और तीन बार शरीर के दोनों तरफ कुल्हों तक नीचे लाया जाए, और फिर दांयी तरफ संकेत किया जाए। आकृति 2 देखें।

प्लाटून द्वारा कार्रवाई : वही कार्रवाई की जाए जो ऊपर खण्ड 2 में बताई गई है।

बांयी तरफ फैलना : वही कार्रवाई की जाए जो दांयी तरफ फैलने के लिए की जाती है। सिर्फ दांए हाथ के बदले बाएं हाथ से संकेत दिया जाए। आकृति 3 देखें।

प्लाटून द्वारा कार्रवाई : जैसा ऊपर खण्ड 2 में बताया गया है।

मध्य से फैलना : यह क्रिया उसी प्रकार की जाएगी जैसे कि दांयी तरफ फैलने के लिए की जाती है अन्तर केवल इतना होगा कि हाथ को तीसरी बार घुकाने के पश्चात् उसे सावधान की स्थिति में सीधा नीचे लाया जाए। आकृति 1 देखें।

प्लाटून द्वारा कार्रवाई : जैसे कि ऊपर खण्ड 2 में बताई गई है।

टिप्पणी : उपर्युक्त हरकतों में यह ध्यान रखा जाए कि सामने की लाइन हमेशा दांयी तरफ रहे।

सिमट : हाथ सिर के ऊपर रखा जाए और कोहनी दांयी या बांयी तरफ सामने हो। उपर्युक्त संकेत का अर्थ ''बीच में इकट्ठा'' है। आकृति सं. 11 देखें।

यदि किसी दिशा (दांयी या बांयी) में सिमटना अपेक्षित हो तो कमांडर अपना हाथ नीचे लाने से पहले से उस दिशा की ओर इशारा करे। आकृति संख्या 12 और 13 देखें।

मार्च करते समय यदि थमना और साथ–साथ सिमटना भी अपेक्षित हो तो कमांडर हाथ नीचे लाने से पहले थमने का संकेत दे।

आगे बढ़ : बाजू कंधे के नीचे पीछे से आगे की तरफ झुलाया जाए। आकृति सं. 4 देखें।

थम : बाजू को सिर के ऊपर तीन बार घुमाएं। आकृति सं. 6 देखें।

पीछे मुड़ : बाजू को सिर के ऊपर तीन बार घुमाएं। आकृति सं. 6 देखें।

दांए या बाएं दिशा बदलना : दांया या बांया बाजू कंधे की सीध में फैलाया जाए। उसके बाद गोलाई में हरकत की जाए और उसके पूरा हो जाने के बाद बाजू और शरीर की अपेक्षित दिशा की ओर मोड़ दिया जाए। आकृति सं. 7 और 8 देखें।

आधा दाएं या बाएं मुड़ना या पूरा मुड़नाः शरीर अपेक्षित दिशा में मोड़ा जाए और बाजू कंधे के सीध में अपेक्षित दिशा में फैला दी जाए। आकृति सं. 9 और 10 देखें।

दांए या बाएं घूमना : यदि दांए घूमना हो तो बांया हाथ और यदि बाएं घूमना हो तो दांया हाथ कंधे की सीध में फैलाया जाए। हाथ और शरीर को इतना घुमाया जाए कि उसका रुख अपेक्षित दिशा की ओर हो जाए।

दौड़ चाल : मुट्ठी बन्द करके हाथ को जंघा और कंधे के बीच ऊपर नीचे किया जाए। आकृति सं. 14 देखें।

दौड़ चाल से तेज चाल : दांयी कोहनी मोड़ो, हथेली खुली हुई हो और जवानों की तरफ हो। फिर तेजी से हाथ नीचे गिराओ। आकृति सं. 15 देखें।

मेरे पीछे आओ : बाजू को कंधे के ऊपर पीछे से आगे की ओर झुलाया जाए। आकृति संख्या 16 देखें।

जैसे थे : हाथ पूरा नीचे की तरफ और खुला रखे और जमीन के समानान्तर के सामने आर–पार हिलायें। आकृति सं. 18 देखें।

घुटना मोड़ने की स्थिति : दांए घुटने को थोड़ा सा मोड़ो और उसे तीन बार छूकर संकेत दो।

लौटने की स्थिति : खुले हाथ से जमीन की तरफ (हथेली नीचे की ओर हो) दो या तीन बार हल्की सी हरकत की जाए। आकृति सं. 17 देंखें।

खंड–4

राइफल के साथ संकेत

राइफल से निम्नलिखित संकेत किए जाएं।

शत्रु कम संख्या में दिखाई देना – पूरा बाजू ऊपर उठाकर राइफल सिर से ऊपर जमीन के समानान्तर पकड़ी हुई हो। नालमुख का रुख सामने की तरफ हो। आकृति सं. 19 देखें।

शत्रु बहुत बड़ी संख्या में दिखाई देना – पिछले संकेत की भांति ही राइफल पकड़ी हुई हो परन्तु उसे बार–बार ऊपर नीचे करो। आकृति सं. 20 देखें।

शत्रु दिखाई न देना – ऊपर की ओर पूरा बाजू उठाकर राइफल पकड़ी हुई हो, नालमुख सीधा ऊपर की ओर हो। आकृति सं. 21 देखें।

टिप्पणी : स्काउट आदि जो अपने सैक्शनों के आगे भेजे जाते हैं, इन संकेतों का प्रयोग करें। इस बात की सावधानी बरती जाए कि शत्रु इन संकेतों को न देख सके।

खंड–5

सीटी बजाकर नियंत्रण रखना

1. सीटियां निम्नलिखित प्रकार की बजायी जाएं :–

सचेत करने की सीटी (छोटी–सीटी) – किसी संकेत या दिए जाने वाले आदेश की ओर जवानों का ध्यान आकर्षित करने के लिए बजाई जाए।

संकेत सीटी – (पहले लम्बी और बाद में छोटी सीटी लगातार बजाई जाए) – जवानों को कैम्पों या तम्बुओं से बाहर निकलकर लाइन बनाने या पूर्व व्यवस्थित पोजीशन में लाने के लिए।

रैली सीटी – (लगातार छोटी सीटी बजाई जाए) – यदि कोई शारीरिक संकेत न दिया जा सके तो सभी जवानों को जंगल झाड़ियों, अंधेरे या भीड़ में लीडर के निकट आ जाने का संकेत।

उपर्युक्त संकेत दिए जाने पर जवान सीटी की आवाज की दिशा में दौड़ चाल में आएं और लीडर के सम्मुख उसी तरफ चेहरा करके खड़े हो जाएं जिस दिशा में उसका चेहरा है।

हाथ के संकेत

1. दायीं तरफ फैलनाः– दायाँ बाजू सिर के ऊपर पूरा फैलायें और धीरे–धीरे एक तरफ से दूसरी तरफ हिलाया जाए, हाथ खुला हो, और तीन बार शरीर के दोनों तरफ कूल्हों तक नीचे लाया जाए और फिर दायीं तरफ संकेत किया जाए।

2. बायीं तरफ फैलनाः– बायाँ बाजू सिर के ऊपर पूरा फैलायें और धीरे–धीरे एक तरफ से दूसरी तरफ हिलाया जाए, हाथ खुला हो, और तीन बार शरीर के दोनों तरफ कूल्हों तक नीचे लाया जाए और फिर बायीं तरफ संकेत किया जाए।

3. बीच से फैलनाः– यह क्रिया उसी प्रकार की जाएगी जैसे की दायीं तरफ फैलने की जाती है। अंतर केवल इतना होगा की हाथ को तीसरी बार घुमाने के पश्चात् उसे सावधान की स्थिति में सीधा नीचे लाया जाएगा।

4. आगे बढ़ः– बाजू कंधे के नीचे से आगे की तरफ झुलाया जाए।

5. थमः– बाजू को सिर के ऊपर तीन बार घुमाएं।

6. दायें दिशा बदलनाः– दायाँ बाजू कंधे की सीध में फैलाया जाए, उसके बाद गोलाई में हरकत की जाए और उसके पूरा हो जाने के बाद बाजू और शरीर की अपेक्षित दिशा की ओर मोड़ दिया जाए।

7. बायें दिशा बदलनाः– बायाँ बाजू कंधे की सीध में फैलाया जाए, उसके बाद गोलाई में हरकत की जाए और उसके पूरा हो जाने के बाद बाजू और शरीर की अपेक्षित दिशा की ओर मोड़ दिया जाए।

8. आधा दायें या बायें मुड़ना या पूरा मुड़नाः– शरीर अपेक्षित दिशा में मोड़ा जाए और बाजू कंधे के सीध में अपेक्षित दिशा में फैला दिया जाए।

9. दौड़ चाल– मुट्ठी बंद करके हाथ को जंघा और कंधे के बीच ऊपर – नीचे किया जाए।

10. मेरे पीछे आओः– बाजू के कंधे के ऊपर पीछे से आगे की ओर झुलाया जाए।

11. जैसे थेः– हाथ पूरा नीचे की तरफ और खुला रखे और उसे जमीन के समानान्तर के सामने आर–पार हिलाएं।

12. लौटनाः– खुले हाथ से जमीन की तरफ (हथेली नीचे की ओर हो) दो या तीन बार हल्की सी हरकत की जाए।

13. पीछे मुड़नाः– बाजू को सिर के उपर तीन बार घुमाए।

14. बीच में इकट्ठा होनाः– हाथ सिर के ऊपर रखा जाए और कोहनी दायीं या बायीं तरफ सामने हो।

15. बायें तरफ इकट्ठा होनाः– यदि बायीं दिशा में इकट्ठा होना हो तो कमाण्डर अपना हाथ नीचे लाने से पहले उस दिशा की ओर संकेत करे।

16. दायें तरफ इकट्ठा होनाः– यदि दायीं दिशा में इकट्ठा होना हो तो कमाण्डर अपना हाथ नीचे लाने से पहले उस दिशा की ओर संकेत करे।

17. तेज चलनाः– दायीं कोहनी मोड़ो, हथेली खुली हुई हो और जवानों की तरफ हो। फिर तेजी से नीचे गिराओ।

राइफल के साथ संकेत

1. शत्रु कम संख्या में दिखाई देनाः– पूरा बाजू ऊपर उठाकर राइफल सिर से ऊपर जमीन के समानान्तर पकड़ी हुई हो। नालमुख (बैरल) का रुख सामने की तरफ हो।

2. शत्रु बहुत बड़ी संख्या में दिखाई देनाः– पिछले संकेत की भाँति ही राइफल पकड़ी हुई हो परन्तु उसे बार–बार ऊपर–नीचे करो।

3. शत्रु दिखाई न देनाः– ऊपर की ओर पूरा बाजू उठाकर राइफल पकड़ी हुई हो, नालमुख (बैरल) सीधा ऊपर की ओर हो।

अध्याय XXIII

सड़क पर लाइन बनाना (स्ट्रीट लाइनिंग)

सामान्य – सामान्यतः महत्वपूर्ण मेलों, धार्मिक पर्वों के अवसर पर गाड़ियों और पैदल यातायात के लिए और अति विशिष्ट व्यक्तियों (वी.आई.पी.) की सुरक्षा के लिए सड़क पर लाइन बनाई जाती है। यह कार्य आमतौर पर बिना शस्त्र किया जाता है। परन्तु विशेष अवसरों पर ड्यूटी लाठियों, हथियारों के साथ भी की जा सकती है।

संख्या – नियुक्त किए जाने वाले जवानों की संख्या देख–भाल की जाने वाली सड़क की लम्बाई या क्षेत्र के अनुसार होनी चाहिए। जहां तक संभव हो जवानों की संख्या समुचित नियन्त्रण और अन्यान्य संचार व्यवस्था बनाए रखने के लिए पर्याप्त होनी चाहिए।

विरचना (फार्मेशन) – सड़क पर लाइन बनाने के लिए एक प्लाटून या कम्पनी सामान्यतः दो लाइनों में खड़ी होती है। किन्तु जब गाड़ियों या पैदल यात्रियों का यातायात चलाने के लिए सड़क को दो भागों में बांटा जाना हो, या जब जवानों की संख्या थोड़ी हो और काफी दूरी तक व्यवस्था करनी हो तो ऐसी हालत में स्क्वाड या प्लाटून को एक फाइल में खड़ा किया जाए।

परिनियोजन (डिप्लायमेंट) – उपर्युक्त कार्यों में प्लाटून या कम्पनी को सड़क पर फैलाने के लिए आमतौर पर उसे पीछे की तरफ से खोला जाता है उसे सड़क के बीच में लाया जाता है और फिर सड़क की जिस दिशा में सुरक्षा की आवश्यकता हो उसी दिशा में मोड़ दिया जाता है।

सजना (ड्रेसिंग) – सभी विरचनाओं में आगे चलने वाले गाइड से सीध लेकर सजने की कार्रवाई की जाती है।

जवान कंधे शस्त्र की स्थिति में खुलें और निकट आएं जब अपेक्षित फासला बन जाए तब प्रत्येक फाइल बाजू शस्त्र करे और सब जवान एक साथ ''विश्राम'' की स्थिति में खड़े हो जाएं। इसी प्रकार जब निकट आने को कहा जाए तो प्रत्येक फाइल एक साथ ''सावधान'' हालत में आएं और कन्धे शस्त्र करें और इसके बाद चलें।

खंड–1

सड़क की दोनों तरफ से सुरक्षा करना

1. **सड़क के दोनों तरफ पीछे से कदम खोलकर–** ''लाइन बना–तेज चल''
2. **कार्रवाई –** इस आदेश पर प्लाटून की कम्पनी, जो दो लाइनों में होगी, सड़क की उस दिशा में चले जिसकी सुरक्षा की जानी है।

''तेज चल'' आदेश पर पिछली फाइल के दोनों जवान अपने सामने वाले जवान को छूएं और बाहर की तरफ घूम जाएं और ज्यों ही वे सड़क के किनारे पर पहुंच जाएं वैसे ही वे रुक जाएं और पीछे मुड़े, यदि वे सशस्त्र हों तो दोनों बाजू शस्त्र करें और एक साथ 'विश्राम' स्थिति में खड़े हो जाएं। इसी प्रकार प्रत्येक फाइल पिछली फाइल की भांति ही वही कार्रवाई करें।

टिप्पणी : यदि स्काउट चल रहा हो तो ''तेज चल'' आदेश न दिया जाए। फासले के लिए कोई निश्चित कदम नहीं निर्धारित किए जा सकते। प्रत्येक मामले में जवान सड़क के किनारे पर थम जाएं।

खंड–2

सिमटना

1. **''दांए या बाएं – सिमट''**
2. **''कार्रवाई'' –** दांयी या बांयी तरफ वाली फाइल ''सावधान'' हो जाए एक कदम आगे बढ़ाए, कंधा शस्त्र करे, अन्दर की तरफ मुड़े और अपनी–अपनी लाइनों के सामने मार्च करें। जब सभी फाइल बाहर चली जाएं तब निम्नलिखित आदेश दिया जाएः–

"अन्दर को पीछे घूम"

इस आदेश पर आगे वाली फाइल के जवान अंदर की ओर घूमें और इसी समय में निकट आएं और अपने बीच दो कदम का फासला रखें।

टिप्पणी : स्क्वाड के दांए या बाएं पार्श्व अपनी स्क्वाड में पूर्व स्थिति में आ जाएं।

खंड–3

बारी–बारी सड़क के दोनों ओर सुरक्षा करना

प्लाटून के जवानों को बारी–बारी से सड़क के दोनों तरफ लगाने के लिए उन्हें अपेक्षित दिशा में मोड़ दिया जाए और निम्नलिखित आदेश दिया जाएः–

"एक फाइल बना – तेज चल"

इस आदेश के मिलने पर आगे वाली लाइन के जवान आगे कूच करें। पिछली लाइन एक ही फाइल में पहली लाइन के पीछे चलेगी (यदि प्लाटून या कम्पनी फाइल में चल रहीं हो तो आदेश शब्दों में से "तेज चल" का आदेश निकाल दिया जाए)।

जब एक फाइल बन जाए तो निम्नलिखित आदेश दिए जाएंः–

1. **सड़क के दोनों तरफ पीछे से बारी–बारी "कदम खोल कर लाइन बना"**

2. **कार्रवाई –** "कदम खोल" इस आदेश पर पिछली लाइन का जवान अपने सामने वाले जवान को छुएं और साथ–साथ दांए घूम जाएं, उसी प्रकार सामने की लाइन का जवान बाएं घूमे। ठीक फासले पर पहुंच जाने के बाद वे सड़क के किनारे खड़े हो जाएं और पीछे मुड़ें पिछली और सामने की लाइनों के बाकी जवान इसी प्रकार की कार्रवाई करें।

यदि जवान सशस्त्र हों तो प्रत्येक जवान बाजू, शस्त्र करे और साथ–साथ "विश्राम" हालत में खड़ा हो जाए।

टिप्पणी : "थम" हालत में भी एक फाइल बनाई जा सकती है। "थम" हालत से यदि उक्त विरचना करनी हो तो "कदम खोल" के बाद "तेज चल" आदेश जोड़ दिया जाए।

खंड–4

सिमटना

1. **"दांए या बाएं सिमट"**

2. **कार्रवाई –** वही कार्रवाई की जाए जो उपर्युक्त खण्ड 84 में बताई गई है। अन्तिम पार्श्व का सबसे दूर वाला जवान, जिसे सिमटने का आदेश दिया गया हो, पहले चले और जब वह अपने साथ वाले पहले जवान की लाइन में पहुंच जाए तो दोनों एक साथ चलें।

खंड–5

प्लाटून या कम्पनी को मध्य से परिनियोजन

1. **किसी प्लाटून या कम्पनी को मध्य से लगाने के लिए मध्य का जवान पहले चुना जाए। उसके पश्चात् निम्नलिखित आदेश दिये जाएंः–**

2. **(i) सड़क के दोनों तरफ मध्य से खोलकर "लाइन बना – लाइनें बाहर मुड़"**

इस आदेश पर मध्य से दांई और बांई तरफ की लाइनों के जवान बाहर की तरफ मुड़ें। पिछली लाइन के मध्य का जवान पीछे मुड़े।

(ii) "पीछे से कदम खोल कर तेज चल"

3. **कार्रवाई –** "तेज चल" आदेश पर मध्य वाले जवान आगे और पीछे की तरफ चलें और सड़क के किनारे स्थान लें, थमें, पीछे मुड़ें और (यदि सशस्त्र हों तो) बाजू शस्त्र करें।

बाकी लाइनें (अर्थात् मध्य में खड़े जवानों के दांयी और बांयी तरफ की लाइनें) खण्ड–1 में बताये अनुसार कार्रवाई करें और अपेक्षित दूरी प्राप्त करने के पश्चात् अपनी लाइनों के मध्य में खड़े जवान से सिधाई लें।

4. **सिमटना –** अगर मध्य से सिमटना हो तो निम्नलिखित आदेश दिए जाएंः–

5. **"मध्य सिमट"**

6. **कार्रवाई –** (i) मध्य वाले जवान आगे बढ़ें। सड़क के बीच में जाकर दो–दो कदम के फासले पर पहली स्थिति में खड़े हो जाएं। बाकी जवान उनके दांए और बाएं सिमटें और जिस दिशा में उनका मुंह पहले था उसी अपेक्षित दिशा में मुड़ें।

(ii) जैसा खण्ड – 2 में बताया गया है उसके अनुसार भी लाइनें सिमट सकती हैं।

खंड–6

गाड़ियों और पैदल यात्रियों के गुजरने के लिए सड़क को दो भागों में बांटना जैसा खण्ड 3 में बताया गया है एक फाइल बनाने के बाद निम्नलिखित आदेश दिए जाएं :–

1. **"सड़क के मध्य बाहर मुंह करते हुए पीछे से कदम खोल कर लाइन बना"**

2. **कार्रवाई –** इस आदेश पर पिछली लाइन का जवान अपने आगे वाले जवान को छुए और उसी प्रकार बाकी जवान भी उचित कदम लेने के बाद अपने सामने के जवान को छुए और थम जाए पहली लाइन के जवान बांई तरफ और पिछली लाइन के जवान दांयी तरफ मुड़े। अन्तिम जवान थमे और अपना मुंह उसी दिशा की तरफ करे जिस तरफ लाइन चल रही है। प्रत्येक जवान स्थान ले लेने के बाद बाजू शस्त्र करे और विश्राम हालत में खड़ा हो जाए।

खंड–7

सिमटना

1. **"दांए सिमट"**

2. **कार्रवाई –** "सिमट" के आदेश पर सामने और पिछली लाइन के बांयी तरफ वाले दो जवान सावधान हालत में आएं और कन्धे शस्त्र करें। पिछली लाइन का जवान जो अन्तिम छोर पर है, अपने बाएं मुड़े बाएं घूमते हुए आगे बढ़ें।

जब पिछले किनारे वाला जवान पिछली लाइन के नं. 2 जवान की सीध में आए, तो नं. 2 जवान भी उसके साथ दांयी तरफ आगे बढ़े।

जैसे ही ये दो जवान लाइनों के शेष जवानों के निकट पहुंचे वैसे ही वे सावधान हो जाएं, कन्धे शस्त्र करे और उनके पीछे चले।

जब सभी जवान इस प्रकार अपनी लाइनों में शामिल हों तो निम्नलिखित आदेश शब्द दिए जाएं:–

"बाहर से पीछे घूम":

इस आदेश पर दोनों गाइड बाहर की तरफ से पीछे घूमें और उसी समय अपना फासला कम करते हुए लाइनों के बीच दो कदम का फासला बनाए रखें।

अध्याय XXIV

कम्पनी कवायद (ड्रिल)

कम्पनी कवायद की कार्रवाईयों में, इस नियम पुस्तिका में वर्णित स्क्वाड और प्लाटून की अधिकांश मूलभूत कार्रवाईयां शामिल हैं। अच्छी प्रकार कार्रवाई की कम्पनी कवायद कम्पनी के मनोबल और विश्वास को बनाने में अत्यधिक सहायता होती है। इससे जूनियर लीडर को आदेश शब्द याद रखने और आदेश देने की शक्ति बनाए रखने के लिए अभ्यास करने का अवसर मिलता है।

कम्पनी कवायद से पहले अफसरों, अंडर अफसरों और जवानों को सर्व–प्रथम इस विषय पर भाषण दिया जाए ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि वे की जाने वाली सभी विरचनाओं (फार्मेशन) और कार्रवाईयों को समझते हैं। कवायद के दौरान अफसरों और छोटे अफसरों को स्थान बदलने चाहिए ताकि सभी को अभ्यास हो जाए।

खंड–1

कम्पनी में अफसरों और जवानों की संख्या

पुलिस की एक कम्पनी में आमतौर पर निम्नलिखित अधिकारी और जवान होते हैं। अलग–अगल राज्यों में अफसरों और प्लाटून की संख्या और रैंक भिन्न–भिन्न हो सकती हैं:–

क्रम सं.	पदनाम	संख्या	रैंक
(i)	कम्पनी कमाण्डर	एक	राजपत्रित / निरीक्षण
(ii)	प्लाटून कमाण्डर	तीन	निरीक्षक / उप–निरीक्षक
(iii)	कम्पनी हवलदार मेजर	एक	वरिष्ठ हवलदार
(iv)	कम्पनी क्वार्टर मास्टर हवलदार	एक	दूसरा वरिष्ठ हवलदार
(v)	प्लाटून हवलदार	तीन	तीसरा वरिष्ठ हवलदार
(vi)	प्लाटून	तीन	तीन हैडकांस्टेबल और कांस्टेबल

टिप्पणी : *एक प्लाटून में सामान्यतः 6 हवलदार और 30 सिपाही होते हैं। प्लाटून हवलदार प्लाटून के हवलदारों में से सबसे वरिष्ठ होता है।

खंड–2

अफसरों और अंडर अफसरों की विरचना (फार्मेशन) और स्थान

1. कम्पनी कवायद में निम्नलिखित विरचनाएं की जाती हैं:–

(i) लाइन

(ii) तीनों–तीन कॉलम

(iii) प्लाटूनों का कॉलम

(iv) प्लाटूनों का निकट कॉलम

(v) प्लाटून की तीनों–तीन में लाइन

(vi) कूच कॉलम

2. लाइन

इसमें तीन प्लाटून एक ही लाइन में तीन–तीन कदम के फासले पर साथ–साथ खड़े होते हैं अर्थात् नं. 1 प्लाटून बांयी तरफ, नं. 2 प्लाटून बीच में और नं. 3 प्लाटून बिल्कुल बांयी तरफ खड़ी होती है। प्लाटून कमांडरों का स्थान मध्य में होता है और अपने–अपने प्लाटूनों से तीन कदम आगे होता है। कम्पनी हवलदार मेजर मध्य प्लाटून हवलदार के एक फाइल दांयी तरफ होगा और कम्पनी क्वार्टर मास्टर हवलदार एक फाइल उसकी बांयी तरफ खड़ा होता है।

3. तीनों–तीन कॉलम

यह लाइन की ही तरह होता है परन्तु उसका रुख किसी पार्श्व (फ्लैंक) की तरफ होता है और अधिकारी निर्देश फ्लैंक पर। यदि यह पार्श्व बदला जाए, तो अफसर और अधिसंख्यक लाइनें अपने स्थान ग्रहण करने के लिए प्लाटूनों के चारों ओर बाएं से दांए घूमें, मार्च करते समय उनकी दौड़ चाल हो और थमते हुए उनकी, तेज चाल हो।

4. प्लाटूनों का कॉलम और निकट कॉलम

प्लाटूनों का कॉलम एक ऐसी फार्मेशन होती है जिसमें एक प्लाटून के पीछे दूसरी प्लाटून होती है, उनके बीच का फासला उनकी अपनी लम्बाई और तीन कदम के बराबर होता है, उदाहरण के लिए पहली और दूसरी प्लाटूनों के बीच का फासला प्लाटून का अग्र भाग तीन कदम हो।

निकट कॉलम में प्रत्येक प्लाटून के बीच एक जैसा ही (अर्थात् 7 या 12 कदम का) फासला हो परन्तु कॉलम में फासला प्लाटूनों के जवानों की भिन्न–भिन्न संख्या के अनुसार भिन्न–भिन्न रहे।

सामान्य प्रयोजनों के लिए प्लाटूनों का निकट कॉलम 12 कदम के फासले पर बनाया जाए। यह फासला पहले वाली प्लाटून की पिछली लाइन के जवानों की एड़ी से दूसरी प्लाटून की सामने वाली लाइन के जवानों की एड़ियों तक नापा जाता है। निरीक्षण हेतु लाइनों को खोलने के लिए आवश्यक स्थान के आधार पर ही फासला रखा जाता है। कवायद के लिए सात कदम का फासला अधिक उपर्युक्त है।

5. तीनों–तीन प्लाटूनों की लाइन

इसमें प्लाटूनें तीनों–तीन के कॉलम में होती है। तीनों ही प्लाटूनों के तीनों अग्रणी एक ही लाइन में होते हैं। प्लाटूनों के बीच का फासला आदेश पर निर्भर करता है। प्लाटून कमांडरों का स्थान उनकी अपनी–अपनी प्लाटून से तीन कदम के फासले पर सामने और बीच में हो।

6. कूच कॉलम

यह तीनों–तीन कॉलम की तरह ही होता है। इसमें अन्तर केवल यही है कि सभी अफसर और अधिसंख्यक लाइनों में खड़े होते हैं। प्लाटून कमांडर अपनी प्लाटून के तीन कदम आगे हो और कम्पनी कमांडर सबसे आगे वाले प्लाटून कमांडर से तीन कदम आगे हो, कम्पनी हवलदार मेजर आगे वाली प्लाटून के प्लाटून कमांडर की सीध में और कम्पनी क्वार्टर मास्टर हवलदार नं. 3 प्लाटून के पीछे हो। प्लाटून हवलदार अपनी–अपनी प्लाटून के पीछे हों।

टिप्पणी : मार्चिंग की जांच करने के लिए और यदि आवश्यक हो तो आदेश देने या अभिनन्दन करने के लिए कम्पनी और प्लाटून कमांडर लाइन तोड़ें।

सड़क पर मार्च करते समय कॉलम सड़क के बिल्कुल किनारे–किनारे रखा जाए ताकि अन्य यातायात चलता रहे।

खंड–3

सजना (सिधाई)

1. कम्पनी जब लाइन कॉलम में या निकट कॉलम में थमें, तब उसे हमेशा सजाया जाए।
2. ''दाहिने सज'' आदेश पर –
   (क) जवान दाहिनी तरफ से सिधाई लें।
   (ख) जैसे ही जवान अपना सिर मोड़ें, अफसर पीछे मुड़ जाएं और सिधाई तथा कवर किए जाने का पर्यवेक्षण करें। वे निर्देशक फ्लैंक से अपनी सिधाई लें।
   (ग) कम्पनी हवलदार मेजर अपनी दाहिनी तरफ मुड़ें और कम्पनी के पार्श्व की तरफ पांच कदम चले, बाएं घूमे, सामने की लाइन की सीध में उससे पांच कदम के फासले पर थमें, बाएं मुड़े और बारी–बारी से तीनों रैंकों को सजाए। पिछली लाइन को सीध में लाने के बाद वह सामने की लाइन की सीध में वापस आए और ''सामने देख'' आदेश दे।

कॉलम या निकट कॉलम में कम्पनी

3. 'दाहिने सज' आदेश पर–
   (क) जवान दाहिनी तरफ से सिधाई लें।
   (ख) जैसे ही जवान अपना सिर मोड़ें अफसर पीछे मुड़ जाए।
   (ग) प्लाटून हवलदार दांयी तरफ मुड़ कर

अपने कंपनी की बाजू की तरफ 5 कदम बाहर निकले, बांयी तरफ घूमे और अपने सामने वाली लाइन की सीध में पांच कदम की दूरी पर थमें, फिर बायीं तरफ मुड़ें और कम्पनी हवलदार मेजर के ''हिलो मत'' आदेश पर तीनों–लाइनों की सिधाई करे। तीनों लाइनों को सिधाई में लाने के बाद वे सामने वाली लाइन की सीध में पांच कदम की दूरी पर अपने स्थान पर वापस आ जाएं। उनका रुख अन्दर की तरफ हो।

टिप्पणी : प्लाटून हवलदार सामान्यतः निर्धारित कदम मार्च करते हैं ताकि वे एक साथ ही काम कर सकें।

(घ) कम्पनी हवलदार मेजर 6 कदम आगे चलकर कम्पनी के दाहिने जवान के सामने और उसकी ओर रुख रखते हुए थमे। उस स्थान से वह प्रत्येक प्लाटून के दाहिने जवान की सिधाई की जांच कर सकता हैं। उसके बाद वह बांयी तरफ मुड़े, पांच कदम आगे बढ़े और प्लाटून हवलदारों की सिधाई की जांच करे। कम्पनी हवलदार मेजर का हिलो मत आदेश होने पर प्लाटून हवलदार सिधाई का कार्य करे।

(ङ) जब सजने का कार्य पूरा हो जाए, तब अगली प्लाटून का प्लाटून हवलदार नं. ––– प्लाटून, सामने देख आदेश देगा। मध्य प्लाटून हवलदार उसी आदेश को दोबारा कहे परन्तु उसमें से प्लाटून शब्द निकाल दे। पिछली प्लाटून का हवलदार पूरा–पूरा आदेश कहे।

पिछली प्लाटून के हवलदारों के सामने देख आदेश पर:

(च) अफसर पीछे मुड़े

(छ) प्लाटून हवलदार और कम्पनी हवलदार मेजर कदम बढ़ाएं और अपने–अपने स्थान पर वापस आ जाएं।

(ज) यदि प्लाटून हवलदार न हो तो बगली फ्लैंक सैक्शन कमांडर प्लाटूनों की सिधाई करे।

5. कम्पनी कवायद में हर कार्रवाई करने के बाद सैक्शन जवान अपनी सिधाई ले।

6. जब तक कोई और आदेश न दिया जाए, कम्पनी प्लाटून–वार निकट कॉलम में खड़ी रहे और फिर उसका निरीक्षण किया जाए। तथापि यदि स्थान की कमी के कारण ऐसा न किया जा सके तो कम्पनी लाइन बनाकर (लाइन फार्मेशन) खड़ी हो।

खंड–4

प्लाटूनों के निकट कॉलम में लाइन बनाने वाली कम्पनी

हवलदार मेजर ''लाइन बना'' आदेश दे, जिस पर प्रत्येक प्लाटून का दाहिना सेक्शन कमांडर एक कदम आगे आए। वे हवलदार मेजर द्वारा कवर किए जाएं। उसके बाद हवलदार मेजर ''हिलो मत'' आदेश दे, इस आदेश पर कम्पनी सावधान हालत में आ जाए एक कदम आगे बढ़े और थोड़ा रुकने के बाद जवान अपनी सीध ले।

रुकने का कार्य पूरा होने के बाद वरिष्ठ अफसर विश्राम का आदेश दें।

खंड–5

थमते हुए कम्पनी द्वारा लाइन (रैंक) बदलना ''पीछे मुड़''

सारी कम्पनी पीछे मुड़े केवल अफसर और अधिसंख्य जवान बगल से होकर या लाइन के बीच से होकर अपनी जगह दोबारा ग्रहण करें।

टिप्पणी : यदि बिना लाइन बदले पीछे मुड़ना हो तो उसके लिए पीछे मुड़ आदेश के पहले ''कम्पनी पीछे लौटे'' आदेश जोड़ दिया जाए। पहली हालत में आने के लिए 'कम्पनी आगे बढ़े–पीछे मुड़ आदेश दिया जाए। इसमें अफसर और अधिसंख्य जवान पीछे घूमें परन्तु वे अपनी जगह न बदले।

खंड–6

निकट कॉलम की कार्रवाई

1. थमकर निकट कॉलम से दिशा बदलना

दाहिने दिशा बदल–दाहिने घूम। तेज चल

(i) सबसे आगे वाली प्लाटून को छोड़ कर कम्पनी थोड़ा बाएं घूमे, सबसे अगली प्लाटून न मुड़े लेकिन दाहिनी तरफ देखे।

(ii) प्रत्येक जवान सर्किल के एक ही घेरे में चले, सबसे आगे वाली प्लाटून का दाहिना उसका केन्द्र हो। बाहरी पार्श्व सीधा हो, जब प्लाटूनों में जवानों की संख्या बराबर न हो तो वे जवानों की वही सापेक्ष संख्या बनाये रहें जो उनके घूम जाने से पहले थी। कम्पनी हवलदार मेजर बाएं पार्श्व में और कम्पनी क्वार्टर मास्टर हवलदार दांए पार्श्व में घूमने की कार्रवाई की निगरानी करें। आदेश के बाद वे बाहर निकलें, कदम मिलाने के लिए कम्पनी हवलदार मेजर अवश्य ही घूमें, पिछली प्लाटून के बाएं गाइड की निगरानी करें जो कि लगातार पूरे कदम के साथ मार्च करता रहे और कम्पनी के सारे जवान उसी पर निर्भर होते हुए मार्चिंग की कार्रवाई करें।

(iii) जब कम्पनी आवश्यक कोण तक घूम जाए, तब ''आगे बढ़ या थम'' का आदेश दिया जाए व उक्त आदेश पर सभी अपेक्षित दिशा की तरफ आगे बढ़ें या थम जाएं।

(iv) जब बांयी तरफ घूमना हो, तब हवलदार मेजर का कर्तव्य होगा कि वह जैसा कि ऊपर बताया गया है, पिछली प्लाटून के दाहिने गाईड को देखें।

(v) तीनों–तीन में चलने वाला निकट कॉलम ऊपर बताए अनुसार घूमे, प्रत्येक प्लाटून के आगे वाले तीन जवान उसी प्रकार घूमें जिस प्रकार उपर्युक्त अगली प्लाटून घूमेगी।

2. कोई निकट कॉलम, जब आगे या पीछे से तीनों–तीन कॉलम बनाते हुए थम किये हुए हों।

दाहिने (बाएं) से तीनों–तीन कॉलम में आगे बढ़ (पीछे लौट) कम्पनी दाहिने या बाएं मुड़

अगली (या पिछली) प्लाटून का कमांडर आदेश दे नं.....प्लाटून बाएं घूम, तेज.....चल और इसी प्रकार प्रत्येक प्लाटून कमांडर समय पर कार्रवाई करे ताकि वह तीनों–तीन कॉलम में अपना स्थान ले सके।

3. जब कोई कम्पनी निकट कॉलम में लगी हुई हो और किसी पार्श्व की ओर तीनों–तीन के कॉलम में चलाना हो

कम्पनी तीनों–तीन कॉलम में दाहिने (या बाएं चल), कम्पनी दाहिने (या बाएं) मुड़

अगली या पिछली प्लाटून का कमांडर आदेश दे ''नं. ..... प्लाटून तेज .....चल'' और बाकी सभी प्लाटून कमाण्डर समय पर आदेश दें कि ''नं..... प्लाटून बाएं (या दाहिने) घूम तेज चल' ताकि तीनों–तीन की कॉलम में वह अपना स्थान ले सकें।

4. जब एक कम्पनी निकट कॉलम में लगी हुई हो, और किसी पार्श्व में तीनों–तीन के कॉलम में चलना हो।

प्लाटूनों की तीनों–तीन की लाइन में दाहिने (या बाएं) चल, कम्पनी

जब तक किसी अन्य प्लाटून को तैनात न किया जाए, तब तक दांयी या बांयी प्लाटून ही निर्देशन करेगी। (जब कम्पनी चल रही हो तब भी यह विरचना की जा सकती है)। ऐसा करने के लिए उक्त

दाहिने (या बाएं) मुड़ तेज चल।	आदेश शब्दों में से ''तेज चल'' शब्द निकाल दिए जाएं।

5. जब कम्पनी निकट कॉलम में थमी हुई हो और उसी दिशा में लाइन बनाना हो

बाएं को लाइन बना बाकी बाएं मुड़ तेज चल।	अगली प्लाटून खड़ी रहेगी, बाकी प्लाटूनों के गाइड सबसे छोटे मार्ग से उन प्लाटूनों को उसी स्थान पर ले जाएं जहां उनके आन्तरिक पार्श्व ठहरेंगे। इसके बाद प्रत्येक प्लाटून संरेखण के समानान्तर घूमे और जब वह रेख पर अपने स्थान के सामने आ जाए तब उसका कमांडर उसे ''थम'' आदेश दे। उसके बाद उसे दाहिने मुड़ने का आदेश दे।

6. कम्पनी निकट कॉलम में चल रही हो और थम कर पार्श्व में लाइन बनाना हो तो

बाएं से थम कर बांयी दिशा लाइन बना	पिछली प्लाटून का कमांडर तुरन्त आदेश दे ''थमकर बाएं बन'' बाकी सब कमांडर अपनी–अपनी प्लाटूनों को उसी प्रकार लाइन में लाएं जब वे पिछली प्लाटून से कॉलम की दूरी पर पहुंच जाएं।

7. निकट से कॉलम में आगे बढ़ना या पीछे लौटना

कॉलम में आगे बढ़	आगे वाली प्लाटून का कमांडर आदेश दे नं. .....प्लाटून आगे बढ़ेगा, दाहिने से तेज चल, और बाकी प्लाटून अपने आगे के प्लाटून के एक कॉलम दूर हो जाने पर उसी प्रकार आगे बढ़ें।
कॉलम में पीछे लौट, कम्पनी पीछे मुड़	प्लाटून कमांडर पीछे मुड़े और अपनी प्लाटूनों को एक दूसरे के पीछे एक कॉलम का फासला रखकर यह आदेश देते हुए मार्च करवाए नं. ..... प्लाटून, पीछे लौट पीछे मुड़, बाएं से तेज चल।

8. मार्च करते हुए निकट कॉलम से कॉलम में खुलना

(नं. ....प्लाटून पर प्लाटून का कॉलम बना, बाकी कदम ताल)	अगली प्लाटून चलती रहे। अन्य प्लाटूनें कदम ताल करें और जब कॉलम का फासला हो जाएं तब प्लाटून कमांडर अपनी–अपनी प्लाटूनों को आगे बढ़ाएं।

टिप्पणी : यदि थम कर कॉलम बनाना आवश्यक हो कम्पनी कमांडर निम्नलिखित आदेश दें–

''नं. ..... प्लाटून पिछली प्लाटून पर प्लाटून की कॉलम बना''। इस आदेश पर पिछली प्लाटून का कमांडर एकदम अपनी प्लाटून का थम करे और उसके बाद अन्य प्लाटून कमांडर कॉलम फासला प्राप्त हो जाने पर एक के बाद दूसरी प्लाटूनों को थम करें।

9. जब निकट कॉलम में थमकर खड़ी हुई कम्पनी का कॉलम फासला बनाना हो।

नं. .....प्लाटून पर प्लाटूनों की कॉलम बना, बाकी तेज चल	पिछली प्लाटून अपने स्थान पर खड़ी रहे बाकी कॉलम फासला होने के बाद तथा उनके कमांडरों द्वारा थमने का आदेश दिया जाने पर थम करेंगे।

टिप्पणी : (i) यदि मध्य प्लाटून पर प्लाटूनों की कॉलम बनाना अपेक्षित हो, तो आदेश इस प्रकार दिया जाए ''नं. .....प्लाटून पर प्लाटूनों की कॉलम बना, पीछे वाला प्लाटून पीछे लौटेगा, पीछे मुड़, बाकी तेज चल। इस आदेश पर नाम ली गई प्लाटून अपने स्थान पर खड़ी हो जाए। पिछली प्लाटून पीछे मुड़े। नाम ली गई प्लाटून के सिवाए सभी प्लाटून चलती रहें और कॉलम फासला हो जाने पर प्लाटून कमांडर अपनी–अपनी प्लाटूनें रोकें। पिछली प्लाटून का कमांडर अपनी प्लाटून को पीछे मोड़ें।

(ii) यदि आगे वाली प्लाटून पर कॉलम बनाना अपेक्षित हो तो आदेश इस प्रकार दिया जाएगा नं. ..... प्लाटून पर प्लाटूनों का कॉलम बना, बाकी पीछे लौटेगा, पीछे मुड़, तेज चल।

10. तीनों–तीन में प्लाटूनों की सीध में बाजू में बढ़ते हुए निकट कॉलम से थम कर लाइन बनाना

थमकर बाएं या दाहिने दिशा लाइन बना

दांयी तरफ वाली प्लाटून का कमांडर आदेश दे ''नं. .....प्लाटून थम, बाएं (दाहिने) मुड़। बाकी प्लाटून के गाइड अपने कमांडरों के आदेश पर उन्हें सबसे छोटे मार्ग द्वारा लाइन में उनके स्थान पर ले जाएं और बांयी (या दाहिनी) तरफ मोड़ें।

खंड–7

कॉलम कार्रवाई

1. दिशा बदलते हुए कॉलम में मार्च करना।

दाहिने दिशा बदल

अगली प्लाटून का कमांडर यह आदेश देगा ''नं. .....प्लाटून दाहिने बन''। और जब प्लाटून नई दिशा में बन जाए तब ''आगे बढ़'' का आदेश देगा। बाकी प्लाटूनें भी बाद में उसी स्थान पर आ कर उसी प्रकार बनेंगी।

बांयी दिशा बदलने से पहले, कॉलम को सामान्यतः बाएं से चलने का आदेश दिया जाए।

2. कॉलम जब थमा हो तो तीनों–तीन (उसी दिशा में) कॉलम बनाना

दाहिने से तीनों–तीन कॉलम में आगे बढ़, कम्पनी दाहिने मुड़, प्लाटूनों बाएं घूम, तेज चल

''तेज चल'' के आदेश पर प्रत्येक प्लाटून तीनों–तीन का कॉलम बनाते हुए बांयी तरफ घूमे। चलती हुई कॉलम में, यदि चाहें, तो प्लाटूनें बारी–बारी से तीनों–तीन की कॉलम में आगे बढ़ सकती है। ''दाहिने से, बार–बारी तीनों–तीन कॉलम में आगे–बढ़'', का संकेत मिलने पर अगली प्लाटून का कमांडर यह आदेश दे ''प्लाटून नं.'' दाहिने मुड़, बाएं घूम''। बारी–बारी से प्रत्येक प्लाटून के उसी स्थान पर पहुंच जाने पर उसका कमांडर उसी प्रकार कार्रवाई करे।

टिप्पणी : (i) जब कम्पनी कॉलम में मार्च कर रही हो तब, पीछे लौटने वाली दिशा में तीनों–तीन कॉलम बनाया जा सकता है। इसके लिए (यदि कम्पनी पहले से ही पीछे लौटने वाली दिशा में न चल रही हो) कम्पनी कमांडर कम्पनी को ''पीछे मुड़'' आदेश दे और उसके बाद ''आगे बढ़'' आदेश देने के स्थान पर पीछे लौट का आदेश दे।

(ii) जब कम्पनी कॉलम में मार्च कर रही हो तो यह रचना दाहिने या बाएं से तीनों–तीन की कॉलम में आगे बढ़ने या पीछे लौटने के कार्य कम्पनी कमांडर के आदेशों पर किए जा सकते हैं। कम्पनी कमांडर के आदेश शब्द इस प्रकार होंगे ''दाहिने से या बाएं से तीनों–तीन कॉलम में आगे बढ़ या पीछे लौट, कम्पनी दाहिने या बाएं मुड़, प्लाटूनों बाएं घूम।'' इन आदेश शब्दों पर सभी प्लाटूनें दाहिने या बाएं मुड़ें और फिर साथ–साथ बांयी तरफ घूमें। प्लाटून कमांडरों को इसके लिए कोई भी आदेश शब्द बोलने की आवश्यकता नहीं है।

3. जब कोई कॉलम थमा हुआ हो और (किसी पार्श्व की ओर) तीनों–तीन कॉलम बनाना हो तो

तीनों–तीन कॉलम में दाहिने चल, कम्पनी दाहिने मुड़ बायीं प्लाटून सामने को, बाकी बाएं घूम, तेज चल

आगे वाली प्लाटून अपेक्षित दिशा की तरफ चले और बाकी दोनों प्लाटून उसके पीछे चलें। जब कोई कॉलम मार्च कर रही हो, तो प्लाटूनें, यदि चाहें तो कम्पनी कमांडर के आदेश पर बारी–बारी से तीनों तीन कॉलम में पार्श्व में चल सकती हैं। ''दाहिने से बारी–बारी तीनों–तीन कॉलम में दाहिने चल'' के संकेत पर आगे वाली प्लाटून का कमांडर'' ..... नं. .....प्लाटून दाहिने मुड़'' आदेश देगा, बाकी प्लाटूनें उसी स्थान पर पहुंचने पर वही कार्रवाई करें।

जब कोई कॉलम चल रहा हो, यदि वह चाहे तो कम्पनी कमांडर

के आदेश पर कम्पनी तीनों–तीन कॉलम में पार्श्व में चल सकती है। इस कार्रवाई के लिए आदेश शब्द वही होंगे जो ''थम'' के लिए हैं उनमें से ''तेज चल'' भाग निकाल दिया जाएगा।

4. जब कॉलम चल रहा हो तब उसी दिशा की तरफ मुंह करके लाइन बनाना।

बाएं को लाइन बना, बाकी आधा बाएं मुड़, दौड़कर चल

आगे की प्लाटून दांयी तरफ से सिधाई लेती हुई तेज चाल में आगे बढ़ती रहे। जब प्रत्येक प्लाटून अपने ठीक पीछे की प्लाटून की सीध में हो, तो उसका कमांडर यह आदेश दे ''नं. ..... प्लाटून आधा दाहिने मुड़'' और संरक्षण पर पहुंच जाने के बाद वह यह आदेश दे ''तेज चाल में आ, तेज चल'' हर हालत में दाहिने से ही सजा जाए। यदि कम्पनी थमी हुई हो, तो ''दौड़ चल'' की बजाए ''तेज चल'' आदेश दिए जाए। आगे वाली प्लाटून अपने स्थान पर खड़ी रहे

और बाकी प्लाटूनें वही कार्रवाई करें जो स्क्वाड कवायद में की जाती है और संरेक्षण पर पहुंचने के बाद ''तेज चाल में, तेज चल'' की बजाए ''थम'' आदेश दिया जाए।

5. यदि किसी कॉलम को खड़ा किया जाए और बाजू (फ्लक) की तरफ मुंह करके लाइन बनानी हो तोः

थमकर, बाएं दिशा लाइन बना, प्लाटून बाएं बन, तेज चल

जवान स्क्वाड कवायद में की जानी वाली कार्रवाई की भांति ही कार्रवाई करें। ''बन'' आदेश पर प्रत्येक प्लाटून का बांया गाइड स्क्वाड के केन्द्र का कार्य करे।

यह विरचना अर्थात् प्लाटून के कॉलम से किसी बाजू में लाइन बनाने का कार्य कॉलम के चलते चलते भी की जा सकती है। इसके लिए ऊपर बताए अनुसार ही आदेश होंगे, उसमें से केवल ''थमकर'' और ''तेज चल'' निकाल दिए जाएं। प्लाटून एक साथ बांई दिशा बदले और रुख बदलने के बाद, जब तक कम्पनी कमांडर आगे बढ़ने का आदेश न दे, कदम ताल करती रहे।

6. जब कॉलम चल रहा हो और उसे निकट कॉलम में लाना हो

नं. .... प्लाटून, पर निकट कॉलम बना, बाकी दौड़कर चल

आगे वाली प्लाटून तेज चाल से बढ़ती रहे, बाकी प्लाटूनें ठीक फासला पूरा करने तक दौड़ चाल करें।

टिप्पणी : यदि आदेश ''थमकर नं. .....प्लाटून की निकट कॉलम बना'' दिया जाए तो आगे वाली प्लाटून का कमांडर उसे एकदम थमने का आदेश दे। शेष प्लाटूनें भी निकट कॉलम में आने पर अपने कमांडरों के निर्देश द्वारा थम जाएं।

7. जब कॉलम खड़ा हो और निकट कॉलम बनाना हो

नं.....प्लाटून, पर निकट कॉलम बना, बाकी तेज चल

आगे वाली प्लाटूनें अपने स्थान पर खड़ी रहें। शेष प्लाटूनें निकट कॉलम में पहुंचने पर अपने–अपने कमांडरों के आदेश पर थम जाएं।

(i) यदि अगली प्लाटून के अलावा किसी अन्य प्लाटून में निकट कॉलम बनाना हो तो आदेश होगा कि ''नं. .....प्लाटून पर निकट कॉलम बना, आगे वाली प्लाटून या प्लाटून, पीछे लौटेंगी, ''पीछे मुड़ बाकी तेज चल।

जिस प्लाटून का नाम लिया जाए, वह प्लाटूनें खड़ी रहें, आगे वाली प्लाटून या प्लाटूनें पीछे मुड़ें। जिस प्लाटून का नाम लिया गया हो उसे छोड़कर अन्य सभी प्लाटूनें चल पड़े

और निकट कॉलम में अपने स्थान पर पहुंचने पर अपने कमांडरों के आदेश पर थम जाएं, सामने वाली प्लाटून या प्लाटूनें अपने कमांडरों के आदेश पर पीछे मुड़ें।

(ii) यदि पिछले प्लाटून पर निकट कॉलम बनाना हो तो यह आदेश दिया जाए ''नं. ..... प्लाटून पर निकट कॉलम बना, बाकी पीछे लौटेगा, पीछे मुड़, तेज चल''। इस आदेश पर ऊपर बताए ढंग से ही कार्रवाई की जाए।

8. जब कॉलम खड़ा किया जाएगा चल रहा हो और किसी बाजू की तरफ प्लाटूनों की तीनों–तीन की लाइन बनानी हो

प्लाटूनों की तीनों–तीन की लाइन में दाहिने या बाएं चल, कम्पनी दाहिने या बाएं मुड़''	प्लाटूनें अपेक्षित दिशा में एक साथ मुड़ जब कम्पनी पहले से ही मार्च कर रही हो, प्लाटूनें अगली प्लाटून से सीध लेकर सजें।

खंड–8

लाइन कार्रवाई

1. जब लाइन थम की स्थिति में हो और उसी दिशा की ओर मुंह करके कॉलम बनाना हो

दाहिने को प्लाटूनों की कॉलम (या निकट कॉलम) बना, बाकी दाहिने मुड़, तेज चल	दाहिनी ओर खड़ी प्लाटून अपने स्थान पर खड़ी रहे, बाकी प्लाटूनों के गाइड उन्हें सबसे छोटे मार्ग द्वारा उनके अपने–अपने स्थान पर कॉलम (या निकट कॉलम में) ले जाएं। तब उनके कमांडर उन्हें यह आदेश दें, ''नं. ..... प्लाटून थम, बाएं मुड़''/''थम'' के आदेश पर दाहिने गाइड एक दम बायीं तरफ मुड़े और सामने वाली प्लाटून के दाहिने गाइड से सिधाई और फासला ले। जैसे ही प्लाटूनें बांयी तरफ मुड़ जाएं, वे दांयी तरफ से, सीध लेकर सजें। यह फार्मेशन उस समय भी किया जा सकता है जब लाइन मार्च कर रही हो, आदेश शब्द वही होंगे उनमें केवल ''तेज चल'' शब्द निकाल दिए जाएं। इस आदेश पर आगे वाली प्लाटून मार्च करती रहे और बाकी प्लाटूनें ऊपर बताए अनुसार कार्रवाई करें। जब लाइन पीछे की ओर लौट रही हो तब भी कॉलम (या निकट कॉलम) फार्मेशन बनाई जा सकती है। आदेश शब्द वही होंगे केवल उनमें ''आगे बढ़'' की बजाए ''पीछे लौट'' कहा जाए।

टिप्पणी : (i) प्लाटूनों की कॉलम बांई तरफ भी बनाई जा सकती है। इसमें आदेश प्लाटून बाएं को कॉलम (या निकट कॉलम) बना, बाकी बाएं मुड़ ''तेज चल'' आदेश दिया जाए। नं. 3 प्लाटून खड़ी हो जाए और नं. 2 और 1 प्लाटूनें नं. 3 प्लाटून के सामने आ जाएं। यह कार्रवाई थमकर भी की जा सकती है।

(ii) नं. 2 प्लाटून पर प्लाटूनों का कॉलम या निकट कॉलम बना, बाकी अन्दर की तरफ मुड़ेगा– ''तेज चल'', आदेश देकर नं. 2 प्लाटून पर भी कॉलम या निकट कॉलम बनाया जा सकता है। ''तेज चल'' आदेश पर नं. 1 प्लाटून नं. 2 प्लाटून के सामने आ जाए और नं. 3 प्लाटून नं. 2 प्लाटून के पीछे आ जाए।

2. जब लाइन को थम कर दिया गया हो और उसे प्लाटूनों के कॉलम में आगे बढ़ना हो

दाहिने से प्लाटून में आगे बढ़, बाकी दाहिने मुड़, तेज चल

''तेज चल'' आदेश पर दाहिनी ओर वाली प्लाटून आगे बढ़े। बाकी दो प्लाटूनें दाहिने को चलें और जब प्रत्येक प्लाटून के गाइड पीछे की तरफ हों और आगे वाले प्लाटूनों के गाइड़ों से कवर कर रहे हों, तब कमांडर यह आदेश दे ''नं. ..... प्लाटून बाएं मुड़''।

3. जब लाइन 'थम' कर दी गई हो और थमकर किसी बाजू की ओर रुख करके कॉलम बनाना हो

थम कर दाहिने दिशा प्लाटूनों की कॉलम बना, प्लाटूनों दाहिने बन, तेज चल

जवान स्क्वाड कवायद में की जाने वाली कार्रवाई की भांति ही कार्रवाई करें, प्रत्येक प्लाटून का दाहिना गाइड स्क्वाड के पीवट मैन (केन्द्र) का कार्य करे।

जब कम्पनी लाइन में चल रही हो तब भी यह फार्मेशन बनाई जा सकती है। इसके लिए ''कम्पनी दाहिने दिशा प्लाटूनों की कॉलम बना, प्लाटूनें दाहिने बन'' आदेश शब्द दिए जाएं। प्लाटूनों की कॉलम बनने के बाद ''आगे बढ़'' आदेश दिया जा सकता है। यदि यह फार्मेशन थमकर करनी आवश्यक हो तो आदेश शब्द से पहले ''थमकर'' शब्द जोड़ दिया जाए। इसी प्रकार जब कम्पनी के थमे बिना किसी भी बाजू में यह फार्मेशन बनाई जा सकती है। इस के लिए ''थमकर'' शब्द आदेश शब्दों से निकाल दिए जाएं और प्लाटूनों की कॉलम बन जाने के बाद कम्पनी कमांडर ''आगे बढ़'' आदेश दे।

टिप्पणी : यह फार्मेशन बाएं बाजू की तरफ मुंह करके नहीं बनाई जा सकती क्योंकि ऐसा होने से सैक्शनों का क्रम बदल जाएगा।

4. जब एक लाइन को उसी दिशा में प्लाटूनों की तीनों–तीन की लाइन बनानी हो

बाएं से प्लाटूनों की तीनों–तीन की लाईन में आगे बढ़, कम्पनी बाएं मुड़ प्लाटून दाहिने घूम, तेज चल

आदेशानुसार कार्रवाई की जाए। प्लाटून कमांडर अपनी–अपनी प्लाटून के आगे तीन जवानों के सामने तीन कदम आगे रहे।

टिप्पणी : (i) जब कम्पनी थमी हुई हो या चल रही हो तब भी यह फार्मेशन की जा सकती है। ऐसा करने के लिए आदेश शब्दों में से ''तेज चल'' शब्द निकाल दिए जाएं।

(ii) जब कम्पनी थमी हुई हो या चल रही हो तब यह फार्मेशन पीछे की दिशा में भी की जा सकती है। ऐसा करने के लिए कम्पनी को दाहिने (यदि वह पहले ही पीछे लौट वाली दिशा की ओर हो तो बाएं को) मोड़ा जाए और फिर प्लाटूनों को ''दाहिने'' घुसाया जाए।

खंड–9

तीनों–तीन के कॉलम में हरकतें

1. तीनों–तीन के कॉलम से प्लाटूनों के कॉलम बनाना

कम्पनी प्लाटूनों के कॉलम बनाएगी बाएं प्लाटून बना

(i) जवान स्क्वाड कवायद की भांति ही इसमें कार्रवाई करें। प्रत्येक प्लाटून के आगे वाले गाइड पर फार्मेशन बनाए जाए। जब कॉलम बनाया जा चुका हो तो कम्पनी कमांडर दाहिनी तरफ से, ''आगे बढ़'' आदेश दे।

(ii) यदि आवश्यक हो तो तीनों–तीन के कॉलम से बारी–बारी प्लाटूनों की कॉलम भी बनायी जा सकती

है। उसके लिए कम्पनी कमांडर आदेश दे कि ''कम्पनी, बारी–बारी बाएं पर प्लाटूनों की कॉलम बना।'' आगे वाली प्लाटून का कमांडर एकदम यह आदेश दे ''नं. ..... प्लाटून, बाएं बन, प्लाटून आगे बढ़ उसी जगह पर पहुंचने पर बाकी प्लाटून कमांडर भी इसी प्रकार आदेश दे।

(iii) यह फार्मेशन इस प्रकार भी बनाई जा सकती है कि कम्पनी फार्मेशन के बाद स्वतः (अपने आप) ही थम जाए। ऐसा करने के लिए ''थमकर'' आदेश शब्द का प्रयोग किया जाए। जब कम्पनी तीनों–तीन की कॉलम में थमी हुई हो और यह फार्मेशन बनाई जानी आवश्यक हो, तो आदेश शब्दों के अन्त में ''तेज चल'' शब्द ओर जोड़ दिया जाए।

2. जब एक लाइन को उसी दिशा में प्लाटूनों की तीनों–तीन की लाइन बनानी हो

थम कर बाएं को प्लाटूनों का निकट कॉलम बना	अगली प्लाटून का कमांडर तत्काल आदेश दे ''नं. ..... प्लाटून थमकर बाएं पर प्लाटून बना''। बाकी प्लाटूनों के कमांडर भी निकट कॉलम के फासले पर पहुंच कर उसी प्रकार कार्रवाई करें।

3. जब तीनों–तीन कॉलम से किसी पार्श्व की ओर थम करते हुए कॉलम बनाना और आगे बढ़ना हो

थमकर बाएं दिशा प्लाटून का कॉलम (या निकट कॉलम बना)	आगे वाली प्लाटून का कमांडर अपनी प्लाटून को ''नं. ..... प्लाटून थम, बाएं मुड़'' आदेश देकर रोके और बांयी तरफ मोड़े। बाकी प्लाटूनों के गाइड उन्हें सबसे छोटे मार्ग द्वारा उसके स्थान पर कॉलम या निकट कॉलम में ले जाएं। वहां उन्हें ''नं. ..... प्लाटून थम, बाएं मुड़'' आदेश दिया जाए। ''थम'' आदेश पर दाहिने गाइड एकदम बांयी तरफ मुड़ जाएं और अपने सामने वाली प्लाटून के दाहिने गाइड से सीध और फासला ले।

4. जब तीनों–तीन के कॉलम से किसी पार्श्व की तरफ मुंह करके कॉलम बनाना और आगे बढ़ना हो

बाएं दिशा कॉलम में आगे बढ़	अगली प्लाटून का कमांडर आदेश दे ''नं. ..... प्लाटून, बाएं मुड़''। प्रत्येक प्लाटून कमांडर, जब उसकी प्लाटून का अगला गाइड पूर्ववर्ती प्लाटून के गाइडों के पीछे और सीध में हो, आदेश देः ''नं. ..... प्लाटून बाएं मुड़''

5. तीनों–तीन के कॉलम से प्लाटूनों की तीनों–तीन की लाइन बनाना और उसी दिशा में चलना

दाहिने को तीन कदम के फासले पर प्लाटूनों की तीनों–तीन की लाइन बना बाकी दौड़ कर चल	अगली प्लाटून तेज चाल में आगे बढ़ती रहे। शेष प्लाटूनों के गाइड अपनी प्लाटून को एक निश्चित अन्तराल पर निकटतम मार्ग से उनके स्थान पर सिधाई में ले जाएं। तब प्लाटून तेज चाल में आएगा, ''तेज चल'' और इस बीच वह अपनी अपनी प्लाटून के अगले तीनों जवानों से तीन कदम आगे स्थान ले जाएं। तब प्लाटून कमांडर आदेश दे, ''नं. ..... प्लाटून तेज चाल में आएगा, ''तेज चल'' और इसी बीच अपनी अपनी प्लाटून के अगले तीनों जवानों से तीन कदम आगे स्थान लें।

6. थमकर तीनों–तीन के कॉलम से उसी दिशा में प्लाटूनों की तीनों–तीन की लाइन बनाना

थमकर दाहिने को कॉलम बना, तीन कदम के फासले पर प्लाटून की तीनों–तीन की लाइन बना, बाकी आधा बाएं मुड़

अगली प्लाटून अपने कमांडर के आदेश पर थम जाए और बाकी प्लाटूनों के अपेक्षित अन्तराल पर पहुंच जाने पर उनके कमांडर आदेश दें ''नं. ..... प्लाटून, आधा बाएं मुड़''। और जब वे सिधाई में आ जाएं तो ''नं. ..... प्लाटून, थम'' आदेश दें।

7. चलते हुए तीनों–तीन के कॉलम से दाहिने पार्श्व में प्लाटूनों की तीनों–तीन की लाइन बनाना

प्लाटूनों की तीनों–तीन की लाइन में दाहिने चल, प्लाटूनों दाहिने घूम

सभी प्लाटूनें एक साथ दाहिने घूमें। बाएं से सीध ली जाए। जब कम्पनी तीनों–तीन के कॉलम में खड़ी हो, तब भी यह फार्मेशन बनाई जा सकती है। उसके लिए आदेश शब्द वही होंगे लेकिन उनके अन्त में ''तेज चल'' और जोड़ दिया जाए।

खंड–10

प्लाटून की तीनों–तीन की लाइन से (कॉलम फासले में) कार्रवाई

1. (थमी हुई) प्लाटून की तीनों–तीन के कॉलम बनाना

बाएं से तीनों–तीन की कॉलम में आगे बढ़ेगा, बांई प्लाटून आगे, बाकी बाएं घूम, कम्पनी तेज चल

अगली प्लाटून आगे बढ़े और बाकी प्लाटूनें बाएं घूमें और अपनी प्लाटून के पीछे–पीछे चलें।

कम्पनी चल रही हो और यह फार्मेशन बनाना अपेक्षित हो तो आदेश शब्दों में से ''तेज चल'' शब्द निकाल दिए जाएं।

2. (थमी हुई) प्लाटूनों की तीनों–तीन की लाइन से किसी पार्श्व (फ्लैंक) में तीनों–तीन के कॉलम बनाना

कम्पनी, बाएं दिशा तीनों–तीन के कॉलम में आगे बढ़, प्लाटूनों बाएं घूम, तेज चल

तीनों प्लाटूनें आगे कदम लें और एक साथ बांयी तरफ घूमें।

यह फार्मेशन कम्पनी के चलते–चलते भी बनाई जा सकती है। ऐसा करने के लिए आदेश शब्दों में से ''तेज चल'' शब्द निकाल दिए जाएं।

3. प्लाटूनों के तीनों–तीन की लाइन में थमी हुई कम्पनी का उसी दिशा में थमकर लाइन बनाना

कम्पनी थमकर लाइन बनाएगी, दाहिने पर प्लाटून बना

सब प्लाटूनें एक साथ दाहिने बने (इस फार्मेशन में यदि प्लाटूनों के दाहिने गाइड अगले तरफ हों तो लाइन पीछे की दिशा (रिटायर डायरेक्शन) में बनाई जाए और यदि दाहिना जवान पीछे की तरफ हों तो लाइन अगली दिशा में बनाई जाए)।

यह फार्मेशन कम्पनी को ''थमने'' की स्थिति से लाइन में मार्च कराने के लिए भी की जा सकती है। यह करने के लिए आदेश शब्दों से ''थमकर'' शब्द निकाल दिया जाए फार्मेशन पूरी बन जाने के बाद ''आगे बढ़'' आदेश दिया जाए।

जब कम्पनी प्लाटून की तीनों–तीन की लाइन में चल रही हो, तब यह फार्मेशन कम्पनी को थम करने या चलाते रहने के लिए भी बनाई जा सकती है। ऐसा करने के लिए उपर्युक्त आवश्यक आदेश अर्थात् ''थमकर'' या ''आगे बढ़'' आदेश दिए जाएं।

4. प्लाटूनों के तीनों–तीन की लाइन से पार्श्व की तरफ कॉलम बनाना

प्लाटूनों के कॉलम में आगे बढ़ेगा या पीछे लौटेगा, कम्पनी बाएं या दाहिने मुड़ कम्पनी थमी हुई हो या चल रही हो, तब ऐसा किया जा सकता है। (यदि प्लाटूनों की तीनों–तीन की लाइन निकट कॉलम फासले पर हो तो इससे निकट कॉलम बनेगा)।

टिप्पणी : ''कूच कॉलम'' (कॉलम ऑफ रूट) से अन्य कार्रवाई और अन्य कार्रवाईयों से कूच कॉलम की कार्रवाईयां तीनों–तीन का कॉलम के अनुसार ही की जा सकती है। उनमें अन्तर केवल इतना ही है कि आदेश शब्दों में ''तीनों–तीन के कॉलम'' के स्थान पर ''कूच कॉलम'' शब्द रहेंगे। प्रत्येक बार जब भी ''कूच कॉलम'' की फार्मेशन बनाई जाए, प्लाटून कमांडर प्लाटूनों के आगे चले जाएं।

खंड–11

विसर्जन

पहले अफसरों को लाइन तोड़ने का आदेश दिया जाए। वे परेड के कमांडर के पास तेज चाल में चलें, और उसके सामने लाइन बनाएं और सैल्यूट करें। जब तक कम्पनी विसर्जित न हो जाए व उसके पीछे खड़े रहें।

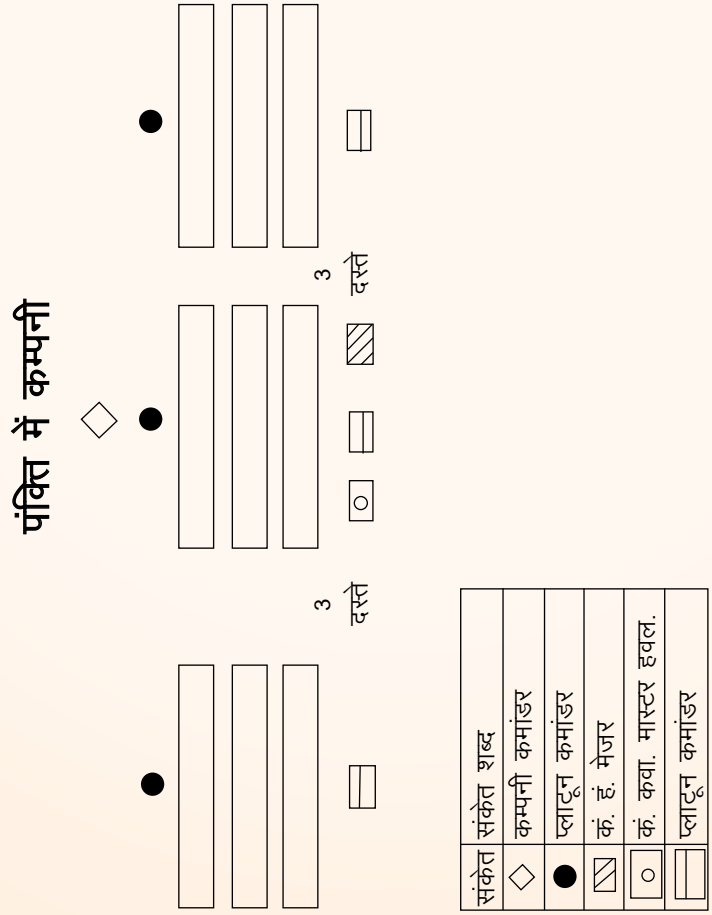

कॉलम में खड़ी कम्पनी

कम्पनी के दस्ते

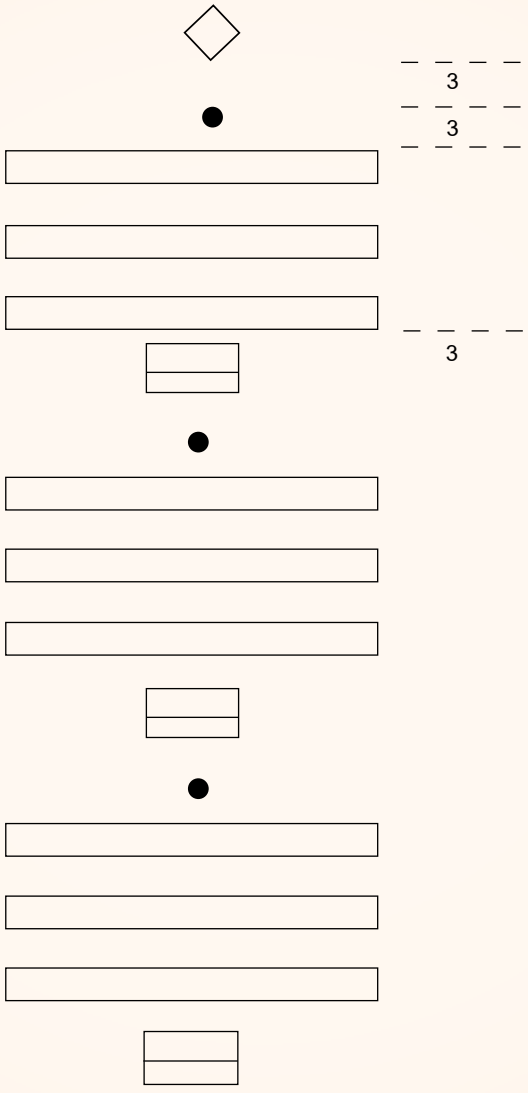

निकट कॉलम में खड़ी कम्पनी की ठीक यही फार्मेशन होती है। अन्तर केवल इतना ही है कि इसमें प्लाटूनों के बीच 7 या 12 कदम का फासला होता है।

समारोह कवायद
(सेरिमोनियल ड्रिल)

अध्याय XXV

समारोह कवायद (सेरिमोनियल ड्रिल)

1. समारोह कवायद का उद्देश्य जवानों में जिंदादिली की भावना को प्रोत्साहित करना और परेड ग्राउंड में स्थिरता और सहचर का ऊंचा स्तर प्राप्त करके नैतिक गुणों के विकास में सहयोग देना है जो युद्ध में सफलता प्राप्त करने के लिए अनिवार्य है।

2. ये उद्देश्य तभी प्राप्त किए जा सकते हैं जब समारोहों के अवसरों पर ध्यानपूर्वक तैयारी की जाए और सारा कार्यक्रम सही–सही ढंग से निष्पादित किया जाए। इसके लिए सभी स्तरों पर अभ्यास और पूर्वाभ्यास किए जाएं, परन्तु यूनिटें इस बात से सावधान रहें कि वे कोई भी ऐसी समारोह कवायद न करें जिसके क्रियान्वयन के लिए उन्हें उपयुक्त रूप से प्रशिक्षण न दिया गया हो।

3. इस खण्ड में सामान्य समारोह के अवसरों पर लागू होने वाले कवायद फार्मेशनों और कार्यविधि का उल्लेख किया गया है। इसमें बटालियन स्तर तक की कार्यविधि का विस्तृत विवरण दिया गया है। इसे कम्पनी स्तर तक के छोटे–छोटे फार्मेशनों के लिए आसानी से अपनाया जा सकता है।

4. अधिकारियों से अपेक्षा की जाती है कि वे इन अनुदेशों की व्याख्या सोच–समझकर तथा बुद्धिमत्ता पूर्वक करें और इस बात को हमेशा ध्यान में रखें कि कार्मिकों के वास्ते इन अनुदेशों को उपयुक्त बनाने के लिए, धरातल तथा असाधारण परिस्थितियों को ध्यान में रख कर, इनमें थोड़ा बहुत परिवर्तन हमेशा किया जा सकता है।

खंड–1

सामान्य व्यवस्थाएं

1. किसी निरीक्षण या समीक्षा के संबंध में गड़बड़ी से बचने के लिए सभी व्यवस्थाएं निम्नलिखित शीर्षों के हिसाब से सावधानीपूर्वक की जाएं:–

(i) समारोह से पूर्व की व्यवस्थाएं;

(ii) समारोह के लिए व्यवस्थाएं;

(iii) समारोह विसर्जित करने के लिए व्यवस्थाएं;

(iv) दर्शकों के लिए व्यवस्थाएं।

(i) समारोह से पूर्व की व्यवस्था के सम्बन्ध में सामान्यतः निम्नलिखित अनुदेश शामिल किए जाएं:–

(क) फार्मेशन जिसमें यूनिटों की निरीक्षण लाइन पर विरचना करनी होती है। उस संबंध में फासले और अन्तराल से संबंधित अनुदेशों का भी ध्यान रखा जाए।

(ख) मार्करों के ब्यौरों सहित, निरीक्षण लाइन पर यूनिटों और फार्मेशनों को सिधाई लेने में तालमेल रखने के तरीके।

(ग) निरीक्षण और मार्च पास्ट दोनों के लिए बैंड जुटाना।

(घ) बैंड कब बजाए जाएं।

(ङ) सामान्य प्रशासनिक व्यवस्थाएं जैसे कि स्थान भूतल (ग्राउंड) की तैयारी, दर्शकों, समाचार पत्रों के प्रतिनिधियों, यातायात नियंत्रण आदि की व्यवस्था।

(च) परेड में भाग लेने वाले व्यक्तियों द्वारा पहनी जाने वाली पोशाक।

(ii) समारोह के लिए व्यवस्था करते समय निम्नलिखित बातों को भी ध्यान में रखा जाए:–

(क) समारोह की विभिन्न अवस्थाओं की रूपरेखा पहले से तैयार की जाए।

(ख) आदेश शब्दों का संकेत देने का तरीका और प्रत्येक संकेत पर अपनायी जाने वाली सही कार्यविधि।

(ग) फासले और अन्तरालों के बारे में विशेष अनुदेश।

(घ) बैण्ड और ड्रमों के बारे में विशेष अनुदेश।

(ङ) मार्च पास्ट के बाद विभिन यूनिटों द्वारा की जाने वाली कर्रवाई।

(च) यदि परेड रद्द करनी हो तो उसे अधिसूचित करने का तरीका अर्थात्, निर्णय कौन ले, कौन सूचना दे और किसे सूचना दे और किसे सूचित किया जाए, और सूचना देने का क्या साधन हों।

(iii) **समारोह विसर्जित करने की व्यवस्था –** यातायात नियंत्रण की ओर विशेष ध्यान दिया जाए क्योंकि इसका पूर्ण रूपेण समन्वय होना चाहिए। जब तक यूनिटें परेड के मैदान से चली न जाएं तब तक दर्शकों को अपनी अपनी जगह पर रहने को कहा जाए। इसके साथ–साथ यह भी सुझाव दिया जाता है कि जब तक भीड़ तितर–बितर न हो जाए जिस मार्ग से यूनिटें मार्च करके जा रही हों, उसका घेरा डाला जाए या मार्च पास्ट के बाद परेड विश्राम अवस्था में रहे। इससे यातायात नियंत्रण में सहायता मिलेगी।

(iv) **दर्शकों के लिए व्यवस्था –** सभी सेवाओं के कर्मचारियों और आम जनता के लिए समुचित प्रबन्ध करना अनिवार्य है। व्यक्तियों के नाम से कम से कम सीटें आरक्षित की जाएं और वे भी केवल उच्चतम अधिकारियों और उस स्थान के अत्यन्त विख्यात व्यक्तियों के लिए आरक्षित की जाएं। शेष सिविल सेवाओं के अधिकारियों या सशस्त्र सेना के अफसरों और गैर–सरकारी क्षेत्र के उसी स्तर के लोगों को सामान्य अहातों (जनरल एनक्लोजर) के निकट दिए जाएं। उन्हें एक दूसरे से अलग–अलग न रखा जाए। आम जनता के लिए भी उचित व्यवस्था की जाए।

2. अलग–अलग आरक्षित स्थानों के लिए या आरक्षित अहातों में सीटों के लिए निमंत्रण–पत्र जारी करने का कार्य काफी समय पहले किया जाए और स्थानीय सिविल तथा सेना अधिकारियों का इस सम्बन्ध में परामर्श या सहयोग लिया जाए ताकि कोई चूक न हो पाए।

3. **कार्यक्रम –** दर्शकों को परेड–कार्यक्रम जारी करना लाभप्रद है। दर्शक कब खड़े हों, कब सैल्यूट करें और कब अपने हैट उतारे और इसी प्रकार की अन्य जानकारी सम्बन्धी टिप्पणियां कार्यक्रम में दी जाएं। सभी बड़ी परेड़ों में लाउड स्पीकरों की भी व्यवस्था की जाए और उन पर दर्शकों और विशेष तौर पर आम जनता के लाभ के लिए आंखों देखा हाल सुनाया जाए।

4. अन्य व्यवस्थाएं

(क) जिस मंच पर परेड की सलामी लेने वाले व्यक्ति को खड़ा होना है, उस पर केवल सादी नीली या लाल दरियां बिछाई जाएं। कालीन न बिछाये जाएं।

(ख) जब वक्ता श्रोताओं के सम्मुख हो तो ध्वज उसके दांयी तरफ फहराया जाएगा अथवा दीवार के विपरीत या वक्ता के पीछे और ऊपर की तरफ रहेगा।

(ग) मंच के चारों ओर वर्दी वाले व्यक्ति ही उपस्थित रहें। रेडियो प्रसारण या रिकार्ड करने वाले व्यक्तियों की मेजें मंच के पीछे कुछ दूरी पर हों। सलामी लेने वाले व्यक्ति के पास माइक्रोफोन लाने का कार्य वर्दीधारी व्यक्ति द्वारा ही किया जाए।

(घ) जब परेड हो रही हो, तब सादे कपड़े पहने हुए व्यक्तियों को दर्शकों के सामने घूमने न दिया जाए। संवाददाता तथा फोटोग्राफरों को एक अफसर नियंत्रण में रखे।

खंड–2

निरीक्षण या समीक्षा ग्राउंड

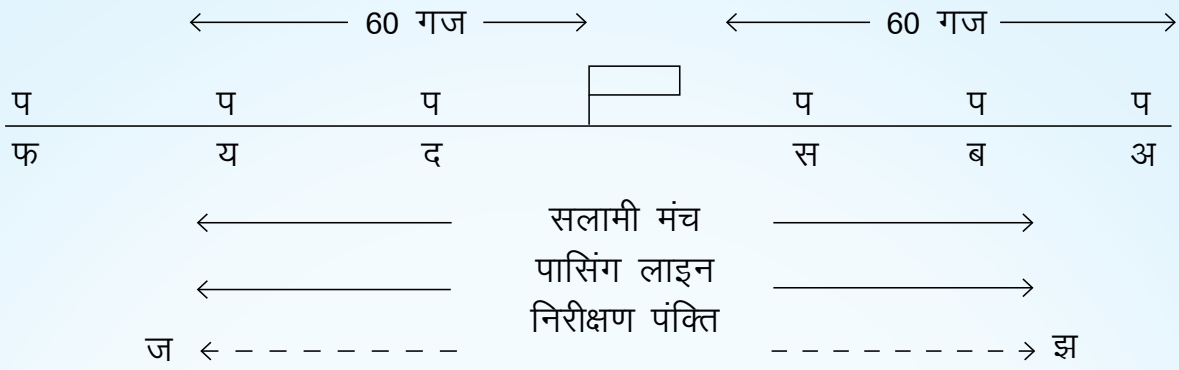

संकेतिका (लेजेण्ड)

क– निरीक्षण के बाद मार्च पास्ट करने से पहले यूनिटें दाहिने से कूच कॉलम या तीनों–तीन की कॉलम बनाएं। उनकी विरचना बिन्दु 'अ' पर की जाए। उनका रुख बाएं और प्लाटूनों या कम्पनियों की निकट कॉलम में हो, और अगली कम्पनी के सामने की रैंक बिन्दु 'अ' की सीध में हो। जब ''मार्च पास्ट'' आदेश दिया जाए, कम्पनियां और प्लाटूनें कॉलम का फासला रखते हुए दाहिने से आगे बढ़े। प्लाटून कमांडर या कम्पनी कमांडर अपनी, प्लाटूनों या कम्पनियों को सही फासला रखते हुए चलाने के लिए बारी–बारी से आदेश दें।

ख– बिन्दु 'ब' पर पहुंचने के बाद यदि धीरे चाल में हो, तो ''खुली लाइन'' का आदेश दिया जाए।

ग– ''दाहिने देख''

घ– ''सामने देख''

ङ– ''निकट लाइन'' (यदि लागू हो)

च– ''थम'' (यदि आवश्यक हो तो)

टिप्पणी : यदि यह अनुमान हो कि परेड में यूनिटें बड़ी संख्या में भाग ले रही हैं, तो बिन्दु 'प' और 'फ' के बीच पर्याप्त दूरी रखी जाए ताकि परेड में भाग लेने वाली सभी यूनिटें मार्च पास्ट के बाद सलामी ध्वज को पार करके निकट कॉलम बना सकें, या यदि परेड को निकट कॉलम में वापस न होना हो, तो प्रत्येक यूनिट का पिछला भाग, कमांडर द्वारा निकट होने और किसी पार्श्व की ओर चले जाने के आदेश दिए जाने के पहले सलामी स्थान से निकल जाए।

1. निरीक्षण लाइन ज–झ की लम्बाई निरीक्षण किए जाने वाले सैन्य–दल के अग्रभाग पर निर्भर करती है। पासिंग लाइन से इसके फासले की दूरी मार्च पास्ट के समय किसी यूनिट के अधिकतम अग्रभाग पर निर्भर करती है। उसमें मार्च पास्ट के समय धुन बनाते हुए बैण्ड या सामूहिक बैण्डों द्वारा घेरी हुई जगह भी जोड़ दी जाए। जब उससे भी बड़े सैन्य दलों की समीक्षा की जाए तो फासला और बढ़ाने की आवश्यकता पड़ सकती है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि जब यूनिटों को निरीक्षण के लिए लाइन में रखा जाए और कमांडर निरीक्षण लाइन के सामने सही फासले पर अपने स्थान पर हों, तो परेड कमांडर परेड ग्राउंड की पैमाइश के अनुपात में पासिंग लाइन से उचित फासले पर हो।

टिप्पणी : निरीक्षण लाइन के सामने कमांडरों का फासला कम करना भी आवश्यक हो सकता है। अन्यथा, बड़ी फार्मेशनों में, या तो पासिंग लाइन से निरीक्षण लाइन बहुत दूर होगी और या परेड कमांडर निरीक्षण अफसर के निकट होगा।

2. सलामी–स्थल (ब–प) की लम्बाई 120 गज से कम और 260 गज से अधिक न हो। कम या अधिक फासला स्थानीय परिस्थितियों पर निर्भर

करेगा। मार्च पास्ट बिन्दु 'ब' से शुरू हो और बिन्दु 'प' तक किया जाए। समीक्षा अफसर सलामी स्थल के मध्य भाग के पीछे रहे उसके दोनों तरफ 10 गज के फासले पर दो बिन्दु 'स' और 'द' हैं। 'स' बिन्दु से सैल्यूट देना शुरू हो और 'द' बिन्दु पर समाप्त हो जाए।

यदि कोई मार्च पास्ट ओपनिंग तथा क्लोजिंग आर्डर के बिना केवल तेज–चाल में किया जाना हो, तो बिन्दु 'ब' और 'प' हटा दिए जाएं। तथापि बिन्दु 'अ' और 'फ' अपने मूल फासले पर रहें।

3. पासिंग लाइन के 'अ', 'ब' भाग की लम्बाई पर्याप्त होनी चाहिए ताकि यूनिटों के सलामी स्थल पर पहुंचने से पहले वे अपनी दिशा में आ जाएं। यूनिटें बिन्दु 'ब' तक निकट फार्मेशन में चलें, उस बिन्दु से वे ऐसी फार्मेशन अपनायें जैसी कि समीक्षा या निरीक्षण के लिए क्रमानुसार निर्धारित की गई है।

4. सामान्यतः पासिंग लाइन लम्बाई में निरीक्षण लाइन के बराबर होनी चाहिए।

5. सभी बिन्दुओं पर झंडों या मार्करों के निशान हों। जिस लाइन पर जवानों को फार्मेशन करनी हो उस पर निशानी करने के लिए झंडे या पोस्ट स्थापित किए जाएं, या लाइन खोद दी जाए या उस पर चूने से निशान लगाए जाएं।

टिप्पणी : जब जवान बड़ी संख्या में मार्च मास्ट करें, तब यूनिटों का सही फासले पर चलने में मार्गदर्शन करने के लिए आम तौर पर बिन्दु 'ब' से उचित फासले पर पासिंग लाइन के बीच छोटी–छोटी रंगीन झंडियां लगाई जाएं।

खंड–3

यूनिट संगठन

1. समारोहों के प्रयोजनार्थ यूनिटों को निम्न प्रकार संगठित किया जाएः–

(क) माउन्टेड स्क्वाड–यदि उपलब्ध हों, तो दो लाइनों में।

(ख) पैदल यूनिट (डिसमांउटिड यूनिट) तीन पंक्तियों में। एक बटालियन में कम से कम चार कम्पनियां परेड पर हो, प्रत्येक कम्पनी तीन प्लाटूनों में बंटी हुई हो। जहां तक संभव को प्रत्येक प्लाटून में बराबर संख्या में जवान हों। हवलदार से नीचे के रैंक के अंडर अफसर सामान्यतः तीन पंक्तियों में परेड करें। शेष हवलदार सामान्यतः पंक्तियों में परेड करें।

2. सभी जवानों द्वारा उठाए जाने वाले निजी हथियार एक ही प्रकार के हों।

3. झण्डे आदि परेड में शामिल हों।

4. परेड में बैण्ड भी हो और मध्य में 8 कदम पीछे रहें।

5. टुकड़ियों और होम गार्ड, प्रांतीय रक्षा दल आदि जैसे अन्य दलों के व्यक्ति यदि उपलब्ध हों तो वे भी परेड में शामिल हो सकते हैं।

खंड–4

परेड फार्मेशन

1. एक बटालियन या उसके बराबर जवानों की लाइन की फार्मेशन परिशिष्ट ''क'' में बताए अनुसार हो।

2. एक कम्पनी या उसके बराबर जवानों की संख्या जब किसी समारोह परेड पर समीक्षा के लिए लाइन में बटालियन के साथ हो, तब उनके प्लाटूनों की लाइन और सैक्शनों के कॉलम की विरचना परिशिष्ट ''ख'' के अनुसार हो।

3. समीक्षा के लिए सामूहिक रूप से इन्फैन्ट्री बटालियन द्वारा बनाई जाने वाली फार्मेशन परिशिष्ट ''ग'' में दिखाई गई है।

4. झण्डे पूरे निरीक्षण समय में ऊपर उठे रहेंगे और उनका अनुरक्षण करने वाला अनुरक्षी दल शेष परेड के समान रहे, परन्तु वह ''आराम से'' न खड़ा हो।

5. समारोह परेड में, चाहे वह कितनी ही बड़ी या छोटी हो, पैदल जवानों की मूल स्थिति का परिशिष्ट ''क'' से ''ग'' में आरेखण किया गया है। उसका हमेशा हवाला दिया जाए।

खंड–5

पैदल यूनिट का कदवार खड़ा होना (साइजिंग)

1. पहले एक लाइन बनाकर यूनिट के जवानों को कद के हिसाब से खड़ा किया जाए सबसे लम्बा जवान दाहिनी तरफ और सबसे छोटा जवान बांई तरफ हो। प्रत्येक व्यक्ति पंक्ति में 24 इंच स्थान लेगा। इसके लिए आदेश–शब्द ''लम्बा दाहिने, छोटा बाएं, एक लाइन में कदवार'' होगा। सावधानीपूर्वक खड़े हो जाने के बाद निम्नलिखित आदेश दिए जाएं:–

(क) गिनती कर

(ख) विषम एक कदम आगे, सम एक कदम पीछे चल।

(ग) दाहिने जवान खड़ा रहेगा, बाकी विषम दाहिने, सम बांए, लाइनें दाहिने और बाएं मुड़।

(घ) तीन लाइन बना, तेज चल।

''तेज चल'' आदेश पर दोनों पंक्तियां चल पड़ें, सम संख्या वाली पंक्ति का बांया जवान अपने दाहिने घूमे और विषम संख्या वाली पंक्ति के पीछे चले, विषम संख्या वाली पंक्ति जैसे ही ठीक जगह पर (पोजीशन में) पहुंचे वैसे ही तीन पंक्तियां बनानी शुरू कर दें, अर्थात् नं. 3 मध्य पंक्ति में नं. 1 के पीछे हो। नम्बर 5 का जवान नं. 3 के जवान के पीछे, पिछली पंक्ति में जाएगा और नम्बर 7 का जवान आगे वाली पंक्ति में जाएगा। यदि कोई वरिष्ठ अवर अधिकारी परेड के दौरान पंक्ति तक साथ जाए और अगली, बीच की और पिछली पंक्तियों के जवानों को निर्देश दे तो समस्त कार्य काफी सरल हो जाए, किन्तु उसे विषम संख्या की पंक्तियों से आरंभ करना चाहिए।

इस प्रकार यूनिट ठीक प्रकार से तीन पंक्तियों में खड़ी होंगी और तीनों पंक्तियों में पार्श्व में सबसे लम्बे जवान खड़े होंगे।

पैदल यूनिट की संख्याएं नियत करना

जब यूनिट खड़ी हो तो उसकी गणना दाहिनी ओर से बांयी ओर की जाएगी और फिर यूनिट को प्लाटूनों या उनके बराबर की संख्याओं में बांट दिया जाएगा। फिर उनकी यूनिट के अन्दर ही उनको संख्याएं दी जाएंगी। यदि पंक्तियों के व्यक्तियों की संख्या तीन से विभक्त न की जा सकती हो तो बाहर की प्लाटूनों में व्यक्तियों की संख्या अपेक्षाकृत अधिक होगी। बांयी ओर के व्यक्ति का नम्बर जोर से पुकार कर यूनिट को प्लाटूनों में विभक्त किया जाता है, उदाहरण के लिए ''नम्बर 15'' पुकारे जाने पर 15 नं., का जवान अपनी बांई अग्रबाहु भूमि के समानान्तर उठा कर, कोहनी बगल से मिलाकर, उंगलियां और अंगूठा जोड़ कर सीधी करके और अपनी हथेली का रुख अन्दर की ओर करके उत्तर देगा। इसके बाद आदेश होगा ''नम्बर 15 – नम्बर 1 प्लाटून का बांया जवान'' नं. 15 इस आदेश पर अपनी अग्रबाहु अपने कंधे के स्तर पर सीधा उठाएगा'' – ''नम्बर 29 – नम्बर 2 प्लाटून का बांया जवान'' – और इसी प्रकार से अन्य।

इसके बाद यूनिट बराबर हो जाती है।

खंड–7

निरीक्षण और समीक्षा के लिए आम हिदायतें (आउटलाइन प्रोसीजर)

1. खण्ड 2 में दिए अनुसार निरीक्षण या समीक्षा ग्राउन्ड को चिन्हित किया जाना चाहिए।
2. जिस यूनिट का निरीक्षण किया जाना हो, उसे एक लाइन में खड़ा किया जाना चाहिए या निरीक्षण पंक्ति पर सामूहिक रूप से खड़ा किया जाना चाहिए। परिशिष्ट 'क' और 'ग' देखें।
3. निरीक्षण अफसर के आने से पहले फार्मेशन या यूनिट संगीनें लगाएंगी और खुली लाइन में हो जाएंगी।
4. निरीक्षण और समीक्षा करने वाले अफसर की भाग 9 में दी गई हिदायतों के अनुसार अगवानी की जाएगी।
5. निरीक्षण या समीक्षा अफसर खण्ड–II में दिए ढंग से निरीक्षण करेगा, और उसके पूरा होने पर वह मार्च–पास्ट के आदेश देगा।

6. इसके पश्चात् यूनिटें और फार्मेशन, बाद में खण्डों में दिए गए अनुदेशों के अनुसार मार्च–पास्ट करेंगी।

7. मार्च पास्ट के समय चलने की रफ्तार 120 कदम प्रति–मिनट होगी।

8. मार्च पास्ट समाप्त करने के पश्चात् यूनिटें और फार्मेशन अपनी पहली जगह पर अर्थात् निरीक्षण रेखा पर लौट आएंगी और अगले आदेशों की प्रतीक्षा करेंगी। यदि समीक्षा क्रम से आगे बढ़ने का आदेश दिया जाए तो खण्ड 18 में दी गई प्रक्रिया के अनुसार कार्रवाई की जाएगी।

खंड–8

अफसरों के लिए विशेष हिदायतें

1. परेड कमाण्डर

(क) यदि तलवार लगाई हो तो वह उसे तब तक नहीं निकालेगा जब तक उससे वरिष्ठ कोई अफसर परेड पर न हो।

(ख) यदि उसने मार्च पास्ट कर ली हो और सैल्यूट दे दिया हो तो वह बाहर निकल कर निरीक्षण अफसर के दाहिनी ओर खड़ा हो जाएगा और वहां तब तक खड़ा रहेगा जब तक कि परेड गुजर न जाए। इसी बीच द्वितीय कमान अफसर कमाण्ड देगा।

टिप्पणी : यदि परेड कमांडर तलवार लगाए हुए हो तो वह सलामी स्थल पर या निरीक्षण अफसर अथवा समीक्षा अफसर के साथ होने पर तलवार लगाए रखेगा।

2. स्टाफ अफसर और परेड में भाग न लेने वाले अफसर

यदि स्टाफ अफसर या वैयक्तिक रूप से निमंत्रित अफसर तलवार लगाए हों तो वे उसे निकालेंगे नहीं। ये सभी अफसर हाथ से सलामी देंगे।

3. परेड में भाग लेने वाले अफसर

कम्पनी कमाण्डरों को छोड़ कर अन्य अफसर अपनी कम्पनियों में निरीक्षण हो जाने के बाद ही तलवार निकालेंगे। कम्पनी कमाण्डर द्वितीय–कमान–अफसर से या परेड में द्वितीय–कमान–अफसर न होने की स्थिति में नेतृत्व करने वाली कम्पनी के कम्पनी कमाण्डर से समय ले कर एक साथ तलवारें निकालेंगे।

4. यदि तलवारें निकाली हुई हों, तो पूरे समय वे तलवारें सामने रखेंगे सिवाय जब जवान विश्राम की स्थिति में खड़े हों और जब वे परेड ग्राउण्ड (किन्तु इससे दूर) में एक स्थान से दूसरे स्थान पर जा रहे हों और जब ढलान पर हों।

5. मार्च पास्ट करते समय सलामी देना

(क) **तलवारें निकाल कर ''दाहिने देख –** आदेश पर सलामी आरंभ की जाएगी और ''सामने देख'' के आदेश पर सलामी समाप्त होगी। यदि एक अफसर हो तो सलामी पर्याप्त समय से आरंभ होगी ताकि तलवार की दूसरी हरकत पायन्ट 'स' तक पहुंचने तक पूरी हो जाए और पायंट 'द' तक तलवार सामने ही रहे। इनर फ्लैंक के अफसर से समय लिया जाए।

(ख) तलवारें बिना निकाले – अफसर हाथ से सलामी देंगे। सलामी पायंट 'स' से आरंभ होगी और पायंट 'द' पर समाप्त। आगे चलने वाली सब यूनिटों के आगे चलने वाले अफसर से समय लेंगे, अन्य अफसर अपने कम्पनी कमांडर से समय लेंगे।

6. तलवारें लौटाने का ढंग

यदि पहले से ही तलवार लौटाने का विशेष आदेश न दिया गया हो, तो अफसर द्वारा नीचे पैरा 7 में दिए अनुसार विसर्जन के समय तलवार लौटाई जाएंगी।

7. परेड समाप्त होने पर विसर्जन

''अफसर लाइन तोड़'' के आदेश पर अफसर, परेड–कमांडर के पास मार्च कर के जाएंगे (अर्थात्

वे जिन्होंने तलवारें निकाली हुई हों) उससे पांच कदम के फासले पर खड़े हो कर सैल्यूट करेंगे, तलवार वापस करेंगे और जब तक परेड विसर्जित नहीं होती, तब तक परेड कमाण्डर के पीछे खड़े रहेंगे।

टिप्पणी : जिन अफसरों की तलवारें निकली हुई हों उनके बीच दो हाथ का (पूरी तरफ फैला कर) और जिनकी तलवारें निकली हुई न हों, उनके बीच एक हाथ का फासला होगा।

खंड–9

निरीक्षण या समीक्षा अफसरों की अगुवाई करना

1. सामान्य हिदायतें – यूनिट या फार्मेशन निरीक्षण रेखा पर लाइन में खड़ी होंगी और उनके सामने की तरफ बीच में वह स्थान होगा जहां निरीक्षण या समीक्षा अफसर स्वयं खड़े हुए होंगे।

(क) माउन्टेड स्क्वाड में ''कंधे तलवार'' होगी और उतरे हुए स्क्वाड या यूनिट में ''सामने तलवार'' होगी।

(ख) अगर यूनिट के पास राइफलें हैं तो संगीन चढ़ा हुआ होगा और ''कंधे शस्त्र'' हालत में रहेंगे।

2. विशेष हिदायतें – जब निरीक्षण या समीक्षा अफसर मध्य भाग में आ जाए तो उचित सैल्यूट से, अर्थात् जिसका वह हकदार है निम्नलिखित प्रक्रिया के अनुसार उसकी अगवानी की जाएगीः–

(क) राइफलों से लैस यूनिट

''जनरल सैल्यूट, सलामी शस्त्र'' जवान सलामी शस्त्र करेंगे और सभी अफसर सैल्यूट करेंगे। अधिसंख्यक रैंक और गाइड भी परेड के साथ सलामी शस्त्र करेंगे। झण्डा (कलर) सामने की हालत में रहेगा।

(ख) कंधे शस्त्र, बाजू शस्त्र।

(ग) ड्रम के साथ–साथ बैन्ड धीरे चाल की धुन का पहला भाग बजाएगा और यदि परेड पर बैंड न हो तो बिगुल जनरल सैल्यूट की धुन बजाएगा।

(घ) यदि झण्डा लिए हुए हों तो वे केवल उन व्यक्तियों के लिए झुकाए जाएंगे जो राष्ट्रीय सैल्यूट के हकदार हों। जो अफसर जनरल सैल्यूट के हकदार हों उनके लिए झण्डा नहीं झुकाया जाएगा।

खंड–10

राष्ट्रपति और राज्यपालों की अगुवाई करना

1. यह प्रक्रिया वही होगी जिसका उल्लेख ऊपर खण्ड 9 में किया जा चुका है, किन्तु ''जनरल सैल्यूट'' के स्थान पर ''राष्ट्रीय सैल्यूट'' दिया जाएगा।
2. राष्ट्रीय सैल्यूट निम्नलिखित को दिया जाएगा–
   (क) भारतीय गणराज्य के राष्ट्रपति को
   (ख) राज्यपालों को (उनके अपने–अपने राज्यों में)
3. औपचारिक समारोहों पर जो अन्य उच्च–पदधारी सैल्यूट के हकदार हैं, उन्हें ''जनरल सैल्यूट'' दिया जाएगा।
4. राष्ट्रीय गान की धुन निम्नलिखित के लिए बजायी जाएगीः
   (क) भारतीय गणराज्य के राष्ट्रपति के लिए।
   (ख) राज्यपालों के लिए, उनके अपने–अपने राज्यों में।
   (ग) औपचारिक समारोहों या परेडों पर – चाहे 15 अगस्त और 26 जनवरी पर ऊपर 2(क) और 2(ख) में उल्लिखित कोई व्यक्ति उपस्थिति हो अथवा नहीं।
5. विशेष अवसरों पर राज्य सरकार के पूर्व–अनुमोदन से भारत के प्रधानमंत्री के लिए भी राष्ट्रीय गान की धुन बजायी जा सकती है।
6. विदेश से आए किसी, विशेष अतिथि के लिए जो राष्ट्रीय सैल्यूट का हकदार हो, बैंड पर उपयुक्त राष्ट्रीय (गान) की धुन बजायी जाएगी।

खंड–11

निरीक्षण

1. एकल यूनिट का निरीक्षण

(क) निरीक्षण या समीक्षा – अफसर को उचित सैल्यूट देने के बाद परेड को बाजू शस्त्र किया जाएगा। इसके बाद परेड कमाण्डर अपनी यूनिट के संबंध में समीक्षा या निरीक्षण अफसर को उपस्थित और निरीक्षण के लिए तैयार ''रिपोर्ट'' (श्रीमान जी परेड निरीक्षण को हाजिर है)।

(ख) जब निरीक्षण या समीक्षा अफसर नं. 1 कम्पनी का निरीक्षण आरंभ कर दे तो द्वितीय कमान अफसर आदेश देगा ''नं. .....कम्पनी खड़ी रहे (अर्थात् दाहिने हाथ वाली सब–यूनिटें) बाकी विश्राम।''

(ग) समीक्षा या निरीक्षण अफसर, परेड कमांडर तथा अन्य ऐसे अफसरों के साथ जो वहां उपस्थित हों, सब यूनिट की पहली रैंक का दाहिने से बाएं, मध्य रैंक से दांए और पिछली रैंक का दांए से बांए निरीक्षण करेंगे।

टिप्पणी: (i) वह अपनी इच्छा से अधिसंख्य रैंक से भी गुजर सकता है।

(ii) समीक्षा या निरीक्षण अफसर के साथ जो व्यक्ति हो, वे निरीक्षण के दौरान निरीक्षण अफसर के पीछे या उसके बगल में जिस रैंक का निरीक्षण किया जा रहा हो, उससे दूर रहें।

(घ) जब समीक्षा या निरीक्षण अफसर दांयी तरफ की कम्पनी के पिछले रैंक के बांयी ओर मुड़े उस समय कम्पनी कमांडर अपनी सब–यूनिटों को 'सावधान' करेगा। निरीक्षण या समीक्षा अफसर के वहां पहुंचने पर वह उसे सैल्यूट करेगा और कम्पनी का निरीक्षण होने तक उसका मार्गदर्शन करेगा, निरीक्षण समाप्त होने पर वह पुनः सैल्यूट करके, अपने पहले वाले स्थान पर वापस लौट जाएगा।

(ङ) जब समीक्षा या निरीक्षण अफसर अगली कम्पनी का निरीक्षण करने के लिए बढ़े, तो जिस कम्पनी का निरीक्षण किया जा चुका हो उसका कम्पनी कमांडर कम्पनी से 'विश्राम' की मुद्रा में खड़ा रहने के लिए कहेगा।

(च) यदि समीक्षा या निरीक्षण अफसर चाहे तो केवल अगले रैंक का भी निरीक्षण कर सकता है, किन्तु उस स्थिति में, जब समीक्षा या निरीक्षण अफसर अगले रैंक का दांए से बाएं निरीक्षण कर रहा हो, उस समय शेष समस्त यूनिटें सावधान रहेंगी। अफसर जो प्रक्रिया अपनाना चाहता हो, उसके संबंध में वह उसी समय कम्पनी कमांडर को बताएगा।

(छ) जब तक समीक्षा या निरीक्षण अफसर निरीक्षण कार्य पूरा न कर ले, तब तक बैंड बजता रहेगा।

(ज) बाद में समीक्षा या निरीक्षण अफसर मार्च पास्ट का आदेश देगा।

खंड–12

मार्च पास्ट

1. एक बटालियन निम्नलिखित फार्मेशनों में मार्च–पास्ट कर सकती है:

   (क) कम्पनी लाइन में .....परिशिष्ट 'घ' देखें।

   (ख) कूच कॉलम में.....परिशिष्ट 'ङ' देखें।

   (ग) प्लाटून–वार.....परिशिष्ट 'च' देखें।

2. निरीक्षण या समीक्षा ग्राउन्ड भाग 2 में बताए अनुसार तैयार किया जाएगा।

3. बैंड निरीक्षण अफसर के सामने समूह में खड़ा होगा, बटालियनों के लिए इतना स्थान छोड़ कर (खड़ा होगा) कि वे उपर्युक्त तीन फार्मेशनों में मार्च–पास्ट कर सकें। बैंड–मास्टर या ड्रम मेजर के आदेशानुसार बैंड बजाया जाएगा। बटालियन के मार्च–पास्ट के समाप्त होने पर, बैंड पीछे की ओर मार्च–पास्ट करेगा।

4. यदि बटालियन को समीक्षा–क्रम में आगे बढ़ने को कहा जाए, तो खंड 18 में दी गई कार्रवाई की जाएगी।

खंड–13

अफसरों की जगह

1. परेड कमांडर

(क) जब कम्पनी लाइन में हो तो नं. 2 प्लाटून के मध्य से 20 कदम आगे होगा।

(ख) कूच कॉलम में आगे चलने वाले तीनों जवानों से 20 कदम आगे होगा।

(ग) प्लाटूनों को कॉलम में अगली प्लाटून के आधे दाहिने से 20 कदम आगे रहेगा।

2. बटालियन का द्वितीय कमान अफसर

(क) कम्पनी लाइन में – अगली कम्पनी नं. 3 प्लाटून के मध्य से 20 कदम आगे बटालियन कमाण्डर की लाइन में।

(ख) कूच कॉलम में आगे चलने वाले तीनों जवानों से 20 कदम आगे होगा।

(ग) प्लाटूनों के कॉलम में अगली प्लाटून के आधे दाहिने से 20 कदम आगे होगा।

3. बटालियन एडज्यूटेंट

(क) कम्पनी लाइन में – अगली कम्पनी के मध्य से 10 कदम पीछे।

(ख) कूच कॉलम में – बाएं की ओर परेड कमाण्डर के पांच कदम पीछे।

(ग) प्लाटून वार – बटालियन की पिछली प्लाटून के मध्य से 10 कदम पीछे।

4. कम्पनी कमाण्डर – हर फार्मेशन में अपनी कम्पनी के मध्य से 6 कदम आगे होगा।

5. प्लाटून कमाण्डर – हर फार्मेशन में अपनी–अपनी प्लाटून के मध्य से तीन कदम आगे होगा। कूच कॉलम में भी तीनों प्लाटून कमाण्डर अपनी कम्पनी की आगे वाली प्लाटून से तीन कदम आगे मार्च कर सकते हैं।

6. सूबेदार कमाण्डर

(क) कम्पनी लाइन में–निशान पार्टी से एक कदम पीछे।

(ख) कूच कॉलम में – आगे वाली कम्पनी के 10 कदम आगे तथा परेड कमाण्डर के एक कदम आगे उसे कवर करते हुए।

(ग) प्लाटून वार – एडज्यूटेन्ट के दाहिनी ओर तथा पिछली प्लाटून की दाहिनी ओर के जवान को कवर करते हुए।

खंड–14

कम्पनीवार मार्च पास्ट करती हुई बटालियन स्थिति जिसमें चलेगी–

1. ''निकट लाइन चल''
2. ''कंधे शस्त्र''
3. ''तीनों–तीन कॉलम में दाहिने चल, बटालियन दाहिने मुड़, बाएं से तेज चल''

   आगे वाली कम्पनी निश्चित स्थान पर बाएं घूमेगी और पासिंग लाइन पर पहुंच कर वह पोजीशन लेगी जिससे मार्च पास्ट करना है। शेष कम्पनियाँ भी इसी प्रकार करेंगी।
4. ''थम कर, बांयी दिशा, कंपनियों का निकट कॉलम बना।''
5. ''नं. ..... कम्पनी, थम, कम्पनी आगे बढ़ेगी, बाएं मुड़।''

   अगली, कम्पनी जब पासिंग लाइन पर अपनी पोजीशन में पहुंचे तो यह आदेश दिया जाए।

   जब बटालियन कम्पनी के निकट कॉलम में खड़ी हो, तो शेष कम्पनियों को भी उनके गाइड उस स्थान पर लाएंगे जहां उनके सही गाइड हों। पोजीशन में पहुंचने के बाद, प्रत्येक कम्पनी कमाण्डर आदेश देगा ''नं. .....कम्पनी, थम, कम्पनी आगे बढ़ेगी, बाएं मुड़''।
6. जब आखिरी कम्पनी बाएं मुड़ती है तो बटालियन कमाण्डर ''बटालियन, दाहिने सज'' का आदेश

देगा इस आदेश पर कम्पनी हवलदार मेजर एक साथ दांए मुड़ेंगे, पांच कदम चलेंगे, थम जाएंगे और पीछे मुड़ेंगे और अन्त में सामने से शुरू करते हुए ''सामने देख'' का आदेश देंगे। यह कार्रवाई समाप्त होने पर सब कम्पनी हवलदार मेजर एक साथ आगे बढ़ेंगे, थम जाएंगे और दांए मुड़ेंगे।

मार्च पास्ट

7. बटालियन कमाण्डर आदेश देगा ''बटालियन, कम्पनियों से मंच से गुजरेंगी। अगली कम्पनी का कम्पनी कमाण्डर आदेश देगा ''नं. ..... कम्पनी, दाहिने से, तेज चल'' शेष कम्पनियां पूरे कॉलम फासले पर बारी बारी आगे बढ़ेंगी।

8. स्थान 'स', 'द' (सैल्यूट वाले स्थान) से गुजरते समय कम्पनी कमांडर ''दाहिने देख'' और ''सामने देख'' का आदेश देगा। प्लाटून कमांडर कम्पनी कमांडर से समय लेंगे।

   बटालियन कमांडर, द्वितीय कमान अफसर, एडज्यूटेन्ट और सूबेदार मेजर अलग–अलग सैल्यूट करेंगे।

9. निरीक्षण रेखा पर वापिस आना

यदि बटालियन को निरीक्षण लाइन (रेखा) पर अपनी पहले की पोजीशन पर फिर से खड़ा होना हो, तो उसे ''दाहिने से बारी–बारी तीनों–तीन की कॉलम में आगे'' बढ़ का आदेश दे कर उन्हें तीनों–तीन के कॉलम में लाया जाएगा। पाइन्ट पर दो बार घूमने के पश्चात् कम्पनियाँ अपनी पहले की स्थिति में आ कर रुक जाएंगी, बाएं मुड़ेंगी और खुली लाइन में चलेंगी।

खंड–15

कूच कॉलम में मार्च पास्ट करना पोजीशन में होना

1. ''निकट लाइन चल''
2. ''कंधे शस्त्र''
3. कूच कॉलम में दाहिने चल, ''बटालियन दाहिने मुड़'' अफसर परिशिष्ट 'ङ' में दिए अनुसार पोजीशन में खड़े रहेंगे।

4. मार्च पास्ट

बटालियन कमांडर आदेश देगा ''बटालियन कूच कॉलम में मंच से गुजरेगी'' अगली कम्पनी का कम्पनी कमांडर आदेश देगा ''नं. ..... कम्पनी बाएं से तेज चल'' इसके बाद शेष कम्पनियां 10 कदम चलने के बाद बारी–बारी आगे बढ़ेंगी।

5. कम्पनियां पाइन्ट 'झ' और 'अ' पर घूमेंगी और उसके बाद दांए से ड्रेसिंग करेंगी।
6. कम्पनीज कमांडर पाइन्ट 'स' और 'द' पर अकेला ही सैल्यूट करेगा।
7. प्रत्येक कम्पनी कमांडर क्रमशः पाइन्ट 'स' और 'द' पर पहुंचने पर अपनी–अपनी प्लाटून को स्वेच्छा से आदेश देंगे।
8. यदि अफसरों ने तलवार न पहनी हो तो सब, कम्पनी कमांडर के समय ले कर हाथ से ही सैल्यूट करेंगे।
9. निरीक्षण रेखा पर वापस खड़ा होना।

पोजीशन में आना

यह बटालियन को निरीक्षण रेखा पर अपनी पहले वाली पोजीशन में पुनः खड़ा होना हो तो वह पाइन्ट 'फ' और 'ज' पर दो बार घूमेंगी और उसके बाद बटालियन अपनी पहले वाली पोजीशन में खड़ी होगी, थम जाएगी, बाएं मुड़ेगी और खुली लाइन चलेगी।

खंड–16

तेज चाल में प्लाटून वार मार्च–पास्ट करना

1. ''निकट लाइन चल''
2. ''कंधे शस्त्र''
3. ''प्लाटून थम कर दाहिने बन''
4. ''तेज चल'' ''प्लाटून बाएं सज'' ''प्लाटून सामने देख''
5. ''बटालियन तेज चाल से मंच से गुजरेगी – बाएं से तेज चल''

6. ''बाएं दिशा बदल''

पाइन्ट 'झ' पर पहुंचने पर बटालियन कमांडर यह आदेश देगा। प्लाटून कमांडर अपनी प्लाटूनों को घुमायेंगे। कम्पनी कमांडर कोई आदेश नहीं देगा। बटालियन 'ब' पाइन्ट के सामने पासिंग लाइन पर दिशा बदलेगी।

7. मार्च पास्ट

अफसर पाइन्ट 'स' और 'द' पर आने पर सैल्यूट आरंभ करेंगे और वहीं खत्म करेंगे। प्लाटून कमांडर पाइन्ट 'स' और 'द' दाहिने देख'' ''सामने देख'' आदेश देंगे।

8. निरीक्षण रेखा पर वापिस खड़ा होना

बटालियन पाइन्ट 'प' और फिर पाइन्ट 'ज' पर दिशा बदलेंगी, यानी घूमेंगी। जब कम्पनी की अगली प्लाटून की बांयी पंक्ति उस स्थान पर पहुंच जाए जहां वह लाइन में खड़ी थी तो कम्पनी कमांडर अपनी कम्पनी को ''कदम ताल'' करने का आदेश देगा।

''प्लाटून थम कर बाएं बन''

'आगे बढ़'' ''मध्य सज'' ''सामने देख''

खंड–17

धीरे चाल में प्लाटून वार मार्च पास्ट करना

यदि तेज चाल में मार्च पास्ट करने से पहले धीरे चाल में मार्च पास्ट करना चाहे तो निम्नलिखित प्रक्रिया अपनायी जाएः–

पोजीशन में होना – वैसे ही जैसे खण्ड 16(1) से (6) तक में दी गई है, किन्तु अन्तर केवल यह है कि, पाइन्ट 'झ' से कुछ और आगे पाइन्ट पर पहली बार घूमा जाएगा अर्थात् उस पाइन्ट से जहां से बटालियन की अंतिम प्लाटून ने पाइन्ट 'झ' पार कर लिया हो। बटालियन दूसरी बार तब घूमेगी जब अगली प्लाटून सैल्यूटिंग बेस के साथ लाइन में पाइन्ट पर पहुंचेगी। जब समस्त बटालियन घूम जाए तो पाइन्ट 'अ' पर 'थम' का आदेश दिया जाएगा।

मार्च पास्ट

1. ''प्लाटून दाहिने सज''
2. ''प्लाटून सामने देख''
3. बटालियन कमांडर आदेश देगा–

   ''बटालियन धीरे चाल में मंच से गुजरेगी, दाहिने से धीरे चल''
4. जब बटालियन नं. 1 की प्लाटून पाइन्ट 'ब' के निकट हो, तो बटालियन कमांडर आदेश देगा, ''बटालियन बारी–बारी खुला लाइन चल''। इसके बाद प्रत्येक प्लाटून पाइन्ट 'ब' के निकट यही कार्रवाई करते हुए आगे बढ़ेगी।
5. अफसर पाइन्ट 'स' और 'द' पर आने पर सैल्यूट आरम्भ करके समाप्त करेंगे और पाइन्ट 'स' और 'द' पर प्लाटून ''दाहिने देख'' और ''सामने देख'' का आदेश देंगे।
6. जब सभी प्लाटूनें सैल्यूटिंग बेस से गुजर जाएं और पाइन्ट 'द' और 'प' के बीच में हो तो बटालियन कमांडर ''बारी–बारी निकट लाइन चल'' का आदेश देगा। जिस स्थान नं. 1 प्लाटून निकट लाइन चलेगी, वहां से सभी प्लाटूनें निकट लाइन चलेंगी और मार्च करती रहेंगी।
7. जैसे ही प्लाटूनें निकट लाइन में हों वैसे ही बटालियन कमांडर आदेश देगा, ''तेज चाल में आ, तेज चल'' और उसके बाद आदेश देगा, ''बारी–बारी तीनों–तीन कॉलम में दाहिने से आगे बढ़''।
8. पाइन्ट 'फ', 'ज' और 'झ' पर बटालियन तीन बार बाएं से घूमेंगी। जब कॉलम पाइन्ट 'अ' के निकट पहुंचने वाला हो तो बटालियन कमांडर आदेश देगा, ''बाएं दिशा प्लाटून के कॉलम में आगे बढ़''। उसके बाद प्लाटून तेज चल में मार्च पास्ट करेंगी और निरीक्षण रेखा पर आकर पुनः खड़ी होगी।

टिप्पणीः जब प्लाटून धीमें चाल में मार्च कर रही हो तो ''खुली और निकट लाइन चल'' आदेश होने पर निम्नलिखित कार्रवाई करेंगीः–

तीन रैंक में धीरे चाल में चलते समय ''खुली लाइन'' का आदेश होने पर पीछे वाली रैंक चार कदम ताल करेगी, बीच वाली रैंक दो कदम ताल करेगी और फिर आगे बढ़ेगी और आगे वाली रैंक आगे बढ़ती रहेगी ''निकटलाइन'' का आदेश होने पर आगे वाली रैंक चार कदम ताल करके पांचवें कदम से आगे बढ़ेगी, बीच वाली रैंक दो कदम ताल करके तीसरे कदम से पूरी तेजी से आगे बढ़ेगी।

खंड–18

समीक्षा क्रम में आगे बढ़ना

1. यदि परेड के अन्त में यूनिट को समीक्षा क्रम से आगे बढ़ना हो तो यूनिट सामान्यतः निरीक्षण रेखा पर उसी फार्मेशन में खड़ी होगी जिसमें वह समीक्षा अफसर की अगवानी के समय खड़ी हुई थी, बैंड बीच में पीछे की ओर होगा।
2. ब्यौरे वार प्रक्रिया निम्नलिखित होगीः–

   ''खुली लाइन चल''

   ''मध्य सज, सामने देख''

   ''समीक्षा क्रम से, मध्य से, तेज चल''।
3. यूनिट मध्य से 15 कदम चलेगी, बैंड और ड्रम रोल के बिना बजेंगे। धुन 7½ बार बज चुके तो बैंड और ड्रम बजने बंद हो जाएंगे और समस्त परेड स्वतः ही थम जाएगी तब परेड को उसी प्रकार सैल्यूट करने का आदेश दिया जाएगा जैसा कि समीक्षा या निरीक्षण अफसर की अगवानी के समय दिया गया था, इसके बाद इसे बाजू शस्त्र का निर्देश दिया जाएगा और यह अगले आदेशों की प्रतीक्षा करेगी।

परिशिष्ट ''क''

समीक्षा के लिए लाइन फार्मेशन के अफसरों और जवानों की जगह

1. यदि परेड के अन्त में यूनिट को समीक्षा क्रम से आगे बढ़ना हो तो यूनिट सामान्यतः निरीक्षण रेखा पर उसी फार्मेशन में खड़ी होगी जिसमें वह समीक्षा अफसर की अगवानी के समय खड़ी हुई थी, बैंड बीच में पीछे की ओर होगा।

(क) परेड कमाण्डर, बटालियन की मध्य पंक्ति के सामने 20 कदम के फासले पर होगा।

(ख) द्वितीय कमान अफसर झण्डा (कलर) के मध्य के सामने 10 कदम के फासले पर होगा।

(ग) एडज्यूटेन्ट नं. 2 कम्पनी के बाएं गाइड के सामने 10 कदम के फासले पर होगा।

(घ) कम्पनी कमाण्डर अपनी–अपनी कम्पनियों के मध्य के सामने 6 कदम की दूरी पर होंगे।

(ङ) कम्पनी कमाण्डर अपनी–अपनी प्लाटूनों के मध्य के सामने तीन कदम की दूरी पर होंगे।

(च) सूबेदार मेजर नं. 3 कम्पनी के दांए गाइड के सामने 10 कदम की दूरी पर होंगे।

(छ) सी.एच.एम. अपनी कम्पनी की दांयी ओर की प्लाटून के दांए गाइड के रूप में परेड करेंगे।

(ज) सी.एच.एम.क्यू. अपनी–अपनी कम्पनी की बांयी ओर की प्लाटून के बाएं गाइड के रूप में परेड करेंगे।

(झ) हवलदार और अन्य सभी एन.सी.ओ. अपनी प्लाटूनों के साथ रैंक में खड़े होंगे। प्लाटून हवलदार अपनी प्लाटून के दांयी ओर के व्यक्ति के रूप में परेड करेंगे।

(ञ) प्लाटूनों के बीच तीन कदम का और कम्पनियों के बीच पांच कदम का फासला होगा।

(ट) झण्डा पार्टी और दोनों ओर की कम्पनियों के बीच तीन कदम का फासला होगा।

(ठ) जहां तक संभव हो कम्पनियों को बराबर–बराबर किया जाएगा। बटालियन का मुख्यालय परेड की चारों कम्पनियों में शामिल होगा।

(ड) बैंड मध्य पंक्ति के पीछे 8 कदम के फासले पर होगा।

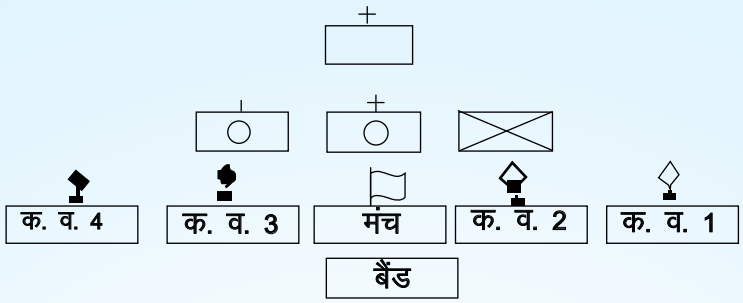

संकेत	संकेत शब्द
	परेड कमांडर
	सेकण्ड इन कमाण्ड
	एडज्यूटेन्ट
	सूबेदार मेजर
	कम्पनी कमांडर
	प्लाटून कमांडर
Y	क. ह. मेजर
	क.क्वा. मास्टर हवलदार

परिशिष्ट 'ख'

समीक्षा के लिए कम्पनी के प्लाटूनों की पंक्ति और समारोह परेड के साथ सेक्शनों के कॉलम में बटालियन की पंक्ति

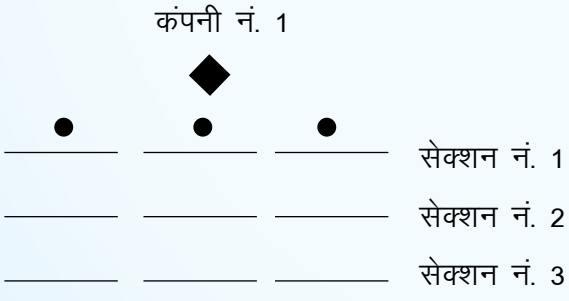

संकेत	संकेत शब्द
◆	कम्पनी कमांडर
●	प्लाटून कमांडर

नोटः परिशिष्ट 'क' में दिया हुआ स्थान एवं दूरी रहेगी।

परिशिष्ट 'ग'

समीक्षा के लिए बटालियन की पंक्ति

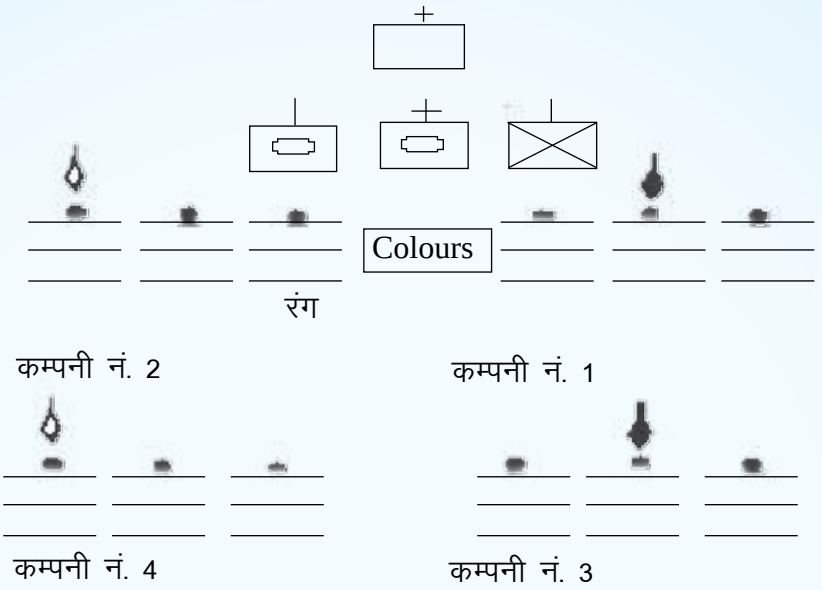

नोट : 1. अधिकारियों का स्थान एवं दूरी वही रहेंगी जो परिशिष्ट 'क' में है।

2. उपदस्तों के मध्य करीब 12 कदम दूरी होगी।

परिशिष्ट 'घ'

कंपनियों द्वारा मार्च–पास्ट के समय अधिकारियों का स्थान एवं रंग

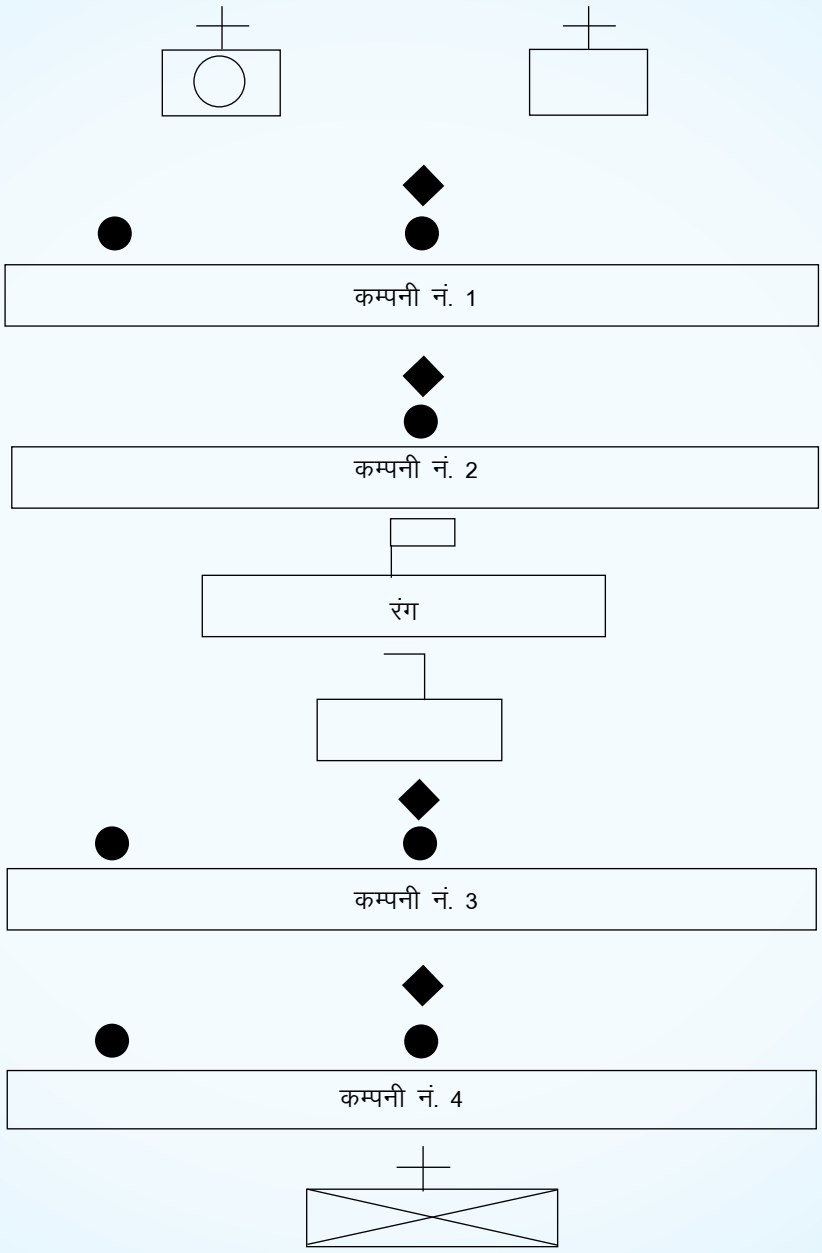

नोट :– सेक्शन 13 के अनुसार प्लाटूनों एवं कम्पनियों से अधिकारियों की दूरी

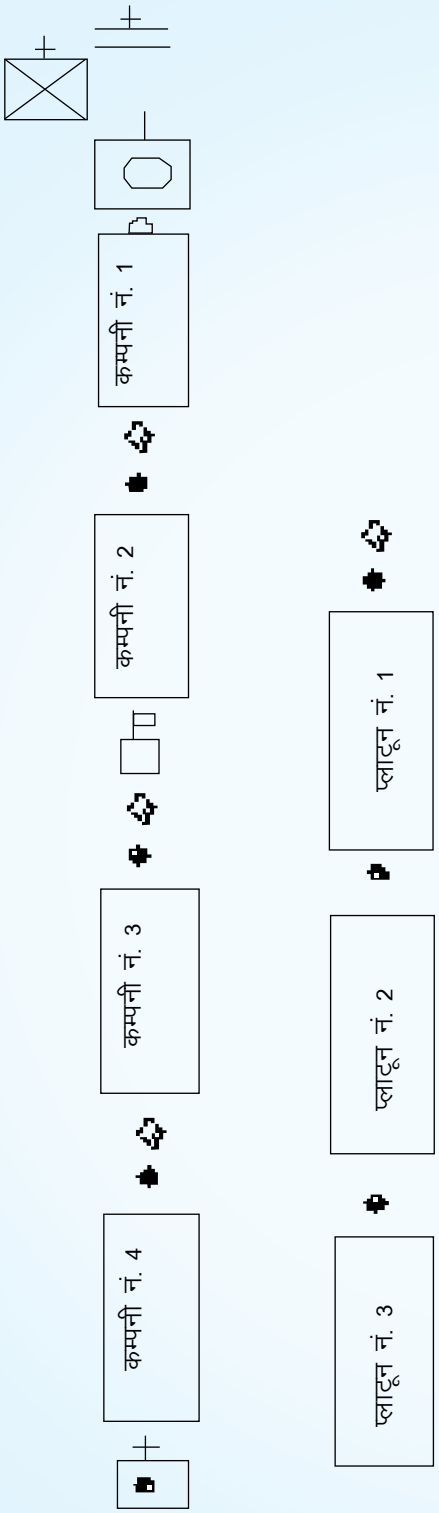

परिशिष्ट 'ङ'

कूच कॉलम में अफसरों की पोज़ीशन और झण्डा

(क) परेड कमाण्डर आगे वाले तीनों जवानों से 20 कदम आगे होगा।

(ख) द्वितीय कमान अफसर पिछली कम्पनी के पिछले तीनों जवानों के दाहिने हाथ के जवान से दस कदम पीछे होगा।

(ग) एडज्यूटेन्ट, परेड कमांडर के बाएं को पांच कदम पीछे होगा।

(घ) सभी फार्मेशनों में कम्पनी कमांडर अपनी कम्पनी के आगे, मध्य वाले जवान के सामने 6 कदम के फासले पर होगा।

(ङ) सभी फार्मेशनों में प्लाटून कमांडर अपनी–अपनी प्लाटूनों के मध्य वाले जवान के सामने तीन कदम की दूरी पर होगा। तीनों प्लाटून कमांडर अपनी–अपनी कम्पनी के आगे 3 कदम की दूरी पर भी मार्च कर सकते हैं। ऐसा उस स्थिति में किया जाएगा जब कंपनी की सभी प्लाटूनें आपस में (अर्थात् प्लाटूनों के बीच) कोई फासला रखे बिना एक–सी हो जाएं, और उस स्थिति में कम्पनी कमांडर सैल्यूटिंग बेस के निकट कंपनी को ''दाहिने देख'' और सामने देख का आदेश देगा। किन्तु रूट मार्ग को छोड़ कर यह सामान्यतः नहीं किया जाएगा।

(च) सूबेदार मेजर आगे वाली कम्पनी के सामने 10 कदम के फासले पर होगा और परेड कमांडर को कवर करेगा।

(छ) झण्डा निशान नं. 2 कम्पनी के पीछे होगा।

(ज) कम्पनियों के बीच लगभग 10 कदम का फासला होगा।

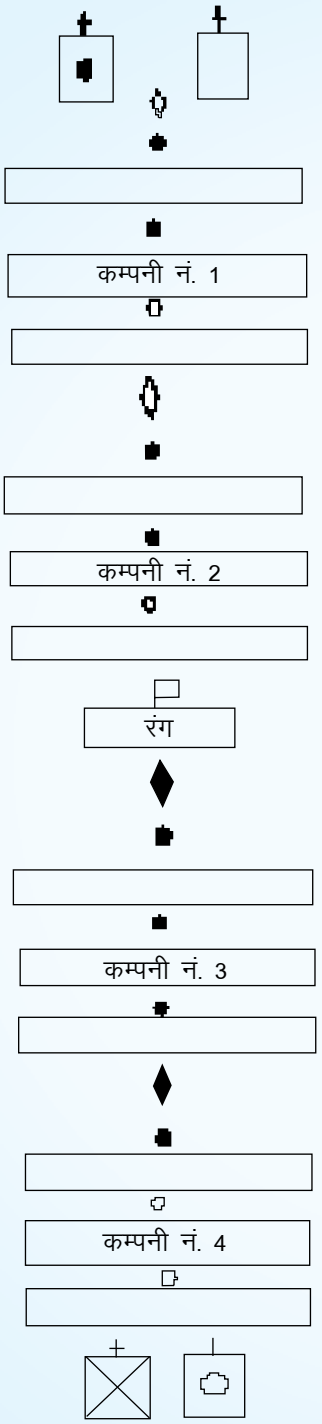

कूच कॉलम में कम्पनी के अफसरों की पोजीशन

परिशिष्ट 'च'

प्लाटूनों में मार्च पास्ट करते हुए अफसरों और जवानों की स्थिति

(क) परेड कमाण्डर आगे वाली प्लाटून के आगे आधे दायीं ओर 20 कदम की दूरी पर होगा।

(ख) द्वितीय कमान अफसर आगे वाली प्लाटून के आगे आधे बांयी ओर 20 कदम की दूरी पर होगा।

(ग) एडज्यूटेन्ट बटालियन की पिछली प्लाटून के मध्य जवान के पीछे 10 कदम की दूरी पर होगा।

(घ) कम्पनी कमांडर अपनी–अपनी कम्पनी की आगेवाली प्लाटून के आगे 6 कदम के फासले पर होगा।

(ङ) प्लाटून कमांडर अपनी प्लाटून के मध्य वाले जवान के आगे 3 कदम के फासले पर होगा।

(च) सूबेदार मेजर एडज्यूटेन्ट की दाहिनी ओर होगा और पिछली प्लाटून की दाहिनी ओर के जवान को कवर करेगा।

(छ) झण्डा और झण्डा पार्टी नं. 2 कम्पनी की पीछे वाली प्लाटून के पीछे होगी।

परिशिष्ट "छ"

समारोह के अवसर पर तैयार की जाने वाली वर्दी संबंधी मार्गदर्शन

विभिन्न परेड समारोह और अन्य समारोह के अवसरों में भाग लेने वाले के लिए समारोह वर्दी पहननी होती है।

ऐसे अवसरों के लिए तैयार की जाने वाली वर्दी के लिए निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिएः–

(क) टोपी/पगड़ी

1. सिर की टोपी (पीक कैप)/टोपी (बैरेट कैप) समारोह पगड़ी ढीली नहीं होनी चाहिए। यदि वह ढीली है तो उसके अन्दर उचित मात्रा में कपड़ा आदि लगाया जाए ताकि वह सिर पर पूरी तरह से जम जाए।

2. उसके ऊपर किसी भी प्रकार का धब्बा या मैलापन न हों। वह बिलकुल साफ–सुथरी दिखे।
3. धातु व चमड़े के सभी भाग सही प्रकार से पॉलिश किए हुए हों।
4. बैज़ टोपी/पगड़ी के मध्य में ठीक प्रकार से जमाया हुआ होना चाहिए।

(ख) कमीज

1. परेड के अवसर पर पहनी जाने वाली कमीज साफ–सुथरी व खाकी रंग की हो।
2. कमीज की बाहें ठीक प्रकार से मोड़ी हुई हों जिनका मोड़ चार अंगुलियों को आपस में मिलाने के बाद बनी चौड़ाई के बराबर होना चाहिए।
3. कमीज की बाहों की लम्बाई को इस प्रकार से मोड़ा जाए कि वह एक मोड़ में दिखाई दे। बांह पर दूसरे मोड़ दिखाई न दें।
4. कमीज के सभी बटन नए होने चाहिए तथा धुलने व प्रेस आदि के कारण खराब व टूटे नहीं होने चाहिए।
5. 'फारमेशन (विरचन) चिह्न को इस प्रकार से लगाया जाना चाहिए कि चिह्न के ऊपर का सिरा कंधे की सिलाई से 4 अंगुल नीचे की तरफ रहे।
6. कंधे के चिह्न कंधे की सिलाई व विरचन चिह्न के बीच में होनी चाहिए तथा बाहर का किनारा विरचन चिह्न के बराबर में होना चाहिए।
7. नाम पट्टिका दांए हाथ की जेब की सिलाई के ऊपर बीच के हिस्से पर लगी होनी चाहिए।
8. पेटी के बक्कल का दांया किनारा कमीज की बाहरी सिलाई का हिस्सा तथा पैन्ट की फ्लाई फ्लैप सभी एक सीधी लाइन में आने चाहिए।
9. कमीज पर लगे सभी मैडल सही प्रकार से पॉलिश किए हुए हों और यह भी देखें कि उस पॉलिश का धब्बा कमीज पर न लगा हो।

(ग) क्रास पेटी/पेटी

1. चमड़े का धातु का भाग सही प्रकार से पॉलिश किया हुआ होना चाहिए।
2. पेटी सही प्रकार से कसी हुई होनी चाहिए। वह न तो बहुत कसी न बहुत ढीली हो।
3. पेटी की लम्बाई बिल्कुल सही व नापी हुई होनी चाहिए ताकि उसका कोई अतिरिक्त भाग बाहर न दिखे।

(घ) पैन्ट

1. पैन्ट की लम्बाई इतनी हो कि सावधान की मुद्रा में खड़ा होने पर बूट के फीते नहीं दिखने चाहिए।
2. परेड के लिए जाने से पहले पहनी गई पैन्ट को पहनने के बाद नीचे न बैठे जिसके कारण अनावश्यक मोड़ (क्रिच) न बनने पाएं।
3. पैन्ट की नीचे की मोहरी का माप 16 से 18 इंच का होना चाहिए।

(ङ) जूते

1. जूते पूरी तरह से पॉलिश किए हुए हों और पॉलिश का कालापन दिखना नहीं चाहिए।
2. फीते नए होने चाहिए, मुड़े हुए नहीं।
3. फीते कस कर बंधे हों तथा जूते के छेद बराबर मिले हों व ढीले न हों।
4. खाकी जुराबें पहनी जानी चाहिए और उनकी ऊंचाई भी उपयुक्त होनी चाहिए ताकि यदि पैन्ट के ऊपर भी हो जाए तो जुराब दिखनी चाहिए।

(च) सामान्य

1. सभी के बाल सही प्रकार से कटे हुए हों। दाढ़ी बनी हुई हों व मूछों की कटाई सही प्रकार से हुई होनी चाहिए।
2. परेड में न तो रंगीन, न ही काले चश्में की अनुमति होगी।
3. परेड के दौरान हाथ की घड़ी न पहनी हो और अनावश्यक जेवर आदि को भी न पहना जाए।
4. जहां तक संभव हो डोरी नई होनी चाहिए, फीके रंग की नहीं होनी चाहिए।

रिपब्लिक डे परेड पर विभिन्न मार्चिंग दस्ता राजपथ पर मार्च करते हुये

रिपब्लिक डे परेड पर मार्चिंग दस्ता राजपथ पर मार्च करते हुये।

रिपब्लिक डे परेड पर विभिन्न मार्चिंग दस्ता राजपथ पर स्थित सलामी मंच के सामने से गुजरते हुये

रिपब्लिक डे परेड पर विभिन्न मार्चिंग दस्ता राजपथ पर स्थित सलामी मंच के सामने से गुजरते हुये

रिपब्लिक डे परेड पर मार्चिंग दस्ता राजपथ पर मार्च कर आगे बढ़ते हुये

रिपब्लिक डे परेड पर मार्चिंग दस्ता राजपथ पर मार्च करते हुये सलामी देने की मुद्रा में

रिपब्लिक डे परेड पर मार्चिंग दस्ता राजपथ पर मार्च करते हुये

रिपब्लिक डे परेड पर बैंड दस्ता राजपथ पर मार्च करते हुये

रिपब्लिक डे परेड पर बैंड दस्ता राजपथ पर मार्च करते हुये।

निशान का आगमन

परेड कंटिजेंट मुख्य अतिथि को चलते–चलते सैल्यूट करते हुये

परेड कंटिजेंट मुख्य अतिथि को चलते–चलते सैल्यूट करते हुये

परेड कंटिजेंट सलामी मंच से गुजरते हुये

परेड कंटिजेंट सलामी मंच से गुजरते हुये

परेड कंटिजेंट मार्च कर सलामी मंच से गुजरते हुये

परेड कंटिजेंट मार्च कर सलामी मंच से गुजरते हुये

महिला कंटिजेंट चलते–चलते दाहिने देखते हुये

महिला कंटिजेंट मुख्य अतिथि को मार्च करते हुये सलामी देने की मुद्रा में

परेड कंटिजेंट चलते–चलते दाहिने देखते हुये

अध्याय XXVI

गार्ड और सन्तरी

सामान्य

1. इस अध्याय का उद्देश्य एक ऐसा साधारण दैनिक कार्यक्रम निर्धारित करना है जिससे गारद् और सन्तरियों के बीच कार्य ग्रहण करने और मुक्त होने की कार्रवाई को सुनिश्चित किया जा सके। यहां पुलिस बल द्वारा सेरिमोनियल अवसरों पर अपनाए जाने वाले सामान्य तरीके का उल्लेख किया गया है और जहां संभव हो, इसे अपनाया जा सकता है।

2. गार्ड दो प्रकार के होते हैं जिनके उद्देश्य और कार्य बिल्कुल भिन्न होते हैं। एक को समारोह (सेरिमोनियल) गारद और दूसरे को सामरिक गारद कहते हैं।

3. इन दो प्रकार के गारदों के उद्देश्यों का बाद के पैरों में उल्लेख किया गया है। किए जाने वाले कार्यों का ध्यान में रखते हुए किस प्रकार गारद की स्थापना की जाए इसका निर्णय जिला या यूनिट के प्रभारी अफसर करेंगे।

समारोह गारद (सेरिमोनियल गारद)

4. समारोह गारद से निम्नलिखित में से किसी भी प्रयोजन के लिए आरोहण के लिए कहा जा सकता है:–

(i) जवानों को समारोह कवायद में व्यायाम करवाना और उनमें सर्वोच्च कोटि की चुस्ती, सफाई, अनुशासन की भावना भरना और उनमें ''बल के प्रति गौरव'' की भावना प्रोत्साहित करना।

(ii) उच्च अफसरों या अन्य विशिष्ट व्यक्तियों का तूर्यनाद (रिवेली) और रिट्रीट के बीच अभिनंदन करना।

5. समारोह औपचारिक गारद केवल तूर्यनाद (रिवेली) और रिट्रीट के बीच के समय में तैनात किया जाएगा। समारोह की समाप्ति पर या रिट्रीट के समय समारोह गारद तत्काल सामरिक गारद की और सामरिक गारद, औपचारिक गारद की ड्यूटी ले सकते हैं।

6. समारोह गारद को सदा जिला और यूनिट के गौरव का प्रतीक माना जाता है। इसकी कवायद चुस्ती और कौशल सर्वोच्च कोटि का होता है।

7. सामरिक गारद का उद्देश्य जिला के प्रभारी अफसर द्वारा निर्धारित किसी भी प्रकार का सुरक्षात्मक कार्य करना है। ऐसे कार्यों में सरकारी इमारतों, शस्त्रागार, बारूद घर, खजाने की रक्षा करना, बन्दियों की सुरक्षा और अनधिकृत व्यक्तियों को वर्जित क्षेत्रों में प्रवेश करने से रोकना शामिल है।

8. सामरिक गारद, समारोह गारद (सेरिमोनियल गार्ड) की तरह तूर्यनाद (रिवेली) और रिट्रीट के बीच अभिनन्दन करेंगे किन्तु रात में जब तक उन्हें राउन्ड द्वारा इन्सपेक्शन के लिए खड़े होने का आदेश न दिया जाए, तब तक वे केवल संकट सूचना देने के लिए खड़े रहेंगे।

9. सामरिक गारद को सामरिक दृष्टि से महत्व रखने वाले मोर्चे पर तैनात किया जाएगा ताकि वह अपना कार्य सही ढंग से निष्पादित कर सके। उनकी ऐसी तैनाती की व्यवस्था करते समय कनिष्ठ हवलदारों को सामरिक दृष्टि से प्रशिक्षित करने तथा उनमें पहलशक्ति विकसित करने का पूरा प्रयास किया जाएगा। सामरिक गारद के प्रत्येक सदस्य को संकट सूचना (स्टेन्ड टू) पोजीशन और वैकल्पिक पोजीशन बताई जाएगी।

10. यह समझ लिया जाए कि सामरिक गारद उस समय दक्षता पूर्वक कार्य करता हुआ माना जाएगा जब उसकी सामरिकता न दिखाई दे और न सुनाई दे। गारद कक्षों में संतरी सुरक्षित होंगे किन्तु उनका अचानक होने वाले धावों और ग्रनेड से बचाव होना चाहिए। इसी वजह से सामरिक मोर्चे को हर समय की जाने वाली कवायद के रूप में शामिल करने का इरादा नहीं है, और न ही यह इरादा है कि सामरिक

मोर्चे को उन प्रदर्शन के बराबर मान लिया जाए जो औपचारिक गार्ड किसी अतिथि अफसर के समक्ष करता है।

11. होशियार (स्टेंड टू) की पोजीशन में कोई भी सामरिक गारद अभिनन्दन नहीं करेगा। किन्तु यदि संतरी सामरिक मोर्चे पर रहे तो कोई सामरिक गारद अपने संतरियों के बिना राउन्ड में निरीक्षण के लिए पंक्ति में खड़ा हो सकता है, उस समय उपयुक्त अभिनन्दन किया जा सकता है।

खंड–1

परिभाषाएं

1. ''गारद'' स्थानों या व्यक्तियों की सुरक्षा करने वाले व्यक्तियों का समूह है।

2. ''ड्यूटीगार्ड'' क्वार्टर कार्मिकों के अतिरिक्त ऐसे गारद और पिकेट है जिनका विभिन्न तैनातियों के लिए मार्च करवाने से पहले आर्डरली अफसर द्वारा निरीक्षण किया जाता है।

3. ''संतरी'' गारद की श्रेणी के उन सिपाहियों को कहते हैं जिन्हें विभिन्न स्थानों पर ड्यूटी पर तैनात किया जाता है।

4. ''संतरी का परिसरण क्षेत्र'' उस हलके को कहते हैं जिस पर उसे गश्त लगानी होती है।

5. संतरी की चौकी (पोस्ट) वह स्थान है जहां वह तैनात होता है।

6. ''बदली'' (रिलीफ) वे संतरी है जिन्हें एक ही समय में संतरी के विभिन्न पदों पर तैनात किया जाता है या जिन्हें पहले से ड्यूटी पर मौजूद संतरियों को कार्यमुक्त करने के लिए लगाया जाता है।

7. ''बड़ा मुआइना'' तब होता है जब पुलिस अधीक्षक, निरीक्षण ड्यूटी पर हो और उसके द्वारा इसी प्रयोजन के लिए तैनात कोई राजपत्रित अफसर भी निरीक्षण ड्यूटी पर हो।

8. छोटा मुआयना–तब होता है जब अराजपत्रित अफसर इसी प्रकार की कार्रवाई करे।

9. ''अलार्म चौकी'' ऐसी पोस्टें हैं जा गारद के चारों ओर रात्रि के समय उसकी सुरक्षा के लिए बनाई जाती है।

10. ''वैकल्पिक चौकियां'' – (आल्टरनेटिव पोस्ट) अलार्म पोस्ट जैसी ही होती है। इन में गारद और संतरी तब रहते हैं जब उन्हें एक ही रात में दूसरी बार ''होशियार'' (स्टेन्ड टू) का आदेश दे दिया जाए।

11. ''लाइन बनाना'' : लाइन बनाने के लिए गार्ड दौड़ चाल से लाइन बनाते हैं और कंधे शस्त्र करते हैं। बिगुलची गारद कमाण्डर के दो कदम दाहिने होता है और संतरी बिगुलची के एक कदम दाहिने होता है। यह आदेश सामान्यतः तूर्यनाद (रिवेली) और रिट्रीट के बीच दिया जाता है।

12. ''गारद होशियार'' का आदेश गारद को रात के समय (रिट्रीट और रिवेली के बीच) दिया जाता है जब वे अलार्म चौकी पर अपनी पोज़ीशन ले लेते हैं।

13. ''हट जाएं'' (स्टैन्ड डाउन) का आदेश गारद को रात में राउन्ड का निरीक्षण होने के पश्चात दिया जाता है ताकि वह अलार्म चौकी से हट जाएं।

14. बिगुल की आवाज

(क) रिवेली बिगुल की वह आवाज है जो प्रातः काल क्वार्टर गारद में झंडा फहराते समय लगाई जाती है।

(ख) ''रिट्रीट'' बिगुल की वह आवाज है जो सूरज ढलते समय क्वार्टर गारद पर झंडा उतारते समय लगाई जाती है।

(ग) बिगुल पहली पोस्ट, बिगुल आखिरी पोस्ट ये रात 9.30 बजे और 10 बजे बजाई जाती है।

पहली चौकी के जवानों को यह सूचित करने के लिए बजाया जाता है कि अब दिन का कार्य समाप्त होने का समय हो गया अतः बरैक में वापस जाओ। आखिरी पोस्ट के लिए बिगुल बजाने के बाद ड्यूटी पर मौजूद हवलदार बैरक में जा कर यह देखता है कि सब जवान बिस्तर में हैं या नहीं तथा कोई अनुपस्थित तो नहीं है।

खंड–2

गारद – आरोहण

	ब्यौरा	अभ्युक्ति निर्देश
1.	गारद के आरोहरण का समय	जिले के प्रभारी अफसर या यूनिट द्वारा निश्चित
2.	गारद की वर्दी	––यथोपरि––
3.	स्टिक अर्दली : समारोह गारद में एक अतिरिक्त गारद नियुक्त किया जाएगा और फिर सबसे साफ वर्दी वाले गार्ड को गारद की ड्यूटी से मुक्त कर दिया जाएगा। इस प्रकार मुक्त किए गए गारद को स्टिक अर्दली कहा जाएगा। उसकी ड्यूटी होगी कमान्डेन्ट या स्टेशन के किसी वरिष्ठ अफसर के कार्यालय में आदेशों की प्रतीक्षा करना, अर्थात् ''रनर'' की ड्यूटी संभालना।	
4.	परेड करना – ''गारद की परेड'' की बिगुल की आवाज पर (जो कि गारद–आरोहण के समय से आधा घंटा पहले बजाया जाता है) गार्ड के लिए चुने गए जवान आरोहण के लिए तैयार हो जाएंगे।	जिला या यूनिट के प्रभारी अफसर के विवेक से समय में परिवर्तन किया जा सकता है।
5.	गार्ड आरोहण के लिए क्वार्टर काल पर (जो कि गार्ड के आरोहण के समय से पन्द्रह मिनट पहले लगाई जाती है) ड्यूटी एन.सी.ओ. गारदों की परेड करवाएगा और लाइन में खड़ा कर उनका निरीक्षण करेगा।	यह आवश्यक नहीं कि गारद के आरोहण का समय परेड ग्राडन्ड ही हो। प्रभारी अफसर के विवेक से यह स्थान परिवर्तित किया जा सकता है।
	इसके बाद लाइन बना की आवाज लगने से पांच मिनट पहले वह गारदों को परेड ग्राउन्ड में ले जाएगा और फिर उन्हें निम्नलिखित ढंग से ड्यूटी अफसर को सौंप देगा–	बिगुलची गारद कमांडर से दो कदम दाएं और ड्यूटी एन.सी.ओ. पांच कदम के फासले पर होगा।
	(क) गारद परेड पर गारद, ड्यूटी एन.सी.ओ. के दो कदम सामने पहले सावधान की स्थिति में होंगे फिर आगे बढ़ कर दो रैंकों में खुली लाइन में विश्राम की हालत में खड़े हो जाएंगे। तब ड्यूटी एन.सी.ओ. गारद से, सुविधा जनक फासले पर, जैसे कि बारह कदम की दूरी पर, गारद के सामने मुंह करके खड़ा हो जाएगा।	
	(ख) ''गारद सावधान''	गारद कमांडर और द्वितीय कमान अफसर संगीन नहीं लगाएगा।
	(ग) ''गारद संगीन लगाएगा–संगीन'' लगा, सावधान''	

(घ) ''गारद दाहिने सज–सामने देख''

ड्यूटी एन.सी.ओ. स्वयं गारद को सजाएगा और उसके बाद सीधे गार्ड का निरीक्षण करेगा।

(ङ) ''गारद संगीन उतारेगा–संगीन उतार, सावधान''

(च) ''निरीक्षण के लिए बाएं शस्त्र''

ड्यूटी एन.सी.ओ. शस्त्रों का निरीक्षण करेगा और अगला कमान दिए जाने से पहले गारद कमांडर की दाहिनी ओर पांच कदम की दूरी पर पंक्ति में खड़ा हो जाएगा।

(छ) ''गारद जांच शस्त्र''

शस्त्रों की जांच करने के पश्चात् ड्यूटी एन.सी.ओ. अपने मूल स्थान पर वापस आ जाएगा।

(ज) ''बोल्ट चला''

(झ) ''बाजू शस्त्र''

ड्रिल के एक भाग के रूप में किया जाए

(ञ) ''विश्राम''

इसके बाद ड्यूटी एन.सी.ओ. बिगुलची से पांच कदम की दूरी पर दांए अपनी पोजीशन लेगा और ड्यूटी अफसर के आने की प्रतीक्षा करेगा।

अर्दली अफसर के आने पर, ड्यूटी एन.सी.ओ. गारद को सावधान करेगा, कन्धे शस्त्र करवाएगा और अर्दली अफसर की ओर मार्च करेगा और उसके सामने दो कदम की दूरी पर रुकेगा, उसे सैल्यूट करेगा और सूचित करेगा, ''श्रीमान गारद निरीक्षण के लिए तैयार है।'' इसके बाद अर्दली अफसर आदेश देगा, ''ड्यूटी एन.सी.ओ. जगह लो।'' इस पर ड्यूटी एन.सी.ओ. सैल्यूट करेगा, मुड़ेगा और मार्च करके बिगुलची के दांए अपने मूल स्थान पर वापस जाएगा।

''लाइन बना की आवाज'' पर अर्दली अफसर, ''दर्शक'' कहेगा। गारद कमांडर अर्दली अफसर के सामने दो कदम के फासले पर आकर रुकेगा, बाजू शस्त्र करेगा और विश्राम की स्थिति में खड़ा होगा।

''अर्दली अफसर के ड्यूटी परेड पर'' के कमाण्ड पर गारद दर्शक की ओर मार्च करेगा, बाजू शस्त्र करेगा और विश्राम की स्थिति में खड़ा हो जाएगा। अर्दली अफसर गारद से सुविधाजनक फासले पर (20 या 30 कदम की दूरी पर) गारद के सामने मुंह करके खड़ा हो जाएगा।

गारद सदा ही खुली लाइन बनाएगा

यदि गारद को किसी अफसर ने कमाण्ड दिया हो, तो वह मध्य से दो कदम सामने की ओर होगा और वरिष्ठ एन.सी.ओ. गारद के दांयी ओर होगा, यदि गारद को किसी एन.सी.ओ. ने कमाण्ड दी हो तो वह गारद के दांयी ओर होगा अगला वरिष्ठ एन.सी.ओ. (यदि कोई हो) पीछे वाली रैंक में होगा और वरिष्ठ एन.सी.ओ. को कवर करेगा।

गारद पर कमान करने वाले अफसर से दर्शक के रूप में कार्य करने के लिए नहीं कहा जाएगा। यदि एक से अधिक गारद हो तो पहले गारद को कमाण्ड देने वाला वरिष्ठ एन.सी.ओ दर्शक होगा।

5. प्रक्रिया :

अर्दली अफसर द्वारा कमाण्ड–

(क) ''गारद सावधान''

(ख) ''गारद संगीन लगाएगा, संगीन लगा सावधान''

गारद कमांडर और द्वितीय कमान अफसर संगीन नहीं लगाएंगे। ड्यूटी एन.सी.ओ. गारद के बांयी ओर, मुड़ कर उसे सजने के लिए कहेंगे। यह क्रिया पूरी होने पर वह सामने देख का आदेश देगा और अपने सामने मुड़ेगा।

(ग) ''गारद दाहिने सज''

(घ) ''गारद गिनती कर''

यह आदेश मिलने पर अर्दली अफसर गारद का निरीक्षण करेगा। ड्यूटी एन.सी.ओ. समय पर पहुंचकर वहां उपस्थित होगा तथा गारद के सामने उससे मुलाकात करेगा। वह अर्दली अफसर को सैल्यूट करेगा और निरीक्षण के दौरान उसके साथ रहेगा और अर्दली अफसर कोई रिमार्क दे, तो उसे नोट करेगा। निरीक्षण के बाद दोनों अपने मूल स्थान पर वापिस लौट आएंगे।

गारद कमांडर और बिगुलची को छोड़ कर केवल अगली लाइन के जवान गिनती करेंगे।

(ङ) ''गारद संगीन उतारेगा, सावधान, संगीन उतार''

(च) ''निरीक्षण के लिए बाएं शस्त्र''

अर्दली अफसर और ड्यूटी एन.सी.ओ. ऊपर (''क'' में) दिए अनुसार कार्रवाई करेंगे किन्तु शस्त्रों के निरीक्षण के पश्चात् दोनों गारद कमांडर की दांयी ओर पांच कदम के फासले पर जुड़ जाएंगे।

ड्यूटी एन.सी.ओ. यहां अर्दली अफसर को सैल्यूट नहीं करेगा।

(छ) ''जांच शस्त्र''

शस्त्रों की जांच के पश्चात् दोनों अपने मूल स्थान पर वापिस लौट आएंगे ड्यूटी

एन.सी.ओ. गारद के दांयी ओर पांच कदम के फासले पर होगा और अर्दली अफसर गारद के सामने 20 से 30 कदम के फासले पर होगा।

(ज) ''बोल्ट चला''

(झ) ''बाजू शस्त्र''

(ञ) ''गारद संगीन लगाएगा'' संगीन लगा, सावधान, इस समय स्टिक अर्दली चुना जाएगा और विसर्जित (डिसमिस) किया जाएगा।

गारद कमांडर और द्वितीय कमान अफसर संगीन नहीं लगाएंगे।

(ट) ''नं. ..... सामने (पिछली) लाइन स्टिक अर्दली–विसर्जन''

स्टिक अर्दली अगली या पिछली लाइन में अपनी पोजीशन के अनुसार एक कदम आगे या पीछे लेगा, सैल्यूट करेगा और फिर विसर्जित हो जाएगा।

(ठ) ''निकट लाइन चल''

(ड) ''दाहिने सज''

ड्यूटी एन.सी.ओ. बाएं मुड़ेगा गारद को सजने के लिए कहेगा और उसके बाद वह गारद को ''सामने देख'' का आदेश देगा।

(ढ) ''कंधे शस्त्र''

(ण) ''गारद कमांडर जगह लो''

यह आदेश प्राप्त होते ही गारद कमांडर एक कदम आगे बढ़ कर सैल्यूट करेगा, गारद कमांडर दो कदम पीछे, बीच वाले गारद के सामने खड़ा होगा। इसी समय द्वितीय कमान अफसर 2 कदम आगे बढ़कर गारद कमांडर का स्थान ले लेगा। अर्दली अफसर भी अपने बाएं पार्श्व में सुविधाजनक फासले पर हो जाएगा जहां से वह गारद द्वारा मार्च के दौरान दिए गए अभिनन्दन को स्वीकार कर सके।

गारद कमांडर द्वारा कमांड

(त) ''गारद दाहिने से तेज चल''

(थ) ''दाहिने देख, सामने देख''

गारद कमांडर गार्डों को ऐसे स्थान पर मार्च करवायेगा जहां वह पहले वाले गार्डों को कार्य मुक्त कर सके।

यदि गारदों को पूरे रास्ते गारद कक्ष तक दो लाइनों में या एक–एक लाइन में चलाना संभव न हो, तो उपयुक्त फार्मेशन अपनाई जा सकती है। अर्दली अफसर पंक्ति छोड़ देगा। ड्यूटी एन.सी.ओ. और वह दोनों गारदों के परिवर्तन का पर्यवेक्षण करेंगे।

खंड–3

गारद को कार्यमुक्त करना, तैयार करना और विसर्जित करना

1. गार्ड के प्रवेश करते ही नया गारद लाइन में आगे बढ़कर पुराने गार्ड के सामने जाएगा और जहां भी संभव हो उसके 15 कदम सामने जा कर रुक जाएगा। यदि यह संभव न हो तो नया गारद उसी दिशा में पुराने गारद के बाएं से छः कदम के फासले पर रुक जाएगा और सजेगा।

2. नए गारद के पहुंचने पर पुरानी गारद का कमांडर अपनी गारद को कंधे शस्त्र करवाने के बाद सज की कार्रवाई करवाएगा। तब निम्नलिखित सैरिमोनियल कार्रवाई की जाएगीः

नं. 1, नं. 2	पहली बदली
नं. 3, नं. 4	दूसरी बदली
नं. 5, नं. 6	तीसरी बदली
पहली बदली खड़ी रहेगी	इस पर पहली बदली को छोड़कर शेष सभी विश्राम के स्थिति में होंगे। बाकी विश्राम
पहली बदली कंधे शस्त्र	इस कमाण्ड पर दोनों पुरानी गारद कमांडर और पुराने संतरी कंधे शस्त्र करेंगे।
तेज चल थम बदली बन	यदि पहली बदली में केवल चार तक की संख्या में संतरी हैं तो अपनी संख्या के अनुसार वे एक लाइन बनाएंगे।

3. पुराने गारद कमांडर से समय लेते हुए दोनों गारद कमांडर सावधान होंगे, कंधे शस्त्र करेंगे, पांच कदम आगे बढ़ेंगे, रुकेंगे और अन्दर को आधे मुड़ेंगे तब पुरानी गारद कमांडर नीचे लिखे ढंग से अपने संतरियों की बदली के लिए कहेगा : एक संतरी दिन और एक (या दो) संतरी रात। नया गारद कमांडर भी यही दोहराए।

4. इसके बाद दोनों गारद कमांडर अपने–अपने गारदों की ओर जाते हैं, पुरानी गारद कमांडर अपने गारद के दांयी ओर और नयी गारद कमांडर अपने गारद के सामने खड़ा हो।

5. तब कमांडर अपनी नई गारद की गिनती करता है और निम्नलिखित ढंग से बदलियां करता हैः

   नई गारद (दाहिने हाथ का जवान नं. 1 होगा, पिछली सावधान रैंक के दांए हाथ का जवान नं. 2 होगा, (गारद की अगली रैंक का नं. 2 जवान नं. 3 होगा, और इसी तरह गिनती उसकी पिछली रैंक का जवान नं. 4 होगा कर) और इसी तरह से आगे होगा।

6. जब नई गारद की पहली बदली भेजी जाए तो पुरानी गारद का द्वितीय कमान अफसर उसके साथ जाएगा ताकि भारमुक्त हुए संतरियों को लाया जा सके। ''बदली बन'' आदेश पर वह नई बदली के पहले संतरी के दांयी ओर खड़ा होगा। नई गारद का द्वितीय कमान अफसर बाएं खड़ा होगा। तब नई गारद का द्वितीय कमान अफसर आदेश देगा ''बदली एक फाइल में दाहिने चल – दाहिने मुड़''। इसके बाद वह पीछे वाले संतरी के दांए खड़े हो कर आदेश देगा, ''बदली तेज चल''। तब पुरानी गारद का द्वितीय कमान अफसर बदली को संतरी की चौकी तक ले जाएगा और संतरी खण्ड 4 में दिए ढंग से बदले जाएंगे। जैसे ही सब संतरी कार्यमुक्त हो जाएं जो वैसे ही द्वितीय कमान अफसर स्थान में परिवर्तन करेंगे और पुरानी गार्ड को द्वितीय कमान अफसर आदेश देगा।

7. जब बदली मार्च कर रहा हो और संतरियों में परिवर्तन किए जा रहे हों तो नई गारद कमांडर माल सूची – बोर्ड की सूची के अनुसार गारद का सामान ले लेगा। साथ ही दोनों गारद कमांडर चार्ज रिपोर्टों पर हस्ताक्षर करेंगे। यदि गारद में केवल एक हवलदार हो तो वही संतरियों के कार्यमुक्त होने के पश्चात् सामान आदि का चार्ज लेगा। इसके बाद गारद कमांडर चार्ज के परिवर्तन की सूचना अर्दली अफसर (यदि उपस्थिति हो) को देंगे।

8. जब बदली वापस लौट जाए और पुरानी और नई गारद के सभी जवान अपनी अपनी गारद में लाइन में खड़े हो जाएंगे।

निम्नलिखित सेरिमोनियल होगा

पु.गा.क. – ''पुरानी गारद सावधान''

न.गा.क. – ''नई गारद सावधान''

पु.गा.क. – ''पुरानी गारद कंधे शस्त्र''

न.गा.क. – ''नई गारद कंधे शस्त्र''

पु.गा.क. – ''पुरानी गारद एक फाइल में दाहिने चल, दाहिने मुड़''

टिप्पणी : पुरानी गारद कमांडर लाइन में गारद के दांयी ओर पीछे वाले जवान के पास पोजीशन लेगा और द्वितीय कमान अफसर अपने स्थान पर खड़ा होगा।

पु.गा.क. – ''पुरानी गारद तेज चल''

न.गा.क. – ''नई गारद सलामी शस्त्र''

पु.गा.क. – ''पुरानी गारद बाएं देख, सामने देख''

न.गा..क. – ''नई गारद कंधे शस्त्र''

9. जब पुरानी गारद चली जाए तो नई गारद को मार्च करवा कर उस पोजीशन में लाया जाएगा जिसमें पहले पुरानी गारद थी चाहे वह फाइल में हो या एक फाइल में जैसा भी मामला हो और उसे लाइन बनाने और ''होशियार'' की पोजीशन के बारे में समझाया जाएगा फिर गारद को गारद कक्ष में विसर्जित किया जाएगा और गारद के लिए आदेश पढ़े जाएंगे। ये आदेश पहली बदली के जवानों को भी जब वे संतरी के स्थान पर आएंगे – पढ़े और समझाए जाएंगे। गारद को विसर्जित करने के लिए आदेश शब्द होगा ''संतरी खड़ी रहे, बाकी गारद रूम को विसर्जन''।

10 यदि गारद आरोहण के समय अभिनन्दन करना आवश्यक हो तो गारदों को वरिष्ठ अफसर या हवलदार कमान शब्द देगा।

11. पुरानी गारद को नई गारद की मूल पोजीशन पर मार्च करवाया जाएगा और हथियारों और गोला बारूद के निरीक्षण के बाद विसर्जित किया जाएगा।

खंड–4

संतरियों और बदलियों की तैनाती, उन्हें कार्यमुक्त करना, मार्च करवाना और विसर्जित करना

संतरियों की तैनाती

1. यदि किसी संतरी की तैनाती ऐसी चौकी पर जहां कोई संतरी नहीं है, की जानी हो, तो जैसे ही वह निर्दिष्ट चौकी से कुछ पहले किसी पाइन्ट तक पहुंचे उसे ''थम'' किया जाए। इसके बाद संतरी अगले आदेश की प्रतीक्षा किए बिना कदम आगे बढ़ाएगा, थम करेगा और अपनी निश्चित चौकी पर अपेक्षित दिशा में देखेगा। हवलदार (सामान्यतः कनिष्ठ हवलदार) तब उसे आदेश पढ़ कर सुनाएगा और समझाएगा कि किस उद्देश्य से उसकी तैनाती की गई है, उसकी चौकी के सामने की दिशा और हलके की सीमा के विषय में बताएगा।

बदली संतरी

2 बदली के पहुंचने पर, संतरी जो कि कंधे शस्त्र की अवस्था में होगा, संतरी के सामने जा कर खड़ा होगा। बदली वाला हवलदार, बदली के संतरी से दो कदम की दूरी पर ''थम'' करेगा। तब नया संतरी, बदली के पास से हट कर, पुराने संतरी की बांयी ओर, उसी दिशा में मुंह करके खड़ा हो जाएगा। हवलदार नए संतरी को आदेश पढ़कर सुनाएगा और सुनिश्चित करेगा कि संतरी उन्हें समझ रहा हो।

3. ''संतरी बदली करो''

पुराना संतरी बदली के पीछे अपने स्थान पर खड़ा होगा और नया संतरी उसके दांयी और दो कदम और निकट स्थान पर खड़ा होगा।

4. ''बदली तेज चल''

बदली से मार्च करवाई जाएगी। सभी संतरियों के बदल जाने के बाद, बदली को दोनों गारदों के बीच लाया जाएगा। तब वे पुरानी गारद कमांडर के आदेश पर लाइन तोड़कर अपनी–अपनी गारद से मिल जाएंगे।

खंड–5

गारद को दिन में निरीक्षण के लिए ''लाइन बन'' कराना

1. जब संतरी, निरीक्षण अफसर को वास्तव में क्वार्टर गारद में प्रवेश करते हुए देखें, तो संतरी सावधान हो जाए, कंधे शस्त्र करे और ''गारद लाइन बना'' कहे।

   गारद के सभी जवान दौड़ कर निर्धारित लाइन पर आ कर खड़े हों।

2. जब निरीक्षण अफसर गारद के सामने आकर चौकी पर खड़ा हो जाए तो गारद कमांडर के आदेश पर गारद उचित सैल्यूट देगी। जो बिगुल से सैल्यूट लेने का पात्र है, उनके लिए बिगुलची उपयुक्त बिगुल बजाए।

   यदि निरीक्षण अफसर ''सलामी शस्त्र'' का हकदार हो तो गारद के खड़े होने के पश्चात् ''सलामी शस्त्र'' का कमान दिया जाए और उसके बाद गारद के निरीक्षण अफसर के पास रिपोर्ट करने से पहले ''कंधे शस्त्र'' और ''बाजू शस्त्र'' का कमान दिया जाए।

   जब निरीक्षण अफसर सैल्यूट ले रहा हो तो उसके साथ मौजूद सभी अफसर उसके पीछे सावधान की पोजीशन में खड़े हों।

3. गारद को ''बाजू शस्त्र'' करने के पश्चात् गारद कमांडर निरीक्षण अफसर को ''निरीक्षण के लिए गारद हाजिर है'' की सूचना देगा। किसी अन्य प्रकार से रिपोर्ट नहीं दी जाएगी।

4. गारद कमांडर की रिपोर्ट मिलने के पश्चात् निरीक्षण अफसर गारद का निरीक्षण करने के लिए आगे बढ़े। गारद कमांडर कंधे शस्त्र करे, एक कदम आगे बढ़ कर बाएं मुड़े और निरीक्षण अफसर के साथ हो जाए। जब तक निरीक्षण पूरा न हो जाए और गारद विसर्जित न हो जाए तब तक निरीक्षण अफसर को छोड़ कर पार्टी के सभी कार्मिक जहां कहीं भी हों, सावधान रहें। निरीक्षण समाप्त होने के बाद निरीक्षण अफसर गारद कमांडर को ''गारद लाइन तोड़ या गारद विसर्जन'' करवाने का आदेश दे।

5. निरीक्षण से ''गारद लाइन तोड़ या गारद विसर्जित'' का आदेश मिलने पर गारद कमांडर आदेश दे ''गारद कंधे शस्त्र, संतरी खड़ा रहे, शेष विसर्जित'' या ''गारद–कक्ष को विसर्जित'' संतरी को छोड़ कर गारद के शेष सभी कार्मिक दांए मुड़े सैल्यूट दें और दौड़ कर गारद रूम को जाएं।

6. गारद को विसर्जित कर देने के पश्चात् कमांडर निरीक्षण अफसर की ओर मुड़े और उसे सैल्यूट करे। इसके बाद वह गारद कक्ष और आस–पास के स्थानों के लिए निरीक्षण अफसर के साथ जाए। अन्य व्यक्ति जो निरीक्षण अफसर के साथ थे अब निरीक्षण के लिए उसके साथ जा सकते हैं।

7. गारद रूम आदि का निरीक्षण पूरा होने के पश्चात् गारद कमांडर फिर से निरीक्षण अफसर को सैल्यूट करे और फिर लाइन तोड़ कर गारद रूम को लौट जाए।

खंड–6

गारद को रात के समय ''लाइन बन'' कराना

1. जब संतरी, ''बड़े मुआइने'' या ''छोटे मुआइने'' को अपनी गारद की तरफ आता देखें, तो संतरी ''तान शस्त्र'' की पोजीशन में आ जाए और यह चिल्ला कर कहते हुए कि ''थम कौन आता है'' गारद की ओर आने वाले मुआइने का ''थम'' करे।

2. ''थम, कौन आता है'' कहे जाने पर बड़ा या छोटा मुआइना थम करेगा और बताएगा कि वह ''बड़ा मुआइना'' है या ''छोटा मुआइना''।

3. जब संतरी को अपने प्रश्न का उत्तर मिल जाए और वह आश्वस्त हो जाए कि आने वाला मुआइना ''बड़ा'' है या ''छोटा''। वह ''थम बड़ा'' (या छोटा) मुआइना, गारद होशियार कह कर गारद को होशियार करे। वह तीन बार गारद स्टैण्ड टू या ''गारद होशियार'' कहे और स्वयं भी ''होशियार'' की पोजीशन में खड़ा हो। तब गारद–कमांडर के साथ गारद रूम से बाहर आकर दौड़ कर अपने लिए पहले से नियुक्त अलार्म चौकी पर खड़ा हो जाए।

4. गारद कमांडर संतरी से जाकर संतरी कौन सा राउन्ड पूछे और उससे ''बड़े'' या ''छोटे'' राउन्ड का उत्तर मिलने पर वह ''आगे बढ़ो, बड़ा मुआइना या छोटा मुआइना सब ठीक है'' कहे इस बीच संतरी, उसके लिए पहले से नियुक्त स्थान पर अलार्म चौकी के पीछे अपनी पोजीशन ले और गारद कमांडर भी ऐसा ही करे।

5. निरीक्षण पूरा होने पर बड़ा या छोटा मुआइना निम्नलिखित आदेश दे:

   (i) ''गारद जगह छोड़ या

   (ii) गारद लाइन बना''

6. यदि गारद को ''जगह छोड़'' करना हो तो वे अलार्म चौकी छोड़ कर दौड़ कर गारद रूम की ओर जाए।

   निरीक्षण अफसर के गारद बुक में निरीक्षण आदि रिकार्ड करने और चले जाने के पश्चात् गारद कमांडर गारद रूम की ओर जाए।

7. यदि गारद को ''खड़े होने'' का आदेश दिया जाए तो गारद संतरियों के बिना निर्धारित लाइन पर खड़ा हो और वही प्रक्रिया अपनाई जाए जो कि दिन में निरीक्षण के लिए अपनाई जाती है। हो सकता है कि गारद कक्षा आदि का निरीक्षण न हो और निरीक्षण के बाद गारद को विसर्जित होने के लिए कह दिया जाए।

खंड–7

संतरियों के लिए सामान्य नियम

1. जब संतरी अपने परिसरण क्षेत्र (बीट) पर घूमना चाहे तो वह पहले सावधान हो, एक कदम आगे बढ़ाए, कंधे शस्त्र करे, अपने दांए या बाएं घूमें और तेज चाल में आगे बढ़े।

2. अपने परिसरण क्षेत्र के आखिरी किनारे पर आकर संतरी थम करे और बाहर की ओर (अर्थात् अपने सामने से) दांए या बाएं, जैसा भी मामला हो, दो सुस्पष्ट मोड़ (टर्न) लेकर पीछे मुड़े और फिर से तेज चाल में चले।

3. संतरी गश्त के दौरान अपने बाक्स या चौकी को जहां से अभिनन्दन करना हो या चैलैंज करना हो, छोड़कर अन्यथा कहीं नहीं रुकेगा।

4. संतरी जब अपने बाक्स या पोस्ट के सामने रुके तो उसका रुख सामने की ओर हो, बाजू शस्त्र हो, एक कदम पीछे ले और विश्राम की पोजीशन में खड़ा हो।

5. संतरी अपना शस्त्र या चौकी छोड़ कर न जाए और मटरगश्ती न करे या किसी से बात न करे (अपनी ड्यूटी के निष्पादन में बोलने के अतिरिक्त) और जब तक कि मौसम अत्यधिक खराब न हो तब तक अपने बाक्स में आश्रय न ले।

6. संतरी हमेशा सतर्क रहे और सभी आवश्यक अभिनंदन चुस्ती से करे।

संतरियों द्वारा ललकार करना (चैलेंज करना)

7. रात के समय संतरी की चौकी की ओर आने वाले जिन व्यक्तियों या दलों पर संतरी को संदेह हो कि आने वाला व्यक्ति या दल वहां से गुजरने के लिए प्राधिकृत है या नहीं या वे जिस कारण से आ रहे हों उसके बारे में उसे संदेह हो, तो वह उसके या उनके आने पर ललकार (चैलेंज) करेगा।

8. यदि संतरी को ललकारना (चैलेंज) आवश्यक हो, तो वह निम्नलिखित प्रकार से करेगाः–

जब कोई व्यक्ति या दल संतरी की चौकी के नजदीक आए और इतने फासले पर आ जाए कि वह सुन सके, तो संतरी ''तैयारी'' की पोजीशन में आकर जोर से कहे ''रुको, कौन आता है।'' वह यह बात उस भाषा में, जो उस इलाके में सामान्यतः बोली जाती हो, पुनः दोहराएगा और यह नहीं प्रकट होने देगा कि वह वहां से बोल रहा है। जब वह व्यक्ति या दल रुक जाए तो संतरी ''एक आगे बढ़ो'' कहे (यदि आवश्यक हों तो अनुवाद करेगा)। जब संतरी व्यक्ति या दल के संबंध में आश्वस्त हो जाए तो वह ''चलो दोस्त, सब ठीक है'' कहे और जब तक वह व्यक्ति या दल गुजर न जाए तब तक होशियार रहे। यदि संतरी उस व्यक्ति या दल के संबंध में या उसकी या उनकी असलियत के संबंध में आश्वस्त न हो तो वह ''होशियार'' रहे और इस संबंध में गारद कमांडर को सूचित करे। यदि संतरी की ललकार (चैलेंज) के प्रश्न के उत्तर में वे ''बड़ा मुआइना'' या ''छोटा मुआइना'' कहें संतरी इस संबंध में आश्वस्त हो जाए तो वह खंड 6 में दिए अनुसार कार्रवाई करे।

टिप्पणी : रात के समय संतरी गारद–कक्ष की ओर जाने वाले सभी व्यक्तियों को ललकारे। यदि ललकार के जवाब में वे ''दोस्त'' कहें और संतरी व्यक्ति की पहचान के बारे में आश्वस्त हो जाए तो वह उसे या उन्हें जाने की अनुमति दे देगा।

खंड–8

गारद और संतरियों को दिए जाने वाले सामान्य अनुदेश और उनके द्वारा किए जाने वाला सामान्य अभिनन्दन

1. संतरी हमेशा कंधे शस्त्र करके और संगीन लगा कर मार्च करे और दांए या बाएं जैसा भी मामला हो, दो बार मोड़ लेकर बाहर की ओर मुड़े, अर्थात् संतरी कभी भी चौकी की ओर मुंह न करे।

2. गारद–कक्ष में रखी राइफलों में हमेशा संगीन लगी रहे।

3. हर बदली के बाहर जाने तथा वापस आने पर गारद कमांडर उसका निरीक्षण करे।

4. शस्त्रहीन पार्टियों का अभिनन्दन न किया जाए।

5. दिन के समय (रिवेली और रिट्रीट के बीच) गारद निम्नलिखित के लिए लान सज करे और सलामी शस्त्र करेः–

(क) राष्ट्रपति और राज्यपाल के लिए (राज्यपाल को उनके राज्य में), बिगुल पर राष्ट्रीय सैल्यूट की धुन बजायी जाए।

(ख) प्रधानमंत्री, केन्द्रीय मंत्रियों और राज्य मंत्रियों के लिए उनके क्षेत्राधिकार में, बिगुल पर आम सैल्यूट की धुन बजाई जाए।

प्रधानमंत्री के लिए राष्ट्रीय सैल्यूट की धुन राज्य सरकार की विशेष अनुमति से बजाई जा सकती है।

(ग) पुलिस के उप–महानिरीक्षक और उससे ऊंचे रैंक के पुलिस अफसरों और सेना के मेजर जनरल और उससे ऊंचे रैंक के अफसरों और नौसेना तथा वायु सेना में भी समान रैंक के अफसरों के लिए बिगुल पर सामान्य सैल्यूट की धुन बजाई जाए।

(घ) जिलों के पुलिस अधीक्षक के प्रतिदिन पहली बार गारद के निरीक्षण के लिए आते समय।

(ङ) बड़ा मुआइना।

(च) सभी शस्त्र दल जो कि संख्या में गारद की संख्या से अधिक हों।

(छ) तूर्यनाद (रिवेली) और गजर की आवाज होने पर।

(ज) उप–निरीक्षक या उससे ऊंचे किसी रैंक के पुलिस अफसर के लिए जब वह अर्दली या ड्यूटी अफसर बनाया जाए तो गारद दिन में एक बार लाइन बन करेगा और गार्ड कमांडर केवल एक बार सैल्यूट देगा।

टिप्पणी (i) जब गारद वास्तव में आरोहण या बदली करें तो सम्मान देना आवश्यक है वरिष्ठ अफसर या एन.सी.ओ. कमान दे।

(ii) अभिनंदन करने संबंधी उपर्युक्त आदेश राष्ट्रपति, केन्द्रीय मंत्रियों, राज्यपाल और राज्य मंत्रियों के निवास स्थान या कैम्पों में आरूढ़ विशेष गारदों पर लागू नहीं होंगे। ये गारद निचले रैंक या हैसियत के व्यक्तियों का अभिनंदन न करे। जब उनके ड्यूटी के स्थान पर पुलिस अफसर आएं तो वे लाइन बना कर कंधे शस्त्र करेंगे।

6. रात्रि (रिट्रीट और रिवेली के बीच)

टाटू के लिए जाने के सिवाय, सशस्त्र दल के आने पर अलार्म होने और बड़े या छोटे मुआयने को छोड़ कर, गारद अन्यथा रिट्रीट के बाद या रिवेली से पहले लाइन बन नहीं करेंगी और न ही वे इस बीच किसी का अभिनंदन करेंगी (बड़े मुआयने को छोड़ कर जिसे वे सलामी शस्त्र करेंगी।)

7. संतरियों द्वारा अभिनन्दन दिन

(क) संतरी राज्य चिन्ह या ऊंचे रैंक के बैज लगाए हुए पुलिस अफसरों और भारतीय थल सेना, नौसेना और वायु सेना के समान रैंक के अफसरों को सलामी शस्त्र करें।

(ख) अभिनंदन करने से पहले ''संतरी थम'' करे और अपने सामने की ओर मुड़े, यदि वह संतरी बाक्स में खड़ा हो तो सावधान होकर सैल्यूट करे।

(ग) शस्त्र पार्टियों को संतरी सलामी शस्त्र करे और शस्त्र रहित पार्टियों को सैल्यूट करे।

(घ) उपनिरीक्षक और उससे ऊंचे रैंक के पुलिस अफसर जो सलामी शस्त्र के हकदार नहीं हैं, संतरी बट सैल्यूट करे।

रात्रि

(क) रात होने के बाद संतरी किसी भी सशस्त्र पार्टी को सलामी शस्त्र न करे।

(ख) किसी अफसर को पहचानने के बाद संतरी उसके प्रवेश पर थम करे, उसके सामने की ओर मुड़े और उचित अभिनन्दन करे।

8. विशेष अनुदेश

गारद और संतरियों द्वारा किए जाने वाले अभिनन्दन के संबंध में ऊपर दिए गए आदेश राष्ट्रपति के निवास स्थान या कैम्प अथवा राज्यपाल के क्षेत्राधिकार में आरुढ़ विशेष गारदों पर लागू नहीं होंगे। ये गारद छोटी रैंक के व्यक्तियों या जिनके लिए नियुक्त किए गए हैं, उनसे नीचे के रैंक के व्यक्तियों को सलामी शस्त्र न करें। जब ड्यूटी के अफसर दौरा करें तो वे कंधे शस्त्र करके लाइन बन करें। ऐसे निवास स्थान या कैम्प में संतरी केवल राष्ट्रपति, राज्यपाल और सशस्त्र कोर को सलामी–शस्त्र करें। निचले रैंक के अफसरों और शस्त्र रहित दलों को वे सैल्यूट (यदि कंधे शस्त्र की स्थिति में हों तो बट सैल्यूट, यदि बाजू–शस्त्र हो, तो सावधान हो कर) करें।

अध्याय XXVII

सलामी गारद (गार्ड ऑफ ऑनर)

गार्ड ऑफ ऑनर देने के लिए मान्य व्यक्ति के पद के साथ–साथ अवसर पर भी निर्भर करता है।

खंड–1

(क) संख्या एवं रचना

क्रम सं.	मान्य व्यक्ति की पात्रता	रैंक व फाइल	संख्या टिप्पणी
1.	राष्ट्रपति	150	दो बैंड उपस्थित होंगे।
2.	प्रधानमंत्री	100	–वही–
3.	गवर्नर (राज्यपाल)	100	–वही–
4.	केन्द्रीय गृहमंत्री / गृह राज्यमंत्री / उपमंत्री (गृह)	50	–वही–
5.	मुख्यमंत्री	50	–वही–
6.	राज्य का गृह मंत्री	35	–वही–
7.	पुलिस महानिदेशक / अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक	20–35	उपलब्ध होने पर एक बैंड की उपस्थिति
8.	पुलिस महानिरीक्षक	12–20	दो बिगुलर।
9.	पुलिस उप महानिरीक्षक	12	–वही–
10.	विदेशी राज्य का प्रमुख	150	दो बैंड उपस्थित होंगे।
11.	विदेशी राज्य का उप–प्रमुख	100	एक बैंड उपस्थित होगा।
12.	राजनयिक शिष्टमंडल का प्रमुख जो राजदूत / उच्चायुक्त स्तर का हो।	100	–वही–
13.	विदेशी पुलिस बल का प्रमुख	20–35	–वही–

'छोटे जिलों के होने पर संख्या कम होती है अतः संख्या को ज्यादा व कम किया जा सकता है।

(ख) अवसर

क्र. सं.	मान्य व्यक्ति की पात्रता	अवसर
1.	राष्ट्रपति	आगमन पर अथवा सार्वजनिक विदाई पर सभी आगमन सार्वजनिक नहीं होते केवल वे आगमन ही औपचारिक माने जाएंगे जो केन्द्र सरकार द्वारा अधिसूचित हों तथा स्थानीय प्राधिकारियों द्वारा अथवा सेना मुख्यालय द्वारा सार्वजनिक माना गया हो पुलिस बल से संबंधित विशेष अवसर पर
2.	उपराष्ट्रपति	–वही–
3.	प्रधानमंत्री	–वही–
4.	गवर्नर (राज्यपाल)	1. विशेष अवसर पर ही राज्यपाल को गार्ड ऑफ ऑनर दिया जाएगा वे भी अधिकार क्षेत्र में।
		2. नियुक्ति के अवसर पर केवल एक बार आगमन के समय।
		3. ऐसी नियुक्ति के कार्यमुक्त होने पर विदाई के समय केवल एक बार।
5.	केन्द्रीय गृहमंत्री / गृह राज्यमंत्री / उपमंत्री (गृह)	पुलिस से संबंधित विशेष अवसर जिसमें राज्य पुलिस / केन्द्रीय पुलिस संगठन के कार्यालय / स्थापना आदि में आगमन होने पर।
6.	मुख्यमंत्री	–वही–
7.	राज्य का गृह मंत्री	–वही–
	पुलिस महानिदेशक / अपर पुलिस महानिदेशक	शस्त्र पुलिस के जिला मुख्यालय / पुलिस प्रशिक्षण स्कूल में औपचारिक दौरे पर हो और जब दौरे में निरीक्षण / समारोह का अवसर हो तो आगमन व विदाई के दोनों अवसरों पर दिया जाएगा।

	पुलिस महानिरीक्षक	–वही–
	पुलिस उपमहानिरीक्षक	शस्त्र पुलिस के जिला मुख्यालय/पुलिस प्रशिक्षण स्कूल में औपचारिक दौरे पर हो और जब दौरे में निरीक्षण/समारोह का अवसर हो तो आगमन व विदाई के दोनों अवसरों पर दिया जाएगा।
	विदेशी उच्चाधिकारी	विदेशी उच्चाधिकारी को गार्ड ऑफ ऑनर केवल तब दिया जाएगा जब वह राज्य पुलिस/केन्द्रीय पुलिस संगठन के कार्यालय/स्थापना में औपचारिक आगमन पर हो।

विशेष नोट

राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, प्रधानमंत्री एवं गवर्नर के लिए पात्रता संघ सरकार एवं राज्य सरकारों द्वारा जारी की गई विभिन्न अधिसूचनाओं में निर्धारित की गई है। अन्य व्यक्तियों के लिए खंड 1 के पैरा 131 में केवल दिशा निर्देश दिए गए हैं। अन्य व्यक्तियों एवं समारोहों में सलामी गारद देने के लिए संख्या की पात्रता केन्द्र/राज्य सरकारों द्वारा जारी राजपत्र अधिसूचनाओं में निर्धारित की जानी चाहिए।

खंड–2

वर्दी

सलामी गारद के सभी जवान ''समीक्षा क्रम ड्रेस'' (रिव्यू आर्डर ड्रेस) पहनेंगे किन्तु अलग–अलग अवसरों पर कौन सी वर्दी पहनी जाए, इसके संबंध में विशेष आदेश जारी किए जाएं।

खंड–3

विरचना (फार्मेशन)

(क) गारद

सलामी गारद का आकार कम्पनी के अनुसार होगा और कम्पनी की भांति ही उसे बराबर किया जाएगा।

यदि संभव हो तो उस दिशा का रुख करके बनाया जाए जहां से उस व्यक्ति को आना हो जिसके लिए सलामी गारद आरूढ़ की जा रही है।

गारद दो रैंकों में, दो बराबर की डिविज़नों में खड़ी हो और पिछली रैंकों में, 4 कदम का फासला हो। उन्हें 24 के फासले पर पंक्तिबद्ध किया जाए।

झंडा ले जाने वाली पार्टी हिफाजती पार्टी की दो डिवीजन के बीच 3 कदम का फासला होगा। यदि झंडे न उठाए हो तो इस फासले की आवश्यकता नहीं।

(ख) अफसर

झण्डे के साथ

(i) राजपत्रित अफसर और निरीक्षक या उपनिरीक्षक–कमांडर दांए से दूसरी फाइल में सामने 4 कदम पर अगला वरिष्ठ राजपत्रित अफसर या निरीक्षक या उपनिरीक्षक बाएं से दूसरे जवान के सामने दो कदम के फासले पर। कनिष्ठ अफसर या निरीक्षक या उप–निरीक्षक (झंडे के साथ) बीच वाले गार्ड के सामने दो कदम के फासले पर।

(ii) **हवलदार** – वरिष्ठ हवलदार मेजर पहली डिवीजन का दाहिना गाइड होगा और दूसरा कनिष्ठ कार्मिक दूसरी डिवीजन का बांया गाइड होगा। तीसरा कनिष्ठ कार्मिक दूसरी डिवीजन का दाहिना गाइड होगा और कनिष्ठतम कार्मिक पहली डिवीजन का बांया गाइड होगा।

झण्डे के बिना

(iii) **कमांडर** – बीच वाले गारद के सामने चार कदम पर अगला वरिष्ठ राजपत्रित अफसर या निरीक्षक या उपनिरीक्षक दांए से दूसरी फाइल के सामने दो कदम के फासले पर, तीसरा कनिष्ठ राजपत्रित अफसर या निरीक्षक या उप–निरीक्षक बाएं से दूसरी फाइल के सामने दो कदम के फासले पर।

(iv) **हवलदार** – उनकी पोस्ट वही होगी जैसा कि

ऊपर पैरा (ख) (ii) में दिया गया है।

(v) विशेष अवसरों पर जब सभी रैंकों की गारदों की संख्या बढ़ाकर 150 कर दी जाए और जब झंडे न ले जाएं तो गारद कमांडर बीच वाले गारद के सामने कदम की दूरी पर होगा। अगला वरिष्ठ राजपत्रित अफसर या निरीक्षक या उप–निरीक्षक दांए से दूसरे फाइल के सामने तीन कदम की दूरी पर होगा और तीसरा कनिष्ठ राजपत्रित अफसर या निरीक्षक या उप–निरीक्षक बाएं से दूसरी फाइल के सामने 3 कदम के फासले पर होगा।

(ग) बैंड

(i) बैंड गारद के साथ लाइन में दांए पार्श्व में खड़ा होगा और गारद के दाहिने गाइड से सात कदम के फासले पर रहेगा। बैंड चार फाइलों के कॉलम में होगा और प्रत्येक फाइल के बीच 2 कदम का फासला होगा। ड्रम मेजर बैंड की अगली रैंक के सामने 3 कदम के फासले पर होगा और बैंड मास्टर उसके आगे 2 कदम के फासले पर होगा।

(ii) जब कोई बैंड उपलब्ध न हो तो दो बिगुलची रखे जाएंगे जो सम्मान गारद के दांयी ओर लाइन में खड़े होंगे। इसी प्रकार यदि दांए पार्श्व में स्थान न हो तो बैंड को गारद के पीछे खड़ा किया जा सकता है।

खंड–4

ए.डी.सी. (परिसहायक)

दो ए.डी.सी. होंगे जो कि मंच के दोनों ओर अगले किनारे से 3 कदम दांए और 3 कदम बाएं खड़े होंगे।

खंड–5

संचालन अफसर

संचालन अफसर (सिविल या पुलिस अफसर), जो अति विशिष्ट व्यक्ति की अगवानी करता है और उसे सलामी मंच तक ले जाता है, अति विशिष्ट व्यक्ति को मंच तक छोड़ने के पश्चात् जा कर मंच के पीछे बीच में तीन कदम के फासले पर खड़ा हो जाएगा।

खंड–6

झण्डा

राज्य पुलिस की परिपाटी के अनुसार सम्मान गारद परेड पर झण्डे भी ला सकती हैं। जब अन्तर्राज्यीय सम्मान गारद की व्यवस्था की गई हो तो परेड पर झण्डे नहीं लाए जाएंगे।

खंड–7

सैल्यूट

निरीक्षण से पहले केवल एक सैल्यूट दिया जाएगा राष्ट्रीय या आम सैल्यूट की धुन बजाई जाने पर ए.डी.सी. सैल्यूट नहीं करेंगे।

राष्ट्रीय सैल्यूट निम्नलिखित को दिया जाएगा–

(i) भारतीय गणराज्य के राष्ट्रपति को।

(ii) राज्यपाल को उसके अपने राज्य में। सेरिमोनियल अवसरों पर जिन उच्च पदधारी व्यक्तियों को सैल्यूट दिया जाना हो, उन्हें सामान्य सैल्यूट दिया जाएगा।

खंड–8

राष्ट्रीय गान

राष्ट्रीय गान की धुन भी दो प्रकार से बजायी जाती है।

(i) पूरी धुन जो कि लगभग 52 सैकेण्ड तक बजायी जाती है।

(ii) संक्षिप्त रूप में, जिसमें नौ ताल खंड (संगीत की इकाइयां) होती हैं और जिसे लगभग 20 सैकेण्ड तक बजाया जाता है।

पूरी धुन निम्नलिखित अवसरों पर बजायी जानी चाहिएः–

(क) उन सभी अवसरों पर जब राष्ट्रपति स्वयं उपस्थित हों (जिसमें राष्ट्रपति द्वारा राष्ट्रीय

दिवसों पर प्रसारित किए जाने वाले भाषण भी शामिल हैं)

(ख) राज्यपाल के लिए, उन सभी अवसरों पर जब वे अपने राज्य में सेरिमोनियल परेड, सम्मान गारद पर जाएं।

(ग) स्वतन्त्रता दिवस पर गणतन्त्र दिवस परेड पर जब राष्ट्रीय ध्वज फहराया जाता है।

(घ) कुछ विशेष अवसरों पर भारत के प्रधानमंत्री के लिए भी राज्य सरकार के पूर्व अनुमति से राष्ट्रीय गान की धुन बजाई जा सकती है।

राष्ट्रीय गान की संक्षिप्त धुन अन्य सभी अवसरों पर, अनुदेशों के अनुसार बजाई जा सकती है।

जब राष्ट्रीय गान की धुन बजाई जाए, तो सभी रैंक के जवान सावधान हो जाएं और हवलदार या उससे ऊंचे रैंक के सभी अफसर, यदि वर्दी में हों, तो उचित सैल्यूट दें। जो अफसर सैल्यूट लेने वाले उच्च पदधारी के साथ हों वे केवल सावधान हों और राष्ट्रीय गान बजाए जाते समय सैल्यूट न करें।

खंड–9

निरीक्षण

निरीक्षण करने के लिए निम्नलिखित कार्यविधि अपनाई जाएः–

(क) जिस व्यक्ति के लिए गारद आरूढ़ है, उसे उचित अभिनन्दन के पश्चात् अर्थात् उसके लिए राष्ट्रीय सैल्यूट या आम सैल्यूट देने के पश्चात् गारद को बाजू शस्त्र की पोजीशन में लाया जाए यदि झंडे लाए जाएं तो वे ''कैरी'' पर रहें।

(ख) इसके बाद गारद कमांडर आगे मार्च करके अति विशिष्ट व्यक्ति को रिपोर्ट करेगा। वह पर्याप्त ऊंचे स्वर में बोलेगा और कहेगा ''––––के अफसरान और जवान के सम्मान गारद, निरीक्षण के लिए हाजिर है, श्रीमान्।''

(ग) इसके बाद अति विशिष्ट व्यक्ति मंच से नीचे उतरेगा और गारद कमांडर उसके दांयी ओर, उससे कुछ आगे चल कर उसे संचालित करेगा। वह सामान्य चाल में चलेगा। धीरे चाल में नहीं।

(घ) अतिविशिष्ट व्यक्ति बैंड के ड्रम मेजर के पीछे से गुजर कर बैंड का निरीक्षण करेगा। निरीक्षण के दौरान बैंड के जवान अपने सिर अतिविशिष्ट व्यक्ति की ओर नहीं करेंगे और न ही उसे देखेंगे वे सामने देखते रहेंगे।

(च) जैसे ही अतिविशिष्ट व्यक्ति बैंड के बांयी ओर के व्यक्ति के पास से गुजर जाए वैसे ही बैंड मास्टर पीछे मुड़े, बैंड को तैयार करे, और बैंड बजाना आरंभ करे। ड्रम की पहली ताल से समय लेते हुए गारद का प्रत्येक अफसर और जवान (अर्थात् पहली और पिछली दोनों रैंक का) अपना सिर और आंखें अतिविशिष्ट व्यक्ति की ओर करे और उसी की ओर देखे सिवाय उस व्यक्ति के जिसने झण्डा उठाया हो। जब अतिविशिष्ट व्यक्ति आगे बढ़े तो अफसर और जवान उसी को देखते रहें और उसी की ओर मुख किए रहें यदि निरीक्षण के दौरान अतिविशिष्ट व्यक्ति रुक जाए तो सभी अफसरों और जवानों के सिर भी उसी दिशा में ठहर जाएं।

(छ) जैसे ही अतिविशिष्ट व्यक्ति निरीक्षण समाप्त करे, बैंड बजना बंद हो जाए, धुन के आखिरी स्वर से समय लेते हुए अन्त में अपना सिर और आंखें सामने कर ले।

(ज) यदि बैंड पीछे की ओर हो तो बैंड का निरीक्षण न किया जाए और यदि बैंड न हो तो गारद के प्रत्येक अफसर और जवान (उन अफसरों को छोड़ कर जिन्होंने झण्डा उठाया हो) अतिविशिष्ट व्यक्ति द्वारा बिगुलचियों का निरीक्षण पूरा करने के पश्चात्, दांयी ओर देखे, निरीक्षण के दौरान बिगुलची सामने देखें।

(झ) गारद की केवल अगली लाइन का निरीक्षण किया जाएगा। अतिविशिष्ट व्यक्ति अफसरों और झण्डा उठाने वाले अफसरों के आगे रहे अर्थात् वह गार्ड के सामने की ओर से 3, 4

कदम की दूरी से निरीक्षण करे।

(ञ) गारद कमांडर अतिविशिष्ट व्यक्ति को संचालन अफसर की ओर ले जाए। संचालन अफसर मंच के पीछे अपनी पोजीशन से हट कर नई पोजीशन पर आ जाए जहां से उसे अतिविशिष्ट व्यक्ति को मिलवाने के लिए ले जाना सरल हो। जब अतिविशिष्ट व्यक्ति संचालन अफसर तक पहुंच जाएं तो गार्ड कमांडर उसे सैल्यूट करे और यदि अतिविशिष्ट व्यक्ति गार्ड कमांडर से हाथ मिलाए तो उसे इसके लिए भी तैयार रहना चाहिए, उस स्थिति में, यदि वह तलवार पकड़े हो तो तलवार को तुरन्त बाएं हाथ में पकड़े।

खंड–10

सामान्य

1. जिस अतिविशष्ट व्यक्ति के लिए गारद आरूढ़ हुई हो, जब तक वह उस स्थान से चला न जाए तब तक सम्मान गारद मार्च न करे या ''विश्राम'' की पोजीशन में न आए।
2. सम्मान गारद मार्च पास्ट न करे।
3. सूर्यास्त और सूर्योदय के समय के बीच किसी भी स्थान पर सम्मान गारद न रखी जाए।
4. सम्मान गारद की व्यवस्था उन्हीं उच्च पदधारियों के लिए की जाए जो वास्तव में इसके हकदार हैं, अन्य व्यक्तियों के लिए नहीं। सम्मान गारद की संख्या कभी भी 50 से कम नहीं होनी चाहिए और उसे अनिर्धारित स्थान और समय पर आरूढ़ नहीं करना चाहिए।
5. किन्हीं विशेष परिस्थितियों में, जैसे कि स्थान की कमी के कारण यदि उपर्युक्त अनुदेशों का पूरी तरह पालन करना संभव न हो तो अवसर के अनुसार उपयुक्त संशोधन कर लिए जाए।

अध्याय XXVIII

हर्ष–फायर

खंड–1

अवसर

पियू–दि–जॉय निम्नलिखित अवसर पर दागी जाएगीः–

1. गणतंत्र दिवस
2. स्वतंत्रता दिवस
3. राज्य दिवस
4. बल/यूनिट के स्थापना दिवस

खंड–2

कार्यविधि और कमान–शब्द

1. हर्ष–फायर के लिए निम्नलिखित कार्यविधि अपनाई जाएः

   (क) जवानों को खुली लाइन में, तीन रैंकों में खड़ा किया जाए, राइफल बाजू पर हो और संगीन लगी हो।

   (ख) परेड हर्ष–फायर करेगी, अफसर और जे. सी.ओ. (और झंडा) जगह संभालें।

   (ग) पुलिस झंडा कैरी (Carry) पर लाए जाएं और ध्वज पार्टी वरिष्ठ अफसर के कमांड पर 6 कदम आगे बढ़े।

   (घ) हर्ष–फायर के समय झंडे न झुकाए जाए।

''खड़े पर''

2. गाइड और एन.सी.ओ. और रैंकों के जवान राइफल भरें राइफल के नालमुख का रुख ऊपर की ओर हो ताकि सामने खड़े व्यक्तियों के सिर को बचाया जा सके। अधिसंख्यक रैंक के जवान बाजू शस्त्र करें।

''पेश कर''

3. 135 डिग्री के कोण पर फायर करने के लिए राइफलों को उपयुक्त पोजीशन में लाया जाए। सिर एकदम स्थिर रखे जाएं और निशाना लगाने का कोई प्रयत्न न किया जाए।

''शुरू''

4. अगली रैंक का दांयी ओर का जवान फायर शुरू करे और उसके बाद, जितना शीघ्र संभव हो सामने की लाइन, बीच की लाइन और अंत में पिछली लाइन फायर करें।

टिप्पणियां : (i) हर्ष–फायर 3 हिस्सों में या तीन सीरीज़ में किया जाए।

(ii) जब पिछली रैंक के बांयी ओर का जवान फायर कर दे तो बैंड राष्ट्रीय गान की धुन का पहला भाग बजाए इस समय जवान सलामी शस्त्र करें और अफसर सैल्यूट करें। बैंड के अन्तिम स्वर पर यूनिट कमांडर फिर से ''भर'' का आदेश देगा और जवान ऊपर बताए अनुसार कार्रवाई करें। बैंड राष्ट्रीय गान की धुन का दूसरा भाग बजाए। कुल तीन सीरीज़ में फायर किया जाए और अंतिम सीरीज़ की समाप्ति तक राष्ट्रीय गान पर पूरी धुन बजायी जाए।

(iii) कभी–कभी दो रैंकों में जवानों को खड़ा करके भी हर्ष–फायर करना आवश्यक होता है। ऐसी स्थिति में फायर वाली पंक्ति में दांए से बाएं और पिछली पंक्ति में बाएं से दांए किया जाए। पीछे वाली लाइन की दांयी ओर के जवान के फायर करने के पश्चात् बैंड पर राष्ट्रीय गान की धुन बजाई जाए।

''खाली कर''

5. राष्ट्रीय गान पूरा होने पर कमांडर ''खाली कर'' का आदेश दे तब सभी जवान भरने की स्थिति में आ जाए और अपनी राइफल 135 डिग्री के कोण पर रख कर राइफल खाली कर दे।

   बाजू शस्त्र अफसर (और झण्डा पार्टी) जगह संभाल।

6. झंडा पार्टी लाइन में अपनी पोजीशन पर खड़ी हो और अपने वरिष्ठ अफसर के आदेश पर बाजू शस्त्र करे। झंडे को नीचे किया जाए।

खंड–3

परेड पर जय बोलना

1. निम्नलिखित अवसरों पर ''जय'' बोली जाएः–

   (क) राष्ट्रपति की, जब वे स्वयं परेड का मुआइना कर रहे हों।

   (ख) गणतंत्र दिवस और स्वतंत्रता दिवस की परेड पर राष्ट्रपति की।

   (ग) अतिविशिष्ट व्यक्तियों और पुलिस के अन्य वरिष्ठ अफसरों की उनकी विदाई परेड पर।

2. (क) निम्नलिखित अवसरों पर भी ''जय'' बोली जाएः–

   (i) निरीक्षण के बाद और मार्च पास्ट से पहले जब समीक्षा क्रम में न बढ़ रहे हों।

   (ii) समीक्षा क्रम में अभिनन्दन करने के बाद।

3. जय बोलने के लिए निम्नलिखित कवायद की जाएः–

   (क) ''परेड को सावधान'' की पोजीशन में लाया जाए।

   (ख) परेड कमांडर आदेश दे ''परेड तीन बार जय बोलेगी।''

   (ग) इसके बाद परेड कमांडर जोर से बोलेः–

   (i) पैरा 1 (क) में उल्लिखित अवसर पर ''राष्ट्रपति'' कहे।

   (ii) पैरा 1 (ख) में उल्लिखित अवसर पर ''राष्ट्रपति'' कहे।

   (घ) तब परेड ''की जय'' कहे और साथ की प्रत्येक रैंक अपना बांया हाथ अपने सिर से ऊपर उठाएं।

   (ङ) उप–पैरा (ग) और (घ) में लिखी कवायद तीन बार की जाए।

दीक्षांत परेड

अध्याय XXIX

पासिंग आउट परेड (दीक्षांत परेड)

खंड–1

प्रस्तावना

पुलिस अकादमियों, पुलिस प्रशिक्षण कॉलेजों, भर्ती प्रशिक्षण स्कूलों एवं अन्य पुलिस स्थापनाओं में कर्मियों कैडेट एवं नई भर्ती को प्रशिक्षण की समाप्ति के पश्चात् उस स्थापना में पासिंग आउट परेड (दीक्षांत परेड) की जाती है।

पासिंग आउट परेड एक समारोह का अवसर है। अतः इस यूनिट को इसके लिए श्रम साधित तैयारी करनी चाहिए क्योंकि इससे ही उसके प्रशिक्षण के स्तर का पता चलता है।

पासिंग आउट परेड के दौरान प्रशिक्षणार्थी द्वारा व्यावसायिक जीवन में प्रवेश से संबंधित शपथ ग्रहण भी शामिल होती है। यह एक समारोह का अवसर होता है जब प्रशिक्षणार्थी अपने भविष्य की ओर देख आत्म–गौरव का अनुभव करता है। अतः उसको इस परेड में अपनी तरफ से उत्कृष्ट प्रदर्शन करना चाहिए।

इस लक्ष्य को पाने के लिए सभी स्तरों पर सही अधीक्षण के अन्तर्गत कई बार (रिहर्सल) पूर्वाभ्यास किया जाना चाहिए।

सामान्य निर्देश

पासिंग आउट परेड एक समारोह का अवसर होता है। इस अवसर पर सामान्य व्यवस्थाओं, निरीक्षण ग्राउन्ड, यूनिट संगठनों, यूनिट के आकार, परेड संरचना, निरीक्षण अधिकारी (जिसमें अति विशिष्ट व्यक्ति भी शामिल हैं) के स्वागत, अधिकारियों की निरीक्षण पोस्ट, मार्च पोस्ट की विभिन्न संरचनाओं एवं आगे के संबंधित आदेशों की समीक्षा संबंधी निर्देश इस मैनुअल के अध्याय–XVI में दिए गए है। साथ ही उसी अध्याय में दी गई विशेष हिदायतों का भी अधिकारियों को पालन करना होगा फिर भी सुविधा के लिए निरीक्षण ग्राउन्ड के स्तर संबंधी/रेखाचित्र में नीचे दिया गया है–

निरीक्षण या समीक्षा परेड ग्राउन्ड

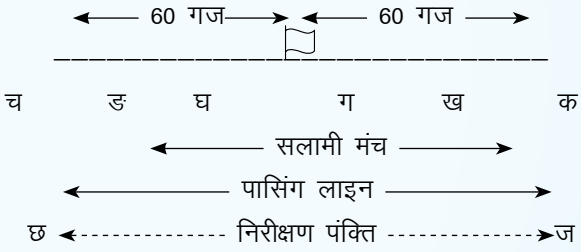

(चित्र 1 के विवरण के लिए अध्याय XVI का खंण्ड 2 देखें)

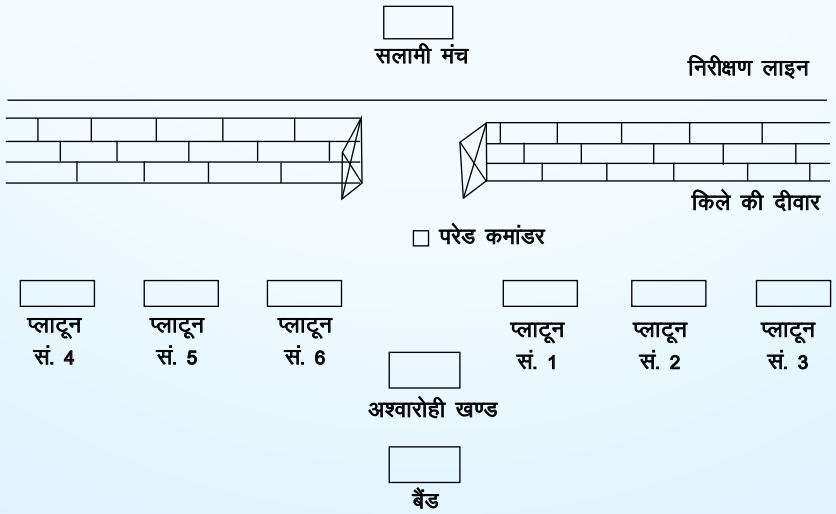

खंड–2

परेड की संरचना

कार्यक्रम शुरू होने से 20 मिनट पहले ''विदाई परेड'' किले की दीवार के पीछे, प्लाटून वार, राईफलों को ''बाजू शस्त्र'' (आर्डर आर्मस) स्थिति में नियत संगीनों के साथ उस स्थान पर खड़ी होंगी। प्लाटूनों की आधी संख्या किले के द्वार के दांई तरफ खड़ी होंगी। प्लाटून नं. 1 गेट के नजदीक खड़ी होगी। अन्य प्लाटून उसके दाई तरफ एक के पीछे एक क्रमानुसार खड़ी होंगी। प्लाटून को शेष आधे गेट के बाएं तरफ खड़ी होगी। यानि कि यदि 6 प्लाटून भाग ले रही है तो प्लाटून नं. 1, 2, 3 किले के द्वार पर दांई तरफ और प्लाटून नं. 6, 5, 4 द्वार के बांई तरफ (परिशिष्ट के अनुसार) खड़ी होगी। यदि 5 प्लाटून हैं तो प्लाटून नं. 1, 2, 3 गेट के दांई तरफ व प्लाटून नं. 5, 4 बांई तरफ खड़ी होगी।

परेड कमांडर सबसे आगे खड़ा होगा। परेड कमांडर एवं प्लाटून कमांडर की तलवार बिल्कुल सीधी स्थिति में होगी। घुड़सवार दस्ता यदि उपलब्ध हो तो परेड के पीछे खड़ा होगा। उसके बाद बैंड पृष्ठ भाग में बीच में होगा। बिगुलर एवं बल्लम वरदार किले की दीवार के पीछे खड़े होंगे।

किले का द्वार दो द्वारपालों द्वारा परेड के शुरू होने से 20 मिनट पहले खोला जाएगा। दो बिगुलर बीच की दीवार की तरफ से परेड ग्राउन्ड में दाखिल होंगे और निरीक्षण लाईन की तरफ (निरीक्षण लाईन पासिंग लाइन आदि को विवरण देने के लिए कृपया परिशिष्ट (क) देखे जाएंगे और मार्कर काल की आवाज करेंगे। उसके बाद बिगुलर वापस मुड़ेंगे और सामने की दीवार के पृष्ठ भाग की तरफ मार्च करेंगे। उसके बाद मार्कर निरीक्षण लाइन पर अपनी स्थिति में खड़े हो जाएंगे।

बिगुलर और बल्लमवरदार भी परेड ग्राउन्ड की तरफ बने किले की दीवार ऊपर निर्धारित अपनी–अपनी जगह पर खड़े हो जाएंगे।

मार्कर काल के 3 मिनट के बाद बिगुलर (एडवांस काल) काल की आवाज लगाएंगे। इसके बाद परेड कमांडर परेड को ''सावधान'' एवं कंधे शस्त्र की स्थिति में लाएगा और निरीक्षण लाईन की तरफ मार्च करेगा। कमांड करेगा। ''परेड दाएं–बाएं से तेज चल''। गेट पार करने के बाद, दांई तरफ की प्लाटून (नं. 1, 2, 3) दीवार के दांई तरफ चलेगी और बांई तरफ की (नं. 6, 5, 4) दीवार के बांई तरफ चलेगी। मार्कर पर पहुंचने पर प्लाटून कदमताल करेगी। ड्रमों की आवाज के साथ सभी प्लाटून निरीक्षण लाइन पर अपनी निर्धारित स्थिति में पहुंचते ही परेड रुक जायेगी। उसके बाद परेड कमांडर एक के बाद एक लगातार निम्नलिखित कमांड करेगा–परेड दाहिने–बाएं मुड़।

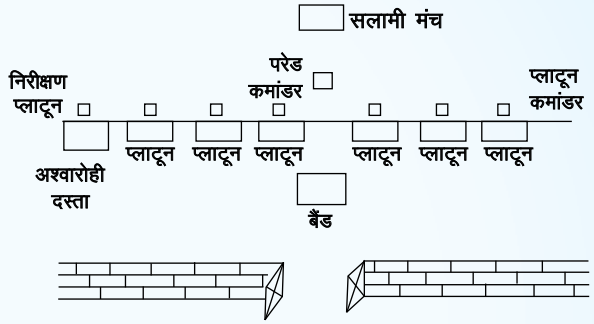

परेड बाजू शस्त्र।

परेड खुली लाइन चल।

परेड मध्य सज।

परेड को परेड कमांडर कंधे शस्त्र में लायेगा। (यदि संस्थान में निशान है) तब निशान को बुलाएगा। ''निशान परेड पर।''।

(निशान के साथ निशान टोली कमांडर (इंस्पेक्टर/सहायता कमांडेंट) एवं रक्षक के साथ परेड ग्राउण्ड में प्रवेश करेगा।

निशान टोली निरीक्षण लाइन की तरफ मार्च करेगी वैसे ही परेड कमांडर परेड को सलामी देने के लिए कहेगी।

''परेड निशान को सम्मान देगी। परेड जनरल सैल्यूट सलामी शस्त्र''।

(निशान के सम्मान में जनरल सैल्यूट की धुन बैण्ड द्वारा बजाई जायेगी और अतिथि/दर्शक खड़े हो जायेंगे एवं वर्दीधारी सैल्यूट करेंगे।)

निशान टोली परेड के मध्य में निर्धारित स्थान पर रुकेगी। रक्षकों के द्वारा भी निशान के सम्मान में सलामी शस्त्र की कार्रवाई की जायेगी। निशान टोली कमांडर द्वारा कमांड दिया जायेगा कि ''निशान रक्षक निशान को सम्मान देंगे जनरल सैल्यूट सलामी शस्त्र''। बाजू शस्त्र की कमांड परेड कमांडर द्वारा दी जायेगी। जिसपर पूरी परेड एवं निशान रक्षक कार्रवाई करेंगे।

टिप्पणी : 1. यह देखा गया है कि बड़े संगठनों के अपने स्थाई किले होते हैं जो विशेष तौर पर पासिंग आउट परेड के लिए बनाए गए होते हैं। बिगुलरों को परकोट पर खड़ा होना होगा अथवा अन्य सुविधाजनक स्थान पर, यदि दीवार पर परकोटा नहीं है।

2. यदि संगठन के पास स्थाई किला नहीं है तो यह अपेक्षित है कि एक अस्थाई किला जो तम्बू और कपड़े से बनाया जाए। समारोह की भव्यता के अनुरूप इसे रंग प्रदान किया जाए।

3. उपलब्ध होने पर घुड़सवार दस्ता एवं बल्लमबरदारों को भी शामिल किया जा सकता है।

खंड–3

संगठन/संस्थान के प्रमुख का अभिनन्दन

कार्यक्रम शुरू होने के 10 मिनट पहले संगठन/संस्थान का प्रमुख वहां पधारेगा। उसके प्रवेश को देखते ही परेड कमांडर परेड को ''सावधान'' व ' ''कन्धे शस्त्र'' की स्थिति के लिए कहेगा। सलामी मंच पर संस्थान का प्रमुख ''जैसे ही अपनी जगह लेगा वैसे ही परेड कमांडर कमांड देगा'' परेड जनरल सैल्यूट सलामी शस्त्र''। उसी समय बैंड जनरल सैन्यूटर की धुन बजाएगी। उस धुन के समाप्त होने होने पर निम्नलिखित कमांड (एक के बाद एक) लगातार देगा–

परेड कन्धे शस्त्र।

परेड बाजू शस्त्र।

परेड विश्राम।

सलामी लेने के पश्चात् संगठन प्रमुख अतिविशिष्ट व्यक्ति के स्वागत के लिए जिन्हें परेड के लिए आमंत्रित किया गया है, निर्धारित स्थान पर जाएंगे और उनके आने का इंतजार करेंगे।

खंड–4

विशिष्ट/अति विशिष्ट व्यक्ति का आगमन

जैसे ही विशिष्ट/अति विशिष्ट व्यक्ति दिखे बिगुलर तुरही नाद (फन केयर) की आवाज करेंगे। उसके तुरन्त बाद परेड कमांडर कमांड देगा ''दीक्षांत परेड सावधान'' इसके बाद परेड कन्धे शस्त्र की कमांड देगा।

जैसे ही विशिष्ट व्यक्ति संस्थान के प्रमुख के साथ सलामी मंच पर निर्धारित अपने स्थान पर पहुंचेंगे परेड उनको शस्त्र सलामी प्रस्तुत करेगा। परेड कमांडर कमांड देगा ''परेड जनरल सैल्यूट, सलामी शस्त्र''

बैंड जनरल सैल्यूट की धुन बजाएगा और जब तक धुन समाप्त नहीं होती परेड उसी स्थिति में खड़ी रहेगी। (यदि विशिष्ट व्यक्ति भारत के राष्ट्रपति अथवा गवर्नर हैं तो राष्ट्रीय सैल्यूट दिया जाएगा और बैंड राष्ट्रीय गान की धुन बजाएगा) उसके बाद परेड कमांडर परेड को ''कन्धे शस्त्र'' एवं बाजू शस्त्र की स्थिति में लाएगा।

खंड–5

विशिष्ट व्यक्ति द्वारा परेड का निरीक्षण :

जैसे ही परेड बाजू शस्त्र की स्थिति में आएगी परेड कमांडर सलामी मंच की ओर मार्च करेगा वहां रुककर विशिष्ट व्यक्ति का अभिवादन करेगा और कहेगा – ''श्रीमान (यदि विशिष्ट व्यक्ति महिला हैं तो महोदया) दीक्षांत परेड आपके निरीक्षण के लिए हाजिर है।

इसी बीच निरीक्षण जीप (यदि प्रयोग में लाने की योजना हो) जो पास ही खड़ी होगी वह सलामी मंच तक पहुंचेगी। विशिष्ट व्यक्ति जीप के आगे वाले भाग में खड़ा हो जायेगा। जीप के पृष्ठ भाग में संस्थान का प्रमुख एवं परेड कमांडर खड़े होंगे। पहले दांई तरफ और बाद में उनके बांई तरफ। जीप परेड के दांए तरफ से चलेगी और परेड के अगले हिस्से के सामने से होकर दांई से बांई तरफ चलेगी। यदि जीप का प्रयोग नहीं होता है तो

विशिष्ट व्यक्ति पैदल चलेंगे और निरीक्षण लाइन के आगे से निकलेंगे। संस्थान का प्रमुख उनके दांई तरफ और परेड कमांडर उनके बांई तरफ एक कदम पीछे होकर चलेंगे।)

जैसे ही विशिष्ट व्यक्ति (चाहे जीप पर हों या पैदल) पहली प्लाटून के आगे के दाएं पथदर्शक पर पहुंचेंगे तो बैंड धीमी मार्च की ध्वनि बजाएगा और जब तक विशिष्ट व्यक्ति द्वारा परेड निरीक्षण पूरा नहीं होता तब तक वह धुन बजाता रहेगा। (यदि विशिष्ट व्यक्ति पैदल चल रहा है तो संस्थान प्रमुख निरीक्षण के दौरान धीमी मार्च के समय वहां से हट जाएंगे)। **परेड कमांडर एवं संस्थान प्रमुख यदि निशान मौजूद है तो उसके सामने से गुजरते समय वांये का सैल्यूट करेंगे।**

खंड–6

शपथ ग्रहण

1. विशिष्ट व्यक्ति के सलामी मंच पर वापिस आने के बाद परेड कमांडर उनको सैल्यूट देगा और शपथ ग्रहण करने की अनुमति निम्नलिखित शब्दों को कह कर लेगाः–

   श्रीमान (विशिष्ट व्यक्ति महिला होने पर महोदया) शपथ ग्रहण करने की आज्ञा प्रदान करें।

   परेड कमांडर विशिष्ट व्यक्ति को पुनः एक बार सैल्यूट करेगा और निरीक्षण लाइन के पास अपने निर्धारित स्थान पर वापिस आ जाएगा।

2. उसके बाद परेड कमांडर परेड को कन्धे शस्त्र की स्थिति में लाएगा और **राष्ट्रीय ध्वज पार्टी को बुलाएगा। (राष्ट्रीय ध्वज व उस संस्थान/यूनिट के ध्वज धारित कर्मी एवं रक्षक) परेड कमाण्डर कमांड देगा "राष्ट्रीय ध्वज टोली परेड पर"।**

   उसके बाद टोली राष्ट्रीय ध्वज एवं यूनिट ध्वज के साथ निरीक्षण लाइन की तरफ मार्च करेंगे और प्रथम प्लाटून दांए मार्गदर्शक से 14 कदम दूर जाकर खड़े होंगे। जैसे ही राष्ट्रीय ध्वज टोली मार्च शुरू करेगा वैसे ही परेड कमांडर परेड को राष्ट्रीय ध्वज को सलामी देने के लिए कहेगाः–

   "परेड राष्ट्रीय सैल्यूट सलामी शस्त्र" बैंड राष्ट्रीय गान की पूरी धुन बजाएगा।

   राष्ट्रीय सैल्यूट के समय सभी आमंत्रित अतिथि परेड ग्राउन्ड में उपस्थित व्यक्ति खड़े हो जाएंगे तथा उनमें वर्दीधारी अधिकारी भी सैल्यूट देंगे।

   यदि परेड ग्राउन्ड में निशान मौजूद है तो राष्ट्रीय सैल्यूट के समय निशान वाहक निशान को झुकाएगा।

   इस संबंध में पहले से उपयुक्त उद्घोषणा की जानी चाहिए।

   राष्ट्रीय ध्वज टोली के परेड के दांई तरफ निर्धारित स्थान पर पहुंचने के बाद राष्ट्रीय ध्वज टोली कमांडर (राष्ट्रीय ध्वजवाहक कमांडर) कमांड देगा "ध्वज रक्षक" सलामी शस्त्र इस पर राष्ट्रीय ध्वज टोली भी सलामी देगी। संस्थान/यूनिट के ध्वज को झुकाया जाएगा। इस सबके होते समय परेड "सलामी शस्त्र" की स्थिति में ही रहेगी।

   अब परेड कमांडर, परेड एवं निशान टोली को "कन्धे शस्त्र" एवं बाजू शस्त्र की स्थिति में लाएगा। सभी अतिथि व अन्य अपना स्थान ग्रहण करेंगे।

3. पहली कमाण्ड पर कमांडर अपनी तलवार को वापिस अपनी जगह पर ले आएंगे। दूसरी कमांड वह दांई तरफ मुड़ेंगे और ड्रम बजने का इंतजार करेंगे। उसके बजने पर अपनी–अपनी प्लाटूनों के दांई तरफ मार्च करेंगे और रुकेंगे। दुबारा ड्रम बजने पर वे वापिस घूम जाएंगे।

4. उसके बाद परेड कमांडर कमाण्ड देगा "ध्वज टोली जगह लो" उसके बाद दो ध्वज धारक प्रथम प्लाटून के दांई तरफ के मार्गदर्शक से 7 कदम की दूरी तक ध्वज के साथ मार्च करेंगे और अपनी स्थिति पर खड़े हो जाएंगे। आगे राष्ट्रीय ध्वज होगा बाद में यूनिट/संस्थान का ध्वज होगा। इसी बीच परेड में भाग लेने वाले कर्मी अपने बाएं हाथ को मोड़कर बन्दूक को पकड़ेंगे (इसके लिए ड्रम बजाया जाएगा।) ड्रम के दूसरी बार बजाने पर वे अपना सीधा हाथ

समतल रूप में 45 डिग्री के कोण पर रखेंगे।

5. परेड कमांडर की कमाण्ड ''ध्वज टोली कार्रवाई शुरू कर'' होने पर दोनों ध्वजधारी जिसमें राष्ट्रीय ध्वज आगे होगा, धीरे–धीरे मार्च करते हुए परेड के आगे निकलेंगे। बैंड धीमी गति धुन में से एक मार्च धुन बजाएगा। जब ध्वजधारी अन्तिम प्लाटून के बाएं मार्गदर्शक को पार कर जाएंगे तो बीच वाली पंक्ति के लोग अपने बाएं हाथ को मोड़कर बन्दूक को पकड़ेंगे और ड्रम की आवाज या अपना सीधा हाथ उठा देंगे। इसी समय आगे वाली पंक्ति वाले अपने हाथ नीचे करके ''सावधान'' की स्थिति में आ जाएंगे। उसी प्रकार पृष्ठ भाग को पार करने के बाद ध्वज धारी तेज से मार्च करते हुए परेड के बीच में पहुंचेंगे और रुक जाएंगे और परेड की तरफ मुंह कर लेंगे।

6. शपथ ग्रहण के लिए ड्रम की आवाज होगी और कैडेट अपना हाथ समतल उठाकर 450 के कोण पर करेंगे बांया हाथ जैसे पहले किया था, मोड़कर बन्दूक को पकड़ लेंगे।

7. संगठन/संस्थान का प्रमुख अब निर्धारित शपथ (सुविधानुसार उस शपथ को हिस्सों में बांट लेगा) ऐसी भाषा में जो कि कैडेट भी प्रत्येक भाग को जो कि पूर्व में बोला गया है, दोहराएंगे। शपथ पूरी होने के बाद कैडेट ड्रम की आवाज होने पर अपना दांया हाथ तुरन्त नीचे ले आएंगे, ड्रम की दूसरी आवाज पर वे राइफल को अपने सीधे हाथ में ले लेंगे और सावधान की स्थिति में हो जाएंगे।

8. अब परेड कमांडर कमाण्ड करेगा ''कमांडरों जगह लो'' इसके बाद प्लाटून कमांडर अपने–अपने प्लाटून के आगे निर्धारित जगहों पर खड़े हो जाएंगे। इसी समय निशान टोली भी बाएं मुड़ेगी और अपने मार्गरक्षक में शामिल हो जाएंगी।

9. उसके बाद परेड कमांडर कमांड देगा ''कमांडर निकाल किर्च'' जिस पर प्लाटून कमांडर अपनी तलवार बाहर निकाल लेंगे। इसके बाद परेड कन्धे शस्त्र की स्थिति में आ जाएगी।

10. इसके बाद परेड कमांडर अब राष्ट्रीय ध्वज टोली को जाने के बाद कमाण्ड देगा, **''राष्ट्रीय ध्वज टोली कूच कर''।** इसके बाद परेड के सामने से गुजरते हुए मार्च समाप्त करेंगे। इसके तुरन्त बाद परेड कमांडर कमाण्ड करेगा ''परेड, राष्ट्रीय सैल्यूट, सलामी शस्त्र'' इस पर परेड राष्ट्रीय ध्वज को सलामी प्रस्तुत करेगी। इस वक्त बैंड राष्ट्रीय गान की पूरी धुन बजाएगा। सभी आमंत्रित अतिथि एवं ग्राउन्ड में उपस्थित अन्य लोग एक बार पुनः खड़े हो जाएंगे और वर्दीधारी अधिकारी ध्वज को सैल्यूट करेंगे। निशान झुकाया जाएगा। इस अवसर के लिए पहले से घोषणा की जाएगी।

11. राष्ट्रीय धुन के समाप्त होने व राष्ट्रीय ध्वज के जाते ही सभी दर्शक अपना–अपना स्थान ग्रहण कर लेंगे। इसके बाद परेड कमांडर कमाण्ड देगा ''परेड कन्धे शस्त्र एवं परेड बाजू शस्त्र''।

खंड–7

मार्च पास्ट समारोह

1. राष्ट्रीय ध्वज टोली का मार्च समाप्त होते और परेड के बाजू शस्त्र की स्थिति में होते ही परेड कमांडर मार्च पास्ट प्रारम्भ करने के लिए निम्नलिखित कमाण्ड करेगाः–

''परेड, निकट लाइन चल''

''परेड कन्धे शस्त्र''

परेड, तीनों–तीन कॉलम में दाहिने चलेगा, दाहिने मुड़''

परेड के दाहिने मुड़ की कार्यवाही के बाद निशान टोली कमांडर कमांड देगा ''निशान टोली दाहिने दिशा बदल दाहिने बन'' ''थम''। इसके पश्चात् परेड कमांडर का कमाण्ड होगा–

2. निकट कॉलमों की संरचना

''जैसे ही परेड मार्च पास्ट की लाइन के सामने

एवं सलामी मंच (प्वाइंट क) के बाएं पहुंचेगी। परेड कमांडर कमाण्ड करेगा ''परेड थम कर, बाएं दिशा प्लाटून के निकट कॉलम बना''।

प्रत्येक प्लाटून कमांडर अपनी–अपनी प्लाटून को रोकेगा और बाएं मुड़ने के लिए क्रमानुसार कहेगा। निशान टोली कमांडर निशान टोली को दिशा बदल की कार्रवाई करेगा। जब आखिर की प्लाटून की संरचना भी बन जाएगी तो परेड कमांडर कमाण्ड देगा ''परेड बाजू शस्त्र'' और उसके तुरन्त बाद प्लाटूनों को तैयार होने के लिए इन शब्दों की कमाण्ड करेगा।–

''परेड दाहिने सज''

इस कमाण्ड के बाद सभी प्लाटूनों के दांए मार्गदर्शक 5 कदम आगे बढ़ेंगे और रुक जाएंगे। पीछे घूमेंगे और आगे की लाइन की एक के बाद सज्जा करवाएंगे। सभी प्लाटूनों के दाएं मार्गदर्शक लगातार यही कमाण्ड करेंगे ''हिलो मत'' जैसे अन्तिम प्लाटून का दायां मार्गदर्शक कमाण्ड समाप्त करेगा, सभी दाएं मार्गदर्शक एक साथ बाएं घूमेंगे, एक कदम आगे बढ़ाएंगे और दूसरी लाइन की सज्जा के लिए वही कार्रवाई दोहराएंगे। तीसरी लाइन के लिए भी एक बार पुनः इसी प्रकार की कार्रवाई की जाएगी। ज्यों ही अंतिम प्लाटून का दांया मार्गदर्शक अपनी प्लाटून की अन्तिम लाइन को ''हिलो मत'' की कमाण्ड करेगा, सभी प्लाटूनों के दाएं मार्गदर्शक दाएं तरफ एक साथ घूमेंगे और दो कदम आगे बढ़ेंगें, ''बाएं घूमते'' हुए अपनी–अपनी प्लाटूनों की पहली लाईन से अपने मूल नियत स्थान पर जाकर खड़े हो जाएंगे। ये मार्गदर्शक सभी प्लाटूनों की आपस के हर क्रियाकलाप में हमेशा समन्वय रखेंगे।

सभी प्लाटूनों की सज्जा समाप्त होते ही परेड कमांडर इन शब्दों की कमाण्ड करेगा, ''सामने देख'' इस कमाण्ड के होते ही पूरी परेड एक साथ सामने देखने की स्थिति में आ जाएगी। इसके बाद प्लाटून कमांडर एवं परेड कमांडर पीछे मुड़े जाएंगे। सभी दाएं मार्गदर्शक एक साथ कदम बढ़ाएंगे और 5 कदम मार्च करेंगे, रुकेंगे और दांई तरफ घूम जाएंगे। परेड अब मार्च पास्ट के लिए तैयार है।

3. मार्च पास्ट

(क) परेड कमांडर अब कमाण्ड करेगा,

''परेड कन्धे शस्त्र''

''परेड प्लाटून के कॉलम में मंच से गुजरेगा– नं. 1 प्लाटून आगे''।

इस कमाण्ड के तुरन्त के बाद नं. 1 प्लाटून का कमांडर कमाण्ड करेगा, ''नम्बर एक प्लाटून, आगे बढ़ेंगे दाहिने से धीरे चल।'' इस कमाण्ड पर प्लाटून नं. 1 धीरे मार्च शुरू करेगी। बैंड धीमी मार्च धुन बजाएगा। शेष प्लाटूनें एक के बाद एक कॉलमों की दूरी रखते हुए उनके पीछे चलेगी। प्रत्येक प्लाटून का कमांडर स्वतंत्र रूप से अपनी प्लाटून को मार्च शुरू करने के लिए कमाण्ड करेगा, जैसे ही नं. 1 प्लाटून अपनी मार्च शुरू करेगी परेड कमांडर भी मार्च शुरू कर देगा।

(ख) जब प्लाटून नं. 1 पाइंट ख की तरफ पहुंचेगी तो परेड कमांडर कमाण्ड करेगा ''परेड बारी–बारी खुली लाइन चल''।

4. ध्वज चिह्न के निशान पर प्लाटूनों के पहुंचने पर प्रत्येक प्लाटून कमांडर अपनी–अपनी प्लाटूनों को निम्नलिखित स्वतंत्र कमांड करेगा नं..... .....प्लाटून खुली लाइन (प्वाइंट ख पर) (प्लाटून खुले क्रम में मार्च जारी रखेगी।)

नं. .....प्लाटून दाहिने देख (प्वाइंट ग पर)

नं. ..... प्लाटून सामने देख (प्वाइंट घ पर)

''प्लाटून दाहिने देख की कमाण्ड पर दाहिने मार्गदर्शी को छोड़कर समस्त प्लाटून दांई तरफ आंखें करेगी। इसी समय प्लाटून कमांडर विशिष्ट व्यक्ति को सैल्यूट करेगा।

निशान के मंच के सामने से गुजरते समय निशान पार्टी कमांडर दाहिने देख की कार्यवाही करेगा। निशान रक्षक एवं निशान सीध मार्च करेंगे। मुख्य अतिथि यदि राष्ट्रपति अथवा राज्यपाल है तो ''झुकाओ निशान'' एवं ''उठाओं निशान'' की कार्यवाही होगी। इसके

अतिरिक्त मुख्य अतिथि को ''लहराओ निशान'' एवं ''पकड़ो निशान'' की कमांड निशान टोली कमांडर द्वारा दी जाएगी।

5. जब सभी प्लाटून सलामी मंच पार कर लेगी और प्वाइंट घ और ङ के बीच पहुंचेगी तब परेड कमांडर परेड को निकट होने का आदेश देगा ''परेड बारी–बारी निकट लाइन चल''। इसके बाद प्रत्येक प्लाटून का कमांडर स्वतंत्र रूप से अपनी–अपनी प्लाटून को कमाण्ड देगा, ध्वज पाइंट के चिह्न के पास पहुंचने पर प्लाटून कमांडर इन शब्दों में कमाण्ड करेगा ''प्लाटून नं. – निकट लाइन''।

कोने के ध्वज (प्वाइंट च) पर पहुंचने पर परेड कमांडर इन शब्दों के साथ कमाण्ड करेगा ''परेड थम कर नं. 1 प्लाटून पर प्लाटून का निकट कॉलम बना।'' इस पर परेड दोबारा से प्लाटून नं. 1 के साथ निकट कॉलम बना लेगी। निकट कॉलम की जगह पर पहुंचने पर जहां प्लाटून का कमांडर स्वतंत्र रूप से कमांड देगा ''नं. .....प्लाटून थम'' इसके बाद परेड कमांडर इन शब्दों में कमाण्ड करेगा। निशान टोली कमांडर के आदेश पर निशान टोली भी थम होगी।

''परेड दाहिने से बारी–बारी तीनों–तीन के कॉलम में आगे बढ़ परेड दाहिने मुड़। निशान टोली कमांडर के आदेश पर निशान टोली दिशा बदली करेगी।

6. जैसे ही परेड दांई तरफ मुड़ेगी नं. 1 का प्लाटून कमांडर अपनी प्लाटून को इन शब्दों में कमाण्ड करेगा– ''नं. 1 प्लाटून बाएं से तेज चल, बाएं घूम और बाद सभी प्लाटून कमांडर अपनी प्लाटून में निर्धारित स्थानों में पहुंचकर निरीक्षण लाइन के साथ मार्च करेंगे। उसके बाद बाएं घूमेंगे और कमाण्ड होगा। 'बाएं घूम' और यह तीन पाइंटों पर होगा जो पाइंट च छ एवं ज होंगे। परेड पुनः सलामी मंच के पास से तेज मार्च करती हुई प्लाटूनों कॉलमों के रूप में गुजरेगी और पासिंग लाइन के पास पहुंचने पर परेड प्लाटून कॉलम में फिर से आ जाएगी।

पासिंग लाइन के बाएं कोने (पाइंट क) के नजदीक पहुंचने पर परेड कमांडर इन शब्दों में कमाण्ड करेगा 'परेड बाएं दिशा, प्लाटून–के–कॉलम में आगे बढ़''।

इसके बाद प्रत्येक प्लाटून कमाण्ड निम्नलिखित शब्दों से कमाण्ड देकर प्लाटून को आगे बढ़ाएगा–

''नं. .....प्लाटून आगे बढ़ेगा बाएं मुड़–दाहिने से'' इसी प्रकार जब सलामी मंच के सामने गुजरने वाला हो तो प्लाटून कमांडर निम्नलिखित शब्दों में कमाण्ड करेगा।

''नं. ..... प्लाटून दाहिने देख (पाइंट ग)''

''नं. ..... प्लाटून सामने देख (पाइंट ग)''

निशान टोली ठीक वैसी ही कार्यवाही करेगी जैसा कि धीरे चल के समय बतलाई गई है।

कोने के ध्वज पर पहुंचने पर परेड कमांडर इन शब्दों में कमाण्ड करेगाः–

''परेड दाहिने से बारी–बारी तीनों–तीन के कॉलम में आगे बढ़''

उसके बाद कोने पर पहुंचने पर परेड पुनः तीन लाइन के कॉलम के रूप में हो जाएगी जैसे निरीक्षण लाइन पर थी।

इसके लिए प्रत्येक प्लाटून कमांडर निम्नलिखित शब्दों में कमाण्ड करेगाः–

''नं. .....प्लाटून तीनों–तीन में दाहिने चलेगा–दाहिने मुड़''। इस पर प्रत्येक प्लाटून दिए गए निशान पर दाहिने घूमेगी। ''बाएं घूमने'' की कमांड पर दुबारा निरीक्षण लाइन के पास से दोबारा घूमेगी। **निशान टोली दिशा बदली करेगी।**

7. एक बार जब परेड अपने मूल स्थान उदाहरणों के लिए निरीक्षण लाइन पर पहुंच जाएगी तो परेड कमांडर इन शब्दों में कमाण्ड करेगा ''परेड थम''। इस पर परेड रूक जाएगी। उसके बाद परेड कमांडर आगे निम्नलिखित करेगाः–

निशान टोली दिशा बदली करेगी

''परेड आगे बढ़ेगा, बाएं मुड़''

''परेड खुली लाइन चल''

''परेड मध्य सज''

इस कमाण्ड पर बाएं मुडेंगे और खुली स्थिति में आ जाएंगे। ड्रम की आवाज पर किले की दीवार की दाहिने तरफ की प्लाटून अपना सिर दाहिनी तरफ घुमा लेगी और बांई तरफ वाली प्लाटून अपना सिर दाहिनी तरफ घुमा लेगी उसके बाद वे अपने को तैयार करेंगे और ड्रम की अगली आवाज पर सामने देखने की स्थिति में हो जाएंगे।

टिप्पणी : 1. खण्ड–7 में सलामी मंच के आगे परेड को दो बार मार्च पास्ट करने की प्रक्रिया का विवरण दिया गया है। पहले प्लाटून कॉलम में धीरे मार्च के साथ (विस्तृत जानकारी के लिए अध्याय XVI के खण्ड–16 व खण्ड–17 देखें) या प्रक्रिया अधिकारी कैडेटों की पासिंग आउट परेड के दौरान अपनाई जाएगी।

2. कांस्टेबलों की भर्ती के समय पासिंग आउट परेड में प्रशिक्षार्थियों की संख्या बहुत अधिक होने के कारण धीमें मार्च पास्ट को नहीं कराया जाता है।

3. धीमे मार्च पास्ट के समय पासिंग लाइन के दाहिने कोने पर (पाइंट एक के नजदीक जहां के सभी प्लाटून सलामी मंच के पास से धीमे मार्च करेगी) बन्द निकट कॉलम संरचना परेड की प्रक्रिया भी शमिल है। अध्याय 16 के खण्ड–17 में यह लगातार मार्च के (जैसे बिना रुके) रूप में बताई गई है।

खंड–8

निरीक्षण क्रम में बढ़ना और संस्थान प्रमुख द्वारा रिपोर्ट, पुरस्कार वितरण एवं विशिष्ट व्यक्ति का भाषण

1. एक बार सज्जा पूरी होने के बाद परेड कमांडर परेड के निरीक्षण क्रम में बढ़ने के लिए कमाण्ड करेगा ''परेड निरीक्षण क्रम में मध्य से तेज चल'' इस कमाण्ड पर परेड 15 कदम आगे बढ़ेगी और अपने आप रुक जाएगी। (इस रुकने के लिए किसी भी प्रकार की कमाण्ड नहीं दी जाएगी) जैसे ही परेड रुकेगी परेड कमांडर जनरल सैल्यूट के लिए निम्नलिखित कमाण्ड करेगाः–

''परेड कन्धे शस्त्र''

''परेड जनरल सैल्यूट सलामी शस्त्र''

''परेड कन्धे शस्त्र''

''परेड विश्राम''

संस्थान प्रमुख अब अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत करेगा।

यह हो जाने पर परेड कमांड पुरस्कार विजेताओं को पुरस्कार व ट्राफियां प्राप्त करने के लिए आगे लाएगा। इसके बाद निम्नलिखित कमाण्ड करेगाः–

''परेड सावधान''

''कमांडर वापिस किर्च'' (इस कमाण्ड के होने पर कमांडर एवं प्लाटून कमांडर अपनी तलवार वापिस रख लेंगे)।

''परेड विश्राम''

''पुरस्कार विजेता सावधान''

''पुरस्कार विजेता लाइन बन''

''पुरस्कार विजेता लाइन बन'' की कमाण्ड होने पर ड्रम बजने की आवाज होगी। इस आवाज पर पुरस्कार विजेता अपने बराबर खड़े व्यक्ति के बाएं हाथ में अपनी राइफल पकड़ा देगा। इसके बाद पुरस्कार विजेता परेड कमांडर के पीछे दोनों तरफ मार्च करते हुए लाइन बनाएंगे और उनका चेहरा सलामी मंच की तरफ होगा। परेड कमांडर की कमाण्ड ''विजेता सज जा'' पर तैयार होंगे।

उसकी अगली कमाण्ड ''विजेता मध्य से तेज चल'' पर सभी पुरस्कार विजेता (जिसमें परेड कमांडर खुद भी शामिल होगा) आगे बढ़ेंगे। सलामी मंच के आगे बने निशान पर पहुंचने पर परेड कमांडर उनको रुकने के लिए निम्नलिखित कमाण्ड देगाः–

''विजेता सज जा''

''पुरस्कार विजेता, सैल्यूट''

''विजेता विश्राम''

इसके बाद पुरस्कार विजेताओं के नाम पुकारे जाएंगे। इस पर प्रत्येक एक–एक कदम आगे बढ़ाते हुए सलामी मंच की तरफ बढ़ेगा, विशिष्ट व्यक्ति को सैल्यूट करेगा। पुरस्कार/शील्ड प्राप्त करेगा, दुबारा सैल्युट देगा, बाएं घूमेगा, सलामी मंच के साथ–साथ कुछ कदम मार्च करता हुआ चलेगा, पुरस्कार/ट्राफी उस व्यक्ति को सौंप देगा जो इस कार्य के लिए नियुक्त किया गया है और पुरस्कार विजेताओं की लाइन में अपने मूल स्थान पर वापिस आ जाएगा।

पूरे पुरस्कार बंटने के बाद कमांडर पुरस्कार विजेताओं को वापिस ले जाने के लिए निम्नलिखित शब्दों में कमाण्ड देगाः–

''पुस्कार विजेता सावधान''

''विजेता सैल्यूट''

''विजेता पीछे मुड़''

''विजेता मध्य तेज चल''

परेड के पास निर्धारित स्थान पर बनी लाइन पर पहुंचने पर परेड कमांडर इन शब्दों में कमाण्ड करेगा ''विजेता थम'' इस पर वे रुक जाएंगे। ''पुरस्कार विजेता जगह लो'' की कमाण्ड होने पर पुरस्कार विजेता परेड में अपने–अपने निर्धारित स्थानों पर जगह लेंगे। परेड कमांडर पीछे रहेगा। ड्रम की आवाज पर वे अपनी राइफल वापिस ले लेंगे। ड्रम की तीसरी आवाज पर वे आराम की स्थिति में खड़े हो जाएंगे।

अब विशिष्ट अतिथि अपना भाषण देगा।

खंड–9

परेड भंग (परेड निष्क्रमण)

1. विशिष्ट अतिथि का भाषण समाप्त होने के बाद परेड कमांडर निम्नलिखित शब्दों में कमाण्ड करेगाः–

   ''परेड सावधान''

   ''कमांडर निकाल किर्च''

2. परेड के सीधा खड़े होने और प्लाटून कमांडरों के किर्च निकालने के बाद परेड कमांडर सलामी मंच की तरफ जाएगा और विशिष्ट व्यक्ति से परेड भंग करने के लिए निम्नलिखित शब्दों द्वारा अनुमति मांगेगाः–

   ''श्रीमान (विशिष्ट व्यक्ति महिला के होने पर महोदया)

   दीक्षांत परेड निष्क्रमण करने की आज्ञा प्रदान करें''

3. परेड भंग एवं निशान को कूच करने की अनुमति प्राप्त करने के बाद परेड कमांडर अपने स्थान पर वापिस आ जाएगा और इन शब्दों में कमाण्ड देगाः–

   ''दीक्षांत परेड, कन्धे शस्त्र''

   निशान टोली कूच कर,

   निशान टोली कमाण्डर टोली के साथ मार्च करेगा। परेड कमाण्डर निशान के सम्मान में जनरल सैल्यूट देगा और बैण्ड धुन बजाएगा। आमंत्रित अतिथि एवं दर्शक खड़े हो जाएंगे बर्दीधारी सैल्यूट करेंगे। परेड दाहिने बाएं मुड़

   ''परेड निष्क्रमण के लिए दाहिने–बाएं से धीरे चल।''

   इस कमाण्ड पर परेड अन्दर की तरफ मुड़ेगी और कैडेट तीन कॉलमों में परेड के प्लाटूनों से दाएं और बाएं तरफ बराबर रूप में सलामी मंच के दोनों तरफ से धीमे मार्च करते हुए चलेंगे। प्रत्येक छः कैडेट अगले 6 कैडेटों से 8 कदम की दूरी पर रहेंगे।

   परेड एवं प्लाटून कमांडर एवं दाहिने मार्गदर्शक धीमे चाल में कदम बाहर निकालेंगे।

मुख्य अतिथि का आगमन

मुख्य अतिथि सलामी मंच पर

मुख्य अतिथि को किर्च से सेल्यूट करते हुए

मुख्य अतिथि परेड का निरीक्षण करते हुए

निशान का आगमन

निशान शपथ ग्रहण परेड के सामने से गुजरते हुए

दीक्षांत परेड शपथ लेते हुए

दीक्षांत परेड शपथ लेते हुए

दीक्षांत परेड शपथ लेते हुए

निशान का प्रस्थान

निशान का प्रस्थान

दीक्षांत परेड मंच के सामने से गुजरते हुए

दीक्षांत परेड मार्च करते हुए

दीक्षांत परेड विश्राम की स्थिति में

कलर प्रदान परेड

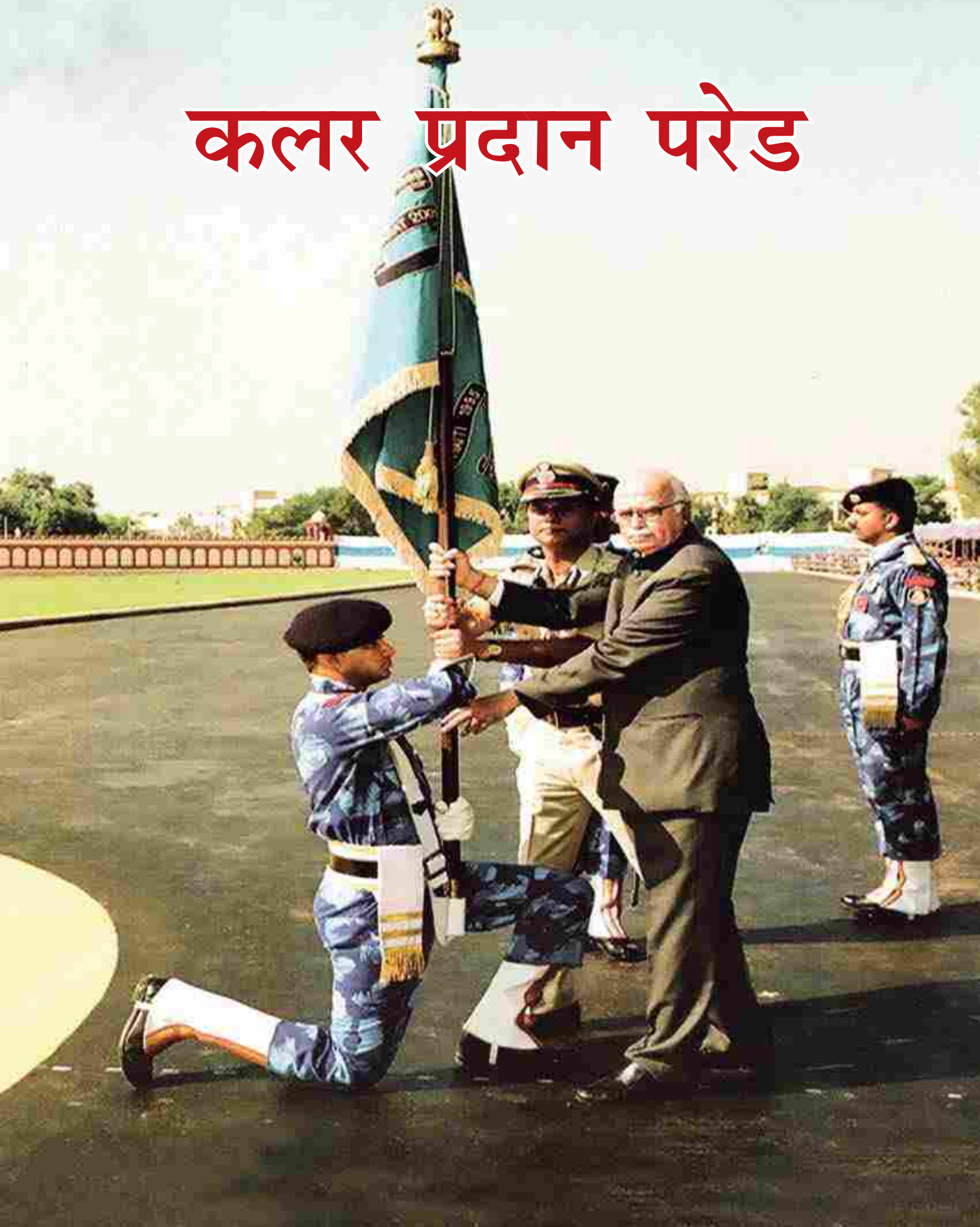

अध्याय XXX

कलर प्रदान परेड (अलंकरण परेड)

इस अध्याय के दो भागों में विभक्त किया गया है। भाग–1 में कलर एवं शुरूआत की ड्रिल जिसमें अलंकरण सज्जा, उसका खोलना और बन्द करने (ड्रेसिंग, केसिंग, अनकेसिंग) आदि के बारे में बताया गया है। भाग–2 में कलर प्रस्तुति समारोह से सम्बन्धित प्रक्रिया का वर्णन है।

भाग–1

खंड–1

कलर की परिभाषा उसके भाग व उनके माप

शस्त्र यूनिट एवं उसके निर्माण का चिह्न अथवा धारित ध्वज कलर कहलाती है। यह उनकी बहादुरी एवं साहस का प्रतीक है। कैवेलरी यूनिट द्वारा धारित कलर को स्टैंडर्ड कहा जाता है।

कलर के भाग

(1) कलर भाले और कपड़े का बना होता है [कृपया उदाहरण चित्र (अलंकरण) देखें]

1. भाले की लम्बाई जिसमें उसका ऊपर का हिस्सा भी शामिल है, 8 फीट 7 इंच है।

2. कलर के कपड़े का मापः–

(क) लम्बाई–3′ 9′′ (ख) चौड़ाई 3′′(ग) झालर 2 फीट (घ) तार 4 फीट 6′′

खंड–2

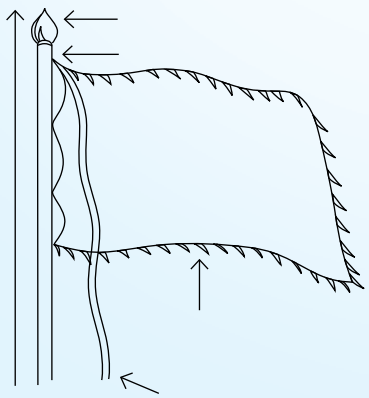

कैरी बेल्ट और उसकी सज्जा

1. पेटी बांधना : जब कलर धारण किया जाए। इसमें साकेट व एक पट्टा होता है। ′′युद्ध का सम्मान′′ प्रतिरेक चिह्न उसके दोनों तरफ लिखा होता है।

2. कैरी बेल्ट की सज्जा : कैरी बेल्ट क्रास बेल्ट की तरह से होनी चाहिए जो सीधे कन्धे की तरफ से बंधनी चाहिए और यह यूनिट की परम्परा पर भी निर्भर करता है। लेकिन ध्वज अधिकारी को सजा हुआ और उसके पदक दिखने वाली स्थिति में लगे होने चाहिए। साकेट हमेशा शरीर के बीच के भाग में होना चाहिए।

खंड–3

कलर की सज्जा

विधि : कलर सीधे हाथ के अंगूठे और उंगलियों के बीच में पकड़ा होना चाहिए। भाले के नीचे का हिस्सा ऊपर के हिस्से के मुकाबले थोड़ा आगे दांई तरफ को होना चाहिए। ऊपर का हिस्सा पकड़ा हुआ और अंगूठे से दबा हुआ होना चाहिए ताकि तरसाल बाहर की तरफ रहे। 6′′ के दोहरी परत के कपड़े को दोहरे में मोड़ कर बाएं अंगूठे से दबाया हुआ हो आखिरी मोड़ को इस प्रकार के आकार में रखना चाहिए कि ′′युद्ध का सम्मान′′ (प्रतिष्ठा) दिख रहा हो। कलर को सीधे हाथ की लम्बाई से नीचे से ऊपर की तरफ मोड़ा हुआ होना चाहिए।

खंड–4

कलर को खोलना एवं बन्द करना।

(1) कलर को खोलने के अवसर

(क) परेड समारोह

(ख) पासिंग आउट परेड (पीओपी)

(ग) गार्ड ऑफ ऑनर की प्रस्तुति एवं

(घ) यूनिट के किसी मुख्य अवसर पर

(2) खोलना

कलर को उठाने के बाद ध्वज अधिकारी सावधान (अटेंशन) मुद्रा में खड़ा होगा उसके आगे 3 वरिष्ठ एन.सी.ओ. खड़े होंगे। ध्वज अधिकारी अपने दोनों हाथों से कलर को मोड़ कर एन.सी.ओ. की तरफ करके खड़ा होगा। एन.सी.ओ. भी अपने दोनों हाथों में कलर को थामे होंगे। ध्वज अधिकारी भाले को दांई कोहनी के नीचे दबा कर रखेगा और अन्दर के केस को खोलेगा।

एन.सी.ओ. इस केस को ऊपर को उठा लेगा और सावधान (अटेंशन) की मुद्रा में खड़ा हो जाएगा। एन.सी.ओ. कलर को सैल्यूट करेंगे दांए मुड़ेगा एवं वापिस जाएंगे।

(3) बन्द करना

जब कभी कलर को क्वार्टरगार्ड अथवा अधिकारी मैस में रखा जाता है तो उसे केस में रखा जाना चाहिए। यदि संभव हो तो उसे एक लकड़ी के बक्से में जिसकी लम्बाई 9 फीट व चौड़ाई 3 फीट हो तथा उसके ऊपर शीशे की एक परत लगी होनी चाहिए। बक्से में कलर को इस प्रकार रखा जाना चाहिए जिससे कहीं से मुड़ा न हो। बन्द करते समय ध्वज अधिकारी एवं एन.सी.ओ. दोनों (अटेंशन) सावधान मुद्रा में खड़े होंगे। कलर ध्वज अधिकारी के पास रहेगा। बन्द करने की क्रिया की शुरूआत पर एन.सी.ओ. कलर को सैल्यूट करेगा। उसके बाद ध्वज अधिकारी कलर को मोड़ेगा और एन.सी.ओ. भाले की ऊपर की नोक को पकड़ेगा। इसके बाद ध्वज अधिकारी अपनी बांई टांग आगे बढ़ाएगा और एन.सी.ओ. अपनी दांई टांग इन सबके बाद एन.सी.ओ. अपने दांए कन्धे पर उस केस को रख लेगा।

ध्वज अधिकारी बाएं हाथ से भाले को पकड़ेगा इसके बाद कलर के कोने को कसकर पकड़ेगा और बांई तरफ से अंगूठे एवं उंगलियों से दबाकर भाले के साथ जोड़ देगा। मुड़ा हुआ कलर भाले पर बाएं से दांए की तरफ घूमेगा। तरसाल को कलर पर सही ढंग से बांधा जाए जिससे कलर खुल न जाए। ध्वज अधिकारी भाले व कलर को नियंत्रित करेगा और एनसीओ केस को उस पर धारित करेंगे। ध्वज अधिकारी उसको धारित करने में उसकी मदद करेगा। केस धारित होने के बाद एनसीओ कलर केस सही प्रकार से रखेगा।

खंड–5

उठाओ निशान एवं बाजू निशान

(1) आवश्यक

ध्वज अधिकारी के कलर उठाने एवं पकड़ने से पहले उठाओ निशान एवं बाजू निशान सम्बन्धी ड्रिल के बारे में जानकारी अवश्य होनी चाहिए।

(2) उठाओ निशान

गिनती द्वारा गतिविधियों का विवरण

(क) ''गिनती के कलर ड्रिल उठाओ निशान–एक'' की कमाण्ड होने पर कलर को दांए हाथ से उठाकर शरीर के बिल्कुल सामने लाना चाहिए। इसमें दांए हाथ की कोहनी भाले के साथ मिल जानी चाहिए। बाएं हाथ से भाले का निचला हिस्सा पकड़ें तब साकेट के अन्दर डालें।

(ख) इस स्थिति में इन बातों पर ध्यान देना होगाः कलर को सीधे हाथ से कसकर पकड़ा जाए और 900 कोण पर रखा जाए कोहनी को भाले से मिलाकर रखें। बाएं हाथ को साकेट पर रखकर शरीर के साथ मिला लें।

(ग) स्क्वाड–2 : स्क्वाड 2 की कमाण्ड पर बांया हाथ तेजी से बांई तरफ लाया जाएगा और सीधा हाथ मुंह के सामने लाएंगे। इस प्रकार कोहनी मैदान के समानान्तर हो जाएगी।

(घ) इस स्थिति में इन बातों को देखें : सीधा हाथ होठों के सामने हो और उंगलियां अन्दर की तरफ हों और अंगूठा बाहर की तरफ, दांया हाथ का अग्रभाग कोहनी से कलाई तक जमीन के समानांतर रहेगा। बाकी सब सावधान (अटेंशन) की स्थिति में होगा।

(3) बाजू निशान :

(क) **गिनती द्वारा गतिविधियों का विवरण :** उठाओ

निशान की स्थिति में ''गिनती से बाजू निशान एक'' शब्द की कमांड प्राप्त होने पर भाले को नीचे से इतना ऊंचा उठाएं कि वह साकेट से अलग हो जाए। दांई कोहनी को भाले के साथ मिलाएं। बाएं हाथ को भाले पर लाएं जिससे भाले के नीचे के हिस्से को बाहर निकालने में मदद हो।

(ख) **इस स्थिति में ध्यान देने योग्य बातें :** उठाओ निशान की स्थिति में इसमें केवल एक ही फर्क है। इसमें भाले का निचला हिस्सा साकेट से अलग होता है।

(ग) **स्क्वाड–2 :** स्क्वाड–2 की कमाण्ड होने पर कलर को दांए हाथ से दांई तरफ करके पेटी की लाइन के पास लाकर पकड़ेंगे इससे भाला कन्धे से मिल जाएगा। भाले का निचला हिस्सा जमीन से ऊपर हो और दांए बूट की नोक की लाइन में दाएं तरफ हो।

(घ) इस स्थिति में ध्यान देना होगा कि भाले का निचला हिस्सा जमीन से आधा इंच ऊपर होगा और दांए हाथ से भाला पकड़ा हुआ होगा। बाएं हाथ में पेटी की सीध में कलर को पकड़ा हुआ होगा। शेष स्थिति सावधान खड़ा होने (अटेंशन) की रहेगी।

स्क्वाड–3 : इन शब्दों की कमाण्ड पर बांया हाथ तेजी से बांई तरफ लाएं और सावधान (अटेंशन) की मुद्रा में हो जाएं।

खंड–6

उठाओ निशान से कांधे निशान और कांधे निशान से उठाओ निशान

1. **कांधे निशान की आवश्यकता :** यह प्रक्रिया कलर को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने की है।

2. **गिनती द्वारा गतिविधियों का विवरण :**

(क) उठाओ निशान स्थिति में ''गिनती से कलर ड्रिल कन्धे निशान एक'' शब्द की कमाण्ड होने पर दांए हाथ से कलर उठाएं जिससे भाले का निचला हिस्सा साकेट के सामने आ जाए।

(ख) इस स्थिति में बाजू निशान की पहली मुद्रा की तरह ही रहेगी।

(ग) **स्क्वाड–2 :** स्क्वाड–2 की कमाण्ड पर बांया हाथ सावधान (अटेंशन) मुद्रा में ले आएं और कलर को कंधे पर ले आएं। दांई कोहनी शरीर को छूनी चाहिए।

(घ) **इस स्थिति में इन बातों का ध्यान रखना होगा :** दांई कोहनी शरीर के दांई तरफ मिल जाएगी। दांए हाथ से भाले को पकड़ा जाएगा और कंधे पर 45^0 का कोण बना हो और भाले के ऊपर से लेकर दांए हाथ की पकड़ तक कलर से ढका होना चाहिए।

खंड–7

कलर का फहराना, पकड़ना एवं झुकना

(1) फहराना : कलर को फहराने से संबंधित प्रक्रिया का वर्णन नीचे किया जा रहा है और यह तभी फहराया जाएगा जब ''सलामी शस्त्र'' की कमाण्ड होगी।

(2) क्रियाकलापों का विवरण :

''लेट फ्लाई'' शब्द की कमाण्ड होने पर भाले सहित बाएं हाथ को लगभग 6'' तक बढ़ाएगा और कलर को हाथ से मुक्त कर दें। जब कलर मुक्त हो जाए तो दांया हाथ दुबारा से पुरानी स्थिति में ले आएं। सलामी शस्त्र की तीसरी गतिविधि पर यह गतिविधि की जाएगी। दांया हाथ भाले पर से नहीं हटाना होगा।

(3) इस स्थिति में इस बात पर ध्यान देना होगा कि सारी स्थिति ''उठाओ निशान'' की तरह रहेगी केवल कलर फहराता रहेगा।

(4) कलर को पकड़ना : यह क्रियाकलाप बाजू शस्त्र की कमाण्ड पर होगा। इस कमाण्ड के होने पर कलर का बाएं हाथ से पकड़ कर बांई तरफ लाना होगा। ''बाजू शस्त्र'' शब्द

की कमाण्ड होने पर कलर बाजू निशान की स्थिति में लाना होगा। यदि विशिष्ट अतिथि को सैल्यूट के बाद निरीक्षण करना है तो कलर को ले जाने की स्थिति में रखना होगा और ध्वज अधिकारी शस्त्र ड्रिल शब्द की कमाण्ड के अपनी गतिविधियों में समन्वय करेगा।

(5) कलर झुकाने का अवसर

(क) राष्ट्रपति का कलर

राष्ट्रपति के कलर निम्नलिखित के लिए झुकाए जाएंगेः–

(1) राष्ट्रपति

(2) राज्य का राज्यपाल

राष्ट्रपति कलर को केवल तब ही झुकाया जाएगा जब राष्ट्रीय सैल्यूट दिया जाना हो।

(ख) रेजीमेंटल कलर

इसको निम्नलिखित के लिए झुकाया जाएगाः–

1. राष्ट्रपति
2. उपराष्ट्रपति
3. राज्यपाल
4. प्रधानमंत्री
5. केन्द्रीय गृहमंत्री
6. फील्ड मार्शल
7. राज्य का मुख्यमंत्री
8. गृह मंत्रालय की अनुमति से थल सेनाध्यक्ष, वायु सेना अध्यक्ष, नौसेना अध्यक्ष
9. पुलिस महानिदेशक अनुमति होने पर।

(1) गिनती द्वारा क्रियाकलापों का विवरण खड़ी स्थिति में ''गिनती से कलर ड्रिल झुकाओ निशान एक'' की कमाण्ड प्राप्त होने पर दांई कोहनी को भाले के साथ मिलाना होगा।

(2) **स्क्वाड–2 :** स्क्वाड–2 शब्द की कमाण्ड होने पर दांए अथवा बाएं हाथ की दिशा पर निर्भर होगा। कलर को 45^0 पर उठाना होगा ताकि कलर हाथ में पूरी तरह से फहराए।

खंड–8

कलर पार्टी और मार्गरक्षी

(1) उपर्युक्त बतलाई कलर प्रक्रिया के लिए ध्वज अधिकारी पुलिस उपाधीक्षक/सहायक अधीक्षक के रैंक का होगा। कलर पार्टी के मार्गरक्षी के रूप में विशेष रूप से चुने 3 एनसीओ होंगे। (बटालियन में सबसे वरिष्ठ एन.सी.ओ. जो बटालियन में हवलदार मेजर एवं दो अन्य वरिष्ठ एनसीओ मार्गरक्षी के रूप में होंगे)।

(2) पूरी कलर पार्टी अपने को परेड के मध्य में स्थित करेगी।

(3) इसके अतिरिक्त दो विशेष चयनित एनसीओ कलरों के केस के साथ कलर पार्टी के पास रहेंगे।

(4) यदि वहां दो कलर हैं जैसे राष्ट्रपति का कलर एवं रेजिमेंटल कलर, वहां दो ध्वज अधिकारी होंगे। राष्ट्रपति का कलर हमेशा दांए तरफ होगा और उसको धारित करने वाला अधिकारी दोनों में वरिष्ठ होगा और पार्टी का कमाण्डर होगा।

(5) **पुजारी :** पुजारी अथवा धार्मिक गुरू (आरटीएस) परेड के लिए विशेष रूप से चयन किया जाएगा। उसको पूर्वाभ्यास के दौरान भी शामिल किया जाएगा।

(6) संगठन/यूनिट की परम्परा के अनुसार ही आरटीएस की संख्या होगी। परेड के शुरू होने से पहले आरटीएस सलामी मंच के पीछे दांई तरफ कुछ कदम आगे के तरफ होकर अपना स्थान लेगा।

भाग–2

खंड–1

सामान्य निर्देश

किसी बल/यूनिट द्वारा की गई सेवाओं के सम्मान के लिए कलर प्रदान किया जाता है। यह यूनिट द्वारा किए गए साहस प्रदर्शन, बहादुरी, जीवट

एवं समर्पण की भावना का प्रतीक है। कलर प्रदान परेड एक बहुत बड़े समारोह का अवसर है। अतः इसके लिए सभी स्तरों पर पूर्ण रूप से ध्यानपूर्वक एवं सही निरीक्षण में तैयारियां की जानी चाहिए ताकि परेड का स्तर ऊंचा हो। इसके अन्तर्गत सामान्य व्यवस्था सम्बन्धी कार्य किए जाने आवश्यक हैं जिनमें परेड ग्राडन्ड, यूनिट संगठन, निरीक्षण अधिकारी का स्वागत, निरीक्षण, मार्च पास्ट, अधिकारियों की नियुक्ति, निरीक्षण क्रम से संबंधित आदेश जो इस मैनुअल के अध्याय–16 में दिए गए हैं, अनुसार किए जाएंगे। उसी अध्याय खंड–8 में परेड समारोह के लिए दिए गए विशेष दिशा–निर्देशों का अधिकारियों द्वारा पालन किया जाएगा। अतः अधिकारियों को सलाह दी जाती है कि इस अध्याय–16 का ध्यानपूर्वक अध्ययन करें।

खंड–2

अतिविशिष्ट व्यक्तियों द्वारा कलर प्रदान

किसी भी बल/यूनिट द्वारा की गई उपलब्धियों को सम्मान स्वरूप कलर प्रदान होना एक बहुत ही महत्वपूर्ण अवसर होता है। यह एक ऐसा अवसर होता है जब बल/यूनिट के सदस्यों को हमेशा यादगार के रूप में अंकित रहेगा। अतः बल के प्रमुख के लिए आवश्यक है कि बल/यूनिट को कलर प्रदान केवल अतिविशिष्ट व्यक्ति द्वारा करवाया जाए।

राष्ट्रपति के कलर के लिए

राष्ट्रपति का कलर एक पुलिस बल (के.पु. संगठन/राज्य पुलिस) को निम्नलिखित अतिविशिष्ट व्यक्तियों द्वारा प्रदान किया जाता है।

(क) राष्ट्रपति

(ख) प्रधानमंत्री

(ग) केन्द्रीय गृह मंत्री

रेजीमेंटल कलर के लिए

रेजीमेंटल कलर एक ऐसे पुलिस संगठन (बटालियन/पुलिस प्रशिक्षण कालेज) को निम्नलिखित में से किसी एक द्वारा प्रदान किया जाता हैः–

(क) गवर्नर

(ख) राज्य का मुख्यमंत्री

(ग) गृह राज्यमंत्री

खंड–3

परेड की संख्या : कलर प्रदान परेड (अलंकरण परेड) में निम्नलिखित द्वारा बनेगीः–

(1) राष्ट्रपति के कलर के लिए

(क) परेड कमाण्ड (कमाण्डेंट/पुलिस अधीक्षक)

(ख) परेड द्वितीय कमाण्ड (उप कमाण्डेंट/अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक)

(ग) परेड सहायक

(घ) अधिकारी–4 (कम्पनी कमाण्डर)

(ङ) सूबेदार मेजर – 1

(च) एस ओ एस – 12

(छ) अन्य रैंक – अलग–अलग 75 अन्य रैंकों की 4 कम्पनियां

(ज) ध्वज अधिकारी – 1

(झ) करल के मार्गदर्शी – 3+2

(ञ) बैंड – दो बैंड (ब्रास एवं पाइप मिश्रित)

(ट) घुड़सवार दस्ता – उपलब्ध होने पर।

ध्वज अधिकारी एवं मार्गदर्शी सम्बन्धी निर्देशों पर पहले ही इस अध्याय के खंड–8 में चर्चा की जा चुकी है।

(2) रेजीमेंटल कलर के लिए

(क) परेड कमाण्डर (उप कमाण्डेंट)

(ख) परेड द्वितीय कमाण्ड (पुलिस उपाधीक्षक)

(ग) परेड एस एम

(घ) ध्वज अधिकारी – 1

(ङ) कलर के लिए मार्गदर्शी 3+2

(च) एस ओ एस : अन्य रैंकों की संख्या के अनुसार

(छ) अन्य रैंक – कम से कम दो कम्पनी

(ज) बैंड : एक/दो उपलब्धता के अनुसार

(झ) घुड़सवार दस्ता : उपलब्धता के अनुसार

खंड–4

परेड की विरचना

1. कार्यक्रम की शुरूआत से 30 मिनट पहले अलंकरण परेड किले की दीवार के पीछे जाकर खड़ी हो जाएगी। कम्पनीवार राइफलों के साथ जिसमें संगीनें भी लगी हों, बाजू शस्त्र की स्थिति में (शस्त्र क्रम) खड़ी होगी। दो कम्पनी किले के द्वार दांई तरफ अपनी स्थिति लेगी। कम्पनी नं. 1 द्वार के पास खड़ी होगी और अन्य कम्पनी नं. 2 उसके दांई तरफ खड़ी होगी। अन्तिम कम्पनी (कम्पनी नं. 4) गेट के दांई तरफ होगी और कम्पनी नं. 3 बांई तरफ उसके आगे खड़ी होगी। उसके पीछे घुड़सवार दस्ता खड़ा होगा और पृष्ठ भाग में बैंड होगा जो परेड के बीच में होगा। बिगुलर एवं बल्लमदार, किले की दीवार के पीछे अपनी स्थिति में खड़े हो जाएंगे।

(2) किले के द्वार को दो द्वारपालों द्वारा परेड के शुरू होने के 20 मिनट पहले खोला जाएगा। दो बिगुलर परेड ग्राउन्ड के बीच की दीवार की तरफ से प्रवेश करेंगे और निरीक्षण लाइन की तरफ मार्च करेंगे (निरीक्षण लाइन, पासिंग लाइन आदि के लिए अध्याय–16 के खंड–2 को देखें परेड ग्राउन्ड का चित्र नीचे दिया जा रहा है।) और वहां पहुंचकर मार्कर काल करेंगे। इसके बाद बिगुलर वापिस मुडेंगे और मार्च करते हुए किले की दीवार के पृष्ठभाग में आएंगे और निरीक्षण लाइन पर अपनी स्थिति लेंगे।

परेड ग्राउन्ड की तरफ बने किले की दीवार के ऊपर बिगुलर एवं बल्लमदार अपनी–अपनी स्थिति लेंगे।

इसके बाद बिगुलर मार्कर काल के 3 मिनट बाद काल (एडवांस काल) की आवाज करेंगे।

(3) परेड सूबेदार मेजर अब परेड को ''सावधान'' एवं कन्धे शस्त्र ''की स्थिति में लाएगा और निरीक्षण लाइन की तरफ मार्च करेगा और कमाण्ड करेगा परेड दांए बाएं से तेज चल'' गेट को पार करने पर दांई तरफ की कम्पनियां (कम्पनी नं. 1, 2) दीवार के दांई तरफ बढ़ेगी। मार्कर पर पहुंचने पर प्लाटून मार्क समय लेगी। जब सारी प्लाटून निरीक्षण लाइन के पास अपने स्थान पर पहुंचेगी तो परेड रुकेगी तब ड्रम बजेगा। परेड सूबेदार मेजर निम्नलिखित कमाण्ड एक के बाद एक लगातार देगाः–

''परेड आगे बढ़ेगा दाहिने बाएं मुड़''

''परेड बाजू शस्त्र''

''परेड खुली लाइन चल''

''परेड मध्य सज''

''परेड विश्राम''

घुड़सवार दस्ता बांई तरफ खड़ा हो जाएगा और परेड के बीच में निरीक्षण के पीछे बैंड के सदस्य खड़े होंगे।

(4) परेड सहायक मंच की तरफ से मार्च करते हुए परेड की तरफ आएगा। परेड सहायक के दिखते ही परेड सूबेदार मेजर परेड को सावधान की स्थिति में लाएगा और परेड का दायित्व परेड सहायक को सौंपेगा। उसके बाद पीछे मुड़ेगा और अपनी स्थिति पर वापिस आ जाएगा।

(5) परेड सहायक मंच की तरफ पीछे मुड़ेगा और परेड को ''विश्राम'' की स्थिति में लाएगा।

(6) द्वितीय परेड कमाण्ड के मंच के अन्त तक पहुंचते ही परेड सहायक परेड को सावधान की स्थिति में लाएगा।

(7) परेड सहायक परेड का दायित्व द्वितीय परेड कमांण्ड को सौंप देगा पीछे मुड़ेगा और अपनी स्थिति पर आ जाएगा।

(8) द्वितीय परेड कमाण्ड मंच की तरफ पीछे मुड़ेगा।

(9) अधिकारी काल : बिगुलरों द्वारा ''आफिसर काल''

करने पर बीच से होकर परेड ग्राउन्ड के लिए मार्च करेंगे। दाएं–बाएं घूमेंगे और अपनी–अपनी कम्पनी के आगे निर्धारित स्थानों पर दांए–बाएं से मंच की तरफ को मुंह करके खड़े हो जाएंगे। यह ड्रम की आवाज पर होगा। जैसे ही अधिकारी अपना स्थान लेंगे, द्वितीय परेड कमाण्डर ''आफिसर, एसओएस, किर्च, निकालेंगे, किर्च निकाल'' की कमाण्ड करेगा। इसके बाद सभी अधिकारी एवं एसओएस ध्वज अधिकारी और बैंड मास्टर को छोड़कर अपनी–अपनी तलवार निकाल लेंगे। इसके बाद द्वितीय परेड कमाण्डर परेड को विश्राम की स्थिति में लाएगा और परेड कमाण्डर के आने की प्रतीक्षा करेगा।

(10) परेड कमांडर के आने के बाद द्वितीय परेड कमांडर परेड को सावधान एवं कन्धे शस्त्र की स्थिति में लाएगा और कमाण्ड करेगाः–

''परेड सलामी देगी सलामी शस्त्र''

इस पर परेड कमांडर को सैल्यूट देगी। (बैंड नहीं बजेगा) और द्वितीय परेड कमांडर कमाण्ड करेगा ''परेड कन्धे शस्त्र'' और परेड बाजू शस्त्र मंच की तरफ मार्च करेगा और परेड कमांडर को परेड का दायित्व सौंप देगा।

(11) परेड कमांडर एवं द्वितीय परेड कमांडर अपने–अपने निर्धारित स्थान पर जाएंगे और पीछे मुड़ेंगे।

(12) परेड कमांडर द्वितीय परेड कमांडर को जगह छोड़ने के लिए उपयुक्त समय देगा ताकि दोनों अपने निर्धारित स्थानों पर एक साथ पहुंचें।

(13) इसके बाद परेड कमांडर को विश्राम की स्थिति में लाएगा और पुलिस महानिदेशक के आने का इंतजार करेगा।

विशेष ध्यान दें

बड़ी परेड होने पर यह अपेक्षित है कि वे ऐसे स्थान पर हो जहां स्थाई किला उपलब्ध हो। इन किलों पर परकोटा होना चाहिए। बिगुलरों को परकोटे पर खड़ा होना चाहिए। यदि उन दीवारों पर परकोटा नहीं है तो किसी अन्य सुविधाजनक स्थान पर खड़े हों।

यदि राज्य/यूनिट के पास कोई स्थाई किला नहीं है तो कैनवास के कपड़े का अस्थाई किला तैयार किया जाए। उसको समारोह के अनुरूप ही रंग और भव्यता दी जाए।

घुड़सवार दस्ता एवं बल्लमदारों के उपलब्ध होने पर ही उनको परेड में शामिल किया जाना चाहिए।

समय की बचत के लिए इस प्रक्रिया में बदलाव लाया जा सकता है। जिसमें द्वितीय परेड कमांडर, कम्पनी कमांडर, परेड सहायक एवं परेड सूबेदार मेजर इन सबको किले की दीवार के पीछे खड़ा किया जाए। द्वितीय परेड कमांडर परेड को परेड ग्राउन्ड में लाएं और परेड कमांडर को दायित्व सौंप दें।

खंड–5

बन्द कलर कसेस का आगमन

परेड कमांडर द्वारा अपनी जगह लेने के बाद वह परेड को आदेश देगा ''कन्धे शस्त्र'' तथा कलर पार्टी को बन्द कलर परेड ग्राउन्ड में लाने के लिए निम्नलिखित कमाण्ड करेगाः–

(क) ''परेड कन्धे शस्त्र''

(ख) ''निशान टोली परेड पर''

इन शब्दों की कमाण्ड पर (कलर पार्टी) निशान टोली कमांडर के साथ मार्च करेगी और अपनी जगह लेगा (परिशिष्ट 'अ' देखें।)

(स) ''परेड बाजू शस्त्र''

(द) ''परेड विश्राम''

खंड–6

पुलिस महानिदेशक का अभिनन्दन

कार्यक्रम शुरू होने के 10 मिनट पहले पुलिस महानिदेशक का आगमन होगा। जैसे ही वे आते दिखे परेड कमांडर परेड को ''सावधान'' और ''कन्धे शस्त्र'' की स्थिति में लाएगा। जैसे ही पुलिस महानिदेशक सलामी मंच पर पहुंचेंगे परेड कमांडर परेड को कमाण्ड करेगा ''परेड जनरल सैल्यूट,

सलामी शस्त्र'' बैंड जनरल सैल्यूट की धुन बजाएगा। इसके समाप्त होने पर परेड कमांडर निम्नलिखित कमाण्ड एक के बाद एक लगातार करेगाः–

''परेड कन्धे शस्त्र''

''परेड बाजू शस्त्र''

''परेड विश्राम''

सलामी लेने के बाद महानिदेशक महोदय उस स्थान की तरफ जाएंगे जहां कलर प्रदान करने के लिए आमंत्रित अति विशिष्ट व्यक्ति को आना है।

खंड–7

विशिष्ट/अतिविशिष्ट व्यक्ति का आगमन

जैसे ही विशिष्ट/अति विशिष्ट व्यक्ति दिखाई दे बिगुलर ''फन फेयर'' की आवाज करेगा और परेड कमांडर तुरन्त कमाण्ड देगाः–

''अलंकरण परेड सावधान'' इसके बाद ''परेड कन्धे शस्त्र'' जैसे ही अति विशिष्ट व्यक्ति महानिदेशक के साथ सलामी मंच पर पहुंचे परेड उनको शस्त्र प्रस्तुत करेगी जिसके लिए परेड कमांडर निम्नलिखित शब्दों की कमाण्ड करेगाः–

''परेड जनरल सैल्यूट, सलामी शस्त्र''

बैंड जनरल सैल्यूट की धुन बजाएगा और जब तक धुन समाप्त नहीं हो जाती परेड उसी स्थिति में खड़ी रहेगी। यदि अति विशिष्ट व्यक्ति भारत के राष्ट्रपति अथवा गवर्नर हैं तो ''राष्ट्रीय सैल्यूट'' दिया जाएगा और बैंड राष्ट्रीय गान की धुन बजाएगा।

इसके बाद परेड कमांडर परेड को ''कन्धे शस्त्र'' एवं ''बाजू शस्त्र'' की स्थिति में लाएगा।

टिप्पणी : राष्ट्रीय सैल्यूट और राष्ट्रीय गान बजने से संबंधित निर्देश अध्याय–18 के खण्ड–7 व खण्ड–8 (गार्ड ऑफ आनर के अध्याय) में दिए गए हैं, अनुपालन किया जाए।

खंड–8

अति विशिष्ट व्यक्ति द्वारा परेड का निरीक्षण

जैसे ही परेड ''बाजूशस्त्र'' की स्थिति में आएगी परेड कमांडर सलामी मंच की तरफ मार्च करता हुआ जाएगा और रुकेगा, अति विशिष्ट व्यक्ति का अभिवादन करेगा और रिपोर्ट करेगाः–

''श्रीमान (यदि अति विशिष्ट व्यक्ति महिला है तो महोदया) अलंकरण परेड आपके निरीक्षण के लिए हाजिर है'' इस बीच निरीक्षण जीप (यदि प्रयोग में लाने की योजना है तो) जो परेड के कोने पर खड़ी होगी सलामी मंच की तरफ पहुंचेगी। अति विशिष्ट व्यक्ति जीप के आगे के हिस्से में खड़े हो जाएंगे और पुलिस महानिदेशक एवं परेड कमांडर जीप के पृष्ठभाग में खड़े होंगे जो पहले दो दांए तरफ होंगे और बाद में बाएं तरफ होंगे। इसके बाद जीप परेड के दाहिने तरफ से परेड की अगली लाइन के सामने से दाएं से बाएं होकर गुजरेगी। (ऐसे मामले में जहां जीप का प्रयोग नहीं किया जाना है अति विशिष्ट व्यक्ति पैदल चलकर निरीक्षण लाइन पर जाएगा उसके साथ दाईं तरफ पुलिस महानिदेशक तथा बांई तरफ परेड कमांडर दोनों चलेंगे और अति विशिष्ट व्यक्ति से एक कदम पीछे चलेंगे)।

जैसे ही अति विशिष्ट व्यक्ति निरीक्षण जीप अथवा पैदल पहली प्लाटून के दांए मार्गदर्शी को पार करेगा, बैंड धीमी मार्च की कोई एक धुन बजाएगा और जब तक अति विशिष्ट व्यक्ति द्वारा निरीक्षण पूरा नहीं कर लिया जाता तब तक धुन बजती रहेगी। (यदि अति विशिष्ट व्यक्ति पैदल निरीक्षण कर रहा है तो पुलिस महानिदेशक एवं परेड कमांडर निरीक्षण के दौरान धीमा मार्च करेंगे) अति विशिष्ट व्यक्ति के सलामी मंच पर लौटने के बाद, परेड कमांडर उनको सैल्यूट करेगा और मुड़कर अपनी जगह पर वापिस आ जाएगा।

टिप्पणी : चूंकि कलर प्रदान समारोह एक बड़ा अवसर होता है और परेड भी काफी बड़ी होती है तो यह अपेक्षित है कि एक निरीक्षण जीप व्यवस्था की जानी चाहिए।

खंड–9

परेड ट्रुप

यह तब होता है जब संगठन के पास पुराना कलर होता है और उसे नया कलर प्रदान किया जा रहा है। उस समय दो ध्वज अधिकारी पुराना कलर

कनिष्ठ ध्वज अधिकारी को सौंपेगा। जो उसे लेकर परेड ग्राउन्ड से बाहर चला जाएगा और वरिष्ठ ध्वज अधिकारी वहीं रहेगा और नया कलर प्राप्त करेगा।

इसके लिए परेड कमांडर कमाण्ड देगा ''परेड ट्रुप'' इस कमाण्ड पर बैंड और ड्रम परेड ग्राउन्ड में बाएं से दांए धीमे ट्रुप की धुन बजाते हुए निकलेंगे। जब ड्रम मेजर परेड ग्राउन्ड के मध्य में होगा तो पुराने कलर से गिनकर 10 कदम की दूरी पर जाकर रुकेंगे। अब दोनों मार्गरक्षी पार्टियां परेड ग्राउन्ड में आएंगी।

जब दोनों मार्गरक्षी पार्टियां चलेंगी तो परेड कमांडर ''पुराने कलर'' को ''जनरल सैल्यूट'' के लिए निम्नलिखित कमाण्ड देगाः–

अ. ''परेड कन्धे शस्त्र''

ब. ''परेड जनरल सैल्यूट सलामी शस्त्र'' (मार्गरक्षी पार्टियां भी उसी समय शस्त्र प्रस्तुत करेंगी)

स. ''परेड कन्धे शस्त्र''

द. ''परेड बाजू शस्त्र''

इसके बाद परेड कमांडर कमाण्ड देगा ''ध्वज अधिकारी जगह लो''

इस कमाण्ड पर ध्वज अधिकारी मार्च करता हुआ परेड कमांडर के आगे केन्द्र लाइन पर आएगा। वरिष्ठ ध्वज अधिकारी कनिष्ठ ध्वज अधिकारी को पुराना कलर सौंपेगा। इस लेनदेन के बाद दोनों अधिकारी अपने–अपने निर्धारित मार्गरक्षियों से मिलेंगे। कनिष्ठ ध्वज अधिकारी की कमाण्ड पर मार्गरक्षी जिन्होंने पुराना कलर ले रखा है परेड ग्राउन्ड से बाहर चले जाएंगे।

जैसे ही पुराने कलर वाले मार्गरक्षी परेड कमांडर अपेक्षित समानांतर कमाण्ड करेगा। वरिष्ठ ध्वज अधिकारी परेड में नए कलर केस के साथ अपने मूल स्थान पर आ जाएगा।

खंड–10

खाली वर्ग की विरचना

खाली वर्ग विरचना के लिए परेड कमांडर निम्नलिखित कमाण्ड देगाः–

(क) परेड खाली वर्ग बनाएगी बाजू दल आधे दाहिने बाएं मुड़ (उस पर केवल आगे की पंक्ति के बगली रक्षी आधे और दांए मुड़ जाएंगे।)

(ख) ''बाजू दल दांए–बाएं से तेज चल'' (इस पर बैंड बजेगा और बगली रक्षी खाली वर्ग बनाएंगे। अन्दर वाले रक्षी वैसी ही स्थिति में रहेंगे। द्वितीय कमांडर, कमांडर रक्षी एवं सहायक भी अपनी जगह ले लेंगे।)

(ग) (जब बगली टुकड़ियां अपने स्थानों पर पहुंच जाएंगी तो कमाण्ड होगी) ''बाजू दल थम''

(घ) ड्रम की आवाज पर सज्जा (ड्रेसिंग होगी) ''बाजू दल मध्य सज''

(ङ) ''बाजू दल सामने देख (बगली रक्षी सामने देखेंगे)

(च) इसके बाद परेड कमांडर परेड को ''विश्राम'' में लाएंगे।

खंड–11

ड्रमों का जमा होना एवं समर्पण का मापदण्ड

(1) परेड कमांडर कमाण्ड करेगा ''ड्रमर्स ड्रम लगाओ'' इस कमाण्ड पर 10 साइड ड्रमर्स और एक बेस ड्रमर परेड के केन्द्रीय पृष्ठभाग से तेजी से आगे बढ़ेगा। वह सलामी मंच के सामने और परेड ग्राडन्ड के बीच में पहुंचेंगे और ड्रमर्स के लिए बनाए गए चिह्न के पास रुकेंगे अन्दर की तरफ मुंह करेंगे। इसके बाद पहले से बनाई गई जगह पर ड्रम जमा हो जाएंगे।

(2) ड्रम बजाने के स्वर के साथ जब ड्रमर्स मार्च कर रहे होंगे तब द्वितीय परेड कमांडर आगे बढ़ेगा और ड्रम और परेड के बीच ड्रमों की कतार से 7 कदम की दूरी पर जगह लेगा।

(3) अब परेड कमांडर कमाण्ड करेगा ''निशान जगह लो'' इसके बाद एनसीओ कलर केस ले रखा है परेड के मध्य से आगे बढेंगे और ड्रमों से 10 कदम की दूरी पर रुक जाएंगे। द्वितीय परेड कमांडर कलर को बक्से में से निकलेगा। (वह सैल्यूट नहीं

करेगा) और बक्से को एनसीओ को सौंप देगा। द्वितीय परेड कमांडर कलर को उन ड्रमों के ऊपर रख देगा और अपनी जगह पर वापिस आ जाएगा। एनसीओ केस के साथ वापिस मुड़ेगा और बिना देरी किये शीघ्र किले के अन्दर चला जाएगा।

नोट :– नए कलर के साथ मार्गरक्षी निरीक्षण लाइन पर रुके रहेंगे। केवल वही एसीओ जिसके पास कलर बक्सा है, आगे बढ़ेगा।

(4) इसके बाद परेड कमांडर कमाण्ड करेगा ''धर्म गुरु जगह लो'' इसके बाद धर्म गुरु (धार्मिक अध्यापक) अपने सेवादारों के साथ परेड ग्राउन्ड में आएंगे और बांई तरफ उनके लिए चिह्न निशान पर ड्रमों की तरफ मुंह करके रुक जाएंगे।

(5) धार्मिक अध्यापकों (आरटीएस) द्वारा अपने स्थान पर पहुंचने के बाद परेड कमांडर कमाण्ड करेगा ''धर्म गुरू पवित्र कार्रवाई शुरू करो'' इसके बाद धर्मगुरू प्रतिष्ठा करेगा।

(6) जैसे ही धार्मिक गुरू द्वारा प्रतिष्ठा का कार्य पूरा होगा परेड कमांडर परेड को सावधान करेगा और कमाण्ड करेगा ''ध्वज अधिकारी जगह लो'' केवल ध्वज अधिकारी आगे बढ़ेंगे और ड्रमों की पंक्ति से 10 कदम दूर पर रुक जाएगा। मार्गरक्षी निरीक्षण लाइन पर ही खड़े रहेंगे।

खंड–12

कलर प्रदान करना

(1) परेड कमांडर सलामी मंच की तरफ आएगा और विशिष्ट/अति विशिष्ट से कलर प्रदान करने का अनुरोध करेगा। विशिष्ट/अति विशिष्ट व्यक्ति का अभिवादन करने के पश्चात् वह कहेगाः–

''श्रीमान निशाद प्रदान करने के लिए निवेदन है।''

अति विशिष्ट/विशिष्ट व्यक्ति पुलिस महानिदेशक एवं परेड कमांडर के साथ सलामी मंच से नीचे आकर परेड ग्राउन्ड के बीच में पहुंचेंगे।

(2) विशिष्ट/अति विशिष्ट व्यक्ति एवं पुलिस महानिदेशक ड्रमों के सामने की जगह पर जाएंगे। द्वितीय परेड कमांडर आगे बढ़ेगा और कलर को ड्रमों पर से उठाएगा और पुलिस महानिदेशक को सौंपेगा, जो इस कलर को विशिष्ट/अति विशिष्ट व्यक्ति कलर प्रदान करेगा। बैंड ''फन फेयर'' बजाएगा। ध्वज अधिकारी फिर उठेगा और अपनी जगह लेगा।

(3) विशिष्ट/अति विशिष्ट व्यक्ति सलामी मंच की ओर आएगा। धार्मिक गुरू परेड ग्राउन्ड से बाहर सलामी मंच के पीछे अपने स्थान पर चला जाएगा और जब तक परेड सम्पन्न नहीं होती तब तक वहां रहेगा।

(4) परेड कमांडर अपने मूल स्थान पर वापिस आ जाएगा। ध्वज अधिकारी उसी स्थान पर खड़ा रहेगा।

परेड कमांडर अब परेड को ''विश्राम'' में लाएगा ताकि यह बोध हो कि समारोह खत्म हो गया। कुछ पल के बाद वह परेड को ''सावधान'' की स्थिति में लाएगा।

खंड–13

निरीक्षण लाइन पर परेड की पुनः विरचना

(1) निरीक्षण लाइन पर परेड की पुनः विरचना के लिए परेड कमांडर निम्नलिखित शब्दों में से एक के बाद एक लगातार कमाण्ड करेगा।

(क) ''बाजू दल पीछे मुड़'' (बगली रक्षी पीछे मुडेंगे)

(ख) ''परेड लाइन पर बनेगी बाजू दल आधा दाहिने बाहिने मुड़'' (बगली रक्षी आधे दांए एवं आधे बाएं मुड़ेंगे)

(ग) ''बाजू दल दाहिने और बाएं से तेज चल'' (बगली रक्षी तेज कदमों से मार्च करते हुए निरीक्षण लाइन पर पुनः विरचना करेंगे)

(घ) ''बाजू दल थम'' (बगली रक्षी रुक जाएंगी)

(ङ) ''बाजू रक्षी आगे बढ़ेगा पीछे मुड़'' (बगली रक्षी पीछे मुड़ जाएंगे और सलामी मंच की तरफ मुंह करेंगे)

(च) ''परेड मध्य सज'' (परेड बीच से ड्रमों से पुनः सज जाएगी)

अब परेड निरीक्षण लाइन पर पुनर्विरचना कर लेगी सिवाय उन ड्रमों के जो परेड ग्राउन्ड के बीच में रखे हुए हैं।

परेड कमांडर परेड को ''विश्राम'' की स्थिति में लाएगा और कमाण्ड देगा '' ड्रमर्स ड्रम उठाओ'' इस पर ड्रमर्स लाइन में आएंगे अपने ड्रम उठाएंगे और बैंड में शामिल हो जाएंगे और वे मार्च के समय ड्रम बजाएंगे। ड्रमर्स के बैंड में शामिल होने के बाद परेड कमांडर परेड को सावधान की स्थिति में लाएगा। नए कलर के मार्गरक्षी अब ध्वज अधिकारी के साथ शामिल हो जाएंगी।

परेड कमांडर अब कमाण्ड करेगा

''निशान स्थान लो''

इन शब्दों के कमाण्ड पर ध्वज अधिकारी निरीक्षण लाइन पर आएगा ''दाहिने चल'' कर सलामी मंच की तरफ मुंह करके जगह लेगा।

जब ध्वज अधिकारी कलर को निरीक्षण लाइन पर लाएगा तो परेड कमांडर इन शब्दों की कमाण्ड करेगा–

''परेड निशान को सम्मान देगी, जनरल सैल्यूट''

''सलामी शस्त्र'' इसके बाद परेड नए कलर का अभिवादन करेगी। इसके बाद परेड कमांडर परेड को ''कन्धे शस्त्र'' व ''बाजू शस्त्र'' की स्थिति में ले आएगा।

खंड–14

समारोह मार्च पास्ट

(1) इसके बाद परेड समारोह मार्च पास्ट करेगी जिसमें परेड दो बार मार्च पास्ट करेगी। पहले धीमी गति से और फिर तेज गति से। प्लाटूनों द्वारा मार्च पास्ट से संबंधित प्रक्रिया का अध्याय–16 (ड्रिल समारोह के अध्याय) के खण्ड–16 व खण्ड–17 में वर्णित है। अधिकारियों, सैनिकों एवं कलर की जगह उसी प्रकार होगी जैसे किसी उस अध्याय के परिशिष्ट ''एफ'' में दर्शाया गया है। इस प्रकार की मार्च पास्ट सम्बन्धी प्रक्रिया का वर्णन अध्याय 20 के खंड–7 में भी दिया गया है। (पासिंग आउट परेड के अध्याय में)

(2) यदि मार्च पास्ट कम्पनियों द्वारा किया जाना हो तो वही प्रक्रिया अपनाई जाएगी जैसे पहले धीमी गति और फिर तेज गति से रक्षी द्वारा मार्च पास्ट संबंधी चर्चा अध्याय–16 के खंड 14 कर चुके हैं। अधिकारियों की जगह आदमियों और कलर आदि भी उसी अध्याय में दिए गए परिशिष्ट 'घ' के अनुसार होंगे। फिर भी उस प्रक्रिया में दी जाने वाली कमाण्ड का एक लघु रूप नीचे दिया जा रहा है–

(क) परेड कमांडर निम्नलिखित कमाण्ड करेगा–

''परेड निकट लाइन चल''

''परेड कन्धे शस्त्र''

''परेड तीनों तीन के कॉलम में दाहिने चलेगा दाहिने मुड़''

''परेड बाजू से तेज चल''

''परेड दो बार दिशा बदल बाएं घूम''

(ख) बन्द कॉलम की विरचना

जब परेड मार्च पास्ट के लिए पहुंचेगी तो आगे की लाइन जो सलामी मंच के बाएं होगी ('क' स्थल के पास) तो परेड कमांडर परेड को शब्द कॉलम बनाने का आदेश देगा।

वह निम्नलिखित कमाण्ड देगाः–

''परेड बाएं दिशा थम कर, नम्बर एक पर कम्पनियों का निकट कॉलम बना''

नम्बर एक कम्पनी अपने कमांडर की कमाण्ड पर रुक जाएगी। अन्य कम्पनियां भी अपने–अपने कमांडरों की कमाण्ड पर उनके लिए निर्धारित जगहों

पर जाकर रुक जाएगी। ध्वज अधिकारी की कमाण्ड पर पार्टी अपनी जगह लेगी।

परेड रुकने के बाद परेड कमांडर निम्नलिखित कमाण्ड एक के बाद एक लगातार करेगाः–

''परेड बाजू शस्त्र''

''परेड दाहिने सज''

''परेड सामने देख'' (सज्जा समाप्त होने के बाद)

(3) मार्च पास्ट : सज्जा होने के बाद परेड कमांडर कमाण्ड करेगा ''परेड दाहिने से बारी–बारी कम्पनियों के कॉलम में धीरे–धीरे तेज चाल में मंच से गुजरेगी, फासला 20 कदम, नम्बर एक कम्पनी आगे''

इसके बाद प्रत्येक कम्पनी कमांडर निम्नलिखित शब्दों में कमाण्ड देगाः–

(क) ''नम्बर.....कम्पनी आगे बढ़ेगी, दाहिने से धीरे चल''

(ख) ''नम्बर.....कम्पनी खुली लाइन चल'' पाइंट 'ख' पर कम्पनी खुली क्रम में आएगी मार्च जारी रखेगी)

(ग) ''नम्बर.....कम्पनी दाहिने देख'' (पाइंट 'ग' कम्पनी अपनी आंखें दाहिने घुमाएगी)

(घ) ''नम्बर.....कम्पनी सामने देख'' (पाइंट 'घ' पर कम्पनी आंखें सामने करेगी)

(ङ) ''नम्बर.....कम्पनी निकट लाइन चल'' (कम्पनी उचित क्रम में आ जाएगी और मार्च जारी रखेगी)

विभिन्न चिह्नों के विवरणों (जैसे पाइंट आदि के लिए) व निरीक्षण ग्राउन्ड के अन्य विवरणों के लिए कृपया अध्याय 16 के खंड 2 को देखें।

(च) दाहिने कोने पर पहुंचने पर (पाइंट च) परेड कमांडर (पाइंट च) कमाण्ड देगा – ''परेड थम कर, कम्पनी का निकट कॉलम बना''

इसके बाद प्रत्येक कम्पनी कमांडर अपनी कम्पनी को रोकने के लिए कमाण्ड देगा नं. ..... कम्पनी थम।

(छ) परेड के रुकने के बाद परेड कमांडर परेड को दाहिने मोड़ेगा और इन शब्दों में कमाण्ड करेगा–

''परेड दाहिने से तीनों तीन के कॉलम में आगे बढ़ परेड दाहिने मुड़''

(ज) परेड के दाहिने मुड़ने के बाद प्रत्येक कम्पनी कमांडर कमाण्ड देगा ''नं..... कम्पनी बाएं से बाएं घूम तेज चल'' इस प्रर प्रत्येक कम्पनी के कमांडर पर एक के पीछे एक चलेगी।

(झ) मार्च पोस्ट तेज गति से : अब कम्पनी बन्द कॉलम में बिना कहीं रुके तेज गति से मार्च पास्ट करेगी। सभी कम्पनियां विशिष्ट/अति विशिष्ट व्यक्ति को जैसे धीमें मार्च के समय सलामी मंच के पास अभिवादन किया था फिर से वैसा अभिवादन करेगी।

(ञ) जब परेड निरीक्षण लाइन पर अपनी मूल जगह पर पहुंच जाए तो प्रत्येक कमांडर अपनी कम्पनी को रोकने के लिए कमाण्ड करेगा–

''नं. .....कम्पनी थम''

जब परेड रुक जाएगी तो परेड कमांडर निम्नलिखित शब्दों में कमाण्ड करेगा–

''परेड आगे बढ़ेगी, बाएं मुड़''

''परेड बाजू शस्त्र''

''परेड मध्य सज'' (ड्रम की आवाज पर परेड तैयार होगी)

टिप्पणी : यदि इस अध्याय के भाग–1 खंड–7 में दिये गए अनुसार अपेक्षित है तो कलर को सलामी मंच के पास झुकाया जा सकता है।

खंड–15

निरीक्षण क्रम में बढ़ना और अति विशिष्ट व्यक्ति का भाषण

अध्याय–16 के खंड–18 में दी गई प्रक्रिया के अनुसार परेड निरीक्षण क्रम के अनुसार आगे बढ़ेगी। विशिष्ट/अति विशिष्ट व्यक्ति अपना भाषण देगा।

भाषण समाप्त होने के बाद विशिष्ट/अति विशिष्ट व्यक्ति का जय जयकार होगा जैसा कि अध्याय–19 के खण्ड–3 में बताया गया है।

खंड–16

कलर की वापसी

उपयुक्त प्रक्रिया के बाद परेड कमाण्ड देगा–

''परेड सावधान''

''परेड कन्धे शस्त्र''

''निशान जगह लो''

अन्तिम कमाण्ड होने पर कलर पार्टी सलामी मंच के बाएं से मार्च करेगी और ध्वज अधिकारी के इन शब्दों के कमाण्ड पर अपने क्रियाकलाप करेगी–

क. 'निशान टोली कन्धे शस्त्र'

ख. 'निशान टोली, मध्य से तेज चल'

कलर पार्टी द्वारा सलामी मंच के बाएं तरफ होने पर परेड कमांडर कमाण्ड देगा–

''निशान कूच कर''

अब कलर पार्टी परेड ग्राउन्ड के बाहर जाएगी और इसी समय परेड इस कमाण्ड पर कलर का अभिवादन करेगी–

''परेड निशान को सम्मान देगी जनरल सैल्यूट, सलामी शस्त्र''

जब तक कलर पार्टी मैदान से बाहर नहीं चली जाती परेड सलामी शस्त्र की स्थिति में रहेगी। बैंड जनरल सैल्यूट की धुन बजाएगा।

खंड–17

परेड का सौंपना

कलर पार्टी के मैदान से जाने के बाद परेड कमांडर निम्नलिखित कमाण्ड करेगा–

(क) ''परेड कन्धे शस्त्र''

(ख) ''परेड बाजू शस्त्र''

(ग) ''अधिकारी एसओएस किर्च वापिस करेंगे वापिस किर्च'' (सभी अधिकारी एवं एसओएस अपनी तलवारें वापिस खींच लेंगे)

(घ) ''आफिसर मेरे बाएं लाइन बन, सूबेदार मेजर परेड कूच के लिए स्थान लो''

(इस कमाण्ड पर सभी अधिकारी परेड कमांडर के बांई तरफ लाइन बना लेंगे। सूबेदार मेजर परेड को समाप्त करने के लिए जगह लेगा)

(ङ) ''आफिसर्स् दाहिने से तेज चल'' (विशिष्ट/अतिविशिष्ट व्यक्ति से परिचय के लिए)

(च) ''आफिसर्स् थम'' (अधिकारी सलामी मंच के सामने आकर रुक जाएंगे)

(छ) ''आफिसर्स् सैल्यूट'' (सभी अधिकारी विशिष्ट/अति विशिष्ट व्यक्ति को सैल्यूट देंगे।)

अधिकारियों द्वारा सैल्यूट देने के बाद विशिष्ट/अति विशिष्ट व्यक्ति को परिचय दिया जाएगा। वे उनसे हाथ मिलाएगा। अधिकारी सलामी मंच के सामने पंक्ति बनाएंगे परेड कमांडर निम्नलिखित कमाण्ड करेगा–

''आफिसर्स् सैल्यूट (सभी अधिकारी विशिष्ट/अति विशिष्ट को सैल्यूट देंगे)

''आफिसर्स् लाइन तोड़'' (सभी अधिकारी अलग–अगल हो जाएंगे)

अधिकारियों के अलग होने पर सूबेदार मेजर परेड को समाप्त करने के लिए निम्नलिखित कमाण्ड करेगा–

''परेड कन्धे शस्त्र''

''परेड अन्दर मुड़'' (इस कमाण्ड पर सभी कम्पनियां अन्दर की तरफ मुड़ जाएंगी।)

''परेड दांए–बाएं घूम तेज चल''

सभी कम्पनियां किले की दीवार के पीछे चली जाएंगी। बैंड भी कुमतल मार्च करता हुआ किले की दीवार के पीछे चला जाएगा और किले का द्वार बन्द हो जाएगा।

निशान टोली

अध्याय XXXI

फेयरवैल परेड (विदाई परेड)

प्रस्तावना

(1) फेयरवैल परेड (विदाई परेड) सामान्यतः किसी वरिष्ठ अधिकारी के सेवानिवृत्ति एवं स्थानान्तरण के अवसर पर दी जाती है।

(2) फेयरवैल परेड जाने वाले अधिकारी द्वारा बल/यूनिट के लिए की गई सेवाओं के प्रति सम्मान दर्शाने के लिए दी जाती है।

(3) जैसे कोई अधिकारी सेवानिवृत्ति/स्थानांतरण पर जा रहा है और उसका स्थान लेने वाला नया अधिकारी आने वाला है तो यह अपेक्षित है कि नए व्यक्ति को भी परेड में उपस्थित होना चाहिए, यदि सम्भव हो।

खंड–1

सामान्य निर्देश

फेयरवैल परेड एक समारोह का अवसर होता है, अतः सामान्य व्यवस्था की पूरी प्रक्रिया अपनाई जानी चाहिए जैसे परेड ग्राउन्ड यूनिट आर्गेनाइजेशन, निरीक्षण अधिकारी का स्वागत, निरीक्षण, मार्च पास्ट, अधिकारियों की पोस्ट एवं समीक्षा सम्बन्धी आदेश जो अध्याय 16 में दिए गए हैं, के अनुसार की जानी चाहिए। अधिकारियों को इसी अध्याय के खंड–8 में दिए गए समारोह परेड संबंधी निर्देशों का अनुपालन करना होगा।

खंड–2

परेड की संख्या

(1) फेयरवैल परेड की संख्या जाने वाली अधिकारी के रैंक के अनुसार होनी चाहिए। आडम्बर रूप में नहीं होना चाहिए। परेड की संख्या विभिन्न अधिकारियों के रैंकों के अनुसार होनी चाहिए। जिनका विवरण नीचे दिया जा रहा है (किसी भी मामले में निर्धारित संख्या से अधिक नहीं होनी चाहिए।)

(2) पुलिस महानिदेशक, अपर पुलिस महानिदेशक एवं पुलिस महानिरीक्षक की (फेयरवैल) विदाई परेड में कम से कम 2 बैंड जिसमें 40 बैंड टुकड़ी होना आवश्यक है जबकि महानिरीक्षक के लिए 30 बैंड टुकड़ी हो तथा पुलिस महानिरीक्षक एवं पुलिस अधीक्षक के लिए एक बैंड संगठित किया जाना चाहिए।

क्र.सं.	जाने वाले अधिकारियों का रैंक	परेड कमाण्डर का रैंक	परेड 2/आई.सी. का रैंक	परेड की संख्या
1.	पुलिस महानिदेशक	अपर पुलिस अधीक्षक	पुलिस उपाधीक्षक	तीन कम्पनियां, घुड़सवार दस्ता, यदि उपलब्ध हो, मोटर कॉलम जैसे सिग्नल्स, संचार वाहन आदि यदि उपलब्ध हो।
2.	अपर महानिदेशक	–वही–	–वही–	2 से 3 कम्पनी, घुड़सवार दस्ता यदि उपलब्ध हो।
3.	पुलिस महानिरीक्षक	ए.सी.पी./पुलिस उपाधीक्षक	इंस्पेक्टर	2 कम्पनी घुड़सवार दस्ता, यदि उपलब्ध हो।
4.	पुलिस उपमहानिरीक्षक	–वही'–	–वही–	5 प्लाटून, घुड़सवार दस्ता, यदि उपलब्ध हो।
5.	वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक/एस.पी./कमाडेण्ट	–वही–	–वही–	4 प्लाटून, घुड़सवार दस्ता, यदि उपलब्ध हो।

बिगुलरों की संख्या निम्नलिखित अनुसार होगीः–

रैंक		बिगुलरों की संख्या
क.	महानिदेशक / अपर महानिदेशक	8–12
ख.	महानिरीक्षक	6
ग.	पुलिस उप–महानिरीक्षक	4
घ.	व.पु. अधीक्षक / पु.अधी. / कमांडेण्ट	2

(4) पुलिस महानिदेशक व अपर पुलिस महानिदेशक की विदाई परेड के लिए किले की दीवार के दोनों तरफ 8 से 12 लांसर भी यदि उपलब्ध हों तो खड़े होने चाहिए।

खंड–3

परेड की विरचना

(1) कार्यक्रम के शुरू होने से 20 मिनट पहले फेयरवैल परेड की विरचना की जानी चाहिए। यह विरचना किले की दीवार के पीछे होनी चाहिए। (यदि किला उपलब्ध हो) अन्यथा परेड ग्राउण्ड के बाहर प्लाटूनवार, राइफलों के साथ ''बाजू शस्त्र'' (शस्त्र आदेशों) की स्थिति में और संगीनें लगी हुई हों आधी प्लाटून किले के द्वार के दांई तरफ खड़ी होगी (अथवा परेड ग्राउन्ड के प्रवेश स्थान के पास) प्लाटून नं. 1 गेट के पास खड़ी होगी और अन्य प्लाटून गेट के दाहिने हाथ पर एक के बाद अपने क्रमानुसार खड़ी होंगी। बाकी बची हुई आधी, गेट के बाएं तरफ खड़ी होगी तथा अन्तिम प्लाटून उसके दांई तरफ अपने क्रमानुसार खड़ी हो जाएगी। जैसे यदि 6 प्लाटून परेड में भाग ले रही हैं तो प्लाटून नं. 1, 2, 3 किले के गेट के दाहिने तरफ तथा किले के गेट के बांई तरफ 6, 5, 4 के क्रम में खड़ी होंगी। यदि 5 प्लाटून भाग ले रही हैं तो किले के गेट के दांई तरफ 1, 2, 3 पर खड़ी होगी और बांई तरफ 5, 4 की संख्या वाली प्लाटून खड़ी होगी।

परेड 2/आईसी सामने की स्थिति में खड़ी होगी। परेड 2/आईसी एवं प्लाटून कमांडर अपनी तलवार सीधी करके रखेगा। घुड़सवार दस्ता यदि उपलब्ध है तो परेड के पीछे खड़ा होगा उसके बाद बैंड परेड के पृष्ठभूमि में खड़ा होगा। किले की दीवार के पीछे बिगुलर एवं लांसर खड़े होंगे।

2. परेड शुरु होने के 15 मिनट पहले दो गेट कीपरों द्वारा किलो का गेट खोल दिया जाएगा। दो बिगुलर परेड ग्राउण्ड में गेट के बीच की दीवार की तरफ से मार्च करते हुए निरीक्षण लाइन की तरफ जाएंगे और मार्कर कॉल की आवाज करेंगे। इसके बाद बिगुलर मुडेंगे और किले की दीवार की पृष्ठभूमि की तरफ मार्च करेंगे। इसके बाद मार्कर निरीक्षण लाइन पर जाकर अपनी स्थिति लेंगे।

परेड ग्राउन्ड की तरफ किले की दीवार के ऊपर बिगुलर एवं लांसर भी अपने निर्धारित स्थानों पर खड़े हो जाएंगे।

मार्कर काल के 3 मिनट बाद बिगुलर फाल इन काल (अग्रिम काल) की आवाज करेंगे। इसके बाद परेड 2/आईसी परेड को ''सावधान'' एवं ''कन्धे शस्त्र'' की स्थिति में लाएंगे और निरीक्षण लाइन की तरफ मार्च करेंगे और कमाण्ड करेंगे ''परेड दांए–बाएं से तेज चल'' गेट को पार करने के बाद दांए तरफ की प्लाटून (नं. 1, 2, 3) दीवार के दाईं तरफ और बांई तरफ की प्लाटून (6, 5, 4) दीवार के बाईं तरफ मार्च करेगी। मार्कर पर पहुंचने पर प्लाटून मार्क के लिए समय लेगी। ड्रम के बजने पर सभी प्लाटूनें निरीक्षण लाइन पर अपने–अपने निर्धारित स्थानों पर पहुंच जाएंगी। परेड रुकेगी, इसके बाद परेड कमांडर निम्नलिखित कमाण्ड एक के बाद एक लगातार देगाः–

''परेड दांए–बाएं मुड़''

''परेड बाजू शस्त्र''

''परेड खुली लाइन चल''

''परेड मध्य सज''

घुड़सवार दस्ता बाएं तरफ खड़ा होगा। बैंड जिसमें 8 सदस्य होंगे, निरीक्षण लाइन के पीछे केन्द्र में खड़ा होगा।

परेड कमांडर के आने पर परेड 2/आईसी निम्नलिखित कमाण्ड करेगीः–

''परेड सावधान''

''परेड कन्धे शस्त्र''

''परेड सलामी देगा, परेड सलामी शस्त्र'' (बैंड नहीं बजेगा)

''परेड कन्धे शस्त्र''

''परेड बाजू शस्त्र''

तब परेड 2/आईसी परेड कमांडर की ओर मार्च करेगी। उनका अभिनन्दन करेगी और परेड का दायित्व उनको सौंप देगी।

परेड कमांडर एवं परेड 2/आईसी दोनों अपने स्थान लेंगे और परेड कमांडर परेड को ''विश्राम'' में लाएगा।

खंड–4

पदमुक्त (जाने वाले) अधिकारी का आगमन

जैसे ही पद मुक्त (जाने वाला) अधिकारी आते हुए दिखे बिगुलर ''फनफेयर'' की आवाज करेंगे। परेड कमांडर तुरन्त कमाण्ड देगा, ''विदायगी परेड सावधान'' इसके बाद ''परेड कन्धे शस्त्र''।

जैसे ही पद–मुक्त (जाने वाले) अधिकारी के साथ अन्य वरिष्ठ अधिकारी अनुरक्षक के रूप में चलते हैं और वह सलामी मंच पर जाकर अपनी स्थिति लेता है परेड उसको शस्त्र प्रस्तुत करेगी और परेड कमांडर निम्नलिखित कमाण्ड देगाः–

''परेड जनरल सैल्यूट, सलामी शस्त्र''

तत्पश्चात् बैंड 'जनरल सैल्यूट' धुन बजाएगा और परेड धुन समाप्त होने तक उसी स्थिति में खड़ी रहेगी।

खंड–5

पदमुक्त (जाने वाले) अधिकारी द्वारा परेड का निरीक्षण

परेड जैसे ही ''बाजू शस्त्र'' की स्थिति में आएगी परेड कमांडर सलामी मंच की ओर मार्च करेगा, रुकेगा, जाने वाले अधिकारी का अभिनन्दन करेगा और रिपोर्ट करेगाः–

''श्रीमान (विशिष्ट व्यक्ति महिला होने पर 'महोदया') विदायगी परेड आपके निरीक्षण के लिए हाजिर हैं''

इस बीच निरीक्षण जीप (यदि प्रयोग में लाने की योजना हो) जो परेड के कोने पर खड़ी होगी, सलामी मंच की तरफ पहुंचेगी। जाने वाला अधिकारी जीप के अगले हिस्से में खड़ा हो जाएगा और परेड कमांडर जीप के पिछले हिस्से में खड़ा हो जाएगा। इसके बाद जीप परेड की आगे की लाइन के सामने से दांई तरफ से बांई तरफ चलेगी (ऐसे मामले जिनमें जीप का प्रयोग नहीं होगा तो जाने वाला अधिकारी निरीक्षण लाइन तक पैदल चलकर जाएगा परेड कमांडर उसके एक कदम पीछे बांई तरफ चलेगा (जैसे ही जाने वाला अधिकारी) चाहे जीप पर हो या पैदल (पहले प्लाटून के दांई मार्गदर्शक को पार करेगा। बैंड अपनी कोई धीमी गति धुन में से एक धुन बजाएगा और तब तक बजाता रहेगा जब तक परेड का निरीक्षण समाप्त नहीं हो जाता। (यदि जाने वाला अधिकारी पैदल है तो परेड कमांडर समीक्षा के दौरान धीमा मार्च करता हुआ चलेगा।)

खंड–6

समारोह मार्च पास्ट

निरीक्षण समाप्त करने के बाद पदमुक्त (जाने वाला) अधिकारी सलामी मंच पर वापिस आ जाएगा और परेड कमाण्ड उसको सैल्यूट करेगा और वापिस अपनी जगह पर आ जाएगा। इसके बाद परेड मार्च पास्ट करेगी। मार्च पास्ट प्रक्रिया अध्याय–16 के खण्ड–17 में दी गई है। अध्याय–20 के खण्ड–7 में मार्च पास्ट प्रक्रिया की चर्चा की गई है।

खंड–7

निरीक्षण क्रम में खड़े होना एवं भाषण का दिया जाना

मार्च पास्ट समारोह पूरी होने पर और परेड के निरीक्षण लाइन पर खड़े होने के बाद परेड कमांडर अध्याय–16 के खंड–18 में (अध्याय–20 के खंड–8 में दिया गया है) दी गई प्रक्रिया के अनुसार परेड को निरीक्षणक्रम में खड़े होने का कहेगा।

जब परेड रुकेगी, परेड कमांडर जाने वाले अधिकारी को जनरल सैल्यूट देने के लिए निम्नलिखित कमाण्ड करेगा;

''परेड कन्धे शस्त्र''

''परेड जनरल सैल्यूट, सलामी शस्त्र''

''परेड कन्धे शस्त्र''

''परेड विश्राम''

अब यूनिट/बल का सबसे वरिष्ठतम अधिकारी (पदमुक्त और कार्यभार ग्रहण करने वाले अधिकारियों को छोड़कर) पदमुक्त अधिकारी द्वारा किए गए कार्यों के लिए कुछ शब्द कहेगा। यह भाषण छोटा और नपा तुला होगा। अपने भाषण के बाद वह पदमुक्त (जाने वाले) अधिकारी से कुछ शब्द बोलने का अनुरोध करेगा।

खंड–8

पदमुक्त (जाने वाले) अधिकारी की जय–जयकार

पदमुक्त (जाने वाले) अधिकारी के भाषण के समाप्त होने के बाद परेड कमांडर परेड को सावधान की स्थिति में लाएगा और अध्याय–19 के खंड–3 में दी गई प्रक्रिया के अनुसार पदमुक्त (जाने वाला) अधिकारी की जय–जयकार करेगा।

खंड–9

सामान्य नोट

जयकार के बाद वरिष्ठ अधिकारी जाने वाले अधिकारी को कार्यक्रम के अनुसार अधिकारियों की मैस/कार्यालय ले जाएंगे। परेड कमांडर परेड की बागडोर परेड 2/आईसी को देगा जो परेड ग्राउन्ड के बाहर परेड को मार्च समाप्ति के लिए ले जाएगा।

यदि जाने वाले अधिकारी के भाषण के बाद कुछ सांस्कृतिक/खेल प्रदर्शन किया जाना हो तो, परेड कमांडर सलामी मंच तक मार्च करेगा, जाने वाले अधिकारी का अभिनन्दन करेगा और मार्च समाप्त करने के लिए अनुमति मांगेगा और कहेगा ''श्रीमान, परेड को कुछ करने की आज्ञा प्रदान करें।'' अनुमति लेने के बाद वह जाने वाले अधिकारी का पुनः अभिनन्दन कर अपने स्थान पर वापिस आ जाएगा और परेड की बागडोर परेड 2/आईसी को इन शब्दों में कमाण्ड सौंप देगा – ''परेड 2/आईसी संभाल परेड''। परेड 2/आईसी परेड कमांडर को सैल्यूट देगा और निम्नलिखित कमाण्ड देते हुए वापिस मुड़ेगाः–

''परेड कन्धे शस्त्र''

''परेड अन्दर को मुड़'' (इस कमाण्ड के साथ सभी प्लाटून अन्दर की ओर मुड़ जाएंगी)

''परेड दांए–बाएं घूम तेज चल''।

सभी प्लाटून किले की दीवार के पीछे चली जाएंगी। बैंड कोमेटल मार्च करते हुए किले की दीवार के पीछे जाएगा। किले का द्वार बन्द हो जाएगा।

अंत्येष्टि कवायद
(ड्रिल)

अध्याय XXXII

अंत्येष्टि–कवायद (ड्रिल)

अंत्येष्टि ड्रिल उन मृतक पुलिस कर्मियों के सम्मान में की जाती है जो सेवा के दौरान अपने प्राणों की आहुति देते हैं। तथापि पुलिस बल का प्रमुख किसी अन्य अधिकारी अथवा व्यक्ति, जो इस सम्मान का हकदार हो, को सम्मानित करने के लिए अंत्येष्टि परेड की अनुमति दे सकता है।

खंड–1

अंत्येष्टि के समय की जाने वाली कार्रवाई

1. **फायर टुकड़ी –** फायर टुकड़ी में एक हवलदार, एक नायक एक लांस नायक और बारह कान्स्टेबल होंगे जो सभी अफसरों, वरिष्ठ अफसरों (एस ओ) अवर अफसरों (यू ओ) और कान्स्टेबलों की अंत्येष्टि पर एक साथ फायर करेंगे। धीरे चाल में मार्च करते समय शस्त्र उल्टी तरफ होगा और तेज चाल में मार्च करते समय ट्रेल पर। मार्च के दौरान शस्त्र बदले जा सकते हैं किन्तु टुकड़ी आराम से मार्च न करे।

2. **उठाने वाली टुकड़ी –** इस टुकड़ी में एक अफसर, एक हवलदार और आठ उठाने वाले होंगे। ये उठाने वाले किस रैंक के हों इसका निर्धारण मृतक के रैंक के अनुसार किया जाए। उठाने वालों को मृतक की धार्मिक–प्रथाओं के बारे में समझा दिया जाए। कमांडर देखे कि झण्डा पगड़ी या टोपी तलवार या संगीन और फूल–मालाएं ठीक तरह से रखी हों और उन्हें शवपेटी या अर्थी से बांध दिया गया हो ताकि वे गिर न जाएं।

3. **खड़ा होने का क्रम –** फायर टुकड़ी कंधे शस्त्र के साथ दो रैंकों में खड़ी हो और उनके फाइलों के बीच एक कदम का फासला हो और उनका रुख उस ओर हो जिस इमारत में शव रखा हो। नायक अगली लाइन के उस ओर हो जिस ओर शवयात्रा को जाना हो। हवलदार सभी कमान शब्द बोलेगा और वह पीछे, मध्य खड़ा हो। जैसे ही शव को इमारत से बाहर निकाला जाए, वैसे ही फायर टुकड़ी का हवलादार कमान–शब्द ''सलामी शस्त्र'' कहेगा। जब शवपेटी या अर्थी को वाहन (कैरिज) में रखा जाए और जुलूस चलने के लिए तैयार हो, तो वह आदेश दे ''उल्टे शस्त्र'' ''दाहिने या बाएं मुड़'' (नायक दो कदम आगे की ओर, आगे रैंक की बीच में रहे) ''धीरे चल''।

4. वर्दी पहने हुई शोक करने वाले, बैंड और ड्रम बजाने वाले दो लाइनों में अन्दर की तरफ मुंह करके खड़े हों, जवान के बीच दो कदम का और रैंकों के बीच आठ कदम का फासला हो।

5. फायर टुकड़ी और जुलूस का अगला भाग लाइनों के बीच में से गुजरे।

जुलूस नीचे लिखे क्रम से गुजरे

(क) मार्ग रक्षी

(ख) फायर टुकड़ी

(ग) बैंड और ड्रम

(घ) गन–कैरेज पर मृत शरीर पाल उठाने वाले अन्य उठाने वाले व्यक्ति

(ङ) विलाप (शोक) करने वाले प्रमुख व्यक्ति

(च) राष्ट्रपति का विशेष प्रतिनिधि, यदि उसे आना हो।

(छ) वर्दी पहन कर आए हुए शोक करने वाले व्यक्ति वरिष्ठता के क्रम में खड़े होंगे (सबसे वरिष्ठ सबसे आगे)।

(ज) शोक करने वाले व्यक्ति जो वर्दी में न हों।

(झ) ट्रुप जब धीरे चाल से चले और क्रम से हथियार उल्टे तो आन्तरिक पार्श्व से आरंभ करके तीनों तीन की लाइन में चलें।

(ञ) पिछली टुकड़ी (डिटैचमेंट)।

(ट) आरूढ़ यूनिटें जो मार्ग रक्षियों का ही एक हिस्सा हैं।

(ठ) मोटर कार या अन्य वाहन, जब तक उनसे किसी और मार्ग पर से हो कर जाने के लिए न कहा जाए।

टिप्पणी : पाल उठाने वालों की अनुपस्थिति में अन्य उठाने वाले (बेयरर) गन–कैरेज के दोनों ओर मार्च करेंगे। पाल उठाने वालों के मौजूद होने पर वे ही गन–कैरेज के दोनों ओर चलेंगे और अन्य उठाने वाले (बेयरर) बाहर की ओर दो कदम के फासले पर रहेंगे। पाल उठाने वालों की पोजीशन शवपेटी के दोनों और वरिष्ठता के क्रम में होगी, सबसे वरिष्ठ अफसर दाहिनी ओर सबसे पीछे होगा, उससे अगला वरिष्ठ अफसर बांयी ओर सबसे पीछे होगा और इसी प्रकार क्रम चलेगा।

यदि विलाप करने वाले व्यक्ति किसी कारण से जुलूस के साथ चलने में असमर्थ हो तो वे कार से किसी और रास्ते से आएंगे।

6. बैंड और ड्रम

जब जुलूस मुर्दाघर से 300 कदम दूर रह जाए तो बैंड या ड्रम ''डेड मार्च'' बजाना आरंभ करेंगे और उतने फासले तक बजाते रहेंगे जहां तक बजाने के लिए प्रभारी अफसर ने मार्च आरम्भ करने से पहले आदेश दिया हो, कब्रिस्तान या शमशान से कुछ दूर पहले प्रभारी अफसर फायर दल को ''तेज चल'' का कमाण्ड दे। (इस समय बैंड बजना बन्द हो जाएगा), तो फायर दल का प्रभारी हवलदार ''धीरे चल'' का कमाण्ड देगा और बैंड और ड्रम फिर से बजने लगेंगे।

खंड–2

कब्रिस्तान या शमशान पर पहुंचने पर की जाने वाली कार्रवाई

जब जुलूस का अगला भाग कब्रिस्तान या शमशान घाट के समीप पहुंचे तो जुलूस के अगले भाग पर फायर दल की लाइनें तथा बैंड और ड्रम बजाने वाले व्यक्तियों की लाइनें छः कदम खुल जाएंगी और फायर दल के प्रभारी हवलदार के कमाण्ड पर थम जाएंगी। जब हवलदार ''अन्दर मुड़'' और ''शोक शस्त्र'' का आदेश देगा। अर्थी उठाने वाले अर्थी या शवपेटी को उठायेंगे और उसे पैरों वाले भाग से फायर–दल की लाइनों के बीच में ले जाएंगे। अब जुलूस का क्रम इस प्रकार से होगा, धर्म, पुरोहित, पाल बेयरर शव को उठाए हुए और उठाने वाले (यदि स्थान के अभाव के कारण वे अपनी सही स्थान पर न चल पाएं तो वे शव के पीछे चलें), शोक करने वाले व्यक्ति बैंड और ड्रम और फायर–दल। तब शोक करने वाले कब्र या चिता के चारों ओर फायर करेंगे, थम करेंगे और बिना किसी कमाण्ड के अन्दर की ओर मुख करेंगे। फायर दल शोक करने वालों के पीछे चलेगा और फिर कब्र या चिता के पास उसे प्रभारी हवलदार के आदेश से थम कर दिया जाएगा। प्रभारी हवलदार कमाण्ड देगा, ''सावधान उल्टा शस्त्र,–रैंक दाहिने या बाएं मुड़–धीरे चल बाएं मुड़, शोक शस्त्र''। अगली टुकड़ी (यदि उपस्थित हो) को पूर्व निर्धारित स्थान पर रोक दिया जाएगा।

खंड–3

सर्विस के दौरान प्रक्रिया

ज्योंही शोक करने वाले प्रमुख व्यक्ति पोजीशन में हो जाएं और कब्रिस्तान (या दहन) में होने वाली क्रिया की तैयारी हो जाए, अर्थी उठाने वाले शवपेटी (या अर्थी) या लाश को टिकठी के ऊपर उठाएंगे, उस पर से सबसे पहले झण्डा, फिर पगड़ी या टोपी फिर तलवार या संगीन, फूल–मालाएं आदि अलग करेंगे और फिर उसे कब्र या चिता पर रख देंगे ओर उसे उठाने वाले जवान कब्र या चिता से अलग हट कर विश्राम की पोजीशन में खड़े हो जाएंगे। यह क्रिया समाप्त होने पर यदि ''वौली'' फायर की जानी हो, तो हवलदार आदेश देगा–

''फायरिंग टोली, सलामी शस्त्र'', ''कन्धे शस्त्र''

''फायरिंग टोली वौली तथा खाली कारतूस भर–फायर कर'' (इसी समय दो और वौली फायर की जाएंगी)

''खाली कर''

''बाजू शस्त्र''

''लगा संगीन''

''कन्धे शस्त्र''

''सलामी शस्त्र''

यदि कोई वौली फायर न की गई हो तो हवलदार आदेश देगाः–

''सलामी शस्त्र''

''कन्धे शस्त्र''

''बाजू शस्त्र''

''लगा संगीन''

'कन्धे शस्त्र''

''सलामी शस्त्र''

टिप्पणीः यदि अंत्येष्टि के समय जवान रास्ते पर लाइन बनाने के लिए तैनात किए गए हों तो वे पहले अंत्येष्टि के जुलूस को ''सलामी शस्त्र'' करेंगे दुबारा ''शोक शस्त्र करने से पहले ''उल्टा शस्त्र'' करेंगे। जब अंत्येष्टि दल का अगला भाग उसके निकट पहुंचे तो वे सामान्यतः सलामी शस्त्र'' करेंगे और जब फायरिंग उसके पास पहुंचे तो वे ''उल्टा शस्त्र'' करेंगे।

खंड–4

दागने के प्रक्रिया

तीन फायर टोली के पास राइफल हो तो उसके द्वारा तीन बार दागने की निम्नलिखित प्रक्रिया होगीः–

(क) ''शलक–भर'' इस आदेश पर भरने की पोजीशन में आएं भरें राइफल की नालमुख का रुख ऊपर की ओर हो ताकि सामने खड़े जवान का सिर बचा रहे।

(ख) ''पेश कर'' इस आदेश पर राइफलों को फायर करने की पोजीशन में 135 डिग्री के कोण तक लाया जाए सिर बिल्कुल स्थिर रखा जाए और निशान लगाने की कोई कोशिश न की जाए।

(ग) ''फायर'' इस आदेश पर प्रत्येक व्यक्ति ''पेश कर'' की पोजीशन में रहते हुए एक साथ घोड़ा दबाएगा, जब तक ''दोबारा भर'' या ''खाली कर'' का कमाण्ड न दिया जाए तब तक इसी स्थिति में रहेगा – इसी प्रकार दो बार और दागी जाए।

(घ) ''खाली कर'' राइफल को भरने की पोजीशन में लाएं और भरने की पोजीशन में रहते हुए उन्हें खाली कर राइफल को 135 डिग्री के कोण पर रखें।

''कन्धे शस्त्र''

''बाजू शस्त्र''

खंड–5

शवपेटी ले जाने की प्रक्रिया

शवपेटी (या अर्थी) को हमेशा पहले पैरों की तरफ से आगे ले जाया जाए और उठाने वाले (बेयरर) सामान्यतः उठाने वाली टोली के प्रभारी अफसर या प्रभारी एनसीओ के कमाण्ड के अनुसार कार्य करेंगे। कमान शब्द हमेशा धीरे नीची आवाज में बोले जाएंगे जैसे कि ''उठाने को तैयार'' ''धीरे चल'', ''थम'' रखने को तैयार। ये क्रियाएं किसी सिग्नल द्वारा नियंत्रित नहीं की जा सकती, इनके लिए कमान शब्द बोलना आवश्यक है।

जब शव को उठाया हुआ हो तो उठाने वाली टोली समान फासले पर होनी चाहिए, शव पेटी (या अर्थी) के दोनों ओर चार–चार जवान होने चाहिए, उनके शस्त्र आड़े और एक दूसरे के कन्धे के चारों ओर होने चाहिए, शवपेटी (या अर्थी) कन्धे पर हो या चेहरा शवपेटी (अर्थी) के पास हो। शवपेटी (अर्थी) उठाने वाले व्यक्ति की पगड़ी या टोपी किसी एनसीओ या इस प्रयोजन के लिए विशेष रूप से तैनात ड्रमर द्वारा ले जाई जाए। शवपेटी (या अर्थी) को अनावश्यक रूप से हिलने–डुलने से बचाने के लिए शवपेटी (अर्थी) उठाने वाले जवान अन्दर की तरफ वाले पैर से चलना आरम्भ करें।

शवपेटी (या अर्थी) उठाने वाली टोली का प्रभारी एनसीओ पीछे की ओर तथा टोली के मध्य में 2 कदम के फासले पर रहेगा।

खंड–6

उल्टा शस्त्र और शोक–शस्त्र करने की प्रक्रिया

1. सलामी शस्त्र से उल्टा रास्ता

''गिनती से उल्टा शस्त्र, स्क्वाड–एक'' – इस कमाण्ड पर दांया घुटना मोड़ कर पैर को बाएं के

साथ रखें जैसा कि सलामी शस्त्र से कन्धे शस्त्र में किया जाता है। उसके साथ ही राइफल को शरीर के सामने की ओर, दोनों बाजुओं की पूरी लम्बाई में रखें, बांया हाथ जितना नीचे की ओर, दोनों बाजुओं की पूरी लम्बाई में रखें, बांया हाथ जितना नीचे संभव हो, रखें।

''स्क्वाड–दो''– राइफल के कुन्दे को शरीर की दिशा में बाजुओं के बीच में ला कर (हाथ ही पकड़ बदल कर) धीरे–धीरे तब तक उल्टे जब तक कि वह पूरी उल्टी न हो जाए, उसका नालमुख भूमि की ओर हो, उसकी मैगजीन (बीच का भाग) शरीर की ओर छाती की सीध में हो, बाजू सीधे हो, दोनों हाथ के अंगूठे और उंगलियां राइफल की चारों ओर हों।

''स्क्वाड–तीन'' – बाएं हाथ के कुन्दे का छोटा वाला भाग पकड़ कर हाथ का पिछला हिस्सा बांयी ओर करके और जल्दी से राइफल सीधे हाथ से संतुलन के बिन्दु से पकड़ कर हाथों की पोजीशन परस्पर बदली जा सकती है।

''स्क्वाड–चार'' – राइफल को दांए हाथ से छोड़कर बाएं बगल में पकड़ें, इस स्थिति में उसकी मैगजीन सबसे ऊपर शरीर के सामने की ओर हो, नालमुख पीछे की तरफ हो, राइफल एक ओर हो, कोहनी राइफल के साथ हो तथा राइफल 45 डिग्री के कोण पर हो। इसी समय दांई बाजू शरीर के पीछे, कमर की पेटी के साथ–साथ ले जा कर राइफल को बाहरी बैंड के पास पकड़ें हाथ का पिछला भाग नीचे की ओर हो।

टिप्पणी : उल्टी राइफल केवल धीरे चाल में मार्च करते समय पकड़ी जाती है।

2. उल्टा शस्त्र से बदल शस्त्र

'गिनती शस्त्र से बदल शस्त्र' – दांए हाथ से राइफल छोड़ दें और दांया हाथ तेजी से बगल की ओर गिराएं। उसी समय राइफल को बाएं हाथ से कुन्दे के छोटे भाग से पकड़े, उसकी मजल आगे की ओर झूलने दें ताकि राइफल सीधी खड़ी (लम्ब) हो। बांया हाथ छाती की जेब की सीध में रखें।

''स्क्वाड–दो'' :

राइफल शरीर के सामने से ले जा कर दांए हाथ से जो कि छाती को जेब की सीध में हो, कुन्दे के छोटे भाग को पकड़ें और बांया हाथ तेजी से बांई ओर गिराएं।

''स्क्वाड–तीन'' :

राइफल बगल में रखकर उसे बाएं हाथ से, हाथ शरीर के पीछे से ले जाकर उल्टी पोजीशन में बाहरी बैंड के पास के पकड़ें।

टिप्पणी : मार्च करते समय बाएं पैर की अनुक्रमिक बीट के अनुसार गतिविधियां की जाती हैं।

3. उल्टा शस्त्र से शोक शस्त्र

टिप्पणी : केवल तब किया जाता है, जब राइफल बांयी बगल में हों।

शोक – शस्त्र

दांया हाथ तेजी से दांयी ओर ले जाएं और बाएं हाथ से राइफल सीधी खड़ी पोजीशन में लाएंः नालमुख बाएं पैर के पास पंजे और जूते के फीते के बीच में रखें ताकि कुन्दा शरीर के पास के सामने रहे, सिर और आंखें दांयी ओर करें और दांयी ओर कन्धे के स्तर तक ले जाएं, बाजू सीधी हो, उंगलियां फैली हुई, हाथ का पिछला भाग ऊपर की ओर हो। दांया बाजू सीधा रखे हुए सामने की ओर 45 डिग्री तक ले जाएं। बाजूओं को झुका कर दांयी हथेली कुन्दे की प्लेट पर रखें, हाथ का पिछला भाग ऊपर की ओर हो उंगलियां कुन्दे के बांयी ओर फैली हो, अंगूठा कुन्दे के अगले भाग के चारों ओर हो, इसके बाद रुकें और सिर तथा आंखें सामने की ओर करें। राइफल दांए हाथ से पकड़ें और फिर बाएं हाथ से वैसा ही करें (अर्थात् पहले सिर बांयी ओर को मोड़ें आदि–आदि) कुन्दे की प्लेट पर दांयी हथेली के ऊपर बांयी हथेली रखें, फिर कुछ ठहरें और तब सिर सामने की ओर मोड़ें। इसके बाद ठहरें, दोनों कोहनियां नीचे शरीर के साथ ले जाएं और ठोढ़ी को नीची करके छाती तक ले जाएं।

उपर्युक्त कार्रवाईयों को करते समय दांए या बाएं हाथ के व्यक्ति से जैसा भी मामला हो, समय

ले लेना चाहिए।

शोक शस्त्र से सावधान

''स्क्वाड सावधान''

सिर को सावधान की सामान्य पोजीशन में रखें और साथ ही दोनों कोहनियां उठाएं ताकि अग्रवाहु भूमि के समानान्तर हो।

टिप्पणी : यह कमाण्ड हमेशा ''शोक शस्त्र'' से अन्य हरकतें करने के पहले दिया जाता है।

खंड–7

अन्त्येष्टि ड्रिल के दौरान तलवार का प्रयोग

यह प्रक्रिया अधिकारी/अधिकारियों द्वारा अन्त्येष्टि पार्टी के साथ तलवार ले जाते समय की जाएगी।

जब कमांडर शस्त्र ड्रिल के लिए कमाण्ड करेगा, उसी समय अन्य अधिकारियों के साथ–साथ कमांडर द्वारा भी तलवार की प्रक्रिया में भाग लेना होगा।

(क) सलामी शस्त्र से उल्टा शस्त्र — तलवार की एक जैसी दो बार प्रक्रिया की जाएगी।

(i) तलवार को वापिस कवर में डाला जाएगा।

(ii) तलवार को सीधे हाथ के नीचे रखें जिससे तलवार की नोक नीचे रहे और धार ऊपर की तरफ रहे तलवार की मुठ दांए हाथ में रहे। दांई कलाई शरीर के बराबर में रहे और तलवार 45^0 के कोण पर रहे।

(ख) उल्टा शस्त्र से बदल शस्त्र — तलवार के साथ यह प्रक्रिया तीन बराबर भाग में की जाएगी।

(i) सबसे पहले तलवार को सीधा रखेंगे।

(ii) उसके बाद तलवार को शरीर के पास से ले जाते हुए हाथों में बदल लें। बाएं हाथ से मूठ को पकड़ लें और दांए हाथ को नीचे की तरफ ले आएं।

(iii) अब तलवार को उल्टा करें बाएं हाथ के नीचे और दांए हाथ से तलवार के ब्लेड को पकड़ लें शरीर के पृष्ठ भाग की तरफ ले आएं कलाई शरीर के पास ले आएं और तलवार को 45^0 के कोण पर ले आएं।

तलवार को इस प्रकार नीचे लाया जाए ताकि उसकी नोक बाएं बूट की टो की सिलाई पर बीच में हो (शोक शस्त्र) और दोनों पैरों के बीच तलवार की धार दांई तरफ रहे इसके लिए सबसे पहले दांए हाथ से मूठ को पकड़ें और बाएं हाथ को बांई तरफ कर लें।

(ग) उल्टा शस्त्र — अब धीरे–धीरे तलवार को नीचे लाएं कि उसकी नोक बाएं बूट की टो की सिलाई पर बीच में हो और धार दाईं तरफ हो। बाएं हाथ को बांई तरफ बढ़ाएं ताकि हाथ का पिछला हिस्सा ऊपर हो। बाएं हाथ को धीरे से मुठ के शीर्ष पर लाएं और दांई तरफ को रखें। दोनों कलाई एक तरफ हो जाए। अब सिर को छाती की तरफ लाएं। यह सभी प्रक्रियाएं उस व्यक्ति द्वारा समन्वित हो जो शस्त्र ड्रिल करा रहा है।

(घ) शोक शस्त्र से सावधान — शस्त्रों को उलटना अपना सिर उठा लें।

तलवार के साथ यह प्रक्रिया तीन बार एक जैसी की जाएगी।

(ङ) शोक शस्त्र से सलामी शस्त्र

1. सबसे पहले बांया हाथ उस जगह से हटाकर बाएं तरफ लाएंगे और तलवार को खड़ी स्थिति में रखेंगे।
2. उसके बाद तलवार पुनः कवर में डाली जाएगी।
3. अब तलवार को सलामी की स्थिति में लाएंगे।

(च) शस्त्र ड्रिल में एक अन्य प्रक्रिया और भी है जिसे शोक शस्त्र से उलटा शस्त्र की कमाण्ड में प्रयोग किया जा सकता है।

उलटा शस्त्र की कमाण्ड होने पर तलवार के साथ एक जैसी प्रक्रिया की जाएगी। तलवार को सीधे हाथ की बगल में करेगा और उसी समय बाएं हाथ से तलवार की धार को बाएं हाथ के पीछे रखेगा (बाकी की स्थिति का ऊपर वर्णन किया जा चुका है)

अन्तेष्टि परेड

अध्याय XXXIII

सैल्यूट हेतु दिशा निर्देश

प्रायः यह देखा गया है कि पुलिस बल की लगभग सभी शाखाओं में सैल्यूट का प्रस्तुतीकरण सामान्य मापदंड की तुलना में काफी असंतोषप्रद रहता है। प्रशिक्षु अधिकारियों के दिमाग में सैल्यूट करने एवं अभिवादन करने के बारे में काफी शंकायें एवं त्रुटिपूर्ण समझ रहती है। इसी शंका का निवारण हेतु एवं सैल्यूट के संबंध में एक समान प्रतिमान स्थापित करने के लिए सर्व संबंधितों की जानकारी के लिए निम्नांकित निर्देश जारी किये जा रहे हैं। कृपया सभी अधिकारीगण यह सुनिश्चित करें कि इन निर्देशों का दृढ़ता से पालन हो एवं उनके अधीनस्थों के द्वारा की जाने वाली त्रुटियां यथाशीघ्र सुधार ली जाएं। इस दिशा में सतत् निगाह रखी जाए ताकि सैल्यूट का उच्चतम स्तर स्थापित किया जा सके।

सामान्य

(1) सभी स्तर के अधिकारी यह ध्यान रखें कि सैल्यूट, सेना एवं पुलिस विभाग में वरिष्ठों का अभिवादन करने की विशिष्ट प्रक्रिया है न कि आमजनों के बीच प्रचलित एक सामान्य परंपरा। वरिष्ठों के प्रति आदर एवं अनुशासन की अंतश्चेतना या बाह्य प्रतीक है– सैल्यूट। कर्मचारियों/अधिकारियों के सैल्यूट करने एवं अधिकारियों की स्वीकारोक्ति स्वरूप सैल्यूट करने के ढंग से किसी बल विशेष की पारस्परिक एकता एवं अनुशासन का परिचय मिलता है।

(2) मूल सैल्यूट के प्रत्युत्तर स्वरूप वरिष्ठों द्वारा किये जाने वाले सैल्यूट की महत्ता को भी कम नहीं आंका जाना चाहिए। सैल्यूट का जवाब केन उठाकर देना, हाथों को लापरवाही से हिला देना, बाएं हाथ को पतलून की जेब में डाले रहकर सैल्यूट कर देना आदि तरीके से दिया जाना बेहद गैर अनुशासनिक एवं गलत व्यवहार का द्योतक है। अधिकारियों द्वारा अधीनस्थों के सैल्यूट का समुचित जवाब देना उनका आवश्यक कर्तव्य है।

(3) सैल्यूट में असफलता, अनादर, निष्क्रियता एवं अनुशासन के निम्न स्तर का परिचायक होता है। वरिष्ठ द्वारा उसे किये गए सैल्यूट का सही तरीके से प्रतिक्रिया न प्रस्तुत करना भी अनुशासन भंग की श्रेणी में आता है।

विविध

(1) दाहिने हाथ से सैल्यूट किया जाना चाहिये। शारीरिक अक्षमता की ऐसी दशा में जब दाहिने हाथ से सैल्यूट करना संभव न हो बाएं हाथ का उपयोग किया जा सकता है।

(2) वर्दी अथवा सामान्य वेशभूषा दोनों स्थितियों में सैल्यूट किया जायेगा।

(3) यदि दो अधिकारी साथ में हैं तो वरिष्ठतम द्वारा सैल्यूट का जवाब दिया जाएगा चाहे वह वर्दी में हो या साधारण वेशभूषा में।

(4) गुजरते हुए अनकेस्ड स्टैंडर्ड, गिडेन्स एवं कलर्स को अधिकारी/कर्मचारी सैल्यूट करेंगे, केवल सेना/पुलिस शवयात्रा का हिस्सा होने पर इन इकाइयों को सैल्यूट नहीं किया जाएगा।

(5) सेना/पुलिस शव यात्रा के गुजरते समय अधिकारी, कर्मचारी शव/कौफिन को सैल्यूट करेंगे।

(6) साइकिल अथवा मोटर साइकिल सवार चलाते वाहन में दोनों हाथों को सीधा करके सैल्यूट करेंगे किन्तु निगाह सड़क पर ही रखेंगे ताकि दुर्घटना न हो।

(7) यदि वाहन स्थिर हैं किंतु व्यक्ति वाहन पर सवार है तो हाथ सीधा करने के साथ साथ अपना सिर मुस्तैदी से गुजरते वाले अधिकारी की ओर मोड़ेगा।

(8) यदि दो या अधिक अधिकारी समूह में अथवा पंक्तिबद्ध होकर खड़े हों तो उनमें से वरिष्ठतम शेष लोगों को सावधान होने का निर्देश देकर

अकेले वही सैल्यूट करेगा।

(9) यदि दो या अधिक अधिकारी अथवा कर्मचारी अर्दली कक्ष में अथवा किसी वरिष्ठ अधिकारी के समक्ष सामूहिक रूप से उपस्थित होते हैं तो उनमें से वरिष्ठतम सबसे दांई ओर खड़ा होगा एवं अन्य सभी को सावधान होने की कमांड देकर स्वयं सैल्यूट करेगा।

(10) यदि एक समूह किसी समूहेत्तर अधिकारी द्वारा वरिष्ठ अधिकारी के समक्ष अर्दली कक्ष में उपस्थित कराया जाता है तो संपूर्ण समूह से सावधान करा कर सैल्यूट कराया जायेगा एवं कमांडिंग अधिकारी स्वयं भी सैल्यूट करेगा। यदि अर्दली कक्ष में स्थान की अपर्याप्तता है तो कमांडिंग अधिकारी समूह के सदस्यों को सावधान कराएगा एवं स्वयं अकेले ही सैल्यूट करेगा।

(11) सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को उच्च पदीय अधिकारियों के विविध स्तरों द्वारा एवं मंत्रियों द्वारा उनके वाहनों में लगाये जाने वाले बैजेस एवं फ्लेग्स (झंडो) की पूर्ण जानकारी होनी चाहिये। वाहनों में इस तरह के बैजेस एवं झंडों का प्रदर्शित दशा में होना इस बात को इंगित करता है कि संबंधित अधिकारी उस वाहन से यात्रा कर रहा है। अतएव ऐसे पद इंगित करने वाले निशान वाले वाहन के नजदीक से गुजरने पर वहां उपस्थित अधिकारी कर्मचारी सैल्यूट करेंगे भले ही वाहन सवार वरिष्ठ अधिकारी स्पष्ट दिख रहे हों अथवा नहीं।

(12) वरिष्ठ अधिकारियों की सभा अथवा सदन में केवल वरिष्ठतम अधिकारी को सैल्यूट किया जाएगा। उपस्थित सभी अधिकारियों को बारी–बारी से सैल्यूट करना सही नहीं है।

(13) यदि कोई अधिकारी टोपी सहित यूनिफार्म धारण किये हुये किसी वरिष्ठ अधिकारी के समक्ष अथवा अर्दली रूम में उपस्थित होता है तो वह सैल्यूट करेगा एवं तब तक सावधान की मुद्रा में सिर पर टोपी पहने ही खड़ा रहेगा जब तक उसे बैठने के लिये न कहा जाए। यदि बैठने का आदेश मिलता है तो वह टोपी उतारकर अपनी गोद में अथवा अन्य उपयुक्त स्थान में रखेगा। यह पूर्णतया अनुचित होगा यदि टोपी उतारी ही न जाये अथवा उतारकर टोपी वरिष्ठ अधिकारी के टेबल पर रख दी जाए।

(14) **राष्ट्रगान :** राष्ट्रगान वादन/गायन के समय निम्न नियमों का ध्यान रखा जाना चाहिए–

क. परेड के दौरान उप निरीक्षक एवं उनसे ऊपर के स्तर के सभी अधिकारी सैल्यूट करेंगे एवं अन्य सभी सावधान की मुद्रा में रहेंगे।

ख. यदि कोई समूह गतिशील है तो पार्टी कमांडर दल को रोकेगा, यदि पार्टी को हवलदार नेतृत्व दे रहा है तो वह स्वयं अकेले ही सैल्यूट करेगा अन्य सभी सावधान रहेंगे।

(ग) यदि किसी संगठित समूह में खड़े हैं तो उप निरीक्षक एवं उससे ऊपर के अधिकारी सैल्यूट करेंगे, किन्तु यदि दल का प्रमुख प्रधान आरक्षक ही है तो वही सैल्यूट करेगा एवं अन्य सभी सावधान की मुद्रा में रहेंगे।

(घ) सभी राजपत्रित अधिकारी जिन्होंने सिर पर वस्त्र धारण किया हुआ है, वे सैल्यूट करेंगे अन्यथा सावधान की मुद्रा में रहेंगे।

(ङ) पाश्चात्य् शैली की साधारण वेशभूषा धारण किये हुये अधिकारी अपना शिरोवस्त्र उतारकर सावधान की मुद्रा में खड़े रहेंगे।

(च) सभी अधिकारी जो बाहर निकली हुई किर्च (स्वार्ड) के साथ गतिशील है वे यथावत चलते रहेंगे।

(15) मजिस्ट्रेट या न्यायाधीश के न्यायालय में प्रवेश करने पर सभी अधिकारी/कर्मचारी सैल्यूट करेंगे। सत्र के दौरान सभी रैंक के पुलिस

अधिकारी सभी स्तर के मजिस्ट्रेटों को सैल्यूट करेंगे अन्यथा वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों को कनिष्ठ मजिस्ट्रेटों को सैल्यूट करने की आवश्यकता नहीं है।

(16) यातायात नियंत्रण में लगे कर्मी अपने कार्य को पूर्ण एकाग्रता से करते वक्त सैल्यूट नहीं करेंगे। यद्यपि सैल्यूट किये जाने के लिये अधिकृत व्यक्ति के गुजरने पर सावधान हो जाएंगे।

(17) पाश्चात्य शैली की सिविल ड्रेस पहने व्यक्ति के लिये यह अपेक्षित है कि वह वरिष्ठ के कक्ष में प्रवेश से पूर्व अपना शिरावस्त्र उतार ले। किसी सार्वजनिक स्थान या दुकान में जाते समय यह आवश्यक नहीं है।

(18) जब अधिकारी परेड का भाग नहीं है लेकिन परेड प्रांगण में उपस्थित हैं तो वरिष्ठ अधिकारी के नजदीक आने पर सैल्यूट करेगा। आधिकारिक परेड के दौरान वरिष्ठतम अधिकारी अन्य उपस्थित अधिकारियों को सावधान करायेगा एवं स्वयं अकेले सैल्यूट करेगा।

(19) **परेड के दौरान सैल्यूटिंगः–**

क. परेड पर वरिष्ठ अधिकारी के पहुंचने पर परेड कमांडर द्वार परेड को सावधान कराने के पश्चात् सलामी दे दी जाए उसके बाद वरिष्ठ अधिकारी के प्रांगण में भ्रमण के दौरान कोई व्यक्ति पृथक से सैल्यूट नहीं करेगा बशर्ते वरिष्ठ अधिकारी उन्हें संबोधित करें अथवा चर्चा के लिए प्रस्तुत हों।

ख. यदि परेड प्रारंभ होने के पश्चात् वरिष्ठ अधिकारी पहुंचते हैं तो परेड को रोका नहीं जाएगा। परेड कमांडर स्वयं सैल्यूट करेगा एवं आगामी निर्देश प्राप्त करेगा (यदि कोई हो तो)।

ग. यदि वरिष्ठ अधिकारी परेड मैदान में भ्रमण कर रहे हों तो प्लाटून/स्क्वाड कमांडर्स अभिवादन हेतु केवल तभी सैल्यूट करेंगे जब वे स्क्वाड को कमांड नहीं कर रहे हैं अन्यथा स्क्वाड को यथावत गतिमान रखेंगे। किन्तु यदि वरिष्ठ अधिकारी किसी स्क्वाड कमांडर को संबोधित करते हैं तो वह कमांडर तत्काल अपनी कमांड रोककर स्क्वाड को सावधान कराएगा एवं स्वयं सैल्यूट करेगा। वरिष्ठ अधिकारी से मुखातिब होने के पश्चात् पुनः मुताबिक कार्यक्रम कार्रवाई कराएगा।

सैल्यूट के तरीके

क. वर्दी में सभी अधिकारी/कर्मचारी ड्रिल मैन्युअल के अनुसार चुस्ती से सैल्यूट करेंगे।

ख. शिरोवस्त्र/टोपी के अभाव में अधिकारी/कर्मचारी सैल्यूट नहीं करेंगे बल्कि स्मार्ट तरीके से सावधान की मुद्रा में खड़े हो जाएंगे, वरिष्ठ को अभिवादन करते समय झुकेंगे नहीं।

ग. पी.टी. अथवा खेल वेशभूषा में– व्यक्ति चुस्ती से सावधान की मुद्रा में खड़ा हो जाएगा। अपने पैरों की एड़ी अथवा पंजों के बल शरीर के कतई नहीं उठायेगा। प्रायः यह त्रुटि देखी जाती है, जिस पर ध्यान रखा जाए।

घ. यदि व्यक्ति वरिष्ठ अधिकारी को संदेश देने आया है तो अधिकारी से दो कदम के फासले पर रुकेगा, सैल्यूट करेगा, संदेश देगा, पुनः सैल्यूट करेगा, पीछे मुड़ेगा एवं तुरंत वापस जाएगा।

ङ. यदि व्यक्ति पहले से ही सावधान की मुद्रा में है तो वह सैल्यूट के दौरान एड़ियां नहीं हिलायेगा।

च. यदि व्यक्ति केन या छोटी लाठी लेकर चल रहा है तो उसे बांयी बगल में दबाकर सैल्यूट करेगा।

छ. यदि पैदल चलते समय वरिष्ठ अधिकारी के नजदीक से सैल्यूट करते हुए गुजरना है तो अधिकारी से तीन कदम पहले सैल्यूट करना प्रारंभ करके तीन कदम बाद तक सैल्यूट जारी रखेगा।

ज. यदि छोटी लाठी या केन के साथ गतिशील रहते हुये सैल्यूट करना हो तो केन या लाठी को बांयी बगल में दो चरणों में ले जाएगा, जिसमें से प्रत्येक स्टेप बाएं कदम पर लेगा। अतः वरिष्ठ अधिकारी से छः कदम की दूरी पर यह प्रक्रिया प्रारंभ कर देगा ताकि तीन कदम पहले सैल्यूट प्रारंभ कर सके।

झ. बांयी या दांयी ओर सैल्यूट करने पर सिर एवं आंखें भी संबंधित दिशा में मोड़े जाने चाहिए।

ञ. राइफल के साथ सैल्यूट में हाथ की गति उसी प्रकार होगी जैसे सामने के सैल्यूट में होती है।

(20) यदि किसी समारोह में वरिष्ठ अधिकारी, महिला के साथ आते हैं एवं वह समारोह आधिकारिक परेड है और वह अधिकारी परेड का मुख्य आगंतुक है तो उस अधिकारी का अभिवादन पहले किया जाएगा, जबकि अन्य सभी स्थितियों में महिला का अभिवादन पहले किया जाएगा।

वेशभूषा के प्रकार

सेरेमोनियल ड्रेस (समारोह वेशभूषा)

रिव्यू आर्डर 'ए' – खाकी जैकेट ड्रिल/गैबरडीन, सूती या सूती टैरीन (सर्दी के मौसम में) एवं खाखी पॉपलिन शब्द, नेवी ब्लू टाई, ब्राउन एंकल बूट/जूते, खाखी पॉपलिन शर्ट, नेवी ब्लू टाई, ब्राउन एंकल बूट/जूते, खाखी मोजे, तलवार (स्क्वार्ड) सहित या रहित सैम ब्राउन बेल्ट, बैज सहित पीक कैप (सिख अधिकारियों के लिए पगड़ी), रैंक बैज, नाम पट्टिका, टाइटल शोल्डर, फॉर्मेशन साइन, गहरी नीली लेनयार्ड और सीटी, अधिकृत डेकोरेशन वाले रिबिन के साथ पदक।

रिव्यू आर्डर 'बी' – खाखी ड्रिल पतलून, खाखी सेल्युलर शर्ट (काटन टेरीन खाखी पतलून एवं शर्ट), ब्राउन एंकल बूट/जूते, खाखी मोजे, स्क्वार्ड सहित या रहित सैम ब्राउन बेल्ट, बैज सहित पीक कैप (सिख अधिकारियों के लिए पगड़ी), रैंक बैज, नाम पट्टिका, टाइटल शोल्डर, फॉर्मेशन साइन, गहरी नीली लेनयार्ड और सीटी, अधिकृत डेकोरेशन वाले रिबिन के साथ पदक।

रिव्यू आर्डर 'बी' – खाखी ड्रिल पतलून, खाखी सेल्युलर शर्ट (काटन टेरीन खाखी पतलून एवं शर्ट), ब्राउन एंकल बूट/जूते, खाखी मोजे, स्क्वार्ड सहित रहित सैम ब्राउन बेल्ट, बैज सहित पीक कैप (सिख अधिकारियों के लिए पगड़ी), रैंक बेज, टाइटल शोल्डर, नाम पट्टिका, फार्मेशन साइन, गहरी नीली लेनयार्ड और सीटी, अधिकृत डेकोरेशन वाले पदक सहित रिबिन।

वर्किंग ड्रेस – कॉटन टेरीन शर्ट और पतलून (सर्दी के दिनों में अंगोला शर्ट), ब्राउन एंकल/ऑक्सफोर्ड जूते, खाखी मोजे, लेदर बेल्ट, बैज सहित पीक कैप/बैरेट कैप (सिख अधिकारियों के लिए पगड़ी), रैंक बैज, टाइटल शोल्डर, फार्मेशन साइन, गहरी नीली लेनयार्ड और सीटी, नाम पट्टिका, अधिकृत डेकोरेशन वाले रिबिन।

मेस ड्रेस – काले या सफेद पतलून के साथ शार्ट बटन्ड अप काला कोट अथवा काले या सफेद पतलून के साथ शार्ट बटन्ड अप सफेद कोट, मिनियेचर मेडल्स, राज्य समारोहों में फुल मेडल्स पांच जोड़े आईलेट्स वाले कैप्स सहित प्लेन टो वाले प्लेन काले लेदर जूते।

पी. टी. ड्रेस – सफेद शार्ट्स/सफेद ट्रैक, पतलून, सफेद टी–शर्ट, सफेद जूते, सफेद मोजे।

स्पोर्ट्स मीट – नेवी ब्ल्यू ब्लेजर, सफेद/ग्रे पतलून, सफेद शर्ट, टाइ, सफेद मोजे, काले ऑक्सफोर्डस जूते अथवा टाइ एवं काले जूते के स्थान पर (सफेद जूते–मोजे के साथ स्कार्फ)।

औपचारिक ड्रेस (फार्मल ड्रेस) –

पुरुष : फार्मल पतलून, फुल आस्तीन शर्ट, टाई, काले ऑक्सफोर्ड जूते एवं मोज़े।

महिला : साड़ी/सलवार कमीज, सैंडल।

अनौपचारिक ड्रेस (इनफार्मलस ड्रेस)–

पुरुष : फार्मल पतलून, फुल/हाफ शर्ट, काले जूत और मोजे।

महिला : साड़ी/सलवार कमीज, सैंडल

महिला अधिकारियों के लिये विशेष प्रावधान–

वर्किंग ड्रेस–

स्लैक्स – पुरुषों के लिये निर्धारित पैटर्न के समान ही बिना प्लीट के खाखी रंग की पतलून जिसमें दोनों तरफ जेब हो, सामने का फ्लैप बंद हो, भुजा के नीचे दाहिनी ओर एक ज़िप फ्लैप, सामने का फ्लैप वैकल्पिक रहेगा।

जूते – डर्बी ब्राउन लेदर शू या प्लेन ब्राउन लेदर शू जिसकी एड़ी एक इंच से ज्यादा न हो।

एंकल बूट एवं फील्ड बूट – पुरूषों के लिये निर्धारित पैटर्न के समान ही रहेंगे जिनकी एड़ी डेढ़ इंच से ज्यादा न हो।

मेस ड्रेस – सर्दी के मौसम में क्रीम कलर सिल्क एवं गर्मी में कॉटन साड़ी, जिसमें अधिकतम 5 इंच की सुनहरी जरी की फ्लोरल पैटर्न की बार्डर।

ब्लाउज़ – साड़ी से मैचिंग ब्लाउज़।

फुट वियर– क्रीम कलर की सैंडिल/बंद अंगूठे वाले स्ट्रैपयुक्त जूते जिनकी एड़ी दाई इंच से ज्यादा न हो।

पी.टी. किट– सफेद शार्टस, सफेद ट्रैक पैंट, सफेद हाई कॉलर टी–शर्ट, सफेद जूते सफेद मोजे।

प्रसाधन सामग्री – महिला अधिकारियों द्वारा माथे पर बिंदी एवं मांग में सिंदूर के अलावा कोई प्रसाधन उपयोग नहीं किया जाएगा।

राष्ट्रीय पुलिस स्मृति स्थल

अध्याय XXXIV

पुलिस स्मृति दिवस परेड
POLICE COMMEMORATION DAY PARADE
(पुष्प चक्र अर्पण समारोह)
(Wreath Laying Ceremony)
(21 अक्टूबर, अखिल भारतीय मेमोरियल)

1. युद्व में, देश की रक्षा करते हुए वीरगति को प्राप्त हुए सैनिक अथवा पुलिस कर्मचारी की याद में किसी विशेष स्थान पर जो यादगार बनाया जाता है, उसको हम पुलिस स्मृति स्थल कहते हैं ।

2. पुलिस मेमोरियल के पास नियुक्त किए हुए दिन और समय पर वीआईपी द्वारा श्रद्धांजलि अर्पित की जाती है, उसको हम 'पुष्प चक्र अर्पण समारोह' (Wreath Laying Ceremony) कहते हैं । इसमें हम शहीदों की आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना करते हैं । इससे, आने वाले सैनिकों का जोश तथा हौंसला बुलंद होता है और शहीदों की बहादुरी की मिसाल पेश होती है।

3. वीआईपी के आने से पहले DG/IG/DIG/ Commandant स्तर के उपस्थित अधिकारियों में से जो भी वहाँ वरिष्ठ अधिकारी होंगे, वह *'Police Memorial'* के गेट पर खड़े रहेंगे और वीआईपी के आने पर उनकी आगवानी करेंगे । परेड कमांडर द्वारा परेड को सावधान के लिए word of command दिया जायेगा ।

4. Martyrs' Book परेड के दाहिने ओर से मेमोरियल के पास रखने के लिए Martyrs' Book टोली धीरे चाल में मार्च करेगी।

5. जब Martyrs' Book टोली धीरे चाल में मार्च करेगी, उस समय पूरी परेड सलामी शस्त्र से Martyrs' Book का सम्मान करेगी (Martyrs' Book टोली धीरे चाल पर ब्रास बैण्ड का धुन बजाएगी) ।

नोट :– जब Martyrs' Book टोली परेड के आगे से गुजरेगी उस समय, Martyrs' Book टोली के पीछे कोई भी बैण्ड मार्च नहीं करेगा ।

6. Martyrs' Book टोली Martyrs' Book को मेमोरियल के पास निश्चित किए हुए स्थान पर रखकर सलामी (Salute) देगी । जब Martyrs' Book टोली सलामी (Salute) देगी, उसके उपरान्त परेड कमांडर पूरी परेड को *'बाजू शस्त्र'* का word of command द्वारा *'बाजू शस्त्र'* की कार्रवाई करवाएंगे ।

7. *'बाजू शस्त्र'* के word of command के बाद Martyrs' Book टोली अपने सलाम (Salute) को नीचे ले आएगी और वापस अपने निश्चित किए हुए जगह पर चली जायेगी ।

नोट :– जब Martyrs' Book को परेड के द्वारा सलामी शस्त्र से सम्मान करेंगे, उस समय सभी वर्दीधारी सलाम *(S*alute*)* करेंगे और उपस्थित शेष व्यक्ति, गैर वर्दीधारी आगन्तुक सावधान मुद्रा में खड़े रहेंगे ।

8. शहीदों के नाम पढ़कर सुनाए जायेंगे।

9. पुलिस मेमोरियल पर पुष्प चक्र अर्पण (Wreath Laying) के लिए वीआईपी धीरे चाल में मार्च करते हुए सुनिश्चित स्थान पर खड़े हो जाएंगे। दो वाहक (Wreath bearers) पुष्प चक्र (Wreath) के साथ वीआईपी के आगे धीरे चाल में मार्च करेंगे । उस समय ब्रास बैंड द्वारा धीरे चाल का धुन बजायी जायेगी।

10. वाहक (Wreath bearers) पुलिस मेमोरियल

बेस के पास रूकने की कार्रवाई को अमल में ले आएंगे और वीआईपी को पुष्प चक्र (Wreath) प्रदान करेंगे ।

11. वीआईपी पुष्प चक्र (Wreath) को मेमोरियल के उपर अर्पित करने के पश्चात् सावधान मुद्रा में खड़े होंगे। उस समय परेड कमांडर के द्वारा परेड को निम्नांकित word of commands दिये जायेंगे ।

(क) स्मृति परेड सलामी शस्त्र (अन्य उपस्थित गैर वर्दीधारी आगन्तुक सावधान मुद्रा में खड़े होंगे)।

(ख) स्मृति परेड शोक शस्त्र (परेड सलामी शस्त्र से शोक शस्त्र की कार्रवाई करेगा, अन्य उपस्थित गैर वर्दीधारी आगन्तुक सावधान मुद्रा में खड़े होंगे) ।

(ग) शोक शस्त्र के आखिरी चाल (Movement) पर बिगुलर्स द्वारा 'लास्ट पोस्ट' बजाया जायेगा ।

नोट :– शोक शस्त्र के आखिरी चाल (Movement) पर बिगुल की पहली धुन शुरू होते ही सभी वर्दीधारी सलाम (Salute) करेंगे और बाकी बचे हुए सभी गैर वर्दीधारी आगन्तुक सावधान मुद्रा में खड़े रहेंगे । लास्ट पोस्ट के अन्त में सभी वर्दीधारी अपने सलाम (Salute) को नीचे ले आएंगे ।

12. बिगुलर्स द्वारा बजाया गया अन्तिम पोस्ट खत्म होने के उपरान्त 2 मिनट का मौन धारण किया जायेगा। (सभी वर्दीधारी एवं गैर वर्दीधारी आगन्तुक इस मौन धारण पर अपने सिर को झुकाकर शहीदों की आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना करेंगे ।

नोट :– जो भी कैमरामैन/विडियोग्राफर अथवा मीडिया के प्रतिनिधि होंगे वह भी अपनी निर्धारित जगह पर 2 मिनट का मौन धारण करेंगे ।

13. दो मिनट के मौन धारण के उपरान्त परेड कमांडर के द्वारा word of command, 'परेड' ('Parade') दिया जायेगा। इस word of command पर सभी अपना मौन समाप्त करते हुए झुका हुआ सिर उठायेंगे ।

14. मौन धारण के उपरान्त परेड कमांडर द्वारा word of command दिया जायेगा 'परेड सलामी शस्त्र'। इस word of command पर पूरी परेड शोक शस्त्र से सलामी शस्त्र की कार्रवाई को अमल में ले आएंगे । सलामी शस्त्र की आखिरी चाल (Movement) पर बिगुलर्स द्वारा रोस (Rouse) बजाया जायेगा।

नोट :– इस सलामी पर सभी वर्दीधारी सलाम *(*Salute*)* करेंगे और सभी गैर वर्दीधारी आगन्तुक सावधान मुद्रा में खड़े रहेंगे ।

15. परेड के सलामी शस्त्र के बाद बिगुल के 'रोस' ('Rouse') के उपरान्त परेड कमांडर के द्वारा 'परेड बाजू शस्त्र' का word of command दिया जायेगा । इस word of command पर पूरी परेड सलामी शस्त्र से बाजू शस्त्र की कार्रवाई करेगी और बाजू शस्त्र की आखिरी चाल (Movement) पर सभी वर्दीधारी सावधान मुद्रा में आ जायेंगे ।

16. इसके उपरान्त वरिष्ठ अधिकारी के द्वारा वीआईपी से आगन्तुक पुस्तक ('Visitor Book') में हस्ताक्षर करवाए जायेंगे । इस समय बैंड के द्वारा देशभक्ति की धुन बजाई जाएगी ।

17. वीआईपी के द्वारा आगन्तुक पुस्तक ('Visitor Book') में हस्ताक्षर करने के पश्चात् वरिष्ठ अधिकारी दोनों पायलटों/वाहकों के साथ वीआईपी को बाहर तक see off करेंगे।

ANNEXURE अनुबंध

WORDS OF COMMAND कमान शब्द

SI. No.	In English	हिन्दी
1.	Halt	थम
2.	About Turn	पीछे मुड़
3.	Right Turn	दाहिने मुड़
4.	Right Form	दाएं बन
5.	Right Incline	आधा दाएं बन
6.	Left Turn	बाएं मुड़
7.	Left From	बाएं बन
8.	Left Incline	आधा बाएं मुड़
9.	Mark Time	कदम ताल
10.	Halt (When Marking Time)	थम (कदम ताल पर)
11.	Forward (When Marking Time)	आगे बढ़ (कदम ताल पर)
12.	Break Into Quick Time, Quick March	तेज चाल में आ, तेज चल
13.	Break Into Slow Time, Slow March	धीरे चाल में आ, धीरे चल
14.	Break Into Double Time, Double March	दौड़ चाल में आ, दौड़ चल
15.	On The Right/Left Form Squad	दाएं या बाएं स्क्वाड बना
16.	Open Order March	खुली लाइन चल
17.	Close Order March	निकट लाइन चल
18.	Squad Attention	स्क्वाड सावधान
19.	Stand-At-Ease	विश्राम
20.	Stand-Easy	आराम से
21.	Right (or Left) Dress	दाएं (या बाएं) सज
22.	Eyes Front	सामने देख
23.	Turning About By Numbers, Squad—One	गिनती के पीछे मुड़ना, स्क्वाड पीछे मुड़–एक
24.	Turning to the Right By Numbers	गिनती से दाएं मुड़ना, दाहिने मुड़–एक

SI. No.	In English	हिन्दी
25.	Squad—two	स्क्वाड–दो
26.	Squad Will Advance, Quick March	स्क्वाड आगे बढ़ेगा, तेज चल
27.	Step-Out	लम्बा कदम
28.	Step Short	छोटा कदम
29.	Paces Forward/Step Back-March	कदम आगे या पीछे चल
30.	Change Step—One	कदम बदल – एक
31.	Squad—Two	स्क्वाड–दो
3 2.	Squad—Three	स्क्वाड–तीन
33.	Double March	दौड़ के चल
34.	Salute To The Front By Numbers—Squad One	गिनती से सामने सैल्यूट–स्क्वाड–एक
35.	Salute To The Right—Salute	दाएं को सैल्यूट – सैल्यूट
36.	SaluteToThe Left—Salute	बाएं को सैल्यूट – सैल्यूट
37.	Squad, Dismiss	स्क्वाड, विसर्जन
38.	Salute ToThe Right/Left Squad Salute	दाएं (बाएं) को सैल्यूट – स्क्वाड सैल्यूट
39.	Squad/Platoon Fall-in	स्क्वाड या प्लाटून लाइन बना
40.	Blank File	खाली फाइल
41.	By The Right Quick March	दाएं से तेज चल
42.	Platoon Will Retire, About Turn	प्लाटून पीछे लौटेगा, पीछे मुड़
43.	Platoon Will Advance, About Turn	प्लाटून आगे बढ़ेगा, पीछे मुड़
44.	Change Direction Right, Right Form	दाएं दिशा बदल, दाएं बन
45.	Change Direction Left, Left Form	बाएं दिशा बदल, बाएं बन
46.	Platoon Forward	प्लाटून आगे बढ़
47.	Move To The Right hi Threes, A Right Turn	तीनों–तीन में दाहिने चलेगा, दाएं मुड़
48.	By The Left Quick March	बाएं से तेज चल
49.	Platoon Will Advance, Left Turn	प्लाटून आगे बढ़ेगा, बाएं मुड़
50.	Platoon Will Retire, Left Turn	प्लाटून पीछे लौटेगा, बाएं मुड़
51.	Platoon Will Advance, Right Turn	प्लाटून आगे बढ़ेगा, दाहिने मुड़

SI. No.	In English	हिन्दी
52.	Platoon Will Retire, Right Turn	प्लाटून पीछे लौटेगा, दाहिने मुड़
53.	Change Direction Left/Right, fell Left/Right	बाएं या दाएं दिशा बदल, बाएं या दाएं घूम
54.	On The Left, Form Squad/ Platoon	बाएं को स्क्वाड या प्लाटून बना
55.	On The Right Form Squad/ Platoon	दाएं को स्क्वाड या प्लाटून बना
56.	Form Two Ranks	दो लाइन बना
57.	Form Three Ranks	तीन लाइन बना
58.	In Three Ranks Right Dress	तीन लाइन में दाहिने सज
59.	Form Single File From The Left—Quick March	बाएं से एक फाइल बना, तेज चल
60.	Form Single File From The Left	बाएं से एक फाइल बना
61.	At The Halt On The Right, Form Three-Quick	थमकर तीनों तीन बना, तेज चल
62.	Advance In Single File, From The Right, Quick	दाएं से एक फाइल बना, तेज चल
63.	Form Single File, From The Right March	दाएं से एक फाइल बना
64.	At the Halt On The Left Form Quick March	बाएं थमकर लाइन बना, तेज चल
65.	On the Left Form Line	बाएं पर लाइन बना
66.	Attention	सावधान
67.	Slope Arms By Numbers— Squad One	गिनती से कन्धे शस्त्र–स्क्वाड एक
68.	Order Arms By Numbers—Squad One	गिनती से बाजू शस्त्र–स्क्वाड एक
69.	Present Arms By Numbers—Squad One	गिनती से सलामी शस्त्र–स्क्वाड एक
70.	The Squad Will Fix Bayonets, Squad Fix	स्क्वाड संगीन लगाएगा, संगीन
71.	Squad Bayonets	स्क्वाड लगा
72. (A)	Squad Will Unfix Bayonets, Squad Unfix	स्क्वाड संगीन उतारेगा, संगीन
72. (B)	Squad Bayonets	स्क्वाड उतार
73.	Port Arms	बाएं शस्त्र
74.	For Inspection Port Arms By Numbers, Squad–One	गिनती से निरीक्षण के लिए बाएं शस्त्र, स्क्वाड–एक
75.	Ease Spring By Numbers— Squad One	गिनती से बोल्ट चला, स्क्वाड– एक
76.	Examine Arms	जांच शस्त्र
77.	Trail Arms	तोल शस्त्र

SI. No.	In English	हिन्दी
78.	TraiL Arms By Numbers—Squad One	गिनती से तोल शस्त्र, स्क्वाड–एक
79.	Secure Arms By Numbers—Squad One	गिनती से संभाल शस्त्र, स्क्वाड–एक
80.	Change Arms By Numbers, Squad—One	गिनती से बदल शस्त्र, स्क्वाड–एक
81.	Ground Arms By Numbers, Squad—One	गिनती से भूमि शस्त्र, स्क्वाड–एक
82.	Short Trail	समतोल शस्त्र
83.	Sling Arms	लटका शस्त्र
84.	Draw Swords	निकाल किर्च
85.	Slope Swords	कंधे किर्च
86.	Return Swords By Numbers, Squad One	गिनती से वापस किर्च, स्क्वाड–एक
87.	No... Centre File And File of Direction, The Objective Is	नम्बर.....मध्य फाइल और दिशा के फाइल उद्देश्य है
88.	To The Right Extend	दाहिने फैल
89.	To The Left Extend	बाएं फैल
90.	From The Centre Extend	मध्य से फैल
91.	On The Right Close	दाहिने सिमट
92.	On The Left Close	बाएं सिमट
93.	On The Centre Close	मध्य सिमट
94.	Street Lining From The Rear on Both Sides of the Road... Paces Extend, Quick March	सड़क के दोनों तरफ पीछे से कदम खोलकर लाइन बना, तेज चल
95.	On die Right/Left Close	दाहिने या बाएं सिमट
96.	Inward About Wheel	अन्दर से पीछे घूम
97.	Street Lining From The Rear On Both Sides of the Road Alternatively... .Paces Extend	सड़क के दोनों तरफ से बारी–बारी.....कदम खोल कर लाइन बना
98.	Street Lining Prom The Centre On Both Sides of the Road, Ranks OutwardTurn	सड़क के दोनों तरफ मध्य से खोल कर लाइन बना, लाइन बाहर मुड़
99.	From The Rear.... Paces Extend Quick March.	पीछे से .... कदम खोल कर तेज चल
100.	Street Lining From The Rear Down The Centre Facing Outward...Paces Extend	सड़क के मध्य बाहर मुंह करते हुए पीछे से.. कदम खोल कर लाइन बना
101.	Outward About Wheel	बाहर से पीछे घूम

SI. No.	In English	हिन्दी
102.	Steady	हिलो मत
103.	No... Platoon, Eyes Front No.	नम्बर.....प्लाटून, सामने देख
104.	The Company Will Retire	कम्पनी पीछे लौटेगी
105.	The Company Will Advance	कम्पनी आगे बढ़ेगी
106.	Change Direction Right, Right Wheel	दाहिने दिशा बदल, दाहिने घूम
107.	Forward	आगे बढ़
108.	Advance (or Retire) In Column of Threes From The Right, Company — Right/Left Turn	दाहिने से तीनों–तीन कॉलम में आगे बढ़ (पीछे लौट), कम्पनी दाहिने या बाएं मुड़
109.	Move To The Right (or Left) In Column of Threcs, Company Right (or Left)Turn	तीनों–तीन कॉलम में दाहिने (या बाएं) चल, कम्पनी दाहिने (या बाएं) मुड़
110.	Move TO The Right (Or Left) In Line of Platoon In Threes. Company Right (Or Left) Turn, Quick March	प्लाटूनों की तीनों–तीन की लाइन में दाहिने (या बाएं) चल, कम्पनी दाहिने (या बाएं) मुड़, तेज चल
111.	On The Left Form Line, Remainder Left Turn, Quick March.	बाएं को लाइन बना, बाकी बाएं मुड़, तेज चल
112.	By The Left, At The Halt, Facing Left, Form Line	बाएं से थमकर बांयी दिशा लाइन बना
113.	Advance In Column Kalam Me Aage Bar	कॉलम में आगे बढ़
114.	Retire In Column, Company About Turn	कॉलम में पीछे लौट, कम्पनी पीछे मुड़
115.	On No... Platoon Form Column of Platoons, Remainder Mark Time	नम्बर..... प्लाटून पर प्लाटूनों की कॉलम बना, बाकी कदम ताल
116.	On No.. Platoon, From Column Of Platoons, Remainder Quick March	नम्बर.....प्लाटून पर प्लाटूनों की कॉलम बना, बाकी तेज चल
117.	On No... Platoon Form Close Column of Platoons, Remainder Double March	नं. .....प्लाटून पर प्लाटूनों के निकट कॉलम बना, बाकी दौड़ के चल
118.	AtThe Halt Facing Left (or Right) Form Lin	थम कर बाएं (या दाहिने) दिशा में लाइन बना
119.	Change Direction Right	दाहिने दिशा बदल
120.	Advance in Column of Threes From The Right, Company Right Turn, Platoons Left Wheel, Quick March	दाहिने से तीनों–तीन कॉलम में आगे बढ़, कम्पनी दाहिने मुड़ प्लाटून बाएं घूम, तेज चल

SI. No.	In English	हिन्दी
121.	Move To The Right In Column of Threes, Company Right Turn, Platoon On The Left To The Front, Remainder Left Wheel, Quick March	तीनों–तीन कॉलम में दाहिने चल, कम्पनी दाहिने मुड़, बाएं प्लाटून सामने को, बाकी बाएं घूम, तेज चल
122.	On The Left Form Line, Remainder Left Incline, Double March	बाएं को लाइन बना, बाकी आधा बाएं मुड़, दौड़ के चल
123.	At The Halt Facing Right Form Column of Platoons, Platoons Right Form, Quick March.	थमकर दाहिने दिशा प्लाटूनों की कॉलम बना, प्लाटूनों दाहिने बन, तेज चल
124.	At The Halt, Facing Left, Into Line, Platoons	थमकर बाएं दिशा लाइन बना, प्लाटूनों बाएं
	Left Form, Quick March	बाएं बन, तेज चल
125.	Move To The Right/Left, In Line Of Platoons In Threes, Company Right/ Left Turn	प्लाटूनों की तीनों–तीन की लाइन में दाहिने या बाएं, चल, कम्पनी दाहिने या बाएं मुड़
126.	On The Right Form Column (or Close Column) of Platoons, Remainder Right Turn, Quick March	दाहिने को प्लाटूनों की कॉलम (या निकट कॉलम) बना, बाकी दाहिने मुड़, तेज चल
127.	Advance In Column of From The Righ Ramainder Right Turn, Quick March	दाहिने से प्लाटून के कॉलम में आगे बढ़, बाकी दाहिने मुड़, तेज चल
128.	Advance In Line Of Platoons In Threes From The Left, Company Left Turn, Platoons Right Wheel, Quick March	बाएं से प्लाटूनों की तीनों–तीन की लाइन में आगे बढ़, कम्पनी बाएं मुड़, प्लाटूनों दाहिने घूम तेज चल
129.	The Company Will Form Column of Platoons, On The Left form Platoons	कम्पनी प्लाटूनों के कॉलम बनाएगी, बाएं प्लाटून बना
130.	At The Halt On The Left Form Close Column Of Platoons	थमकर बाएं को प्लाटूनों का निकट कॉलम बना
131.	At The Halt Facing Left Form-Column (or Close Column) Of Platoons	थमकर बाएं दिशा प्लाटूनों का कॉलम (या निकट कॉलम) बना
132.	Facing Left Advance In Column	बांयी दिशा कॉलम में आगे बढ़
133.	On the Right Form Line of Platoons In Threes at. Paces Interval, Remainder Double March	दांए को.....कदम के फासले पर प्लाटूनों की तीनों–तीन की लाइन बना, बाकी दौड़ के चल
134.	At The Halt On The Right Form Line Of Platoons In Threes at Column Paces Interval, Remainder Left Incline	थमकर दांए को कॉलम के फासले पर प्लाटूनों की तीनों–तीन की लाइन बना, बाकी आधा बाएं मुड़
135.	Advance In Column Of Threes From The Left, Platoon On The Left To The Front, Remainder Left Wheel, Company Quick March	बाएं से तीनों–तीन की कॉलम में आगे बढ़ेगा, बाएं प्लाटून आगे, बाकी बाएं घूम, कम्पनी तेज चल

SI. No.	In English	हिन्दी
136.	Company Facing Left Advance Column Of Threes, Platoons Left Wheel, Quick March	कम्पनी बाएं दिशा तीनों–तीन की कॉलम में आगे बढ़, प्लाटूनों बाएं घूम, तेज चल
137.	Company, At The Halt Form Line, On The Right Form Platoons	कम्पनी थमकर लाइन बनाएगी, दाहिने पर प्लाटून बना
138.	Advance/Retire In Column Of Platoons, Company Left/ Right Turn	प्लाटूनों की कॉलम में आगे बढ़ेगा या पीछे लौटेगा कम्पनी बाएं या दांए मुड
139.	Move To The Right In Line Platoons In Threes, Platoons Right Wheel	प्लाटूनों की तीनों–तीन की लाइन में दांए चल, प्लाटूनें दाहिने घूम
140.	Number	गिनती कर
141.	Odd Numbers One Pace Forward, Even Numbers One Pace Step Back March	विषम एक कदम आगे, सम एक कदम पीछे चल
142.	Stand Fast The Right Hand Man, Odd Numbers To The Right, Even Numbers To The Left, Ranks Right And Left turn	दांए जवान खड़ा रहेगा, बाकी विषम दाहिने, सम बाएं, लाइन दाहिने और बाएं मुड़
143.	Form Three ranks—Quick March	तीन लाइन बना – तेज चल
144.	Fall Out The Officers	आफिसर्स लाइन तोड़
145.	National Salute	राष्ट्रीय सैल्यूट
146.	Present And Ready For Inspection	श्रीमान् जी परेड निरीक्षण को हाजिर है
147.	No.. .Company Stand Fast Remainder Stand At Ease	नं.....कम्पनी खड़ी रहे, बाकी विश्राम
148.	Move To The Right In Column Of Threes, Battalion Right Turn, By The Left Quick March	तीनों–तीन कॉलम में दाहिने चल, बटालियन दाहिने मुड़, बाएं से तेज चल
149.	At The Halt, Facing Left, Form Close Column Of Companies	थम कर बाएं दिशा, कम्पनियों के निकट कॉलम बना
150.	No... Company, Halt, Company Will Advance	नं.....कम्पनी थम, कम्पनी आगे बढ़ेगी, बाएं मुड़
151.	No.. Company. By The Right, Quick March	नं..... कम्पनी दाहिने से तेज चल
152.	In Succession Advance In Column Of Threes From The Right	दांए से बारी–बारी तीनों–तीन की कॉलम में आगे बढ़
153.	Move to The Right In Column Of Route, Battalion Right Turn	कूच कॉलम में दाहिने चल, बटालियन दाहिने मुड़
154.	Battalion Will March Past In Column Of Route	बटालियन कूच कॉलम में मंच से गुजरेगी
155.	No.... Company, By The Left Quick March	नं..... कम्पनी, बाएं से तेज चल
156.	Platoon? At The Halt, Right Form	प्लाटून थम कर, दाहिने बन

SI. No.	In English	हिन्दी
157.	Quick March, Platoons Left Dress, Platoons Eyes Front	तेज चल प्लाटून बाएं सज, प्लाटून सामने देख
158.	Battalion Will March Past In QuickTime— By The Left Quick March	बटालियन तेज चाल से मंच से गुजरेगी, बाएं से तेज चल
159.	Change Direction Left Baye Disha Badal	बाएं दिशा बदल
160.	Platoons AtThe Halt, Left Form	प्लाटून थम कर बाएं बन
161.	Center Dress	मध्य सज
162.	The Battalion Will March Past In Slow Time, By The Right Slow March	बटालियन धीरे चाल में मंच से गुजरेगी, दांए से धीरे चल
163.	Break Into QuickTime, Quick March	तेज चाल में आ, तेज चल
164.	In Succession Advance In Column of Threes From The Right	बारी–बारी तीनों–तीन कॉलम में दांए से आगे बढ़
165.	Facing Left Advance In Column of Platoons	बाएं दिशा प्लाटून के कॉलम में आगे बढ़
166.	Advance In Review Order, By Centre, The Quick March	समीक्षा क्रम में मध्य से, तेज चल
167.	For Inspection, Port Arms	निरीक्षण के लिए, बाएं शस्त्र
168.	Guard Examine Arms	गार्ड जांच शस्त्र
169.	Ease Spring	बोल्ट चला
170.	Marker	दर्शक
171.	Duties on Parade	परेड पर डयुटिज
172.	Guard Will Fix Bayonets, Guard Fix Bayonets— Attention	गार्ड संगीन लगायेगा–गार्ड संगीन लगा– सावधान
173.	Guard Number	गार्ड गिनती कर
174.	Guard Will Unfix Bayonets—Guard Unfix Bayonets—Attention.	गार्ड संगीन उतारेगा–गार्ड संगीन–उतार– सावधान
175.	No Front for Rear) Rank Stick Orderly, Stick Orderly—Dismiss	नं. सामने (या पिछली) लाइन स्टिक आरडरली विसर्जन
176.	Guard Commander Take Over	गार्ड कमांडार जगह लो
177.	Guard By The Right Quick March	गार्ड दांए से तेज चल
178.	Old Guard Slope Arms	पुरानी गार्ड कंधे शस्त्र
179.	New Guard Slope Arms	नई गार्ड कंधे शस्त्र
180.	Old Guard Order Arms	पुरानी गार्ड बाजू शस्त्र

SI. No.	In English	हिन्दी
181.	New Guard Order Arms	नई गार्ड बाजू शस्त्र
182.	Old Guard Stand At Ease	पुरानी गार्ड विश्राम
183.	New Guard Stand At Ease	नई गार्ड विश्राम
184.	As a Guard Number	गार्ड की तरह गिनती कर
185.	First Relief	पहली बदली
186.	Second Relief	दूसरी बदली
187.	Third Relief	तीसरी बदली
188.	First Relief Stand Fast, Remainder Stand At Ease	पहली बदली खड़ी रहेगी, बाकी विश्राम
189.	First Relief Slope Arms	पहली बदली कंधे शस्त्र
190.	Relief Form Up	बदली बना
191.	Relief Move To The Right In Single File—Right Turn	बदली एक लाइन में दाहिने चल, दांए मुड़
192.	Old Guard Attention	पुरानी गार्ड सावधान
193.	New Guard Attention	नई गार्ड सावधान
194.	Old Guard Close Order March	पुरानी गार्ड निकट लाइन चल
195.	Old Guard Move To The Right In File (Or Single File) Right Turn	पुरानी गार्ड – एक फाइल में दाहिने चल, दांए मुड
196.	New Guard Present Arms	नई गार्ड सलामी शस्त्र
197.	Old Guard Eyes Left-Eyes Front	पुरानी गार्ड बाएं देख, सामने देख
198.	Relieving Sentries	बदली संतरी
199.	Sentries Pass	संतरी बदली करो
200.	Relief Quick March	संतरी तेज चल
201.	Guard Turn Out	गार्ड लाइन बना
202.	Guard Ready For Inspection	निरीक्षण के लिए गार्ड हाजिर है
203.	Turn In The Guard—Dismiss the Guard	गार्ड लाइन तोड़ – गार्ड विसर्जन
204.	Halt, Who Comes There	थम, कौन आता है
205.	Grand Round or Visiting Round	बड़ा मुआयना या छोटा मुआयना
206.	Advance Grand Round or Visiting Round, All Is Well	आगे बढ़ो बड़ा मुआयना या छोटा मुआयना, सब ठीक है

SI. No.	In English	हिन्दी
207.	Stand Down The Guard	गार्ड जगह छोड़
208.	Fall In The Guard	गार्ड लाइन बना
209.	Advance, One	एक, आगे बढ़ो
210.	Pass Friend All Is Well	चलो दोस्त सब ठीक है
211.	General Salute	जनरल सैल्यूट
212.	Guard of Honour Consisting of..Officers And... Other Ranks Is Ready For Your Inspection, Sir	––के अफसरों और जवानों का सम्मान गार्ड निरीक्षण के लिये हाजिर है श्रीमान्
213.	Standing Load	खड़े भर
214.	Present	पेश कर
215.	Unload	खाली कर
216.	Parade Will Give Three Cheers Parade	परेड तीन बार जय बोलेगी
217.	Reverse Arms	उल्टा शस्त्र
218.	Reverse Arms By Numbers, One	गिनती से उल्टा शस्त्र, स्क्वाड, एक
219.	Change Arms By Numbers, One	गिनती से बदल शस्त्र, स्क्वाड, एक
220.	Rest On Your Arms Reversed	शोक शस्त्र
221.	Rest On Your Arms Reversed By Number, One	गिनती से शोक शस्त्र, स्क्वाड, एक
222.	Present Arms By Number, One	गिनती से सलामी शस्त्र स्क्वाड, एक

पदक क्रम

क्र. सं.	हिन्दी
1.	भारत रत्न
2.	परम वीर चक्र
3.	अशोक चक्र
4.	पद्म विभूषण
5.	पद्म भूषण
6.	सर्वोत्तम युद्ध सेवा मेडल
7.	परम विशिष्ट सेवा मेडल
8.	महावीर चक्र
9.	कीर्ति चक्र
10.	पद्मश्री
11.	सर्वोतम जीवन रक्षा पदक
12.	उत्तम युद्ध सेवा मेडल
13.	अति विशिष्ट सेवा मेडल
14.	वीर चक्र
15.	शौर्य चक्र
16.	वीरता के लिए राष्ट्रपति का पुलिस एवं अग्नि सेवा मेडल
17.	वीरता के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक
18.	वीरता के लिए राष्ट्रपति का अग्नि सेवा पदक
19.	वीरता के लिए राष्ट्रपति का सुधारक सेवा पदक
20.	वीरता के लिए राष्ट्रपति का होम गार्ड्स और सिविल डिफेन्स मेडल
21.	युद्ध सेवा मेडल

क्र. सं.	हिन्दी
22.	सेना/नौ सेना/वायु सेना मेडल
23.	विशिष्ट सेवा मेडल
24.	वीरता के लिए पुलिस पदक
25.	वीरता के लिए अग्नि सेवा पदक
26.	वीरता के लिए सुधारात्मक सेवा पदक
27.	वीरता के लिए होम गार्ड्स और सिविल डिफेंस पदक
28.	उत्तम जीवन रक्षा पदक
29.	पराक्रम पदक
30.	जनरल सर्विस मेडल – 1947
31.	सामान्य सेवा मेडल – 1965
32.	विशेष सेवा मेडल
33.	समर सेवा स्टार –1965
34.	पूर्वी स्टार
35.	पश्चिमी स्टार
36.	ओ पी विजय स्टार
37.	सियाचिन ग्लेशियर मेडल
38.	रक्षा मेडल – 1965
39.	संग्राम मेडल
40.	ओ पी विजय मेडल

क्र. सं.	हिन्दी
41.	सैन्य सेवा मेडल
42.	हाई ऑल्टिट्यूड मेडल
43.	पुलिस (आंतरिक सुरक्षा सेवा) पदक
44.	पुलिस (विशेष ड्यूटी) मेडल – 1962
45.	विदेश सेवा मेडल
46.	विशिष्ट सेवा के लिए राष्ट्रपति का पुलिस और अग्नि सेवा पदक
47.	विशिष्ट सेवा के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक
48.	विशिष्ट सेवा के लिए राष्ट्रपति का अग्नि सेवा पदक
49.	विशिष्ट सेवा के लिए राष्ट्रपति का सुधारात्मक सेवा पदक
50.	विशिष्ट सेवा के लिए राष्ट्रपति का होम गार्ड और सिविल डिफेन्स मेडल
51.	सराहनीय सेवा मेडल
52.	लंबी सेवा और अच्छे आचरण का पदक
53.	सराहनीय सेवा के लिए पुलिस पदक
54.	सराहनीय सेवा के लिए फायर सर्विस मेडल
55.	सराहनीय सेवा के लिए सुधारात्मक सेवा मेडल
56.	सराहनीय सेवा के लिए होम गार्डस और सिविल डिफेंस मेडल
57.	जीवन रक्षा पदक
58.	प्रादेशिक सेना अलंकरण
59.	प्रादेशिक सेना पदक
60.	भारतीय स्वतंत्रता पदक –1947
61.	स्वतंत्रता पदक – 1950
62.	स्वतंत्रता की 50 वीं वर्षगांठ का पदक
63.	25 वीं स्वतंत्रता वर्षगांठ का पदक
64.	30 वर्ष लम्बी सेवा पदक
65.	20 वर्ष लम्बी सेवा पदक
66.	9 वर्ष लम्बी सेवा पदक
67.	राष्ट्रमंडल पुरस्कार
68.	अन्य पुरस्कार

MEDAL ORDER

SI. No.	In English
1.	Bharat Ratna
2.	Param Vir Chakra
3.	Ashoka Chakra
4.	Padma Vibhushan
5.	Padma Bhushan
6.	Sarvottam Yudh Seva Medal
7.	Param Vishisht Seva Medal
8.	Maha Vir Chakra
9.	Kirti Chakra
10.	Padma Shri
11.	Sarvottam Jeevan Raksha Padak
12.	Uttam Yudh Seva Medal
13.	Ati Vishisht Seva Medal
14.	Vir Chakra
15.	Shaurya Chakra
16.	President's Police and Fire Services Medal for gallantry
17.	President's Police Medal for gallantry
18.	President's Fire Service Medal for gallantry
19.	President's Correctional Service Medal for gallantry
20.	President's Home Guards and Civil Defence Medal for gallantry
21.	Yudh Seva Medal
22.	Sena/Nao Sena/Vayu Sena Medal
23.	Vishisht Seva Medal
24.	Police Medal for gallantry
25.	Fire Service Medal for gallantry
26.	Correctional Service Medal for gallantry
27.	Home Guards and Civil Defence Medal for gallantry
28.	Uttam Jeevan Raksha Padak
29.	Parakram Padak
30.	General Service Medal-1947
31.	Samanya Seva Medal-1965
32.	Special Service Medal
33.	Samar Seva Star-1965
34.	Poorvi Star
35.	Paschimi Star
36.	OP Vijay Star
37.	Siachen Glacier Medal
38.	Raksha Medal-1965
39.	Sangram Medal

SI. No.	In English
40.	OP Vijay Medal
41.	Sainya Seva Medal
42.	High Altitude Medal
43.	Police (Antrik Suraksha Seva) Padak
44.	Police (Special Duty) Medal-1962
45.	Videsh Seva Medal
46.	President's Police and Fire Service Medal for distinguished service.
47.	President's Police Medal for distinguished service.
48.	President's Fire Service Medal for distinguished service.
49.	President's Correctional Service Medal for distinguished service.
50.	President's Home Guards and Civil Defence Medal for distinguished service.
51.	Meritorious Service Medal.
52.	Long Service and Good Conduct Medal
53.	Police Medal for Meritorious Service
54.	Fire Service Medal for Meritorious Service.
55.	Correctional Service Medal for meritorious service.
56.	Home Guards and Civil Defence Medal for meritorious service.
57.	Jeevan Raksha Padak
58.	Territorial Army Decoration
59.	Territorial Army Medal
60.	Indian Independence Medal-1947
61.	Independence Medal-1950
62.	50th Anniversary of Independence Medal
63.	25th Independence Anniversary Medal
64.	30 Years Long Service Medal
65.	20 Years Long Service Medal
66.	9 Years Long Service Medal
67.	Commonwealth Awards
68.	Other Awards

पुलिस अनुसंधान एवं विकास ब्यूरो

राष्ट्रीय राजमार्ग–8
महिपालपुर
नई दिल्ली–110037

BPRDIndia bprdindia officialBPRDIndia Bureau of Police Research & Development India www.bprd.nic.in